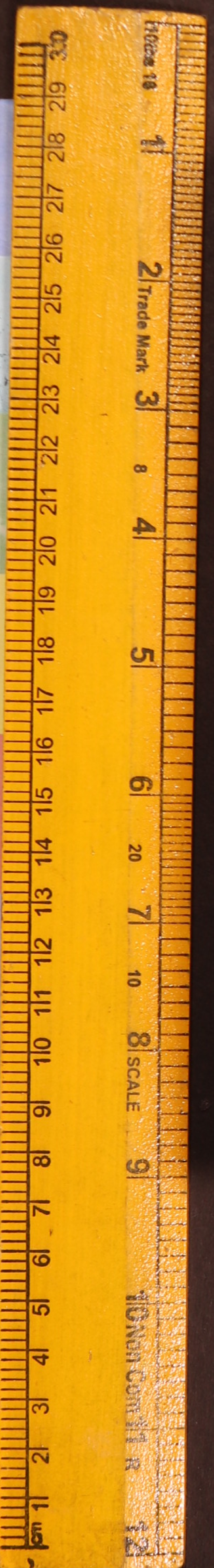

शाहनामा-ए-हिन्द
हिन्दी उर्दू
महाभारत
शायरी में
फ़रोग़ नक्क़ाश



दूसरा भाग

शाहनामा-ए-हिन्द का दूसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल हिन्दू अहदे-हुकूमत ६०० साल क़ब्ले-मसीह से शुरू होता है। इसमें जुगराफ़िया, तहक़ीके नसले-इन्सानी पर बहस, हिंदुस्थान में आर्यन क़ौम की आमद, क़दीम द्रविड़ क़ौम से उनका टकराव, आर्य क़ौम की हुकूमतों का क़याम, उनके रहन सहन, तरज़े-माआशरत और सनअत-ओ-हरफ़त, इसके बाद जैन और बौद्ध धर्मों का इतिहास, अजात, शत्रू और शीश नाग ख़ानदान का ज़िक्र, हिन्द पर यूनान व फ़ारस का आक्रमण, सिकन्दर और पोरस की जंग, चंद्र गुप्त मोर्या और अशोक का ज़माना, शुक व कानू और आन्ध्र ख़ानदान का तज़केरा, सलतनत-ए-मगध का ख़ातमा, यूनानी और सथीन क़ौमों के हमले, कनिश्क का दौरे-हुकूमत, पुराणों का ज़माना जो ३२० इसवी से ८०० सने-इसवी तक होता है। इस में चंद्रगुप्त अव्वल, समुद्र गुप्त, चंद्रगुप्त सानी, चीनी सय्याह फ़ाहियान की आमद, सफ़ीद हूनों के हमले और हर्षवर्धन शिलादत्य का शानदार दौरे-हुकूमत का तज़केरा, हर्षवर्धन, राजपूतों की तरक्की व इरतेक़ा का ज़माना, जुनूबी हिन्द में दकन के राष्ट्र कोटों, यादव, होशील और कातके ख़ानदान, चोल, चीरा और पांडिया ख़ानदान का तज़केरा किया गया है, और आख़िर में जुनूबी हिन्द में अरबों की तिजारती सर-गर्मियों पर भी रोशनी डाली गई है।

★ ★ ★



शाहनामा -ए- हिन्द

ब-शमूल

उर्दू महाभारत

प्रथम भाग

उर्दू कविता में भारत का प्राचीन इतिहास

फ़िरदौसी-ए-हिन्द

फ़रोग़ नक़्क़ाश

شاہنامۂ ہند

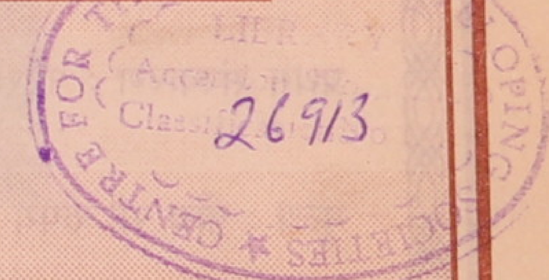
بشمول

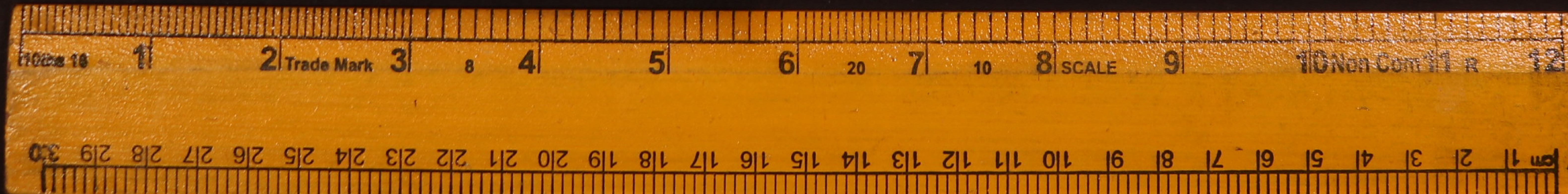
اردو مہابھارت

حصہ اوّل

اردو نظم میں وطن عزیز کی قدیم تاریخ

فردوسئ ہند۔ فروغ نقّاش





प्रकाशक :

फ़रोग़ नक़्क़ाश

शाहनाम -ए- हिन्द
प्रकाशन केन्द्र,
(हिन्दी - उर्दू - महाभारत)
मोहम्मद अली रोड,
मोमिनपुरा, नागपुर-१८.

प्रतियाँ : एक हज़ार

प्रथम संस्करण : १९९७

मूल्य : पाँच सौ रुपये

विदेशी मुद्रा : तीस यु.एस. डॉलर

मुद्रक :
रा.का. बेडेकर
मॅनेजर :
शिवशक्ति प्रेस प्रा.लि.
बैद्यनाथ भवन, ग्रेट नागरोड
नागपुर-९

ناشر
فروغ نقاش
شاہنامۂ ہند
پبلشنگ ہاؤس
(ہندی۔ اردو مہابھارت)
محمد علی روڈ، مومن پورہ، ناگپور - ۱۸

تعداد : ایک ہزار

اشاعت بار اول : ۱۹۹۷ء

قیمت : پانچ سو روپے
بیرون ملک : تیس ۳۰/ امریکی ڈالر

مطبع :

آر۔ کے۔ بیڑے کر
مینجر، شیوشکتی پریس پرائیوٹ لمیٹیڈ
بیدھ ناتھ بھون، گریٹ ناگ روڈ
ناگپور - ۹



श्री सुरेश कुमारजी शर्मा
नागपुर नगर स्थित श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि.
प्रतिष्ठान के आप कुशल प्रबंधक निर्देशक है ।
हिन्दी उर्दू महाभारत ग्रंथ प्रकाशन तथा मार्गदर्शन के लिये
आपका अपूर्व सहयोग मिला वह वास्तवमें अविस्मरणीय है।



सैयद शहज़ाद हुसैन साहब,
डिविज़नल कमिश्नर नागपूर, की लेखक फिरदौसी–ए–हिन्द
फरोग नक्काश के धर एक मुलाकात

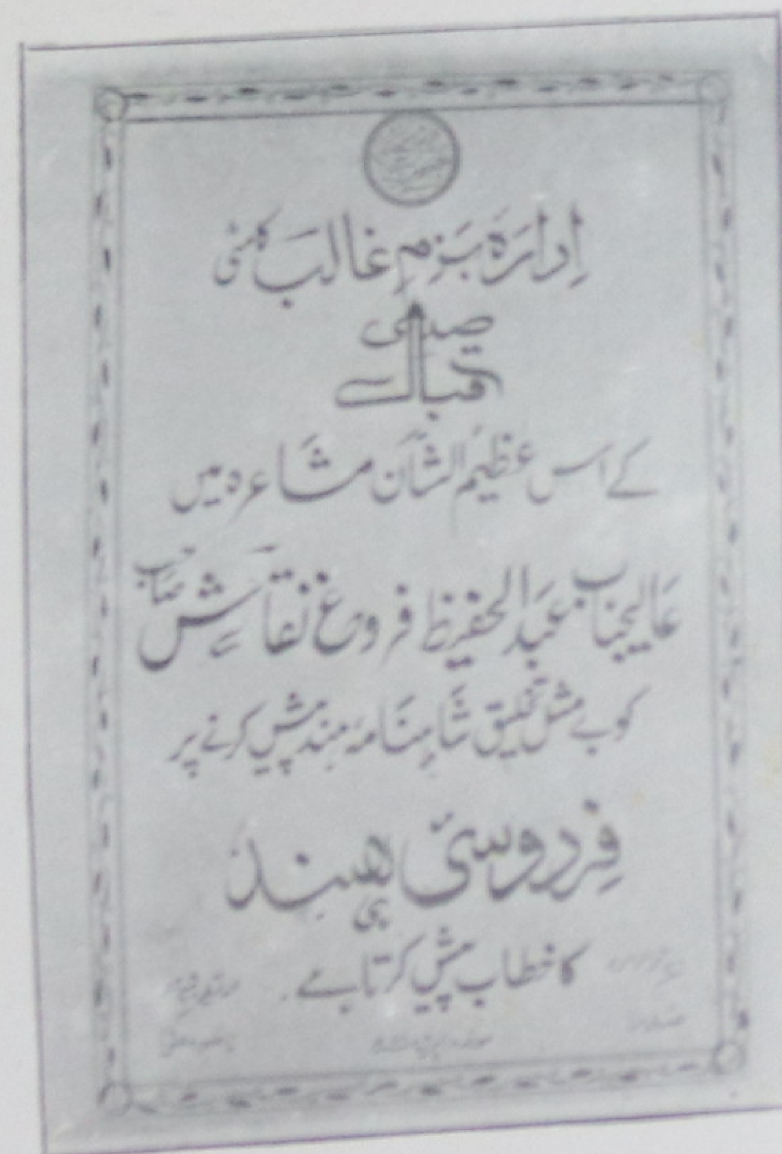


नागपुर महानगर पालिका की ओर से पेशकर्दा मानचिन्ह



सन १९७७ में नागपूर महानगर पालिका की रजत जयंती ऊत्सव के अवसर पर
तत्कालीन महापौर श्री अटल बहादूर सिंग, फ़रोग़ नक़्क़ाश का सत्कार करते हुए।




ادارہ بزم غالب کامٹی
صدی تقریبات
کے اس عظیم الشان مشاعرہ میں
عالیجناب عبدالحفیظ فروغ نقاش صاحب
کو بے مثل تخلیق شاہنامۂ ہند پیش کرنے پر
فردوسیٔ ہند
کا خطاب پیش کرتا ہے۔

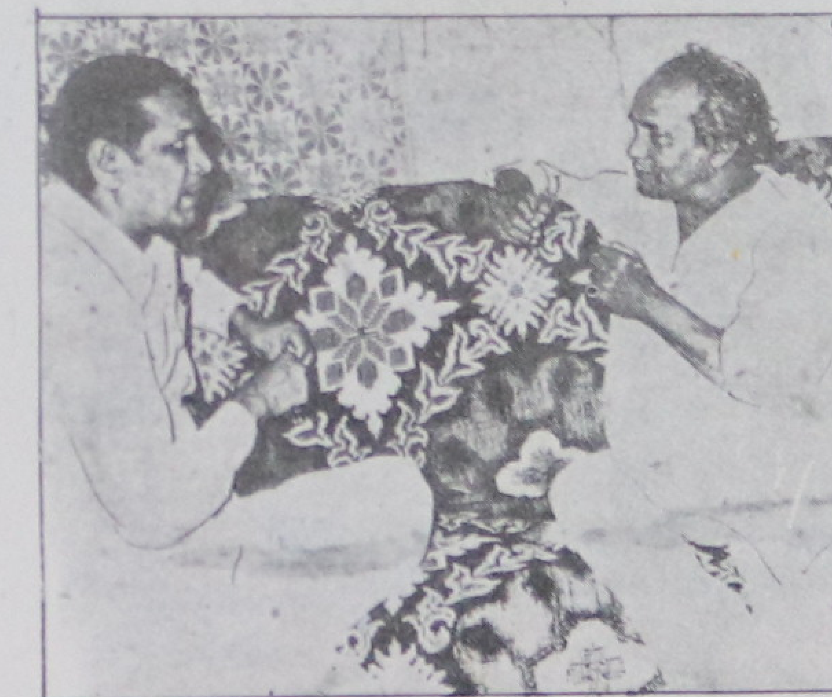
सन १९७८ में "बज़्मे-ग़ालिब" संस्था (कामटी) की ओर से मिला मान चिन्ह



सन १९७८ में "बज़्मे-ग़ालिब" संस्था (कामटी) की ओर से "फ़िरदौसी-ए-हिन्द" का ख़िताब पेश करते हुए महाराष्ट्र के तत्कालीन मंत्री श्री तेजसिंह राव भोसले



सन १९८० में इक़बाल अकादमी के मुशायरे में माजी केन्द्रीय सांसद श्री दत्ताजी मेघे, फ़िरदौसी-ए-हिन्द फ़रोग़ नक़्क़ाश को ''कवमी-यक-जहती के अलंबरदार'', अवॉर्ड प्रदान करते हुए।



भूतपूर्व केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री वसंत साठे के साथ फरोग नक्काश





राजाराम वाचनालय की ओर से विदर्भ साहित्य संघ के अध्यक्ष
श्री सुरेश द्वादशीवार लेखक फ़रोग़ नक़्क़ाश का सत्कार करते हुए ।



फ़िरदौसी-ए-हिन्द फ़रोग़ नक़्क़ाश को उर्दू अकादमी के मुशायरे नागपुर में
प्रो. एस. एम. आई असीर, वज़ीर ट्रान्सपोर्ट महाराष्ट्र सिपास नामा देते हुए।



श्री सुशील कुमार शिंदे और श्री सतीश चतुर्वेदी, फरोग नक्काश के घर भेट वार्ता





नगर संस्था सारथी की ओर से मिला मानचिन्ह



सारथी संस्था की ओर से आयोजीत समारोह में डॉ. श्रीपदराव (तत्कालीन विधान सभा अध्यक्ष, आंध्रप्रदेश) शायर को शिल्ड प्रदान करते हुए ।



वेस्टर्न कोलफील्डस लिमिटेड की ओर से मिला मानचिन्ह



वेस्टर्न कोलफील्डस् लिमिटेड की ओर से एक समारोह में नागपुर के विभागीय आयुक्त जनाब सैयद शहज़ाद हुसैन शायर को प्रशस्ती-पत्र प्रदान करते हुए ।





वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

(कोल इण्डिया लिमिटेड का उपक्रम)

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में

प्रमाण पत्र

श्री फरोग नक्काश, नागपुरी, कालरी ____________ क्षेत्र को ____________ सांस्कृतिक गतिविधि ____________ में सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रदर्शन के लिये १५ अगस्त १९९५ के दिन डब्ल्यु. सी. एल. मुख्यालय नागपुर में आयोजित "स्वतंत्रता दिवस" समारोह में सम्मानित किया जाता है ।

आप नागपुर शहर के जाने माने शायर हैं । आपने महाभारत ग्रन्थ को उर्दू शायरी में लिखकर एक प्रशंसनीय कार्य किया है । उर्दू शायरी के माध्यम से आपने हिन्दुस्थान के तारीख को बयान करने की भी कोशिश की । कम्पनी प्रबन्धन आपका अभिनन्दन करते हुए आपको १०००/- की राशि एवं पदक प्रदान कर सम्मानित करती है ।

नागपुर
१५/८/९५

तपन कुमार सिंह
महाप्रबन्धक, समन्वय

रमेश बिहारी माथुर
अध्यक्ष-प्रबंध-निर्देशक

आभार

आदरणीय **सैयद शहज़ाद हुसैन साहब** डिविज़नल कमिश्नर नागपूर का मैं दिल की गहराईयों से आभारी हूँ। जिन की कलात्मक दृष्टी ने उर्दू महाभारत की छपाई एवं प्रकाशन पर कुछ लोगों को इस ओर आकर्षित किया। जिन के नाम निम्न प्रकार हैं।

श्रीमान सुरेशकुमारजी शर्मा साहब
(प्रबंध निर्देशक, श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि.नागपूर)

श्री रमेश बिहारी माथूर साहब
(ना. प्रबंध निर्देशक, वेस्टर्न कोल फिल्डस लि. नागपूर)

श्री.ज़ामिन अमीन साहब व श्री.जूज़र अमीन साहब.

इनसभी का आभारी हूँ , जिन के वित्तिय सहायता से किताब उर्दू महाभारत प्रकाशित हुई।

फ़रोग़ नक़्क़ाश

ھدیہء تشکر

عزت مآب سید شہزاد حسین صاحب، ڈویزنل کمشنر، ناگپور کا میں تہہ دل سے مشکور ہوں جن کی قدرشناس نگاہوں نے اردو مہا بھارت کی طباعت اور اشاعت پر چند اہل خیر حضرات کو متوجہ فرمایا۔
جن کے اسمائے گرامی حسب ذیل ہیں۔

عالی جناب سریش کمارجی شرما صاحب،
مینیجنگ ڈائرکٹر، شری بید ناتھ آیوروید بھون، ناگپور

شری رمیش بہاری ماتھر صاحب،
سابق مینیجنگ ڈائرکٹر، ویسٹرن کول فیلڈ لمیٹیڈ، ناگپور۔

جناب ضامن امین صاحب اور جناب جوزر امین صاحب،

ان سب کا شکر گزار ہوں جنکے مالی تعاون سے کتاب اردو مہا بھارت زیور طبع سے آراستہ ہوئی۔

فروغ نقاش

انتساب

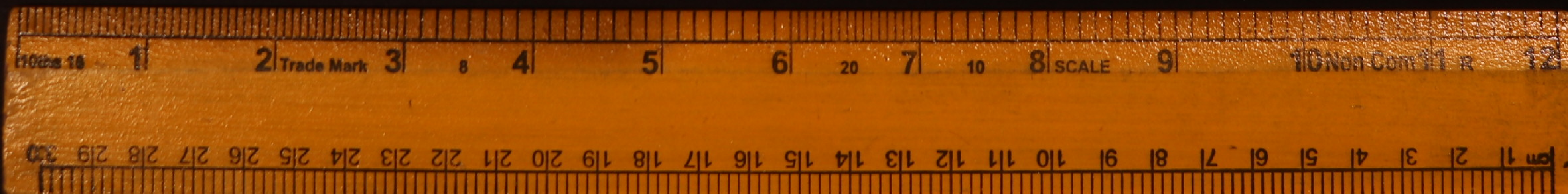
اس چالیس سالہ سعیِ پیہم کے نام

جو **قومی یکجہتی** کے پیشِ نظر

"شاہنامۂ ہند" نظم کرنے میں صرف ہوئی

इन्तेसाब

उस चालीस साला कठिण
परिश्रम के नाम
जो **क़ौमी एकता** के पेशेनज़र
शाहनामा–ए–हिन्द
नज़्म करने में व्यतीत हुई।



مہابھارت سے متعلق

زیرِ نظر یہ کتاب منظوم مہابھارت آج سے پینتیس سال قبل اشعار کے قالب میں ڈھل چکی تھی۔ مگر حالات کی ستم ظریفی اس کتاب کی اشاعت میں مانع رہی۔ یوں تو کئی منتریوں اور صاحبِ اقتدار نے وعدہ فرمایا مگر نوکر شاہی کے آگے، جن میں اردو کے کئی نام نہاد اسکالر صاحبان موجود تھے۔ ایک نہ چلی۔ یہ بھی اچھا ہی ہوا ورنہ آج شاہنامہ کے بیس ہزار اشعار مکمل نہ ہوتے۔ یقیناً یہ شاہنامہ میرے صبر و تحمل کا ثمر ہے جس سے میں انکا مشکور ہوں۔

حسنِ اتفاق کہیئے یا میری طالع وری جس سے ڈویژنل کمشنر جناب سید شہزاد حسین صاحب جیسے مخلص اور محنت شناس کو اپنا ہمدرد پایا جس نے میری ناکام تمنا کو جلا بخشی۔ انھوں نے چند مخیر حضرات کو اس منظوم مہابھارت کی اشاعت پر توجہ مبذول کروائی۔ خدا کا شکر ہے کہ وہ تمام اہلِ خیر حضرات اسکی اشاعت پر آمادہ ہو گئے۔ اب یہ کتاب آپکے ہاتھ میں ہے۔ میں اپنے اس کام میں کہاں تک کامیاب ہوا ہوں۔ اسکا فیصلہ آپ کو کرنا ہے۔ بطور نمونہ چند اقتباسات پیشِ خدمت ہیں

دشمنی کی پہلی منزل سے چند اشعار اس تمہید کے ساتھ پیش ہیں کہ اے سرزمینِ ہستنا تجھے وہ دن تو اچھی طرح یاد ہونگے کہ جب تیرے ہرے بھرے میدانوں میں کوروں اور پانڈو اپنے لڑکپن میں نت نئی شرارتوں کے ساتھ کھیلتے کھیلتے آپس میں الجھ پڑتے تھے اور ہاں وہ دن بھی یاد ہو گا کہ جب کوروگن کے سبھی بھائی ایک پیڑ پر چڑھ کر اپنی شیخیاں بگھار رہے تھے کہ اتنے میں دلاور بھیم بھی چلا آتا ہے اسے اسطرح پیش کیا ہے۔

اچانک بھیم بھی اس پیڑ کے نیچے چلا آیا — شرارت کا وہ اک طوفان اپنے دل میں بھر لایا
اچک کر وہ بھی جا بیٹھا شجر کی ایک ٹہنی پر — ہلایا پیڑ کو اس زور سے وہ بے جگر ہو کر
ٹپاٹپ اک کے بعد اک گر پڑے پھر کورو اوپر سے — کسی کا پاؤں ٹوٹا ہاتھ اکھڑا خوں بہا سر سے
ادھر دیکھی جو دریودھن نے کوروگن کی یہ حالت — ہوئی پانڈو کی جانب سے اسے بے انتہا نفرت
یہیں سے اک خصومت کی ہوئی بس ابتدا دل میں — قدم کوروں نے رکھا دشمنی کی پہلی منزل میں

महाभारत से मुतअल्लिक़

ज़ेरे-नज़र यह किताब मनज़ूम महाभारत आज से पैंतीस साल क़ब्ल अश्आर के क़ालिब में ढ़ल चुकी थी। मगर हालात की सितम-ज़रीफ़ी इस किताब की अशाअत में माने रही। यूँ तो कई मंत्रियों और साहबे-इक़्तिदार ने वादा फ़रमाया मगर नौकरशाही के आगे, जिन में उर्दू के कई नाम नेहाद स्कॉलर साहबान मौजूद थे, एक न चली, यह भी अच्छा ही हुआ वरना आज शाहनामा के बीस हज़ार (२०,०००)अश्आर मुकम्मल न होते। यक़ीनन यह शाहनामा मेरे *सब्रो-तहम्मुल* का समर है। जिस से मैं उनका मशकूर हूँ।

हुस्ने-इत्तफ़ाक़ कहिए या मेरी तालए-वरी, जिस से डिविज़नल कमिश्नर जनाब सैयद शैहज़ाद हुसैन साहब जैसे मुख़लिस और मेहनत शनास को अपना हमदर्द पाया, जिसने मेरी नाकाम तमन्ना को जिला बख़्शी। उन्होने चंद मुख़ैयर हज़रात को इस मनज़ूम महाभारत की अशाअत पर तवज्जह मबज़ूल करवायी। ख़ुदा का शुक्र है कि वह तमाम अहले-ख़ैर हज़रात इसकी अशाअत पर आमादा हो गए। अब यह किताब आप के हाथ में है। मैं अपने इस काम में कहाँ तक कामयाब हुआ हूँ, इसका फ़ैसला आप को करना है। बतौर नमूना चंद इक़्तिबासात पेशे-ख़िदमत हैं।

दुश्मनी की पहली मंज़िल से चंद अशआर इस तमहीद के साथ पेश हैं, कि ऐ सर ज़मीने-हस्तिना तुझे वह दिन तो अच्छी तरह याद होंगे, कि जब तेरे हरे-भरे मैदानों में कौरों और पान्डव अपने लड़कपन में नित नई शरारतों के साथ खेलते-खेलते आपस में उलझ पड़ते थे, और हाँ वह दिन भी याद होगा कि जब कौरवगण के सभी भाई एक पेड़ पर चढ़कर अपनी शेख़ियां बघार रहे थे कि इतने में दिलावर भीम भी चला आता है। इसे इस तरह पेश किया है।

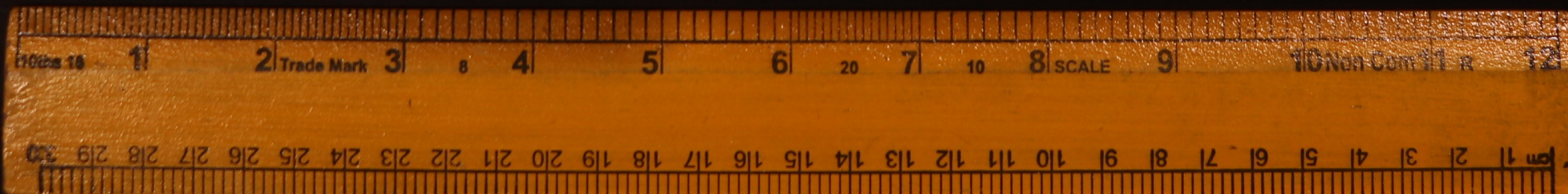
अचानक भीम भी इस पेड़ के नीचे चला आया।
शरारत का वह इक तूफ़ान अपने दिल में भर लाया।।

उचक कर वह भी जा बैठा शजर की एक टहनी पर।
हिलाया पेड़ को उस ज़ोर से, वह बे जिगर होकर।।

टपा टप इक के बाद इक गिर पड़े फिर कौर ऊपर से।
किसी का पाँव टूटा, हाथ उखड़ा, ख़ूँ बहा सर से।।

इधर देखी जो दुर्योधन ने कौरवगन की यह हालत।
हुई पान्डव की जानिब से उसे बे इन्तिहा नफ़रत।।

यहीं से इक ख़ुसूमत की हुई बस इब्तेदा दिल में।
क़दम कौरों ने रक्खा दुश्मनी की पहली मंज़िल में।।



اور اسکے بعد راجہ دروپد کے دربار میں جشن برائے انتخاب شوہر یعنی سوئمبر کے لیے تمام راجے مہاراجے اور سورما شہزادے اپنے سنگھاسنوں پر براجمان ہیں۔ اتنے میں دروپدی اپنی تمام تر رعنائیوں کے ساتھ ہاتھوں میں ورمالا لیے ہوئے دربار میں داخل ہوتی ہے۔ اسکے حسن کا قلمی عکس ملاحظہ فرمائیے

یکایک ایک جانب سے سبھا میں برق لہرائی   خرام ناز فرماتے ہوئے اک مہ جبیں آئی
لچکتی چال مستانہ روش میں سیکڑوں فتنے   مچل کر رہ گئے عشاق کے سینوں میں دل کتنے
خرام ناز سے پامال تھا لالہ کا پیراہن   حنائی پا سے فرش مخملیں تھا اور شعلہ زن
درخشاں عارض گلگوں پہ بل کھائے ہوئے گیسو   وہ کجلائی ہوئی آنکھیں تھیں یا چلتا ہوا جادو
خمیدہ طاق ابرو، روزن قوسین میخانہ   گھنی پلکوں کے سائے میں، لطافت بیز پیمانہ
لب لعلیں کی قاشوں میں در دنداں کی تابانی   ہمہ لحظہ، ہمہ عالم تکلم کی گل افشانی
جبین ضوفشاں پر قشقۂ گل رنگ کیا کہئے   کلاہ و تاج کا وہ فاخرانہ ڈھنگ کیا کہئے
بشان دلربائی لیکے ورمالا بڑھی جسدم   بہ رعب حسن فوراً ہو گئیں سبکی نگاہیں خم

اس کے بعد بھیم کی وہ تقریر ہے جو چھتری سورماؤں اور راج کماروں کو مخاطب کرکے کہی گئی ہے

میں تم سے پوچھتا ہوں اسقدر کیوں بوکھلائے ہو   نہیں ہے تم میں جب دم خم تو کیوں میداں میں آئے ہو
تمہیں روکا نہ کیوں آخر تمہارے ان مشیروں نے   یہاں آنے دیا کس واسطے تم کو وزیروں نے
سر میداں پشیمانی سے اب نظریں چراتے ہو   کیوں اپنے خانداں کے نام کو بٹہ لگاتے ہو
اٹھو جاؤ پہن لو چوڑیاں اب ہے یہی بہتر   نہ بیٹھو بزدلوں کی طرح تم زریں مسند پر
اگر کچھ شرم ہے تم میں تو پھر کیسی پشیمانی   کہ چلو بھر بہت کافی ہے مرنے کیلئے پانی

پھر اس کے بعد بھیم کرن کی جانب دیکھکر یوں کہتا ہے۔

بتا اے کرن تجھکو کون آخر اس جگہ لایا   نہ تھا جب بازوؤں میں تیرے دم تو کیوں یہاں آیا

और इसके बाद राजा द्रौपद के दरबार में जश्न बराए-इन्तेख़ाबे-शौहर यानी स्वयंवर के लिए तमाम राजे महाराजे और सूरमा शहज़ादे, अपने सिंहासनों पर ब्राजमान हैं। इतने में द्रौपदी अपनी तमाम तर रानाइयों के साथ हाथों में वरमाला लिए हुए दरबार में दाख़िल होती है। इसके हुस्न का क़लमी अक्स मुलाहेज़ा फ़रमाइए।

यकायक एक जानिब से सभा में बर्क़ लहरायी।
ख़िरामे-नाज़ फ़रमाते हुए इक मैह जबीं आयी।।
लचकती चाल मस्ताना रविश में सैकड़ों फ़ितने ।
मचल कर रह गए उश्शाक़ के सीनें में दिल कितने।।
ख़िरामे-नाज़ से पामाल था लाला का पैराहन।
हिनाई पा से फ़र्शे-मख़मलीं था और शोला ज़न।।
दरख़शाँ आरिज़े-गुलगूँ पे बल खाए हुए गेसू।
वह कजलाई हुई आँखें थीं या चलता हुआ जादू।।
ख़मीदा ताके-अबू रौज़ने-कौसैने-मैख़ाना।
घनी पलकों के साए में लताफ़त बेज़ पैमाना।।
लबे-लालीं की काशों में दुरे-दन्दाँ की ताबानी।
हमा लहजा, हमा आलम, तकल्लुम की गुल अफ़शानी।।
जबीने-ज़ौ फ़िशाँ पर क़शक़ाए-गुल रंग क्या कहिए।
कलाहो-ताज का वह फ़ाख़िराना ढंग क्या कहिए।।
बशाने-दिलरूबाई लेके वरमाला बढ़ी जिसदम।
व रूआबे-हुस्न फ़ौरन हो गई सबकी निगाहें ख़म।।

इसके बाद भीम की वह तक़रीर है जो क्षत्रिय सूरमाओं और राज कुमारों को मुख़ातिब करके कही गई है।

मैं तुम से पूछता हूँ इसक़दर क्यों बोखलाए हो।
नही है तुम में जब दम ख़म तो क्यों मैदाँ में आए हो।।
तुम्हें रोका न क्यों आख़िर तुम्हारे इन मुशीरों ने।
यहाँ आने दिया किस वास्ते तुम को वज़ीरों ने।।
सरे-मैदाँ पशेमानी से अब नज़रें चुराते हो।
क्यों अपने ख़ान्दाँ के नाम को बटा लगाते हो।।
उठो जाओ पहनलो चूडियाँ अब है यही बेहतर।
न बैठो बुज़दिलों की तरह तुम ज़रीन मसन्द पर।।
अगर कुछ शर्म है तुम में तो फिर कैसी पशेमानी।
कि चुल्लू भर बहुत काफ़ी है मरने के लिए पानी।।

फिर इसके बाद भीम कर्ण की जानिब देखकर यूँ कहता है।

बता ऐ कर्ण तुझको कौन आख़िर इस जगह लाया।
न था जब बाजुवों में तेरे दम तो क्यों यहाँ आया।।

یہاں بیٹھا ہوا کانوں کے کنڈل کو ہلاتا ہے
یہ کنڈل سچ بتا! کیا تجھکو غیرت بھی دلاتا ہے

حیا ہوتی اگر تجھ میں زمیں میں گڑ گیا ہوتا
خزاں کے سوکھے پتوں کی طرح سے جھڑ گیا ہوتا

پانڈو سوئمبر جیت کر دخترِ پنچال کو لئے ہوئے خوشی سے جھومتے ہوئے اپنے گھر پہنچتے ہیں۔ اور دروازہ سے اپنی ماتا جی کو آواز دے کر کہتے ہیں کہ ہم دروپد کے دربار سے ایک تحفہ آپکے لئے لائے ہیں۔

صدا پانڈو کی جسدم کان میں کنتی کے یہ آئی
کہا کنتی نے اسکو بانٹ لیں آپسمیں سب بھائی

یہ جملہ کیا سنا ارجن کے دل پر لگ گیا بھالا
پکارا ہائے ماں بن دیکھے تم نے کیا یہ کہہ ڈالا

یہ ایسا تحفہ ہے ماتا جو بانٹا جا نہیں سکتا
یہ جیو ارپن ہے جو تقسیم میں اب آ نہیں سکتا

تمہارا لیکن اک اک شبد پارائن سے ہے احسن
تمہاری بات کا پالن ہے پالنہار کا پالن

سرِ تسلیم خم ہے ماں تمہارے حکم کے آگے
ہمارا بھاگ ممکن ہے اسی اک وجہ سے جاگے

سلسلۂ قمار بازی سے چند اشعار اسوقت کے ہیں۔ جب پانڈو اپنا سب کچھ ہار کر پنچالی کو بھی داؤ پر لگا دیتے ہیں۔ اور اس وقت دریودھن درباریوں سے پوچھتا ہے

پھر اسکے بعد دریودھن نے پوچھا سب مقامر سے
کہ پنچالی کو میں نے کیا نہیں جیتا یدھشٹر سے

جو تھے اہلِ طرب خاموش تھے اس بات کو سنکر
بوجہِ خوف کوئی بھی نہ اس کو دے سکا اُتّر

مگر نامِ وکرن اک اسکا بھائی بھی وہیں پر تھا
کہا اسنے سبھا والوں سے اے لوگوں یہ ڈر کیسا؟

کہو تم دھرم اور انصاف کی جو بات ہو کھل کر
کسی کے خوف سے خاموش رہ جانا نہیں بہتر

یدھشٹر نے سرِ دربار پہلے خود کو ہارا ہے
جوئے پر اس نے اپنے بعد پنچالی کو وارا ہے

حقیقت ہے جوئے میں جسنے پہلے خود کو ہارا ہو
پھر اپنی بھاریہ کو گھاٹ پر جس نے اتارا ہو

اسے کیا حق پہنچتا ہے کہو قانون کی رو سے
لگائے داؤں پر اوروں کو جو آئینی پہلو سے

یقیناً اسطرح پنچالی جیتی جا نہیں سکتی
نگاہِ دور بینِ عدل دھوکا کھا نہیں سکتی

यहाँ बैठा हुआ कानों के कुन्डल को हिलाता है।
यह कुन्डल सच बता ! क्या तुझको ग़ैरत भी दिलाता है।।

हया होती अगर तुझ में ज़मीं में गड़ गया होता।
ख़िज़ाँ के सूखे पत्तों की तरह से झड़ गया होता ।।

पान्डव स्वयंवर जीत कर दुख़्तरे-पंचाल को लिये, खुशी से झूमते हुए अपने घर पहुँचते हैं, और दरवाज़ा से अपनी माताजी को आवाज़ देकर कहते हैं कि हम द्रौपद के दरबार से एक तोहफ़ा आपके लिए लाये हैं।

सदा पान्डव की जिसदम कान में कुन्ती के यह आयी।
कहा कुन्ती ने उसको बाँट लें आपस में सब भाई।।

यह जुमला क्या सुना अर्जुन के दिल पर लग गया भाला।
पुकारा हाय माँ, बिन देखे तुम ने क्या यह कह डाला।।

यह ऐसा तोहफ़ा है माता जो बाँटा जा नहीं सकता।
यह जीव अर्पण है जो तक़सीम में अब आ नहीं सकता।।

तुम्हारा लेकिन इक इक शब्द पारायण से है अहसन।
तुम्हारी बात का पालन है पालनहार का पालन।।

सरे-तसलीम ख़म है माँ तुम्हारे हुक्म के आगे।
हमारा भाग्य मुमकिन है इसी इक वजह से जागे।।

सिलसिलाए-कुमार बाज़ी से चंद अशआर इसवक़्त के हैं जब पान्डव अपना सब कुछ हार कर पंचाली को भी दाव पर लगा देते हैं. और इस वक्त दुर्योधन दरबारियों से पूछता है।

फिर इसके बाद दुर्योधन ने पुछा सब मुकामिर से।
कि पंचाली को मैं ने क्या नहीं जीता युधिष्ठिर से।।

जो थे अहले-तरब ख़ामूश थे इस बात को सुनकर।
ब वज्हा ख़ौफ़, कोई भी न उस को दे सका उत्तर।।

मगर नामे-विकर्ण, इक उसका भाई भी वहीं पर था।
कहा उसने सभा वालो से ऐ लोगो यह डर कैसा?।।

कहो तुम धर्म और इन्साफ़ की जो बात हो खुलकर।
किसी के ख़ौफ़ से ख़ामूश रह जाना नहीं बेहतर।।

युधिष्ठिर ने सरे-दरबार पहले खुद को हारा है।
जुए पर उसने अपने बाद पंचाली को वारा है।।

हक़ीक़त है जुए में जिसने पहले खुद को हारा हो।
फिर अपनी भार्या को घाट पर जिसने उतारा हो।।

उसे क्या हक़ पहुँचता है कहो कानून की रूसे।
लगाए दाँव पर औरों को जो आयीनी पहलू से।।

यक़ीनन इसतरह पंचाली जीती जा नहीं सकती।
निगाहे-दूरबीने-अद्ल धोका खा नहीं सकती।।

وکرن کی بات سنکر دریودھن نہایت پیچ وتاب کھاتے ہوئے پرات کامی سے کہتا ہے کہ تو دروپدی کو دربار میں لے آ
لیکن جب پرات کامی نے اس سے چلنے کے لئے کہا تو دروپدی سنجیدگی سے کہتی ہے کہ تو دریودھن سے جاکر یہ کہہ دے

کہ سورج آج پورب کے بجائے چاہے مغرب سے
نکلتا ہے تو نکلے شان سے پچھم کی جانب سے

اور اسی کے ساتھ یہ بھی کہنا

جو متھیا دھرم سُت بولے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن
دھلے پاتک نہ گنگا سے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن
مگر پنچال کی بیٹی نہ اُس محفل میں جائیگی
نہ بے شرمی کا ٹیکہ اپنے ماتھے پر لگائے گی

اور اب مہابھارت کا وہ زریں باب جو گیتا کے نام سے موسوم ہے اسکے چند اشعار ملاحظہ فرمایئے

یکایک اک جگہ ارجن کی نظریں رک گئیں آکر
عجب منظر نظر آیا گری بجلی سی اک دل پر
مقابل فوج میں بھائی بھتیجے اور چچا دیکھے
گرو دیکھے، پتا دیکھے، عزیز و اقربا دیکھے
یہ منظر دیکھکر ارجن بصد رنج والم بولا
لڑوں کس سے یہاں تو کوئی بھی دشمن نہیں میرا
سبھی اپنے ہیں صد افسوس اے قسمت کہاں لائی
یہ نوبت جس کے کارن پہنچی ہے وہ بھی تو ہے بھائی
یہ کہکر اسنے گرز و تیغ و خنجر تیر اور کمٹھا
اُتارا جسم سے ایک ایک کرکے خاک پر پھینکا
شری گھنشام نے ارجن کا جب دیکھا ہے یہ منظر
کہ سب ہتھیار ہیں بکھرے پڑے بیوقت دھرتی پر
انھیں حیرت ہوئی اب کسطرح ارجن کو سمجھائیں
لڑائی پر ابھاریں اور کیسے راہ پر لائیں
سپہ سالار جب ہتھیار اپنا ڈالدے خود ہی
تو پھر رن ویر سینا کس طرح جوہر دکھائیگی

اے سرزمینِ کورکشیتر تو گواہ رہنا، اگر تیری دھڑکتی ہوئی چھاتی پر کنتی پتر کے پائے استقلال میں لڑکھڑاہٹ نہ آتی تو وہ شہرۂ آفاق پیغام دنیا والوں کو سننا نصیب نہ ہوتا۔

نئے انداز سے ارجن کو پھر ہر بات سمجھائی
کہا یہ ہے لڑائی حق و باطل کی مرے بھائی
بتائیں سیکڑوں گھنشام نے عرفان کی باتیں
سکھائی شرح کرکے وید کی اور گیان کی باتیں

विकर्ण की बात सुनकर दुर्योधन निहायत पेचोताब खाते हुए परातकामी से कहता है, कि तू द्रौपदी को दरबार में ले आ, लेकिन जब परातकामी ने उस से चलने के लिये कहा तो द्रौपदी संजीदगी से कहती है कि तू दुर्योधन से जाकर यह कह दे।

कि सूरज आज पूरब के बजाए चाहे मग़रिब से।
निकलता है तो निकले शान से पश्चिम की जानिब से।।

और उसी के साथ यह भी कहना।

जो मिथ्या धर्म सुत बोले, तो कहना यह भी है मुमकिन।
धुले पातक न गंगा से, तो कहना यह भी है मुमकिन।।

मगर पंचाल की बेटी न उस महफ़िल में जाएगी।
न बे शरमी का टीका अपने माथे पर लगाएगी।।

और अब महाभारत का वह ज़र्रीं बाब, जो गीता के नाम से मौसूम है इसके चंद अशआर मुलाहेज़ा फ़रमाइए।

यकायक इक जगह अर्जुन की नज़रें रुक गई आकर।
अजब मंज़र नज़र आया गिरी बिजली से इक दिल पर।।

मुक़ाबिल फ़ौज में भाई भतीजे और चचा देखे।
गुरू देखे, पिता देखे, अज़ीज़ो-अक़रबा देखे।।

यह मंज़र देखकर अर्जुन बसद रंजो-अलम बोला।
लड़ूँ किस से, यहाँ तो कोई भी दुश्मन नहीं मेरा।।

सभी अपने हैं सद अफ़सोस ऐ क़िस्मत कहाँ लायी।
यह नौबत जिस के कारण पहुँची है, वह भी तो है भाई।।

यह कहकर उसने गुर्ज़ो-तेग़ो-ख़ंजर, तीर और कमठा।
उतारा जिस्म से एक एक करके ख़ाक पर फेका।।

श्री घनश्याम ने अर्जुन का जब देखा है यह मंज़र।
कि सब हथियार हैं बिखरे पड़े बेवक़्त धरती पर।।

उन्हे हैरत हुई अब किस तरह अर्जुन को समझायें।
लड़ाई पर उभारें और कैसे राह पर लायें।।

सिपह-सालार जब हथियार अपना डाल दे खुद ही।
तो फिर रण वीर सेना किस तरह जौहर दिखाएगी।।

ऐ सर ज़मीने-कुरूक्षेत्र तू गवाह रहना, अगर तेरी धड़कती हुई छाती पर कुन्ती पुत्र के पाय इस्तक़लाल में लड़खड़ाहट न आती तो वह शोहरए-आफ़ाक़ पैग़ाम दुनिया वालों को सुन्ना नसीब न होता।

नए अंदाज़ से अर्जुन को फिर हर बात समझाई।
कहा यह है लड़ाई हक़-ओ-बातिल की मेरे भाई।।

बताई सैकड़ों घनश्याम ने इर्फ़ान की बातें।
सिखाई शरह करके वेद की और ज्ञान की बातें।।

ستھاپت ستوگن پر پھر دیا گھنشام نے بھاشن
کیا اتپات اور ویراگ کا اچھی طرح ورنن

وہ بولے یہ تو چلتی پھرتی لاشیں ہیں ترے آگے
مقدر ہو چکی ہے موت، انکی موت سے پہلے

کہاں ہے تجھ میں وہ قوت کہ دریودھن کو تو مارے
یہ پاپی آپ اپنی موت ہی مر جائینگے سارے

منش کا اتنا ہی کرتویہ ہے کہ وہ دل وجاں سے
کئے جائے بس، اپنا کام پورے عزم و ایقاں سے

نہ رکھے پھل کی وہ امید اپنے من میں ذرہ بھر
یہ سارا مسئلہ بس چھوڑ دے بھگوان کے اوپر

پھر اسکے بعد کرشن جی اپنا الکھ روپ ارجن کو دکھلاتے ہیں جسکو دیکھ کر ارجن کے دل کی کیفیت ہی بدل جاتی ہے

دہن کھولے کھڑے تھے سامنے ہی شام بنواری
کہ جن کے منہ میں تینوں لوک کے تھے سارے سنساری

نظر آتا تھا منظر تربھون کا انکے سینے میں
نرک بیکنٹھ اور پرلوک تھے دل کے نگینے میں

غرض ہر اک شے کونین اور پاتال کی من میں
سمائی تھی شری گھنشام جی کے پُرضیا تن میں

یہ عالم دیکھ کر گھنشام کا ارجن عقیدت سے
گرا بھگوان کے چرنوں پہ اک حسن اطاعت سے

اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا
نمسکارم نمسکارم کا لب پر ورد جاری تھا

تمہاری لیلا کو پرنام لاکھوں بار اے پربھو
تمہاری ہر ادا پر میری جاں بلہار اے پربھو

کوروگن کے پہلے کمانڈر بھیشم پتامہ کے باب سے چند اشعار

اے کوروچھتر تجھے وہ دن تو اچھی طرح یاد ہونگے جب پانڈوگن نے بھیشم پتامہ پر تیروں کی باڑھ ماری تو انکے جسم میں

ہزاروں تیر انکے جسم خاکی میں ہوئے پیوست
ہوئے بوجہ شکھنڈی سے پتامہ آج یوں بے دست

بالآخر آگیا غش انکو دھرتی پر لگے گرنے
بنا کر سیج دھرتی پر نہ تیر ان کو دیئے گرنے

پتامہ کیلئے تو بن گئی تھی سیج تیروں کی
زمانے تو نے کیا دیکھی تھی ایسی شان ویروں کی

پتامہ کا سرِ جنگاہ اب تیروں کا بستر تھا
بدن تیروں پہ تھا انکا مگر لٹکا ہوا سر تھا

پتامہ نے کہا اب چاہیئے مجھکو ذرا تکیہ
تو دریودھن نے لایا ریشم و کمخواب کا تکیہ

स्थापित सत्वगन पर फिर दिया घनश्याम ने भाषण।
किया उत्पात और वैराग का अच्छी तरह वर्णन।।

वह बोले, यह तो चलती फिरती लाशें हैं तेरे आगे।
मुक़द्दर हो चुकी है मौत, उनकी मौत से पहले।।

कहाँ है तुझ में वह कुव्वत कि दुर्योधन को तू मारे।
यह पापी आप अपनी मौत ही मर जाएंगे सारे।।

मनुष का इतना ही कर्तव्य है कि वह दिलो जाँ से।
किए जाए बस, अपना काम पूरे अज़्मों-इकाँ से।।

न रखे फल की वह उम्मीद अपने मन में ज़र्रा भर।
यह सारा मसअला बस छोड़ दे भगवान के ऊपर।।

फिर इसके बाद कृष्ण जी अपना अलख रूप अर्जुन को दिखलाते हैं जिसको देखकर अर्जुन के दिल की कैफ़ियत ही बदल जाती है।

दहन खोले खड़े थे सामने ही "शाम बनवारी"।
कि जिन के मुँह में तीनों लोक के थे सारे संसारी।।

नज़र आता था मंज़र त्रिभवन का उनके सीने में।
नरक, बैकुंठ और परलोक थे दिल के नगीने में।।

ग़रज़ हर एक शै कौनैन और पाताल की मन में।
समाई थी श्री घनश्याम जी के पुर-ज़िया तन में।।

यह आलम देखकर घनश्याम का अर्जुन अक़ीदत से।
गिरा भगवान के चरणों पे इक हुस्ने-अताअत से।।

उठाया सीस चरणों से तो दिल पर ख़ौफ़ तारी थी।
नमस्कारम नमस्कारम, का लब पर विर्द जारी था।।

तुम्हारी लीला को प्रणाम लाखों बार ऐ प्रभू।
तुम्हारी हर अदा पर मेरी जाँ बलहार ऐ प्रभू।।

कौरवगण के पहले कमान्डर भीष्म पितामह के बाध से चंद अश्आर, ऐ कुरूक्षेत्र तुझे वह दिन तो अच्छी तरह याद होंगे जब पान्डवगण ने भीष्म पितामह पर तीरों की बाढ़ मारी तो उनके जिस्म में।

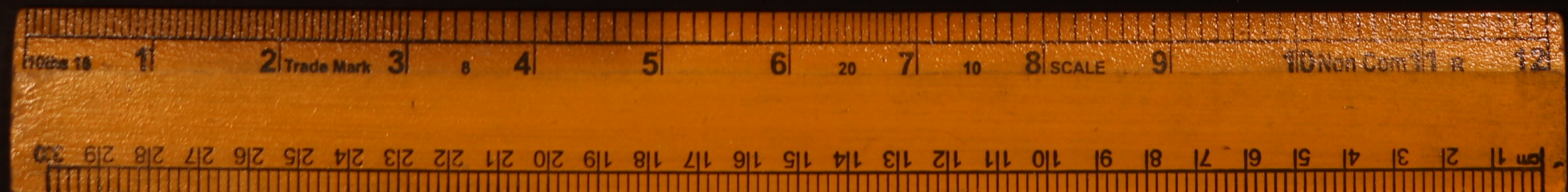
हज़ारों तीर उनके जिस्मे-ख़ाकी में हुए पेवस्त।
हुए वज्हा शिखण्डि से पितामह आज यूँ बे दस्त।।

बिलआख़िर आगया ग़श उनको धरती पर लगे गिरने।
बना कर सेज धरती पर,न तीर उन को दिये गिरने।।

पितामह के लिए तो बन गई थी सेज तीरों की।
ज़माने तूने क्या देखी थी ऐसी शान वीरों की।।

पितामह का सरे-जंगाह अब तीरों का बिस्तर था।
बदन तीरों पे था उनका, मगर लटका हुआ सर था।।

पितामह ने कहा अब चाहिये मुझको ज़रा तकिया।
तो दुर्योधन ने लाया रेशमो-कम ख़्वाब क तकिया।।



یہ تکیہ دیکھکر بولے پتامہ اسطرح ہنسکر
اسی کی شان کا تکیہ ہو جیسا ہے مرا بستر

نہیں ہے ایسے تکیہ کی ضرورت جاؤ لے جاؤ
مرے بستر کے جیسا کوئی تکیہ ہو تو لے آؤ

کسی کی سمجھ میں نہیں آرہا تھا۔ کہ آخر بھیشم پتامہ کا مطلب کیا ہے۔ اور کس قسم کے تکیہ کی ضرورت ہے۔ لہذا اس گرہ کو ارجن اس طرح کھولتا ہے۔

معاً دو تیر ارجن نے کماں سے اسطرح جوڑا
پتامہ کے سرہانے پھر کماں کو کھینچکر چھوڑا

کماں سے یک بیک دو تیر اک طوفان سے نکلے
زمیں پر گڑ کے تکیہ بن گئے اس شان سے نکلے

گنگا کی کوکھ سے جنم لینے والا اعظیم فرزند، بھیشم پتامہ جسنے اپنے پتا کی خواہش نفس پر اپنی آرزو بھری زندگی کا بلیدان دے کر عورت اور لذات اور شہوت سے ہمیشہ ہمیشہ کیلئے دور رہنے کا وچن دے چکا تھا۔ آج وہی ایثار و قربانی کا نہ مٹنے والا کردار تیروں کی سیج پر لیٹا ہوا تشنگی سے بے چین ہے اور بار بار اپنی پوتر ماتا گنگا میا کو یاد کر رہا ہے

زباں کو خشک لب پر پھیر کر ارشاد فرمایا
تقدس بخش اپنی گنگا ماں کو یاد فرمایا

یہ سنکر دوسرا دھرتی پر تیر ارجن نے پھر مارا
ابل اٹھا زمیں سے گنگا جل کا ایک فوارہ

زمیں سے نکلا پھر اس شان سے فوارہ مضطر
پتامہ کے دہن تک دھار پہنچی اسکی بل کھا کر

چکرویو کے باب سے چند اشعار۔

چکرویو کا مورچہ یعنی مکمل منصوبہ جنگ جسکا موجد درونا چاریہ جیسا صاحب سیف و قلم تو تھا ہی مگر آج اس مورچے کی کمان جیدرتھ نے سنبھالی تھی، چونکہ شکست چکرویو کا فن سوائے ارجن کے کسی کو بھی معلوم نہ تھا۔ مگر ارجن ایسے مورچہ پر لڑ رہا تھا جہاں سے شام سے پہلے واپسی کا یارا نہ تھا۔ اس سے فائدہ اٹھا کر چکرویو کا اعلان کر دیا گیا لیکن کوروگن کو معلوم نہ تھا کہ شیر کا بیٹا شیر ہی ہوتا ہے ابھیمنیو جیسا کمسن سورما جو ایک طرف شری بلدیو جی اور کرشن جی کا خواہر زادہ ہے تو دوسری طرف ویر ارجن اور سبھدرا جی کا پتر ہے وہ اس بات کو کیسے گوارا کرتا کہ بغیر لڑے ہوئے آسانی سے شکست تسلیم کرے اور اسکے بعد ہی

ابھیمنیو مسلح ہو کے سینہ تان کر نکلا
گلے ملنے قضا سے جی میں اپنے ٹھان کر نکلا

بڑھا عزم و یقیں کے ساتھ میدان شجاعت میں
کوئی عنصر جبانت کا نہ تھا اس کی جبلت میں

यह तकिया देखकर बोले पितामह इस तरह हंसकर।
इसी की शान का तकिया हो जैसा है मेरा बिसतर।।

नहीं है ऐसे तकिये की ज़रूरत जाओ ले जाओ।
मेरे बिसतर के जैसा कोई तकिया हो तो ले आओ।।

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर भीष्म पितामह का मतलब क्या है। और किस क़िस्म के तकिये की ज़रूरत है। लेहःज़ा उस ग्रह को अर्जुन इस तरह खोलता है।

मअन दो तीर अर्जुन ने कमाँ से इस तरह जोड़ा।
पितामह के सिरहाने फिर कमाँ को खींचकर छोड़ा।।

कमाँ से यक-बयक दो तीर इक तूफ़ान से निकले।
ज़मीं पर गड़ के तकिया बन गए इस शान से निकले।।

गंगा की कोख से जन्म लेने वाला अज़ीम फ़रज़न्द, भीष्म पितामह जिसने अपने पिता की ख़्वाहिशे-नफ़्स पर अपनी आरज़ू भरी ज़िन्दगी का बलीदान दे कर औरत और लज़्ज़ात और शहवत से हमेशा हमेशा के लिए दूर रहने का वचन दे चुका था। आज वही ईसार व कुर्बानी का न मिटने वाला किरदार तीरों की सेज पर लेटा हुआ तिशनगी से बे चैन है और बार बार अपनी पवित्र माता गंगा मैया को याद कर रहा है।

ज़बान को खुश्क लब पर फेर कर इरशाद फ़रमाया।
तक़द्दुस बख़्श अपनी गंगा माँ को याद फ़रमाया।।

यह सुनकर दूसरा, धरती पर तीर अर्जुन ने फिर मारा।
उबल उठ्ठा ज़मीं से गंगा जल का एक फ़व्वारा।।

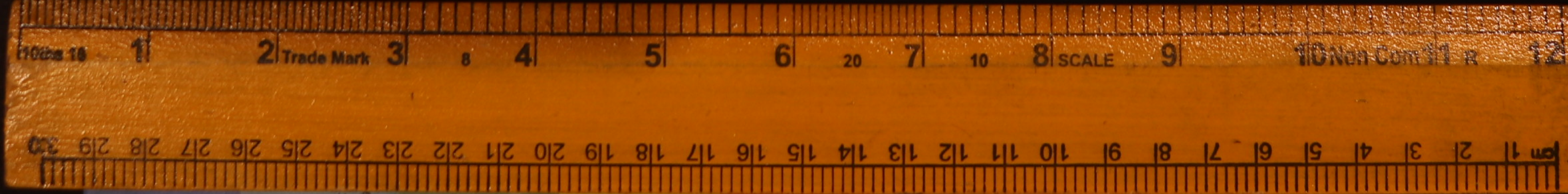
ज़मीं से निकला फिर इस शान से फ़व्वारए-मुज़तर।
पितामह के दहन तक धार पहुँची उसकी बल खाकर।।

चक्रव्यूह के बाब से चंद अशआर।

चक्रव्यूह का मोर्चा यानी मुकम्मल मनसूबाए-जंग जिसका मौजिद द्रोणाचार्य जैसा साहबे-सैफ़ो-क़लम तो था ही, मगर आज इस मोर्चे की कमान जयद्रथ ने संभाली थी, चूँकि शिकस्त चक्रव्यूह का फ़न सिवाए अर्जुन के किसी को भी मालूम न था। मगर अर्जुन ऐसे मोर्चे पर लड़ रहा था जहाँ से शाम से पहले वापसी का यारा ना था। इस से फ़ायदा उठा कर चक्रव्यूह का ऐलान कर दिया गया लेकिन कौरवगण को मालूम न था कि शेर का बेटा शेर ही होता है। अभिमन्यू जैसा कमसिन सूरमा जो एक तरफ़ श्री बलदेवजी और कृष्ण जी का ख़्वाहिर ज़ादा है तो दूसरी तरफ़ वीर अर्जुन और सुभद्राजी का पुत्र है वह इसबात को कैस गवारा करता कि बग़ैर लड़े हुए आसानी से शिकस्त तसलीम कर ले और इसके बाद ही

अभिमन्यू मुसल्लाह होके सीना तान कर निकला।
गले मिलने क़ज़ा से जी में अपने ठान कर निकला।।

बढ़ा अज़मो-यक़ीं के साथ मैदाने-शुजाअत में।
कोई उनसर जबानत का न था उसकी जबिल्लत में।।



کماں تھی ہاتھ میں، ترکش کا بنڈل پشت پر ڈالے
زرہ تھی زیبِ تن لٹکے ہوئے تھے تیغ اور بھالے

کھبا جاتا تھا دل میں، ہر روش پر بانکپن اسکا
قدم کو چومنے خود بڑھ رہا ہو جیسے رن اس کا

ابھیمنو کے تیور اور اندازِ رزم آرائی سے پریشان ہو کر سارے بڑے بڑے سردار متحد ہو کر ایک ساتھ حملہ کرتے ہیں

اکیلی جان پر دھاوا سبعۂ شیرانِ وغا کا تھا
خدنگ و قوس کی یورش کا وہ منظر بلا کا تھا

کسی جانب سے کرپا اور کسی جانب سے دریودھن
بڑھے سمتِ ابھیمنو، درونہ، کرن، ددشاشن

غرض کوروں کے نرغے میں ابھیمنو تھا ایستادہ
کہ جیسے شیر پر ہوں بھیڑیے یورش پہ آمادہ

نہ جانے تن پہ اپنے کھا چکا تھا زخم وہ کتنے
بہ ہر لمحہ قریب آتے رہے شیطان کے فتنے

اچانک اسکے سینے پہ لگی اک ضرب پھر ایسی
کہ غش کھا کر ابھیمنو گرا اور کانپ اٹھی دھرتی

مبارک باد ایسی موت پر اور ایسے جینے پر
جو مر جائے وغا میں زخم کھا کر اپنے سینے پر

دھرم کا بیٹا یدھشٹر جسنے اپنی زندگی میں کبھی جھوٹ نہ بولا تھا لیکن جب درونہ چاریہ نے اپنے بیٹے اشوتھاما کے مرنے کی خبر کی تصدیق کے لیے یدھشٹر کو بلوایا اور پوچھا

یدھشٹر سچ بتا متھیا سے تو، تو دور رہتا ہے
جو سچی بات ہوتی ہے وہی بر وقت کہتا ہے

بتا مجھکو مرا فرزند کیا مارا گیا رن میں
مرے نورِ نظر کی روح کیا باقی نہیں تن میں

یدھشٹر گومگو میں پڑ گیا اس بات کو سن کر
کہ آخر دے درونہ چاریہ کو کون سا اتر

ضمیر اس بات پر راضی نہ تھا کہ جھوٹ وہ بولے
خود اپنے ہاتھ زہرِ کذب جامِ زیست میں گھولے

درونہ چاریہ کے مرجانے کے بعد اشوتھاما نہایت غیظ و غضب کے عالم میں پانڈوؤں کی طرف بڑھا اور یدھشٹر سے مخاطب ہو کر کہا

کہا اُسنے یہ پانڈو سے کہ تم سب ہو بڑے کمتر
درونہ کو ہے مارا میرے مرنے کی خبر دے کر

اب اُنکے بعد جینا میرا مرنے کے برابر ہے
یہ ہتیا اک قیامت کے گزرنے کے برابر ہے

مگر اک بات تو مجھکو بتا اے دھرم کے رکشک
یہی ست ہے تو کسکو متھیا بولیں کسے پاتک

कमाँ थी हाथ में तरकश का बंडल पुश्त पर डाले।
ज़रह थी ज़ेबे-तन, लटके हुए थे तेग़ और भाले।।

खुबा जाता था दिल में, हर रविश पर बांकपन उसका।
क़दम को चूमने खुद बढ़ रहा हो जैसे रण उसका।।

अभिमन्यू के तेवर और अंदाज़े-रज़्म आराई से परेशान हो कर सारे बड़े बड़े सरदार मुत्तहिद होकर एक साथ हमला करते हैं।

अकेली जान पर धावा सबआ शेराने-वग़ा का था।
ख़दंगो-क़ौस की यूरिश का वह मंज़र बला का था।।

किसी जानिब से कृपा, और किसी जानिब से दुर्योधन।
बढ़े सम्ते-अभिमन्यू, द्रोणा, कर्ण, दुश्शाषन।।

ग़रज़ कौरों के नरग़े में अभिमन्यू था इस्तादा।
कि जैसे शेर पर हों, भेड़िए यूरिश पे आमादा।।

न जाने तन पे अपने खा चुका था ज़ख़्म वह कितने।
बहर लम्हा क़रीब आते रहे, शैतान के फ़ितने।।

अचानक उसके सीने पे लगी इक जर्ब फिर ऐसी।
कि ग़श खाकर अभिमन्यू गिरा और काँप उठी धरती।।

मुबारक बाद ऐसी मौत पर और ऐसे जीने पर।
जो मर जाए वग़ा में ज़ख़्म खाकर अपने सीने पर।।

धर्म का बेटा युधिष्ठिर जिसने अपनी ज़िन्दगी में कभी झूठ न बोला था, लेकिन जब द्रोणाचार्य ने अपने बेटे अश्वत्थामा के मरने की ख़बर की तसदीक़ के लिए युधिष्ठिर को बुलवाया और पूछा।

युधिष्ठिर सच बता मिथ्या से तू तो दूर रहता है।
जो सच्ची बात होती है वही बर वक़्त कहता है।।

बता मुझको मेरा फ़रज़न्द क्या मारा गया रण में।
मेरे नूरे-नज़र की रूह क्या बाक़ी नही तन में।।

युधिष्ठिर गोमगो में पड़ गया इस बात को सुनकर।
कि आख़िर दे द्रोणाचार्य को कौन सा उत्तर।।

ज़मीर इस बात पर राज़ी न था के झूठ वह बोले।
खुद अपने हाथ ज़हरे-किज़्ब जामे-ज़ीस्त में घोले।।

द्रोणाचार्य के मरजाने के बाद अश्वत्थामा निहायत ग़ैज़ो-ग़ज़ब के आलम में पान्डवों की तरफ़ बढ़ा और युधिष्ठिर से मुख़ातिब होकर कहा।

कहा उसने यह पान्डव से के तुम सब हो बड़े कम तर।
द्रोणा को है मारा मेरे मरने की ख़बर देकर।।

अब उनके बाद जीना मेरा मरने के बराबर है।
यह हत्या इक क़यामत के गुज़रने के बराबर है।।

मगर इक बात तू मुझको बता ऐ धर्म के रक्षक।
यही सत्य है तो बोलें किसको मिथ्या और किसे पातक।।

دکھایا خوب سچائی کا منظر کم نظر تو نے — دیا اچھا صلہ، اپنے گرو کو مار کر تو نے
بتا اے لالچی، ہے کتنے دن کا راج اور شاسن — بتا اے دھرم کے بیٹے یہی ہے دھرم کا پالن
حیا کا نام لیکر، بے حیائی تو نے دکھلائی — گرو سے چھل، ارے ظالم، تجھے غیرت نہیں آئی

کرن کے رتھ کا چاک پرتھوی کے سینے میں جکڑا ہوا ہے۔ اور شری کرشن جی کرن کو نہتا دیکھ کر ارجن سے کہتے ہیں

اٹھا تیر و کماں اور چھید دے اب کرن کا سینہ — بھرا ہے پانڈووں کے واسطے جس میں بہت کینہ
سنی جس وقت کیشو مورتی کی کرن نے باتیں — سمجھ میں آگئیں سب چھل کپٹ اور مکر کی گھاتیں
پکارا کرن نے، ارجن شما کر اور ذرا دم لے — پھنسا ہے پرتھوی میں میرا رتھ، اے سورما دم لے
کرے یورش، نہتوں پر یہ شیوا کب ہے مردوں کا — طریقہ یہ ہے سفاکوں کا اور آوارہ گردوں کا
تجھے میں جانتا ہوں، تو نہ کائر ہے نہ بزدل ہے — نہتے پر کریگا وار، یہ تو اور مشکل ہے
علاوہ اسکے میں اے شیام مرنے سے نہیں ڈرتا — ادائے فرضِ حق کو پورا کرنے سے نہیں ڈرتا
مجھے معلوم ہے جو ویر مرتا ہے سرِ میداں — سورگی ہوتا ہے، میرا عقیدہ اور ہے ایماں
علاوہ اسکے مجھکو دھرم سے ہٹکر نہ تم مارو — یہ بازی جیت کر سچائی کی بازی نہ تم ہارو

کرن کی یہ باتیں سن کر شری گھنشام جی نے کہا۔

شری گھنشام جی نے کرن کی باتیں سنی جس دم — کرودھت ہو کے بولے کیا تجھے وہ یاد ہے عالم
کہ جب پانڈو کو لاکھی گھر میں تم سب نے جلایا تھا — وہ لڈو بھیم نے کیا زہر کا خود ہو کے کھایا تھا
بتاؤ تو جوا جیتا تھا کیا سچائی سے تم نے — ابھیمنو مرا تھا سچ کہو، کیا دھرم کی رو سے
علاوہ چیر تم لوگوں نے پنچالی کی کھینچی تھی — یہ حرکت، ایک میں کیا، ساری دنیا ہی نے دیکھی تھی
تجھے اسوقت اپنے دھرم کا مطلق نہ ہوش آیا — نہ سچائی کی غیرت اور حمیت ہی کو جوش آیا
بتا اے کرن مجھکو، کل کہاں تھا دھرم یہ تیرا — بہت دن بعد ڈالا دھرم نے دل میں ترے ڈیرا

दिखाया खूब सच्चाई का मंज़र कम नज़र तूने।
दिया अच्छा सिला, अपने गुरू को मार कर तूने।।

बता ऐ लालची है, कितने दिन का राज और शासन।
बता ऐ धर्म के बेटे, यही है धर्म का पालन।।

हया का नाम लेकर, बेहयाई तूने दिखलायी।
गुरू से छल, अरे ज़ालिम, तुझे ग़ैरत नहीं आयी।।

कर्ण के रथ का चाक पृथ्वी के सीने में जकड़ा हुआ है। और श्री कृष्ण जी कर्ण को निहता देखकर अर्जुन से कहते हैं।

उठा तीरो-कमाँ और छेद दे अब कर्ण का सीना।
भरा है पान्डुवों के वास्ते जिस में बहुत कीना।।

सुनी जिस वक़्त केशवमूर्ति की कर्ण ने बातें।
समझ में आगई सब, छलकपट और मक्र की घातें।।

पुकारा कर्ण ने, अर्जुन क्षमा कर और ज़रा दम ले।
फंसा है पृथ्वी में मेरा रथ, ऐ सूरमा दम ले।।

करे यूरिश, निहतों पर, यह शेवा कब है मर्दों का।
तरीक़ा यह है सफ़्फ़ाकों का और आवारा गर्दों का।।

तुझे मैं जानता हूँ, तू न कायर है, न बुज़दिल है।
निहत्ते पर करेगा वार, यह तो और मुश्किल है।।

अलावा इसके मैं, ऐ श्याम मरने से नहीं डरता।
अदाए-फ़र्ज़े-हक़ को पूरा करने से नहीं डरता।।

मुझे मालूम है जो वीर मरता है सरे-मैदाँ।
स्वर्गी होता है, मेरा अक़ीदा और है इमाँ।।

अलावा इसके मुझको धर्म से हटकर न तुम मारो।
यह बाज़ी जीत कर सच्चाई की बाज़ी न तुम हारो।।

कर्ण की यह बातें सुन कर श्री घनश्याम जी ने कहा।

श्री घनश्याम जी ने कर्ण की बातें सुनी जिस दम।
क्रोधित होके बोले क्या तुझे वह याद है आलम।।

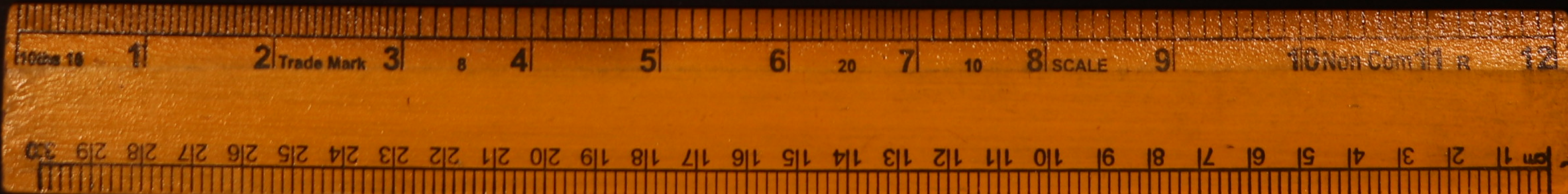
के जब पान्डव को लाखी घर में तुम सब ने जलाया था।
वह लड्डू भीम ने क्या ज़हर का खुद हो के खाया था।।

बताओ तो जुआ जीता था क्या सच्चाई से तुम ने।
अभिमन्यू मरा था सच कहो, क्या धर्म की रू से।।

अलावा चीर तुम लोगों ने पंचाली की खींची थी।
यह हरकत, एक मैं क्या, सारी दुनिया ही ने देखी थी।।

तुझे उस वक्त अपने धर्म का मुतलक न होश आया।
न सच्चाई की ग़ैरत और हमैयत ही को जोश आया।।

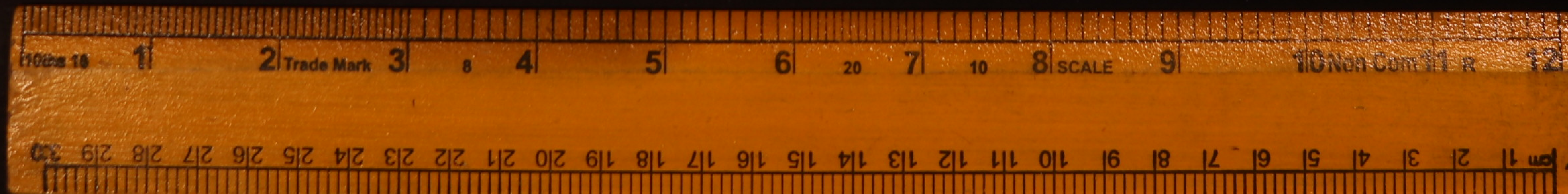
बता ऐ कर्ण मुझको, कल कहाँ था धर्म यह तेरा।
बहुत दिन बाद डाला धर्म ने दिल में तेरे डेरा।।



اردو مہابھارت کی تیاری میں جس کتاب سے
استفادہ کیا گیا وہ ہے **"مہابھارت بھاشا"**
ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنف ہیں ملک کے
مشہور دانشور پنڈت **جوالا پرشادجی مشرا**،
مرادآبادی۔

उर्दू महाभारत की तैयारी में, जिस किताब से मदद ली गई, वह है **"महाभारत भाषा"** हिन्दी पुस्तकालय मथुरा, जिस के लेखक हैं, मुल्क के मशहूर विद्वान पंडित **श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मिश्र**, मुरादाबादी।





اردو مہابھارت کی تیاری میں جس کتاب سے استفادہ کیا گیا، وہ ہے **"مہابھارت بھاشا"** ہندی پستکالیہ متھرا، جس کے مصنّف ہیں ملک کے مشہور دانشور پنڈت **جوالا پرشاد جی مشرا،** مراد آبادی۔

उर्दू महाभारत की तैयारी में, जिस किताब से मदद ली गई, वह है **''महाभारत भाषा''** हिन्दी पुस्तकालय मथुरा, जिस के लेखक हैं, मुल्क के मशहूर विद्वान पंडित **श्रीयुत ज्वालाप्रसादजी मिश्र,** मुरादाबादी।





عرضِ مصنّف

دنیائے شعر و ادب کی تاریخ میں دو شاہکار سامنے آئے ہیں۔ ایک وہ شاہنامہ جو ایک ہزار سال قبل دقیقی۔ اسدی اور فردوسی نے لکھا (دیکھئے اردو ترجمہ تاریخ فرشتہ۔ صفحہ ۶۵ اور ۶۶ مطبع منشی نول کشور لکھنؤ ۱۹۳۳ء) اور دوسرا حفیظ جالندھری کا شاہنامۂ اسلام جو اسلام کے ابتدائی عہد کی تاریخ ہے اور تیسرا شاہنامہ چالیس سال سے شاہنامۂ ہند کے نام سے قومی یکجہتی کے نقطۂ نگاہ سے لکھا جا رہا ہے جس میں جین دھرم، بودھ دھرم اور سناتن دھرم کے ساتھ ساتھ اسلام دھرم کا بھی احاطہ کیا گیا ہے۔ اب تک اس کی سات جلدیں مکمل ہو چکی ہیں۔ جن میں بیس ہزار اشعار مغل بادشاہ شاہجہاں تک لکھے جا چکے ہیں۔ اس کا پہلا حصہ اردو مہابھارت ہے جو آپ کے ہاتھ میں ہے۔ مورّخین کی نگاہ میں یہ فرضی داستان سہی لیکن میں ایسا نہیں سمجھتا۔ میرے نزدیک اس کی بڑی اہمیت ہے۔ کیونکہ قدیم ہندوستانی تہذیب و تمدن اور سناتن دھرم کی یہی داستان آئینہ دار ہے۔ جس کو میں نے ہندی اور سنسکرت کے مشہور عالم پنڈت جوالا پرساد مشر مراد آبادی کی تصنیف مہابھارت بھاشا سے بڑی جانفشانی اور پوری دیانتداری سے نظم کیا ہے۔ اس داستان کو ہند کی بڑی اکثریت پورے یقین اور دل کی گہرائیوں کے ساتھ سچ سمجھتی ہے۔ تو مجھے یا کسی اور کو اسے فرضی داستان کہنے کا کیا حق پہنچتا ہے

شاہنامۂ ہند کا دوسرا حصہ شاہنامۂ ہند بشمول ہندو عہد حکومت ۶۰۰ قبل مسیح سے شروع ہوتا ہے۔ اس میں جین اور بودھ مذاہب کے تذکرے کے بعد اجات شترو اور شیش ناگ خاندان کا ذکر ہے۔ اس کے بعد ہند پر یونان و فارس کی یورش سکندر اور پورس کی جنگ، چندر گپت موریہ اور اشوک کا زمانہ، شُنگ و کانو اور آندھرا خاندان کا تذکرہ، سلطنت مگدھ کا خاتمہ، یونانی اور ستھین قوم کے حملے، کنشک کا دورِ حکومت، اس کے علاوہ پُرانوں کا زمانہ جو ۳۲۰ عیسوی سے ۸۰۰ سن عیسوی تک ہوتا ہے

اس میں چندر گپت اوّل، سمدر گپت چندر گپت ثانی چینی سیّاح فاہیان کی آمد،

✧ प्रस्तावना ✧

दुनिया-ए-शेर व अदब के इतिहास में दो शाहकार सांमने आए हैं। एक वह शाहनामा, जो एक हज़ार साल पहले दक़ीक़ी, असदी और फिरदौसी ने लिखा (देखिए उर्दू तर्जुमा तारीखे़-फ़रिश्ता सफ़हा (पृष्ठ ६५ और ६६ मतबा मुनशी नवल किशोर लखनऊ १९३३) और दूसरा हफ़ीज़ जालंधरी का शाहनामा-ए-इसलाम जो इसलाम के इब्तेदाई अहद की तारीख़ है। और तीसरा शाहनाम चालीस साल से शाहनामा-ए-हिन्द के नाम से कौमी एकता के नुकतए-निगाह से लिखा जा रहा हैं। जिस में जैन धर्म, बौध्द धर्म और सनातन धर्म के साथ साथ इसलाम धर्म का भी इतिहास है। अबतक इस के सात भाग हो चुके हैं। जिन में बीस हज़ार (२०,०००) अशआर मुग़ल बादशाह शाहजहाँ तक लिखे जा चुके हैं। इस का पहला भाग उर्दू महाभारत हैं जो आप के हाथ में है। इतिहास कारों की निगाह में यह फ़र्ज़ी दास्तान सही लेकिन मैं ऐसा नहीं समझता। मेरे नज़दीक इसकी बड़ी अहमियत है क्यूँकि क़दीम हिन्दुस्तानी तहज़ीब व तमद्दुन और सनातन धर्म की यही दास्तान आईना दार है। जिस को मैं ने हिन्दी और संस्कृत के मशहूर आलिम पंडित ज्वाला प्रसादजी मिश्र मुरादाबादी की किताब "महाभारत भाषा" से बड़ी जांफ़िशानी और पुरी दयानत दारी से नज़्म किया है। इस दास्तान को हिन्द की बड़ी अक्सरियत पूरी यकीन और दिल की गहराइझों के साथ सच समझती है। तो मुझे या किसी और को इसे फ़र्ज़ी दास्तॉन कहने का क्या हक़ पहुंचता है।

शाहनामा-ए-हिन्द का दूसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द बशमुल हिन्दू अहदे-हुकूमत ६०० साल क़ब्ले-मसीह से शुरू होता है। इसमें जैन और बौध्द धर्मो के इतिहास के बाद अजात, शत्रू और शीश नाग ख़ानदान का ज़िक्र है। इसके बाद हिन्द पर यूनान व फ़ारस का आक्रमण, सिकन्दर और पोरस की जंग, चंद्र गुप्त मोर्या और अशोक का ज़माना, शुंक व कानू और आन्ध्र ख़ानदान का तज़केरा, सलतनते-मगध का ख़ातमा, यूनानी और सथीन क़ौमों के हमले, कनिश्क का दौरे-हुकूमत, इस के अलावा पुराणों का ज़माना जो ३२० इसवी से ८०० सने-इसवी तक होता है।

इस में चंद्रगुप्त अव्वल,समुद्र गुप्त, चंद्रगुप्त सानी, चीनी सय्याह फ़ाहियान की आमद

سفید ہونوں کے حملے اور ہرش وردھن شلادتیہ کا شاندار دورِ حکومت کا تذکرہ نہایت تفصیل سے کیا گیا ہے۔ ہرش وردھن کے بعد ہندوستان کے طوائف الملوکی کا شکار ہوتے ہی راجپوتوں کی ترقی وارتقاء کا زمانہ شروع ہو جاتا ہے۔ جو ۸۰۰ سن عیسوی سے بارہ سو سن عیسوی تک نہایت جاہ وجلال کے ساتھ راجپوت حکمرانی کے فرائض انجام دیتے ہیں۔ علاوہ اس کے جنوبی ہند میں دکن کے راشٹر کوٹوں، یادو، ہوشیل اور کاتکے خاندان کے ساتھ ہی ساتھ چول چیرا اور پانڈیہ خاندان کا تذکرہ کیا گیا ہے۔ اور آخر میں جنوبی ہند میں عربوں کی تجارتی سرگرمیوں پر بھی روشنی ڈالی گئی ہے۔!

شاہنامۂ ہند کا تیسرا حصہ شاہنامۂ ہند بشمول مسلم عہد حکومت محمد ابن قاسم کے حملے سے شروع ہوتا ہے۔ محمد ابن قاسم کا پس منظر بیان کرنے کے لیے عربستان کی مسلم عہد کی تاریخ کا تفصیلی خاکہ پیش کیا گیا ہے۔ جس میں حضور سرورِ کائنات صلی اللہ علیہ وسلّم کی ولادت سے وصال تک کے واقعات اور خلفائے راشدین سے لیکر اموی خلفیہ عبدالملک بن مروان تک کے تمام حالات واقعات کو کہیں اختصار اور کہیں تفصیل کے ساتھ نظم کیا گیا ہے۔

شاہنامۂ ہند کا چوتھا حصہ سلطان شہاب الدین غوری سے شروع ہوتا ہے۔ جس کا پس منظر بیان کرتے ہوئے شہاب الدین کی پرتھوی راج چوہان سے جنگ، قطب الدین ایبک، شمس الدین التمش، رضیہ سلطانہ تک کے واقعات کے ساتھ ساتھ سلطان ناصر الدین اور غیاث الدین بلبن کا احاطہ کیا گیا ہے۔ یہ خاندان ۹۲ سال تک برسرِ اقتدار رہا۔ اور غیاث الدین بلبن غلام خاندان کا آخری حکمراں ثابت ہوا۔

شاہنامۂ ہند کا پانچواں حصہ علاؤالدین خلجی سے شروع کیا گیا ہے۔ جس میں تغلق خاندان غیاث الدین تغلق وفیروز شاہ تغلق تک، تیمور لنگ کی آمد اور اس کی آمد سے تباہ کاریوں کے بعد سیدوں کا خاندان شروع ہوتا ہے۔ بعد ازاں لودھی خاندان کے حکمرانوں، بہلول لودھی، سکندر لودھی، ابراہیم لودھی کا تذکرہ کیا گیا ہے۔ آخر میں مغل بادشاہ ظہیر الدین بابر ہمایوں اور شیر شاہ سوری پر پانچواں حصہ ختم ہوتا ہے۔

شاہنامۂ ہند کا چھٹواں حصہ ہندوستان میں مختلف علاقائی حکومتوں پر مشتمل ہے جس میں دکن کا

सफ़ीद हुनों के हमले और हर्षवर्धन शिलादत्य का शानदार दौरे-हुकूमत का तज़केरा निहायत तफ़सील से किया गया है। हर्षवर्धन के बाद हिन्दुस्तान के तवाएफुल मलूकी का शिकार होते ही राजपूतों की तरक़्क़ी व इरतेक़ा का ज़माना शुरू हो जाता है। जो ८०० सने-ईसवी से बारह सौ सने-ईसवी तक निहायत जाह व जलाल के साथ राजपूत हुकमेरानी के फ़राएज़ अंजाम देते हैं। अलावा इसके जुनूबी हिन्द में दकन के राष्ट्र कोटों, यादव, होशील और कातके ख़ानदान के साथ ही साथ चोल, चीरा और पांडिया ख़ानदान का तज़केरा किया गया है, और आख़िर में जुनूबी हिन्द में अरबों की तिजारती सरगरमियों पर भी रोशनी डाली गई हैं।

शाहनामा-ए-हिन्द का तीसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द बशमूल मुसलिम अहदे-हुकूमत, मोहम्मद इब्न क़ासिम के हमले से शुरू होता है। मोहम्मद इब्न क़ासिम का पसमंज़र बयान करने के लिए अरबस्तान की मुसलिम अहद की तारीख़ का तफ़सीली ख़ाका पेश किया गया है। जिसमें हुज़ूर सरवरे-कायनात सललल्लाहों अलैहे वसल्लम की विलादत से विसाल तक के वाक़्यात और खुलफ़ा-ए-राशेदीन से लेकर उमवी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान तक के तमाम हालात व वाक़्यात को कहीं इख़्तिसार और कहीं तफसील के साथ नज्म किया गया है।

शहनामा-ए-हिन्द का चौथा भाग सुलतान शहाबुद्दीन ग़ौरी से शुरू होता है। जिस का पस मंज़र बयान करते हुए शहाबुद्दीन की पृथ्वी राज चौहान से जंग, कुत्बउद्दीन ऐबक, शमसुद्दीन अलतमश, रज़िया सुलताना तक के वाक़्यात के साथ साथ सुलतान नासिरूद्दीन और गयासुद्दीन बिलबन का अहाता किया गया है। यह ख़ानदान ९२ साल तक बरसरे-इक़्तिदार रहा और गयासुद्दीन बिलबन, गुलाम खान्दान का आख़री हुक्मेराँ साबित हुआ।

शाहनामा-ए-हिन्द का पाचवाँ भाग अलाऊद्दीन ख़िलजी से शुरू किया गया है जिस मे तुगलक़ खान्दान, गयासुद्दीन तुगलक़ व फ़िरोज़शाह तुगलक़ तक, तैमूर लंग की आमद और उसकी आमद से तबाह कार्यो के बाद सय्यदों का खान्दान शुरू होता है इसके बाद लोधी खान्दान के हुकमेरानों, बहलूल लोधी, सिकन्दर लोधी, इब्राहीम लोधी का तज़केरा किया गया है।

आख़िर में मुगल बादशाह जहीरूद्दीन बाबर, हुमायूँ और शेर शाह सूरी पर पाचवाँ भाग समाप्त होता है।

शाहनामा-ए-हिन्द का छटवाँ भाग हिन्दुस्तान में मुख़्तलिफ़ इलाकाई हुकूमतों पर मुश्तमिल है जिस में दकन का



بہمنی خاندان، بنگال کی مسلم حکومتیں، گجرات، کشمیر، مالوہ، خاندیش وغیرہ کی مسلم حکومتوں کا تذکرہ شامل ہے۔

شاہنامہ کا ساتواں حصہ مغل شہنشاہ ہمایوں سے شروع ہو کر جلال الدین اکبر اور جہانگیر پر ختم ہوتا ہے۔

شاہنامہ ہند کا آٹھواں حصہ شاہجہاں سے شروع کر دیا گیا ہے۔ ان تمام واقعات کو میں نے مستند کتابوں اور متعدد مورخین و محققین کے بیانات کو سامنے رکھ کر شعر کے قالب میں ڈھالا ہے۔ علاوہ اس کے ہر دور کی معاشی، سماجی اور سیاسی سرگرمیوں کے ساتھ ساتھ زراعت اور صنعت و حرفت پر بھی روشنی ڈالی گئی ہے۔

علاوہ ازیں تذکرے میں شامل تمام حکمرانوں کا سنِ ولادت، تاریخ تخت نشینی، تاریخ وفات کے علاوہ تمام مشہور جنگوں کے واقعات، ان کی تاریخ، افواج کی تعداد، جن میں گھوڑے سوار، پیادے وغیرہ شامل ہیں کا احاطہ کرتے ہوئے تمام حالات کو اشعار میں ڈھالا گیا ہے۔ میں نے افسانوی طرز کے واقعات و حالات کو اپنے اس شاہنامہ ہند میں کوئی جگہ نہیں دی ہے۔!

شاہنامہ کے سلسلے میں لوگ تقابل کی بات کرتے ہیں آخر تقابل کس سے ؟ ہاں اگر محنت اور کام کے تقابل کی بات ہے تو میں یہ کہنے کی جسارت کر سکتا ہوں کہ میں نے دیگر شاہناموں سے سینکڑوں گنا زیادہ محنت کی ہے۔ اور اس میں مجھے سینکڑوں کیا بلکہ ہزاروں چھوٹے بڑے راجے مہاراجے اور شہنشاہوں سے واسطہ ہے۔ اور چھ ہزار سال سے لیکر آج تک کی تاریخ میرے سامنے ہے اور واقعات کی چھان بین میں متعدد مورخین ہیں جن کے بیانات ایک دوسرے سے مختلف ہیں، ہندو مورّخین کچھ کہتے ہیں تو مسلم مورخین کچھ اور انگریز مورخین نے الگ گل افشانیاں کی ہیں علم داں حضرات جانتے ہیں کہ اس عالم میں صحیح واقعات کی تحقیق کر کے مواد جمع کرنا کتنا مشکل کام ہے۔

علاوہ اس کے ہندوستان اپنی وسعت کے لحاظ سے ایک وسیع ملک ہے۔ اگر ہم ہندوستان کے سیکڑوں ادوار کو چھوڑ کر صرف ۲۵ سال کا ایک دور متعین کر کے برصغیر کے نقشے پر نظر ڈالیں تو بیک وقت سرحد و کشمیر میں کئی حکمراں نظر آئیں گے تو پنجاب کے علاقہ میں چھوٹے بڑے کئی راجے مہاراجے فرمانروائی کرتے ہوئے دکھائی پڑیں گے۔

اسی طرح شمال و مشرق، یوپی، بہار، اڑیسہ، بنگال، آسام اور جنوبی ہند میں مدراس، میسور، کیرالا، آندھرا

बहमनी खान्दान, बंगाल की मुसलिम हुकूमतें, गुजरात, कशमीर, मालवाह, खानदेश वगैरह की मुसलिम हुकूमतों का तज़केरा शामिल है।

शाहनामा का सातवाँ हिस्सा मुगल शहंशह हुमायूँ से शुरू होकर जलालुददीन अकबर और जहाँगीर पर ख़त्म होता है।

शाहनामा-ए-हिन्द का आठवाँ हिस्सा शाहजहाँ से शुरू कर दिया गया है। इन तमाम वाक्यात को मैं ने मुस्तनद किताबों और मुतअद्दिद मुवर्रेख़ीन व मोहककेकीन के बयानात को सामने रख कर शेर के कालिब में ढाला गया है। अलावा इसके हर दौर की मॉशी, समाजी और सेयासी सर- गरमियों के साथ साथ ज़राअत और सिनअत व हिरफ़त पर भी रौशनी डाली गई है।

अलावा अज़ीं तज़करे में शामिल तमाम हुकमेरानों की सने-विलादत, तारीख़ तख़्त नशीनी, तारीख़ मृत्यु के अलावा तमाम मशहूर जंगों के वाक़्यात, उनकी तारीख़, अफ़वाज की तादाद, जिन में घोडेस्वार, प्यादे वगैरह शामिल हैं, का अहाता करते हुए तमाम हालात को अशार में ढाला गया है। मैंने अफ़सानवी तर्ज़ के वाक़्यात व हालात को अपने इस शाहनामा ए हिन्द में कोई जगह नहीं दी है।

शाहनामा के सिलसिले में लोग तकाबुल की बात करते हैं। आख़िर तकाबुल किस से ? हाँ अगर मेहनत और काम के तकाबुल की बात है तो मैं यह कहने की जसारत कर सकता हूँ कि मैं ने दीगर शाहनामों से सैकड़ों गुना ज़्यादा मेहनत की है, और इसमें मुझे सैकड़ों क्या बल्कि हज़ारों छोटे बड़े राजे महाराजे और शहंशाहों से वास्ता है, और छे हज़ार साल से लेकर आज तक की तारीख़ मेरे सामने है और वाक़्यात की छान बीन में मुतअद्दिद मुवर्रेख़ीन हैं। जिन के बयानात एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ हैं। हिन्दू मुवर्रेख़ीन कुछ कहते हैं तो मुसलिम मुवर्रेख़ीन कुछ और, अंग्रेज़ मुवर्रेख़ीन ने अलग गुल अफ़शानियाँ की हैं, इल्म दाँ हज़रात जानते हैं कि इस आलम में सही वाक़्यात की तहक़ीक़ करके मवाद जमा करना कितना मुश्किल काम है।

अलावा इस के हिन्दुस्तान अपनी वसअत के लेहाज़ से एक वसीअ मुल्क है। अगर हिन्दुस्तान के सैकड़ों अदवार को छोड़ कर सिर्फ़ २५ साल का एक दौर मुतअयन करके बर्रे-सग़ीर के नक़्शे पर नज़र डालें तो बयक वक़्त सरहद व कश्मीर में कई हुकमेराँ नज़र आएंगे, तो पंजाब के इलाक़े में छोटे बड़े कई राजे महाराजे फ़रमा रवाई करते हुए दिखाई पड़ेंगे।

इसी तरह शुमाल व मशरिक, यूपी, बिहार, उडिसा, बंगाल, आसाम और जुनूबी हिन्द में मद्रास, मैसूर, केरला, आन्ध्रा,

مہاراشٹر اور شمال مغرب میں راجپوتانہ، سندھ، گجرات، وغیرہ میں تو حکمرانوں کی ایک فوج نظر آئے گی ۔ اور انقلاباتِ زمانہ کا یہ عالم ہے کہ آج یہاں شورش اور طوفان برپا ہے تو دوسری جگہ بغاوت اور قتل و خونریزی کا بازار گرم ہے ۔ ایک تخت نشین ہوتا ہے تو دوسرے کا تختہ الٹ دیا جاتا ہے۔ ایک حکمراں دوسرے حکمران پر چڑھائی کرتا ہے تو تیسرا اس کی پشت پناہی میں میدانِ جنگ میں کود پڑتا ہے۔ ایک طوفان ہے جو آئے دن کسی نہ کسی مقام پر سر اٹھاتا ہے اور حالات و واقعات میں تبدیلی رونما ہوتی چلی جاتی ہے ۔

اب غور فرمائیے کہ ۲۵ سال کا ایک مختصر دور اور اس میں پچاسوں حکومت کا الٹ پھیر اتنی شدت سے ہو جاتا ہے تو چھ ہزار سالہ دورِ تاریخ میں جس میں سیکڑوں ادوار ہیں کتنے الٹ پھیر اور انقلابات رونما نہیں ہوئے ہوں گے ۔ غور کرو تو طبیعت پریشان ہو جاتی ہے ۔

ویسے عام طور سے یہ کہا جاتا ہے کہ تاریخ ایک خشک موضوع ہے۔ بجا ہے۔ اس میں لطف اور مزے کی بات تلاش کی جائے تو واقعی نہیں ملے گی ۔ یہ تخیلاتی، جذباتی یا رومانی و جنسی شاعری تو نہیں ۔ یہ تو تاریخ کا ایک ایسا چوکھٹا ہے جس کے دائرے میں رہ کر ہی حالات و واقعات کو نظم کیا گیا ہے ۔

ان قیود کے بعد ناقدین حضرات خواہ مخواہ حسد کی بنیاد یا کسی نہ کسی بہانے سے کانٹوں پر گھسیٹنا چاہیں گے تو یہ ظلم ہی ہو گا۔ یہ ایک ایسا کام ہے جس پر میں نے ۴۰ سال مسلسل محنت کی ہے۔ اگر واقعی اس کام پر محنت کی گئی ہے تو داد دیجیے ورنہ میں داد کا خواہاں بھی نہیں ۔

فروغ نقاش
مورخہ ۵ اپریل
۱۹۹۵ء

معذرت
کتابت اور کمپیوٹر کی خامیاں
نظر انداز فرمائیں

महाराष्ट्र और शुमाल मग़रिब में राजपुताना, सिन्ध, गुजरात वग़ैरह में तो हुकमेरानों की एक फ़ौज नज़र आएगी, और इन्क़ेलाबाते-ज़माने का यह आलम है कि आज यहाँ शोरिश और तूफ़ान बरपा है तो दूसरी जगह बग़ावत और क़त्ल व ख़ूँरेज़ी का बाज़ार गर्म है। एक तख़्त नशीन होता है तो दूसरे का तख़्ता उलट दिया जाता है। एक हुकमेराँ दूसरे हुकमेरान पर चढ़ायी करता है तो तीसरा उस की पुश्त पनाही में मैदाने-जंग में कूद पड़ता है। एक तूफ़ान है जो आए दिन किसी न किसी मुक़ाम पर सर उठाता है, और हालात व वाक़्यात में तबदीली रूनुमा होती चली जाती है।

अब ग़ौर फ़रमाइये के २५ साल का एक मुख़्तसर दौर और उसमें पचासों हुकूमतों का उलट फेर इतनी शिद्दत से हो जाता है, तो छे हज़ार साला दौरे इतिहास में, जिस में सैकड़ों अदवार हैं। कितने उलट फेर और इन्क़ेलाबात रूनुमा नहीं होते होंगे। ग़ौर करो तो तबियत परेशान हो जाती है।

वैसे, आम तौर से यह कहा जाता है कि इतिहास एक ख़ुश्क मौज़ू है। बजा है। इस में लुत्फ़ और मज़े की बात तलाश की जाए तो वाक़ई नहीं मिलेगी। यह तख़ैयुलाती, जज़्बाती या रूमानी व जिन्सी शायरी तो नहीं । यह तो इतिहास का एक ऐसा चौखटा है जिस के दायरे में रह कर ही हालात व वाक़्यात को नज़्म किया गया है।

इन क़ुयूद के बाद नाक़ेदीन हज़रात ख़्वाह मुख़्वाह हसद की बुनयाद पर किसी न किसी बहाने से काँटों पर घसीटना चाहेंगे तो यह ज़ुल्म ही होगा। यह एक ऐसा काम है जिस पर मैंने ४० साल मुसलसल मेहनत की है। अगर वाक़ई इस काम पर मेहनत की गई है तो दाद दीजिए वरना मैं दाद का ख़्वाहाँ भी नहीं।

फ़रोग़ नक्क़ाश
५ एप्रील १९९५

माज़िरत
किताबत और कंप्युटर की
ख़ामियाँ नजर अन्दाज़ फ़रमाएँ !



ایک ضروری بات

قارئین سے ایک ضروری بات یہ کہنی ہے کہ اس اردو
مہابھارت کے لکھنے کا ایک مقصد یہ بھی ہے کہ اردو داں طبقہ جو مہابھارت
سے ناواقف ہے وہ بھی ہندوستان کے اس عظیم ورثے سے مستفید ہو سکے۔

ہندی داں حضرات کیلئے اسے ہندی رسم الخط میں
لکھ کر مشکل الفاظ کے معنیٰ بھی لکھ دیئے گئے ہیں۔ تاکہ سمجھنے میں
آسانی ہو۔

एक ज़रूरी बात

क़ारेइन से एक ज़रूरी बात यह कहनी है कि उर्दू महाभारत के लिखने का एक मक़सद यह भी है कि उर्दूदाँ तबक़ा जो महाभारत से नावाक़िफ़ है वह भी हिन्दुस्तान के इस अज़ीम वरसे से मुस्तफ़ीद हो सके।

हिंदीदाँ हज़रात के लिए इसे हिंदी रस्मुलख़त में लिख कर मुश्किल अलफ़ाज़ के मायिने भी लिख दीये गये हैं, ताकि समझने में आसानी हो ।

فہرستِ عنوانات

विषय सूची













* * *
* *
*



مہابھارت

کا

طویل سلسلہ

महाभारत

का

तवील सिलसिला



ادوارِ عالم

دیارِ ہند کے کچھ صاحبانِ دانش وبینش
بیاں اس کرۂ ارضی کی یوں کرتے ہیں پیدائش

ہیں تحقیقاتِ عالم میں بھی کافی اختلاف انکے
نہ کوئی کر سکا ثابت انہیں اپنے دلائل سے

مہابھارت کے جیسی اور کتاب معتبر کوئی
بہ تخصیصِ عقائد ہندوالوں نے نہیں دیکھی

بیاں تیرہ ۱۳ طریقے کرتے ہیں اس ضمن میں دانا
مگر اہلِ دلائل نے کسی صورت نہیں مانا

مگر سارے ہنود اپنے عقائد میں ہیں پختہ تر
کیا ہے منقسم دنیا کو فرضی چار حصوں پر

ہے پہلا دور ست جگ دوسرا ہے جسکا تریتا یگ[۱]
دواپر تیسرا اور چوتھا کلجگ یہ ہیں چاروں یگ

جو پہلا دور ست جگ کا ہے اس کا عرصہ و مدت
ہے سترہ لاکھ اٹھائیس (۱۷۲۸۰۰۰) دہ صد سال اور سمیت

پھر اسکے بعد ثانی یگ تریتا نام ہے جس کا
ہے بارہ لاکھ نودہ شش (۱۲۹۶۰۰۰) ہزار اس یگ کا عرصہ

نوشتِ معتبر میں تیسرا یگ ہے دواپر کا
ہوا ہے آٹھ لکھ چونسٹھ (۸۶۴۰۰۰) ہزار اک سال کا عرصہ

ہے آخر دور کلجگ اور اس کلجگ کا کل عرصہ
بس اربعہ لاکھ اور بتیس (۴۳۲۰۰۰) دہ صد سال ہے اسکا

[۱] یہ ایک ایسا ادواری چکر ہے جو ہمیشہ ست جگ سے شروع ہو کر کل جگ پر ختم ہوتا ہے اور پھر ست جگ شروع ہو جاتا ہے۔

अदवारे - आलम

दयारे-हिन्द के कुछ साहबाने-दानिशो-बीनिश।
बयाँ इस कुर्र-ए-अरज़ी की, यूँ करते हैं पैदाईश।।

हैं तहक़ीक़ाते-आलम में भी, काफ़ी इख़्तेलाफ़ इनके।
न कोई कर सका साबित, उन्हें अपने दलायल से।।

महाभारत के जैसी और किताबे-मोअतबर कोई।
ब तख़सीसे-अक़ाएद, हिन्द वालों ने नहीं देखी।।

बयाँ, तेरह तरीक़े करते हैं इस ज़िम्न में दाना।
मगर अहले-दलायल ने किसी सूरत नहीं माना।।

मगर सारे हुनूद अपने अक़ाएद में हैं पुख़्ता तर।
किया है मुनक़सिम दुनिया को फ़र्ज़ी [१]चार हिस्सों पर।।

है पहला दौर, सत्य जुग, दूसरा है जिसका त्रेता युग।
द्वापर तीसरा, और चौथा कलिजुग, यह हैं चारों युग।।

जो पहला दौर, सत्य जुग का है इस का अर्सा-ओ-मुद्दत।
है सतरह (१७२८०००) लाख अठ्ठाइस दह सद साल और सम्बत।।

फिर इसके बाद सानी युग त्रेता नाम है जिस का।
है बारह (१२९६०००) लाख नो दह शश हज़ार इस युग का अरसा।।

नविश्ते-मोअतबर में तीसरा युग है द्वापर का।
हुआ है आठ (८६४०००) लख चौंसठ हज़ार एक साल का अरसा।।

है आख़िर दौर कलिजुग और इस कलिजुग का कुल अरसा।
बस अरबा (४३२०००) लाख और बत्तीस दह सद साल है इसका।।

दयारे-हिन्द = भारत देश
साहबाने-दानिशो-बीनिश = अक़लमंद आदमी
कुर्र-ए-अरज़ी = ज़मीन
तहक़ीक़ाते-आलम = दुनिया की खोज
मोअतबर = भरोसे का, विश्वास पात्र
तख़सीस = विशेषत:
दाना = अक़लमंद
मुनक़सिम = तकसीम, वाटप
सानी = दूसरा
नविश्ते-मोअतबर = पवित्र किताब

[१] यह एक ऐसा अदवारी चक्कर है जो हमेशा सत्य जुग से शुरू हो कर कलिजुग पर ख़त्म होता है। और फिर सत्य जुग शुरू हो जाता है।



مقدس تخلیق

مقدس وید کی تخلیقِ اقدس کا سبب کیا تھا
دمِ تحریر ان نسخوں کا وقتِ مستحب کیا تھا

کیا ہے جو بیاں اہلِ ذکا نے اس کا پس منظر
ہمارے سامنے وہ آگیا اک آئینہ بن کر

دیارِ اندر[1] کا اک پر شکوہ و مقتدر حاکم
جو ایثار و سخاوت میں تھا اپنے وقت کا حاتم

وہ نسلِ پانڈواں سے تھا اسے ارجن سے نسبت تھی
وسیع الارض اک رقبہ پہ جس کی بادشاہت تھی

اسے اک دن بزرگانِ سلف کی اپنے یاد آئی
نزاعِ باہمی پر ان کی وہ ہنگامہ آرائی

زبانی اور بے ترتیب ٹکڑے اس فسانے کے
چلے آئے تھے کانوں تک جو قصے اس زمانے کے

انہیں باضابطہ ترتیب دیکر اک عبارت میں
کیا محفوظ تا باقی رہے مصحف کی صورت میں

لہٰذا اس زمانے کے جو اہلِ علم و دانش تھے
وہ بلوائے گئے سب جسقدر اربابِ بینش تھے

[1] اندر پرستھ، قدیم دہلی کا نام

मुक़द्दस तख़लीक़

मुक़द्दस वेद की तख़लीक़े-अक़दस का सबब क्या था ।
दमे-तहरीर इन नुसखों का वक़्ते-मुसतहब क्या था ।।

किया है जो बयां अहले-ज़का ने उसका पस मंज़र ।
हमारे सामने वह आ गया इक आईना बनकर ।।

दयारे-[1]इंद्र का इक पुर-शिकोह-ओ-मुक़तदिर हाकिम ।
जो ईसार-ओ-सख़ावत में था अपने वक़्त का हातिम ।।

वह नस्ले-पांडवां से था उसे अर्जुन से निसबत थी ।
वसीअ-उल-अर्ज़ इक रक़्बे पे जिसकी बादशाहत थी ।।

उसे इक दिन बुज़ुर्गानि - सलफ़ की अपने याद आई ।
निज़ाअ-ए-बाहमी पर उनकी वह हंगामा आराई ।।

ज़बानी और बे तरतीब टुकड़े उस फ़साने के ।
चले आए थे कानों तक, जो क़िस्से उस ज़माने के ।।

उन्हें बा - ज़ाब्ता तरतीब देकर इक इबारत में ।
किया महफ़ूज़, ता बाक़ी रहें, मुसहफ़ की सूरत में ।।

लेहाज़ा उस ज़माने के जो अहले-इल्म-ओ-दानिश थे ।
वह बुलवाए गए सब, जिसकद्र अरबाबे-बीनिश थे ।।

तख़लीक़े-अक़दस = पवित्र वेद के लिखने का कारण
मुसतहब = शुभ घडी,

पुर-शिकोह = शानदार
मुक़तदिर = भाग्यवान

सलफ़ = पुरखों

बाज़ाब्ता = बाकायदा
इबारत = लिखाई

बीनिश = दूरअंदेश

[1] इन्द्र प्रस्थ, दिल्ली का कदीम नाम

انہیں میں اک بنامِ ویاس[1] یکتائے زمانہ تھا
ذہانت کا جو پتلا تھا فراست میں یگانہ تھا

کچھ اپنے حافظے اور کچھ برہما جی سے خط لیکر
رقم فرمایا ایسا بے نظیر اک مصحفِ اطہر

بھرت[2] کے نام سے اس نے کیا موسوم یہ نسخہ
جو اک مضمون کی صورت میں ہے مرقوم یہ نسخہ

وہ جس میں ساٹھ لکھ اشلوک لکھے ہیں مؤلف نے
برہما سے سنے تھے اور جو دیکھے تھے مؤلف نے

اسے پھر چار حصوں میں برابر منقسم کرکے
منایا سرستی پر جشن، اس کو مستتم کرکے

یہ جشنِ پر مسرت ایک عرصہ تک رہا جاری
شریکِ جشن، عالم اور جوگی تھے جٹا دھاری

علاوہ ان کے لاکھوں لوگ تھے اس جشن میں شامل
تھا آسودہ نشاط و زمزمہ سے دامنِ ساحل

مگر یہ ساٹھ لکھ اشلوک جو ہیں چار نسخوں میں
ہوئی تقسیم انکی اسطرح پھر چند حصوں میں

نفوسِ قدسیہ کے ضمن میں اشلوک جو قسمت
کئے ہیں ساٹھ میں سے تیس لاکھ اشعار بابرکت

[1] بیاس جی کو نفوسِ قدسیہ سے جانتے ہیں، ہنود کا عقیدہ ہے کہ وہ زندۂ جاوید ہیں، اور دواپر جگ میں ایک شخص بنام ویاس اصلاحِ احوال سائر الناس کے لئے ظہور میں آتا ہے اور کچھ لوگوں کا یہ بھی عقیدہ ہے کہ یہ ایک ہی شخص ہے۔ جو مختلف زمانوں میں، مختلف شکلوں میں ظہور کرتا ہے۔ بہر حال بیاس جی نے کچھ برہما کی زبانی اور کچھ اپنے حافظہ کے زور پر وید کی چار کتابیں ترتیب دیں۔ چونکہ بیاس کوروں، پانڈوں کی جنگ میں موجود تھے وید کا پہلا نسخہ رگ وید دوسرا یجروید تیسرا سام وید اور چوتھا اتھروید ہے۔ اسی وجہ سے اسے بیاس کہتے ہیں۔ بیاس جی کے لغوی معنی "تفصیل دینے والا اور حل کرنے والا کے ہیں۔ ورنہ بیاس جی کا اصلی نام "ویسن پائن" تھا اور ولایت میانہ دوآب میں پیدا ہوئے۔

[2] مہابھارت کی وجہ تسمیہ جو شہرت اور افواہ سے سنی گئی ہے اس سے یہی ظاہر ہوتا ہے کہ "مہا" بمعنی بزرگ اور بھارت بمعنی "جنگ" ہے مگر یہ بات صریح خلافِ عقل معلوم ہوتی ہے کہ اہلِ ہند کی لغت میں بھارت بمعنی جنگ کے آیا ہو۔ ہاں بظاہر جو اس کتاب میں احوال اولادِ عالی نژاد راجہ بھرت کا ہے۔ کتاب اس کے نام سے موسوم ہوئی اور استعمال کی کثرت سے الف ایزاد ہوا۔

उन्हीं में इक बनामे-[1]व्यास यकताए ज़माना था ।
ज़हानत का जो पुत्ला था, फ़िरासत में यगाना था ।।

कुछ अपने हाफ़िज़े और कुछ ब्रह्मा जी से ख़त लेकर ।
रक़म फ़रमाया ऐसा बेनज़ीर, इक मुसॅहफ़े-अतहर ।।

[2]भरत के नाम से उस ने किया मौसूम यह नुसख़ा ।
जो इक मज़मून की सूरत में है, मरकूम यह नुसख़ा ।।

वह जिसमें साठ लख श्लोक लिक्खे हैं मौअल्लिफ़ ने ।
ब्रह्मा से सुने थे और, जो देखे थे मौअल्लिफ़ ने ।।

उसे फिर चार हिस्सों में बराबर मुनक़सिम करके ।
मनाया सरस्ती पर जश्न, उस को मुसततिम करके ।।

यह जश्ने-पुर-मुसर्रत एक अर्सा तक रहा जारी ।
शरीके-जश्न, आलिम और जोगी थे जटा धारी ।।

अलावा इनके लाखों लोग थे उस जश्न में शामिल ।
था आसूदा निशात-ओ-ज़मज़मा से दामन-ए-साहिल ।।

मगर यह साठ लख श्लोक जो हैं चार नुसख़ों में ।
हुई तक़सीम उनकी, इस तरह फिर चंद हिस्सों में ।।

नफूसे-कुदसिया के ज़िम्न में श्लोक जो क़िस्मत ।
किये हैं साठ में से तीस लाख अशआर बा-बरकत ।।

फ़िरासत = अक्ल़ मन्दी

मुसॅहफे-अतहर = पवित्र किताब

नुसख़ा = किताब

मौअल्लिफ़ = एक जगह जमा करने वाला (इकट्ठा करने वाला)

मुसततिम = मुकम्मिल

निशात-ओ-जमज़मा = खुशी की तरंग

नफूसे-कुदसिया = पवित्र इन्सान

१) बयासजी को नफूसे कुदसिया से जानते हैं, हुनूद का अकिदा है कि वह ज़िन्दा-ए-जावेद हैं और दवापर जुग में एक शख़्स बनामे-व्यास इसलाह अहवाल साएरूननास के लिए ज़हूर में आते हैं और कुछ लोगों का अकीदा है कि यह एक ही शख़्स है जो मुख़तलिफ़ ज़मानों में, मुख़तलिफ़ शकलों में ज़हूर करता है । बहर हाल बयासजी ने कुछ ब्रह्मा की ज़बानी और कुछ अपने हाफ़ीज़े के ज़ोर पर वेदकी चार किताबें तरतीब दीं । चूँकें बयासजी कौरव, पान्डव की जंग में मौजूद थे, वेद का पहेला नुसख़ाऋग वेद दुसरा यजुरवेद, तिसरा सामवेद, और चौथा अथर वेद है । इसी वजह से इसे बयास कहते हैं । बयास के लुग़वी मानी "तफ़सील देनेवाला और हल करने वाला के हैं । वरना बयासजी का असली नाम " वैसन पाइन" था और विलायत मियाना दो-आब में पैदा हुए ।

२) महाभारत की वजह तसमिया जो शोहरत और अफ़वाह से सुनी गई है इस से यही ज़ाहिर होता है कि "महा" बमानी बुज़ुर्ग और "भारत" बमानी जंग है मगर यह बात सरीह ख़िलाफ़े-अक़्ल मालूम होती है कि अहले-हिन्द की लुग़त में भारत बमानी जंग के आया हो । हाँ बज़ाहीर जो इस किताब में अहवाल औलादे आली निज़ाद राजा भरत का है । किताब उस के नाम से मौसूम हई और इस्तेमाल की कसरत से अल्फ ईज़ाद हुआ । (तारीख़े-फ़रिश्ता)

جو باقی تیس ہیں سے پندرہ ہیں لاکھ کل منتر — کئے ہیں استرلوکی کیلئے مخصوص یہ تنترا

جو ان میں پندرہ لکھ اور بھی اشلوک ہیں باقی — انہیں قسمت کئے یوں متفق ہیں جس پہ اشراقی[1]

کہ چودہ لاکھ بھوت اور راکشش اور قوم جنّہ سے — مؤلف نے کئے مخصوص منتر پاک مُصحف کے

فقط اک لاکھ منتر جو بچے ہیں وید کے باقی — وہ انساں کیلئے ہیں اور کہلاتے ہیں آفاقی

یہی اک لاکھ منتر درمیانِ ابنِ آدم ہیں — فیوضِ خلق اور برکت رسانِ بزمِ عالم ہیں

مگر ان میں سے بھی چوبیس دہ صد ایسے ہیں منتر — جو سب ہی مشتمل ہیں کورو پانڈو کی لڑائی پر

علاوہ ان کے جو مرقوم ہیں پند و نصیحت پر — ہیں کچھ اشلوک گیتا اور کچھ منتر حکایت پر

کتابِ معتبر کا نام رکھا پھر مہابھارت[2] !

ہے وجہِ تسمیہ اسکی زبانِ عالم و خلقت

۱ حکما کا ایک قدیم گروہ

۲ وید کے ایک لاکھ منتر جو مہابھارت میں مرقوم ہیں انہیں اٹھارہ پرب یعنی اٹھارہ باب میں ترتیب دے کر دنیا کے استفادہ کیلئے چھوڑا گیا ہے مگر انسٹھ لاکھ اشلوک کا کہیں پتہ نہیں ملتا جو دیوتاؤں اور استرلوک کے رہنے والوں اور جنوں راکشش گندھرب قسم کی مخلوقات سے متعلق ہیں۔ وہ کہاں ہیں وہ حقیقت ہیں یا صرف افواہ، ابھی یہ تحقیق طلب ہیں.
فرشتہ

जो बाकी तीस में से पन्द्रह हैं लाख कुल [1]मंतर ।
किये हैं सित्र लोकी के लिए मख़सूस यह तंतर ।।

जो इन में पन्द्रह लख और भी श्लोक हैं बाक़ी ।
उन्हे क़िस्मत किये यूँ मुत्तफ़िक़ हैं जिस पे [2]इशरॉकी।।

कि चौदा लाख भूत और राक्षस और क़ौमे-जिन्नह से ।
मोअल्लिफ़ ने किए मख़सूस, मंतर पाक मुसहफ़ के ।।

फ़कत इक लाख मंतर जो बचे हैं वेद के बाक़ी ।
वह इन्साँ के लिए हैं, और कहलाते हैं आफ़ाक़ी ।।

यही इक लाख मंतर दरमियाने-इब्ने-आदम हैं ।
फ़यूज़े-ख़ल्क़ और बरकत रसाने-बज़्मे-आलम हैं ।।

मगर इन में से भी चौबीस दह सद ऐसे हैं मंतर ।
जो सब ही मुश्तमिल हैं, कौरव पान्डव की लड़ाई पर।।

अलावा इन के जो मरकूम हैं, पन्दो-नसीहत पर ।
हैं कुछ श्लोक गीता और कुछ मंतर हिकायत पर ।।

किताबे-मौतेबर का नाम रक्खा फिर [2]महाभारत ।
है वजहे-तसमिया इसकी जुबाने-आलम-ओ-ख़िलक़त ।।

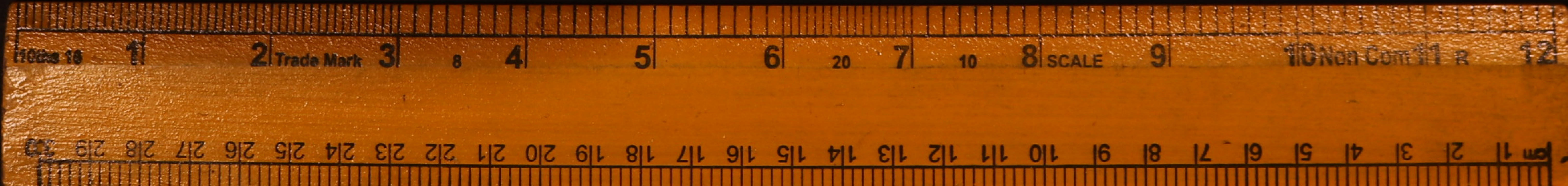
क़िस्मत = भाग करना
इशराक़ी = पुराने ज़माने के ग्यानी

मरकूम = लिखा हुआ

वजहे-तसमिया = नाम रखने का कारण

१) यह शब्द उर्दू बोल चाल में इसी तरह इस्तेमाल होता हैं । वरना इसका सही शब्द मंत्र ही हैं ।

२) हुकमा का एक क़दीम गिरोह। वेद के एक लाख मंत्र जो महाभारत में मरकूम हैं इन्हे अट्ठारह परब यानी अट्ठारह बाब में तरतीब देकर दुनीया के इस्तेफ़ादा के लिए छोड़ा गया है मगर उनसठ लाख श्लोक का कही पता नहीं मिलता जो देवताओं और सित्र लोक के रहने वालों और जिन व राक्षस गंधर्ब किस्म की मख़लूक़ात से मुताल्लिक हैं। वह कहाँ हैं वह हक़ीक़त है या सिर्फ़ अफ़वाह, अभी यह तहक़ीक़ तलब है । (फ़रिश्ता)



کتابِ مہابھارت

یہ ہندوستان جس کی خاک دامن گیر ہے گویا
ہر اک کو اس میں اپنا لینے کی تاثیر ہے گویا

یہاں آئی ہے جو بھی قوم جائز خواہشیں لے کر
یہیں آباد ہو کر رہ گئی، سمجھی گئی برتر

بنام آریہ ہرمز کے بیٹے بھی یہاں پہنچے
بزعم خود لئے ہمراہ اک عزمِ جواں پہنچے

بہ شانِ نو یہاں صدیوں انہوں نے حکمرانی کی
نہایت کر و فر سے اس وطن کی پاسبانی کی

انہیں کی نسل سے وابستہ ہے اک داستانِ رزم
کہ جسکو ویاس نے تالیف فرمایا بشکل نظم[ع۱]

اسی منظوم جنگی سرفروشانہ حکایت کو
مہابھارت کہا جاتا ہے اس رزمی عبارت کو

ہے اسمیں درج کوروں پانڈوؤں کا قصۂ خلجم[ع۲]
حقیقت میں وہ خوں آمیز تصویروں کا ہے البم

کتابِ وید کے مانند اسکو سمجھا جاتا ہے
عقیدت اور تقدس کی نظر سے دیکھا جاتا ہے

مہابھارت کا مختصر جائزہ
اور آج کے مورخین

یہ ہے ایسی حکایت جو ہے وابستہ عقیدت سے
عقیدت کے علاوہ جو ہے وابستہ حقیقت سے

بھرت کی نسل کو پر مغز سامر نے عقیدت سے
کیا ہے پیش جس انداز و شوخیٔ عبارت سے

ع۱ یہ قافیہ صوتی اعتبار سے رکھا گیا ہے۔ ع۲ لمبا دراز

किताबे-महाभारत

यह हिन्दुस्तान जिसकी ख़ाक दामन गीर है गोया ।
हर इक को इस में अपनालेने की तासीर है गोया ।।

यहाँ आई है जो भी क़ौम जाएज़ ख़्वाहिशें लेकर ।
यहीं आबाद होकर रह गई, समझी गई बरतर ।।

बनामे-आर्या हरमुज़ के बेटे भी यहाँ पहुँचे ।
ब ज़ोअमे-खुद, लिए हमराह इक अज़्मे-जवाँ पहुँचे ।।

ब शाने-नव यहाँ सदियों उन्होंने हुक्मरानी की ।
निहायत कर्रोफ़र से इस वतन की पासबानी की ।।

उन्हीं की नस्ल से वाबस्ता है इक दासताने-रज़्म ।
कि जिसको व्यास ने तालीफ़ फ़रमाया ब शक्ले-[1]नज़्म ।।

इसी मन्जूम जंगी सरफ़रोशाना हिकायत को ।
महाभारत कहा जाता है इस रज़मी इबारत को ।।

है इसमें दर्ज, कौरों पांडवों का किस्सा-ए-खुलजम ।
हक़ीक़त में वह खूँ आमेज़, तसवीरों का है अल्बम ।।

किताबे-वेद के मानिन्द, इसको समझा जाता है ।
अक़ीदत और तक़द्दुस की नज़र से देखा जाता है ।।

तासीर = असर

ब शाने-नव = एक नई शान से

दासताने-रज़्म = युध्द का क़िस्सा
नज़्म = कविता

खुलजम = लम्बा, दराज़

अक़ीदत = श्रध्दा
तक़द्दुस = पवित्र

महाभारत का मुख़्तसर जायज़ा
और आज के मुवर्रेख़ीन

यह है ऐसी हिकायत जो है वाबस्ता अक़ीदत से ।
अक़ीदत के अलावा जो है वाबस्ता हक़ीक़त से ।।

भरत की नस्ल को पुर-मग़्ज़ सामिर ने अक़ीदत से ।
किया है पेश जिस अन्दाज़-ओ-शोख़िए-इबारत से ।।

पुर-मग़्ज़ = अक़लमंद

शोख़ी = चंचलपन

१) यह काफ़िया सौती ऐतबार से रखा गया है ।



اسے سن کر محبت نغمۂ عرفاں سناتی ہے بیاں کرتے ہوئے جسکو عقیدت جھوم جاتی ہے

دگر اس کے ہے اسمیں خوبصورت باب اک گیتا جو ناشائستگی سے پاک ہے بکواس سے ریتا [1]

شری گھنشیام نے ارجن کو اس گیتا کی صورت میں دیا اپدیش جو ڈوبا ہوا ہے علم و حکمت میں

حکیمانہ فراست کی اسے تصویر کہہ لیجے دمِ تخریب گویا پہلوئے تعمیر کہہ لیجے

پھر اس کے بعد سامر نے نبرد و جنگ کا نقشہ کیا ہے پیش جس انداز اور جس ڈھنگ کا نقشہ

اسے سنتے ہی کھل جاتی ہیں راہیں فہم و دانش کی کرن اور تیز ہو جاتی ہے گویا نور و تابش کی

مورّخ نے نہ لیکن اہمیت دی اس فسانے کو فسانہ ہی سمجھ کر اسنے زحمت دی نہ خامے کو

مہابھارت اور ہم

یہ سچ ہے اس حکایت پر مورّخ نے کبھی زحمت نہ دی اپنے قلم کو اور نہ بخشی اس کو کچھ وقعت

یقیناً سب نے اس کو ایک فرضی داستاں سمجھا بلاشک دوشِ حق بینی پہ اک بارِ گراں سمجھا

مگر اب ہم اسے تاریخ کے جامے میں لائیں گے گہن مہتاب میں جو لگ چکا ہے وہ چھڑائیں گے

کرینگے پیش اس انداز سے ہم اس فسانے کو کہ جس پر فخر ہوگا آنے والے ہر زمانے کو

مواد اسکا بہ اسنادِ کتب سب معتبر ہوگا

ہر اک باب اسکا پُر تاثیر ہوگا با اثر ہوگا

[1] خالی، ہتی

इसे सुनकर मोहब्बत नग़माए-इरफ़ाँ सुनाती है ।
बयाँ करते हुए जिसको अक़ीदत झूम जाती है ।।

दिगर इसके है इसमें ख़ूबसूरत बाब इक गीता ।
जो ना शाइस्तगी से पाक है, बकवास से रीता ।।

श्री घनश्याम ने अर्जुन को इस गीता की सूरत में ।
दिया उपदेश जो डूबा हुआ है इल्म-ओ-हिकमत में ।।

हकीमाना फ़िरासत की इसे तसवीर कह लीजे ।
दमे-तख़रीब गोया, पहलुए-तामीर कह लीजे ।।

फिर इसके बाद सामिर ने नबर्द-ओ-जंग का नक़्शा ।
किया है पेश जिस अन्दाज़ और जिस ढ़ंग का नक़्शा ।।

इसे सुनते ही खुल जाती हैं राहें, फ़हम-ओ-दानिश की ।
किरण और तेज़ हो जाती है गोया नूर-ओ-ताबिश की ।।

मुवर्रिख़ ने न लेकिन, अहमियत दी इस फ़साने को ।
फ़साना ही समझ कर, उसने ज़हमत दी न ख़ामे को ।।

महाभारत और हम

यह सच है इस हिकायत पर, मुवर्रिख़ ने कभी ज़हमत ।
न दी अपने कलम को, और न बख़्शी इसको कुछ वक़अत ।।

यक़ीनन सब ने इसको, एक फ़र्ज़ी दास्ताँ समझा ।।
बिला शक, दोशे-हक़-बीनी पे, इक बारे-गिराँ समझा ।।

मगर अब हम इसे तारीख़ के जामे में लाएंगे ।
गहन महताब में जो, लग चुका है वह छुड़ाएंगे ।।

करेंगे पेश, इस अन्दाज़ से हम इस फ़साने को ।
कि जिस पर फ़ख़्र होगा आने वाले हर ज़माने को ।।

मवाद इसका ब असनादे-कुतुब, सब मोतबर होगा ।
हर इक बाब इसका पुर-तासीर होगा, बा-असर होगा ।।

रीता = खाली

हकीमाना फ़िरासत = बहुत अक़लमंदी

नबर्द-ओ-जंग = लड़ाई, युद्ध

फ़हम-ओ-दानिश= समझबूझ

नूर-ओ-ताबिश = उजाला, रौशनी

ज़हमत = कष्ट

ब-असनादे-कुतुब = सनद और सुबूत के साथ

نسلوں کا سلسلہ

راجہ بھرت کی نسل شانتن تک

مہابھارت کے جس قصے کی اک عالم میں شہرت ہے
دواپر عہد کے، وہ دورِ آخر کی حکایت ہے

یہی ہندوستاں تاریخ عالم کے فسانے میں
بنامِ ہستنا مشہور تھا سارے زمانے میں

یہاں اک نسلِ کھتری سے کوئی حاکم تھا پُرعظمت
بھرت کے نام سے حاصل تھی جسکو عزت و شہرت

اسی کی پشت نسلاً بعد نسلِ سات تک گزری
پھر اسکے بعد آخر آٹھویں جو نسل تھی اس کی

تو اس کی نسل سے اک پُتر خوش طالع ہوا پیدا
کہا جاتا ہے جسکا نامِ نامی کور راجہ تھا

پھر اس کی نسل سے جو لوگ بیٹھے تختِ شاہی پر
رہے نازاں بنامِ کور اپنی کجکلاہی پر

ہوا اِس خانداں سے پُتر چھٹویں بار پھر پیدا
تھا جسکا نامِ نامی شانتن[1] جو فخرِ بھارت تھا

بھیشم پتامہ ابن شانتن

وطن کا "ہستنا" اس دور میں دارالحکومت تھا
جہاں کا حکمراں اک شانتن سا بالیاقت تھا

[1] اس نام کا تلفظ مہابھارت کی کتاب میں دو طرح آیا ہے ایک تو اس طرح शान्तनु اور دوسرا शान्तुन ہے ضرورتِ شعری کو ملحوظ رکھتے ہوئے شانتن استعمال کیا گیا ہے۔

नसलों का सिलसिला

राजा भरत की नस्ल शान्तनु तक

महाभारत के जिस क़िस्से की, इक आलम में शोहरत है ।
दवापर अहद के, वह दौरे-आख़िर की हिकायत है।।

यही हिन्दुस्तां तारीखे़-आलम के फ़साने में ।
बनामे-हस्तिना मशहूर था, सारे ज़माने में ।।

यहाँ इक नस्ले-खतरी से कोई हाकिम था पुर-अज़मत ।
भरत के नाम से हासिल थी, जिसको इज़्ज़त-ओ-शोहरत ।।

इसी की पुश्त नसलन बादे-नसलिन सात तक गुज़री ।
फिर उसके बाद आख़िर, आठवीं जो नस्ल थी उसकी ।।

तो उसकी नस्ल से इक पुत्र खुश-तालअ हुआ पैदा ।
कहा जाता है जिसका नामे-नामी कौर राजा था ।।

फिर उसकी नस्ल से जो लोग बैठे तख़्ते-शाही पर ।
रहे नाज़ाँ बनामे-कौर अपनी कजकुलाही पर ।।

हुआ इस ख़ानदाँ से पुत्र छटवीं बार फिर पैदा ।
था जिसका नामे-नामी [1]शान्तुन जो फख़्रे-भारत था ।।

भीष्म पितामह इब्न शान्तुन

वतन का "हस्तिना" उस दौर में दारूलहुकूमत था ।
जहाँ का हुक्मराँ इक [1]शान्तुन सा बा लियाक़त था ।।

कजकुलाही = ताज

१) इस नाम का तलफ़्फ़ुज़ महाभारत की किताब में दो तरह आया है एक तो इस तरह शान्तनु और दुसरा शान्तुन है । ज़रूरते-शेरी को मलहूज़ रखते हुए शान्तुन इस्तेमाल किया गया है ।

اسی کی زوجۂ اول کہ جس کا نام گنگا[1] تھا
بہت ہی نیک تھی، کردار اسکا صاف ستھرا تھا

اسی کی کوکھ سے پھر بھیشم اس جگ میں ہوئے اتپن
کہ جنکا بھینٹ اور ایثار میں بیتا ہے کُل جیون

مہابھارت میں جو کردار آئے سامنے کھل کر
نظر آتے ہیں صرف اک بھیشم ہی ان سب میں افضل تر

کسی بھی زاویئے سے دیکھئے اس صاحبِ دل کو
نمونہ پائینگے اخلاق کا اِس مردِ کامل کو

ہمیشہ نشۂ ایثار میں سرشار رہتے تھے
ہزاروں کلفتیں غیروں کی اپنی جاں پہ سہتے تھے

غرض اس دور میں ویسی معزز پارسا ہستی
خدا شاہد! کہیں ہمکو نظر آتی نہیں کوئی

شانتن کی فریفتگی اور خودداری

برائے سیر، راجہ شانتنو اک دن چلے گھر سے
بہت ہی آپ لطف اندوز تھے دریا کے منظر سے

اچانک اک حسینہ ماہرو اُن کو نظر آئی
معمّر قلب میں لینے لگے ارمان انگڑائی

یہ مہوش نازنیں تھی ایک ماہی گیر کی دختر
کہ جسکو دیکھکر وہ ہو گئے بیچین اور مضطر

۱ گنگا ندی۔ جو شیوجی کے سراپ سے منش روپ دھارن کر کے بھاگ وتی تٹ پر آئی۔ وہاں راجہ شانتن اسے دیکھکر فریفتہ ہو گئے اور شادی کا پیغام دیا۔ گنگا نے اس پیغام کو اس شرط کے ساتھ منظور کیا کہ میں جو بھی کام کروں گی آپ دخل نہ دینگے شانتن نے یہ شرط منظور کر لی اسکے بعد گنگا کو یکے بعد دیگرے سات لڑکے پیدا ہوئے اس نے ان ساتوں بچوں کو دریا میں بہا دیا۔ جب اسے آٹھواں بچہ بھیشم نام کا پیدا ہوا تو گنگا نے چاہا کہ میں اسے بھی دریا میں بہادوں مگر راجہ نے اسے روکا جس پر وہ ناراضگی سے انتردھان ہو کر کیلاش چلی گئی اور بھیشم کو راجہ شانتن نے پرورش کیا۔ ۲ بھیشم کا تلفظ भीष्म ۔

उसी की ज़ौजए-अव्वल, कि जिसका नाम [1]गंगा था ।
बहुत ही नेक थी, किरदार उसका साफ़ सुथरा था ।।

उसी की कोख से फिर, भीष्म इस जग में हुए उत्पन ।
कि जिनका भेंट और ईसार में बीता है कुल जीवन ।।

महाभारत में जो किरदार आए सामने खुल कर ।
नज़र आते हैं सिर्फ़ इक भीष्म ही उन सब में अफ़ज़ल तर ।।

किसी भी ज़ाविए से देखिए, इस साहिबे-दिल को ।
नमूना पाएंगे इख़्लाक़ का, इस मर्दे-कामिल को ।।

हमेशा नशा-ए-ईसार में, सरशार रहते थे ।
हज़ारों कुलफ़तें गैरों की, अपनी जाँ पे सहते थे ।।

ग़रज़ उस दौर में, वैसी मुअज़्ज़िज़ पारसा हस्ती ।
खुदा शाहिद ! कहीं हमको नज़र आती नहीं कोई ।।

शान्तुन की फ़रेफ़्तगी और खुद्दारी

बराए सैर राजा शान्तुन इक दिन चले घर से ।
बहुत ही आप लुत्फ़-अन्दोज़ थे दरिया के मंज़र से ।।

अचानक इक हसीना माहरू उन को नज़र आई ।
मौअम्मर क़ल्ब में लेने लगे अरमान अंगड़ाई ।।

यह मैहवश नाज़नीं थी, एक माहीगीर की दुख़्तर ।
कि जिरको देखकर वह हो गए बेचैन और मुज़तर ।।

ज़ौजए-अव्वल = पहली पत्नी

ज़ाविया = एंगल, किसी भी ओर से

कुलफ़त = मुसीबत

मुअम्मर = बुढ़ा-उम्र वाला

१) गंगा नदी जो शिवजी के श्राप से मनुष्य रूप धारण करके भागवती तट पर आई । वहाॅ राजा शान्तुन उसे देख कर फ़रेफ़्ता हो गए और शादी का पैग़ाम दिया । गंगा ने उस पैग़ाम को इस शर्त के साथ मंजूर किया कि मैं जो भी काम करूंगी आप दख़्ल न देंगे । शान्तुन ने यह शर्त मंजूर कर ली इस के बाद गंगा को यके बाद दीगरे सात लडके पैदा हुए उसने उन सातों बच्चों को दरिया में बहा दिया । जब उसे आठवाँ बच्चा भीष्म नाम का पैदा हुआ तो गंगा ने चाहा कि मैं इसे भी दरिया में बाह दुँ । मगर राजा ने उसे रोका जिस पर वह नाराज़ी से अंत्राधान होकर कैलाश चली गई और भीष्म को राजा शान्तुन ने परवरिश किया ।
"महाभारत भाषा - पृष्ट १०, पंडित ज्वालाप्रसादजी मिश्रा, मुरादाबाद, मतबा हिन्दी पुस्तकालय मथुरा".

متسّے گند اور ستیہ وتی بھی نام تھا اُسکا
فقط دھرمات میں کشتی کو کھینا کام تھا اُسکا

وہ کنیا دھرم پُتری تھی ہری داس اک مچھیرے کی
وہ کنیا! جوت تھی ڈھیمر کے ہردے کے اندھیرے کی

سُندرتا میں وہ گویا اپسرا سے بڑھکے سُندر تھی
یقیناً چشمِ شاعر میں وہ رشکِ ماہ و نیّر تھی

پھر اسکے بعد راجہ نے نہایت شوق و رغبت سے
دیا پیغام ڈھیمر کو، اسے ستیہ[1] کی نسبت سے

مچھیرے[2] نے لگادی شرط اس پیغام کو سُنکر
میں کنیا دان! آپکو دونگا لیکن ایک وعدے پر

کہ اس پُتری سے جو بھی پُتر ہو مہراج اب اُتپن
وہی سمراٹ کہلائے سنبھالے وہ ہی سنگھاسن

یہ شرطِ ناروا جسدم سُنی خوددار راجہ نے
بڑی سختی سے اسکو کردیا انکار راجہ نے

مگر بستر پہ انکو رات بھر مطلق نہ نیند آئی
کٹی اس ماہرو کی یاد ہی میں شب کی تنہائی

بھیشم کا ایثار

وزیروں نے جو دیکھی صبح کو راجہ کی یہ حالت
حقیقت کی نظر آئی انہیں کچھ اور ہی صورت

२) भीष्म ने हरीदास के पास जाकर पिता के निमीत्त कन्या की याचना की तब हरीदास ने कहा मैं कन्या आप को तो दे सकता हूं परन्तु आप के पिता को नहीं दूंगा. क्योंकि आप ज्येष्ट पुत्र हैं इस कारण आप पुत्र को तो राज्य मिल सकता है किन्तु राजा के पुत्र होने पर उस को राज्य नही मिल सकता- भीष्म ने काहा मैं राज्य और विवाह कुछ न करूंगा !! पुष्ट १२ महाभारत भाषा जवाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद !!"

ستیہ وتی ۱

मतस्से गंद और सत्यवती भी नाम था उसका ।
फ़क़त धर्मात में कश्ती को खेना काम था उसका ।।

वह कन्या धर्म पुत्री थी, हरिदास इक मछेरे की ।
वह कन्या ! जोत थी ढीमर के हृदय के अन्धेरे की ।।

सुन्दरता में वह गोया, अप्सरा से बढके सुन्दर थी ।
यक़ीनन चश्मे-शायर मे, वह रशके माह-ओ-नय्यर थी ।।

फिर इसके बाद राजा ने निहायत शौक़-ओ-रग़बत से ।
दिया पैग़ाम ढीमर को, उसे [1]सत्य की निसबत से ।।

[2]मछेरे ने लगादी शर्त, इस पैग़ाम को सुनकर ।
मैं कन्या दान ! तुमको दूंगा, लेकिन एक वादे पर ।।

कि इस पुत्री से जो भी पुत्र हो महराज अब उत्पन ।
वही सम्राट कहलाए, संभाले वह ही सिंहासन ।।

यह शर्ते-नारवा जिस दम सुनी खुद्दार राजाने ।
बड़ी सख़ती से इसको, कर दिया इनकार राजा ने ।।

मगर बिस्तर पे उनको रात भर मुतलक़ न नींद आई ।
कटी उस माहरू की याद ही में शब की तनहाई ।।

भीष्म का ईसार

वज़ीरों ने जो देखी सुबह को, राजा की यह हालत ।
हक़ीक़त की नज़र आई उन्हें कुछ और ही सूरत ।।

चश्म = आँख
शायर = कवि
माह = चन्द्रमा
नय्यर = सूरज

मुतलक़ = ज़रा भी

(१) सत्यवती (२) भीष्म ने हरिदास के पास जाकर पिता के निमित्त कन्या की याचना की तब हरिदास ने कहा मैं कन्या आप को तो दे सकता हूँ परन्तु आपके पिता को नही दूँगा, क्योंकि आप ज्येष्ठ पुत्र है । इस कारण आप पुत्र को तो राज्य मिल सकता है किन्तु राजा के पुत्र होने पर उस को राज्य नहीं मिल सकता । भीष्म ने कहा मैं राज्य और विवाह कुछ न करूँगा ।। पुष्ठ १२ महाभारत भाषा ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरदाबादी ।

سبھی چھوٹے بڑے حیران تھے اب کیا کیا جائے
تمنائے دلی اب کس طرح راجہ کی بر آئے

خبر اڑتی ہوئی پھر بھیشم کے بھی کان تک پہنچی
اثر میں ڈوب کر مقبولیت امکان تک پہنچی

پتا کی کیفیت سن کر پتامہ ہو گئے مضطر
اٹھے فوراً! چلے گھر سے، مچھیرے سے ملے جا کر

مچھیرے سے کہا منظور ہے ہر شرط اب تیری
کروں حاصل میں سنہاسن نہ اب خواہش ہے یہ میری

وچن دیتا ہوں میں تجھکو حکومت کی ہے کیا وقعت
مری نظروں میں دولت اور ثروت کی ہے کیا وقعت

ہے جبتک زندگی میری رہونگا دور عورت سے
نہ میں شادی کرونگا اور نہ رغبت ہوگی شہوت سے!

یہ سنتے ہی مچھیرا ہو گیا راضی دل و جاں سے
رچایا بیاہ پھر ستیہ وتی کا خوب ارماں سے

شانتن کی شادی اور رحلت
چترو چتر کا بیاہ

پتامہ کے پتا نے خیر سے شادی رچا ڈالی
نتیجے میں تولد ہو گئے دو تخت کے والی

یہ شہزادے کہ جن میں ایک نام چتر[1] رکھتا تھا
جو شہزادہ تھا دوم نام نامی تھا وچتر[2] اس کا

پھر اسکے بعد راجہ اس جہاں سے کر گئے رحلت
دو روزہ زندگی کی چپقلش سے پا گئے فرصت

१) चित्र २) विचित्र

सभी छोटे बडे हैरान थे, अब क्या किया जाए ।
तमन्नाए दिली अब किसतरह, राजा की बर आए ।।

ख़बर उड़ती हुयी फिर भीष्म के भी कान तक पहुँची ।
असर में डूब कर मक़बूलियत, इमकान तक पहुँची ।।

पिता की कैफ़ियत सुन कर, पितामह हो गए मुज़तर ।
उठे फ़ौरन ! चले घर से, मछेरे से मिले जा कर ।।

कैफ़ियत = हालत

मछेरे से कहा मंजूर है हर शर्त अब तेरी ।
करूँ हासिल मैं सिंहासन न अब ख़्वाहिश है यह मेरी ।।

वचन देता हूँ मैं तुझको, हुकूमत की है क्या वक़अत ।
मेरी नज़रों में दौलत और सरवत की है क्या वक़अत ।।

है जब तक ज़िन्दगी मेरी, रहूँगा दूर औरत से ।
न मैं शादी करूँगा और न रग़बत होगी शहवत से ।।

यह सुनते ही मछेरा हो गया राज़ी दिलो-जाँ से ।
रचाया ब्याह फिर सत्यवती का खूब अरमाँ से ।।

शान्तुन की शादी और रहलत
चित्र विचित्र का ब्याह

पितामह के पिता ने ख़ैर से शादी रचा डाली ।
नतिजे में तवल्लुद हो गए दो तख़्त के वाली ।।

तवल्लुद = पैदाईश

यह शहज़ादे कि जिन में, एक नामे 'चित्र' रखता था ।
जो शहज़ादा था दूवम नामे - नामी था 'विचित्र' उसका ।।

फिर उसके बाद राजा, इस जहाँ से कर गए रहलत ।
दो रोज़ाह ज़िन्दगी की चपक़लश से पा गए फुरसत ।।

रहलत = मृत्यू

جوانی کی حسیں وادی میں جب ان شاہزادوں نے
قدم رکھا تو چوما پاؤں پھر رنگیں ارادوں نے

پتامہ نے انہیں دیکھا جواں تو چل پڑے گھر سے
لے آئے جیت کر کاشی کی دو کنیا سوئمبر[1] سے

انہیں کنیاؤں سے شادی رچا دی شاہزادوں کی
جوانی کی مرادیں پھر بر آئیں نامرادوں کی

انہی شہزادیوں میں ایک کا تھا نام انبیکا
جو دوشیزہ تھی ثانی اسکو کہتے تھے انبالیکا

غرض اب ہر فریضے سے پتامہ پا گئے فرصت
دل و جاں سے وہ اپنی ماں کی پھر کرنے لگے خدمت

بھیشم پتامہ کی خدمت
اور چیتر وچیتر کی بدگمانی

پتامہ رات بھر ماتا کی خدمت میں ہی رہتے تھے
گزر جاتی تھی بیداری میں شب تکلیف سہتے تھے

حقیقت میں انہیں سوتیلی ماں سے پیار کافی تھا
جگر میں درد، دل میں جذبۂ ایثار کافی تھا

مگر وہ دونوں شہزادے پتامہ کے طریقے پر
خود اپنی ماں کے دشمن ہو گئے تھے بدگماں ہو کر

انہیں شک تھا پتامہ اور ماتا رات میں چھپ کر
گناہوں میں بسر کرتے ہیں اپنی زندگی اکثر

اسی شک کی بنا پر ایک دن دونوں چلے گھر سے
کہ چھپ کر دیکھ لیں دونوں کو چشم داد گستر سے

[1] بھیشم پتامہ، سوئمبر سے دو کنیا کے بجائے تین شہزادیوں کو جیت کر لائے تھے۔ جن میں ایک کا نام انبا دوسری کا انبیکا اور تیسری کا انبالیکا تھا۔ ہم نے طوالت کے خوف سے انبا کے واقعات کو نظم نہیں کیا۔

जवानी की हसीं वादी में, जब इन शाहज़ादों ने ।
कदम रक्खा तो चूमा पाँव फिर रंगीं इरादों ने ।।

पितामह ने उन्हें देखा जवाँ, तो चल पड़े घर से ।
लेआए जीत कर काशी की दो कन्या [1]स्वयंवर से ।।

इन्हीं कन्याओं से शादी, रचादी शाहज़ादों की ।
जवानी की मुरादें फिर बरआई ना मुरादों की ।।

इन्हीं शहज़ादियों में इक का था नाम अम्बिका ।
जो दोशीज़ा थी सानी, उसको कहते थे अम्बालिका ।।

गरज़ अब हर फ़रीज़े से, पितामह पा गए फुरसत ।
दिलो - जाँ से वह अपनी माँ की फिर करने लगे ख़िदमत ।।

फ़रीज़ा = कर्तव्य

भीष्म पितामह की ख़िदमत
और चित्र विचित्र की बद - गुमानी

पितामह रात भर माता की ख़िदमत में ही रहते थे ।
गुज़र जाती थी बेदारी में शब, तकलीफ़ सहते थे ।।

खिदमत = सेवा

हक़ीक़त में उन्हे सौतेली माँ से प्यार काफ़ी था ।
जिगर में दर्द, दिल में जज़बए-ईसार काफ़ी था ।।

ईसार = त्याग

मगर वह दोनों शहज़ादे, पितामह के तरीक़े पर ।
खुद अपनी माँ के दुश्मन, हो गए थे बद - गुमाँ होकर ।।

उन्हे शक था पितामह और माता रात में छुप कर ।
गुनाहों में बसर करते हैं, अपनी ज़िंदगी अकसर ।।

इसी शक की बिना पर एक दिन दोनों चले घर से ।
कि छिप कर देखलें दोनों को, चष्मे - दाद गुस्तर से ।।

१) भीष्म पितामह स्वयंवर से दो कन्या के बजाए तीन शहज़ादियों को जीत कर लाए थे जिन में एक का नाम अम्बा दुसरी का अम्बिका और तीसरी का अम्बालिका था । हम ने तवालात के खौफ़ से अम्बा के वाक्यात को नज़्म नही किया ।

مگر منصف مزاج آنکھوں نے دیکھا جب یہ نظّارا
خجل ہو کر نگاہیں جھک گئیں دل ہو گیا پارا

جہاں ماں کا تقدس تھا وہیں بیٹے کی الفت تھی
جہاں ممتا کا ساگر تھا وہیں اک موجِ خدمت تھی

پشیمانی کا یہ عالم کہ سکتہ چھا گیا ان پر
گھڑی ایسی بھی آئی رہ گئے وہ منجمد ہو کر

کفّارۂ بدگمانی

ازالہ اس پشیمانی کا دونوں نے یہی سمجھا
کہ جو بھی فیصلہ اب بھیشم دیں گے آخری ہوگا

کسی سے بدگمانی[1]، معصیت کی قسم اعلیٰ ہے
جہانِ معصیت میں جرمِ تہمت سب سے بالا ہے

پتامہ نے کہا مشکل ہے اس تہمت کا کفّارہ
چتا کی آگ ہے اک صرف اس ذلت کا کفّارہ

یہ کفارہ کی مشکل قسم ہے جس پر عمل کرنا
چتا میں جل کے اب آساں نہیں ہے اس طرح مرنا

مگر وہ دونوں شہزادے یقیناً تھے جری ہمت
چتا میں راکھ ہو کر زندگی سے پا گئے فرصت

چتا میں دونوں شہزادوں کے جلنے کی خبر جس دم
پتامہ کو ملی تو غم سے آنکھیں ہو گئیں پُر نم

مصاحب اور وزرا، بھیشم اور ستیہ وتی سب نے
جھکایا اپنا اپنا سر سمادھی پر عقیدت سے

१ भीष्म जी ने कहा कि जो ज्येष्ट भ्राता अथवा माता का वध करना विचारता है उस को हजार ब्रह्म हत्या का पाप लगता है। सुतरां वह सभी वृक्ष अथवा पीपल की खरखोडल में प्रवेश कर अपने आप को दाह करे तन शुद्ध हो। "महाभारत भाषा पृष्ट १४-ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद!"

मगर मुनसिफ़ मिज़ाज आँखों ने देखा जब यह नज़्ज़ारा ।
ख़जिल होकर निगाहें झुक गई दिल हो गया पारा ।।

जहाँ माँ का तक़द्दुस था, वहीं बेटे की उलफ़त थी ।
जहाँ ममता का सागर था, वहीं इक मौजे ख़िदमत थी ।।

पशेमानी का यह आलम कि सकता छा गया उन पर ।
घड़ी ऐसी भी आई, रह गए वह मुनजमिद होकर ।।

मुनजमिद = ठोस

कफ़्फ़ारा-ए-बद-गुमानी

इज़ाला इस पशेमानी का दोनों ने यही समझा ।
कि जो भी फ़ैसला अब भीष्म देंगे आख़री होगा ।।

इज़ाला = भुगतान

किसी से 'बदगुमानी' मासियत की क़िस्मे-आला है ।
जहाने-मासियत में जुर्मे-तोहमत सब से बाला है ।।

मासियत = इलज़ाम

पितामह ने कहा मुशकिल है, इस तोहमत का कफ़्फ़ारा ।
चिता की आग है इक सिर्फ़, इस ज़िल्लत का कफ़्फ़ारा ।।

कफ़्फ़ारा = प्रायश्चित

यह कफ़्फ़ारा, की मुशकिल क़िस्म है, जिसपर अमल करना ।
चिता में जल के अब आसाँ नहीं है इस तरह मरना ।।

मगर वह दोनों शहज़ादे यक़ीनन थे जरी हिम्मत ।
चिता में राख होकर ज़िन्दगी से पा गए फुरसत ।।

चिता में दोनों शहज़ादों के जलने की ख़बर जिसदम ।
पितामह को मिली तो ग़म से आँखें हो गई पुर नम ।।

मुसाहिब और विज़रा, भीष्म और सत्यवती सब ने ।
झुकाया अपना अपना सर, समाधि पर अक़ीदत से ।।

मुसाहिब = मित्र

१) भीष्म जी ने कहा कि जो ज्येष्ठ भ्राता अथवा माता का वध करना विचारता है उस को हज़ार ब्रह्म हत्या का पाप लगता है । सुतरा वह सभी वृक्ष अथवा पीपल की खखोडल में प्रवेश कर अपने आप को दाह करे तन शुध्द हो । "महाभारत भाषा पृष्ट २४ ज्वाला प्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद"

نسلِ منقطع کا حل

مگر اس اک نئی چنتا سے سارے لوگ حیراں تھے
مصاحب منتری ستیہ وتی سب ہی پریشاں تھے

پتامہ کو متسے گندا نے اک روز بلوایا
بڑی سنجیدگی سے نسل کے بارے میں فرمایا

کہ شہزادے تو دونوں مر گئے ہیں کیا کیا جائے
بتاؤ نسل کو اب کسطرح باقی رکھا جائے

مرا منشا تو یہ ہے تم ہی بیٹھو تختِ شاہی پر
نہ دو سنیاس کو ترجیح، دیکھو کج کلاہی پر

پتامہ نے کہا پرتگیا کو میں نہ توڑوں گا
بلا سے "کُل" مٹے اقرار کا دامن نہ چھوڑوں گا

کہا ستیہ وتی نے سلسلہ اس نسل کا آخر
چلے گا کس طرح تم ہی کرو کچھ فیصلہ آخر

پتامہ پھر بہت سنجیدگی سے سوچ کر بولے
پہونچکر اک نتیجے پر متانت سے دہن کھولے

کہ بیشک ویاس جی مہراج نے جو وید کے اندر
لکھا ہے نسل اور اس مسئلے[1] کے ضمن میں کھل کر

اسی انداز سے اس مسئلہ کو حل کیا جائے
کہ نسلِ منقطع کو اسطرح قائم رکھا جائے

ہوئی ستیہ وتی خوش وید کے اشلوک کو سُنکر
تمنا دل کی بر آئی سکوں پایا دلِ مضطر

१) भीष्मजीने प्रतिज्ञा भंग के भय से विवाह और राजय न किया तब सत्यवती नेकहा कि फिर कुल किस प्रकार रह सकता है ! भीष्म जी बोले बांधवी से अथवा ब्राहमणों के वीर्य से कुल रहता है ऐसा वेद में कहा गया है !

नस्ले-मुनक़ता का हल

मगर इस इक नई चिन्ता से सारे लोग हैराँ थे ।
मुसाहिब मंत्री सत्यवती, सब ही परेशाँ थे ।।

पितामह को मतस्से गंदा ने इक रोज़. बुलवाया ।
बड़ी संजीदगी से नस्ल के बारे में फ़रमाया ।।

कि शहज़ादे तो दोनों मर गए हैं क्या किया जाए ।
बताओ नस्ल को अब किस तरह बाक़ी रखा जाए ।।

मेरा मंशा तो यह है, तुम ही बैठो तख़्ते-शाही पर ।
न दो सन्यास को तरजीह, देखो कजकुलाही पर ।।

पितामह ने कहा प्रतिज्ञा को मैं न तोडूँगा ।
बला से, "कुल" मिटे, इक़रार का दामन न छोडूँगा ।।

कहा सत्यवती ने सिलसिला इस नस्ल का आख़िर ।
चलेगा किस तरह, तुम ही करो, कुछ फ़ैसला आख़िर ।।

पितामह फिर बहुत संजीदगी से सोच कर बोले ।
पहुँचकर इक नतीजे पर मतानत से दहन खोले ।।

कि बेशक व्यास जी महाराज ने जो वेद के अन्दर ।
लिखा है नस्ल और इस [1]मसअले के ज़िम्न में खुल कर ।।

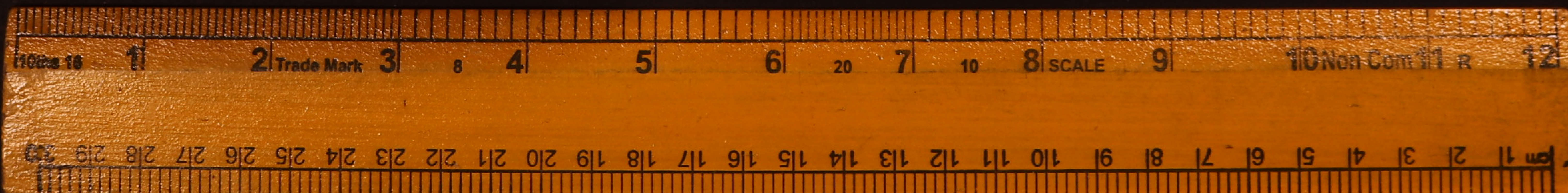
इसी अन्दाज़ से इस मसअले को हल किया जाए ।
कि नस्ले-मुनक़ता को इस तरह क़ायम रखा जाए ।।

हुई सत्यवती खुश वेद के श्लोक को सुनकर ।
तमन्ना दिल की बर आई, सुकूँ पाया दिले-मुज़तर ।।

संजीदगी = गंभीरता

मसअला = समस्या

भीष्मजीने प्रतिज्ञा भंग के भय से विवाह और राज्य न किया तब सत्यवती ने कहा कि फिर कुल किस प्रकार रह सकता है भिष्मजी बोले बांधवी से अथवा ब्राह्मणो के विर्ये से कुल रहता है । ऐसा वेद में कहा गया हैं ।।



مہرشی ویاس جی کی تشریف آوری اور شرف قبولیت

پھر اسکے بعد اسنے ویاس جی کو یاد فرمایا
بڑی حسرت بڑے ارمان کیساتھ ان کو بلوایا

بہ خوشنودی رشی مہراج اپنا درشن دکھلائے
نہایت شان سے صد مرحبا تشریف لے آئے

چرن چھوکر انہیں عزت سے پھر آسن پہ بٹھلایا
زباں پر حرف مطلب اسنے فوراً اس طرح لایا

کہ اے مہراج دونوں شاہزادے شدھ آب ہوکر
ہوئے بیکنٹھ واسی! ان کے حق میں تھا یہی بہتر

مگر اب فکر ہے نسل بھرت کیسے رہے قائم
بتاؤ اپنے زخموں پر رکھیں ہم کس طرح مرہم

شہ والا! اگر خود آپ ہی منظور فرمالیں
نہایت ہی خوشی ہوگی جو اس مشکل کو حل کردیں

سنی ستے وتی کی التجا مہراج نے جسدم
کیا سوئکار اسکو ویاس نے ہوکر خوش و خرم

२) सत्यवती और भीष्म के दीन होकर प्रार्थना की कि हे भगवान ! चित्र विचित्र की भार्याओं से आप सन्तान उत्पन्न कीजिये तब वेद व्यास जीने स्वीकार किया !! "महाभारत भाषा पृष्ट १५ प. ज्वालाप्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद !!"

महर्षि व्यास जी की तशरीफ़ आवरी और शर्फ़े-कुबूलियत

फिर उसके बाद उसने व्यास जी को याद फ़रमाया ।
बड़ी हसरत, बड़े अरमान के साथ उनको बुलवाया ।।

ब खुशनुदी ऋषि महराज अपना दर्श दिखलाए ।
निहायत शान से सदमरहबा तशरीफ़ ले आए ।।

चरण छूकर उन्हे इज़्ज़त से, फिर आसन पे बिठलाया ।
ज़बाँ पर हर्फ़े-'मतलब उसने फ़ौरन इस तरह लाया ।।

कि ऐ महराज दोनों शाहज़ादे, शुध्द अब्र होकर ।
हुए बैकुंठ बासी ! उन के हक़ में था यही बेहतर ।।

मगर अब फ़िक्र है, नस्ले-भरत कैसे रहे कायम ।
बताओ अपने ज़ख़्मों पर, रखे हम किसतरह मरहम ।।

शहेवाला ! अ़गर खुद आप ही मंजूर फ़रमालें ।
निहायत ही खुशी होगी जो इस मुश्किल को हल कर दें ।।

सुनी यत्यवती की इल्तिजा महराज ने जिस दम ।
किया स्वीकार इसको व्यास जी ने होकर खुश-ओ-खुर्रम ।।

हसरत = लालसा

व-खुशनुवी = खुशी के साथ, प्रसन्नतासे

१) सत्यवती और भीष्म ने दीनं होकर प्रार्थना की हे भगवान ! चित्र विचित्र की भार्याओं से आप सन्तान उत्पन्न किजिये, व्यास जी ने स्वीकार किया ।। महाभारत भाषा पृष्ठ १५ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद

فرضِ حسنہ

دیا مابعد[1] انبیکا کو فوراً اذنِ تنہائی — منی کے تیج[2] کو دیکھا تو وہ اس طرح گھبرائی
کہ فوراً آنکھ اپنی بند کرلی خوف کے مارے — نہ تھے مقسوم میں انوارِ عرفانی کے نظارے
منی جی پھر اُسے رُت دان دیکر اسطرح بولے — کہ تجھکو پتر تو ہوگا مگر معذور آنکھوں سے
پھر اسکے بعد انبالیکا بھی ایکانت میں آئی — وہی مشکل اسے بھی پیش جب آئی تو گھبرائی
منی کے تیج سے پانڈو ورن وہ ہوگئی اک دم — تو بولے دیاس جی اس نار کا یہ دیکھکر عالم

کہ تیرا پتر اب اے سندری پانڈو ورن ہوگا
حقیقت میں نحیف وزار اور لاغر بدن ہوگا

دھرت راشٹر اور پانڈو کی پیدائش

رشی مہراج کو رخصت ہوئے گذری جب اک مدت — ہوئے دونوں سے دو فرزند پیدا پھر حسیں صورت

۲۔ تجلّی، پرکاش

१ प्रथम अंबिका को एकांत में बुलाया जब अंबिक से इन मुनि का तेज ने सहा गया और नेत्र मूंद लिये तब व्यास जीने इस को ऋतुदान देकर कहा कि तेरा पुत्र अंधा होगा इसके उपरान्त दुसरी बार अंबालिका को बुलाया किन्तु वह भी उनके तेज को न सह सकी और पांडुवर्ण्या होगई तब उसे भी ऋतुदान देकर कहा कि तेरे पांडुवर्णी ही पुत्र उत्पन्न होगा।। महाभारत भाषा पृष्ट १५ ज्वालाप्रसादजी मिश्रा

फ़र्ज़े-हसना

दिया माबाद [1]अम्बिका को फ़ौरन इज़ने-तनहाई ।
मुनि के तेज को देखा तो वह इसतरह घबराई ।।

कि फ़ौरन आँख अपनी बंद करली ख़ौफ़ के मारे ।
न थे मक़सूम में अनवारे-इरफ़ानी के नज़्ज़ारे ।।

मुनिजी फिर उसे रूत दान देकर इस तरह बोले ।
कि तुझको पुत्र तो होगा, मगर माज़ूर आँखों से ।।

फिर उसके बाद अम्बालिका भी एकान्त में आई ।
वही मुश्किल उसे भी पेश जब आई तो घबराई ।।

मुनि के तेज से पांडूवरण वह हो गई इक दम ।
तो बोले व्यास जी इस नार का यह देखकर आलम ।।

कि तेरा पुत्र अब ऐ सुन्दरी पांडूवरण होगा ।
हक़ीक़त में नहीफ़-ओ-ज़ार और लाग़र बदन होगा ।।

धृतराष्ट्र और पांडू की पैदाईश

ऋषि महाराज को रूख़सत हुए गुज़री जब इक मुद्दत।
हुए दोनों से दो फ़रज़न्द पैदा फिर हसीं सूरत ।।

तेज = प्रकाश

मक़सूम = बाँटाहुआ
अनवारे -इरफ़ानी = ईश्वरकी रोशनी को पहचानना

नहीफ़-ओ-ज़ार = कमज़ोर

१) प्रथम अम्बिका को एकांत में बुलाया जब अम्बिका से इन मुनि का तेज न सहा गया, और नेत्र मूंद लिये तब व्यास जीने इस को ऋतु दान देकर कहा कि तेरा पुत्र अंधा होगा इस के उपरान्त दूसरी बार अम्बालिका को बुलाया किंतू वह भी उसके तेज को न सह सकी और पांडूवरण हो गई तब उसे भी ऋतुदान देकर कहा कि तेरे पांडूवरण ही पुत्र उत्पन्न होगा ! महाभारत पृष्ट १५ पं. ज्वाला प्रसादजी मिश्रा !

جو انبیکا تھی اس سے دھرت راشٹر اک پتر نابینا
ہوا پیدا، بر آئی سب کی جو حسرت تھی دیرینہ

انبالیکا سے پانڈو نام کا لڑکا ہوا اُتپن
یہ چھوٹا تھا مگر اس نے سنبھالا راج اور شاسن

پتامہ اور متسے گند اسب مستِ مسرت تھے
خدا کی مہربانی کے سبھی مرہونِ منت تھے

پتامہ نے انہیں پالا بڑی ہی شان و شوکت سے
کلیجے سے انہیں لپٹائے رکھتے تھے محبت سے

بالآخر رفتہ رفتہ آگئی منزل جوانی کی
جہاں سے ابتداء ہوتی ہے ہر رنگیں کہانی کی

دھرت راشٹر کا بیاہ

بھرت کی نسل میں پھر ایک رنگین انقلاب آیا
پتامہ جھوم اٹھے شاہزادوں پر شباب آیا

خوشی کے ساتھ ان کو بس یہی اک فکر تھی گھیرے
کہ شہزادے لگالیں شبھ گھڑی میں بیاہ کے پھیرے

پتامہ غرق رہتے تھے اسی فکر و تردد میں
بسا تھا یہ خیال انکے نفس کی آمد و شد میں

لہٰذا ایک دن انکو کسی نے دی خبر آکر
سیانی ہو چکی ہے والی گندھار کی دختر

پتامہ نے بڑے بیٹے کا پھر پیغام بھجوایا
سبل[1] نے جس سے گندھاری کا بر منظور فرمایا

وہ گندھاری کہ جسنے جوت بھگتی کی جگائی تھی
شری شنکر سے سو پتروں کا جو وردان لائی تھی

[1] سبل یعنی والی گندھار

जो अम्बिका थी उस से धृतराष्ट्र इक पुत्र नाबीना ।
हुआ पैदा, बर आई सब की जो हसरत थी देरीना ।।

अम्बालिका से पांडू नाम का लड़का हुआ उत्पन्न ।
यह छोटा था मगर उस ने, संभाला राज और शासन ।।

पितामह और मतस्से गंदा, सब मस्ते-मसर्रत थे ।
खुदा की महरबानी के सभी मरहूने-मिन्नत थे ।।

पितामह ने उन्हें पाला, बडी ही शानो-शौकत से ।
कलेजे से उन्हें लिपटाए रख़ते थे मोहब्बत से ।।

बिल-आख़िर रफ़ता रफ़ता आगई मंज़िल जवानी की ।
जहाँ से इबतेदा होती है हर रंगीं कहानी की ।।

धृतराष्ट्र का ब्याह

भरत की नस्ल में फिर, एक रंगीं इन्क़ेलाब आया ।
पितामह झूम उठ्ठे शाहज़ादों पर शबाब आया ।।

खुशी के साथ उनको बस यही इक फ़िक्र थी घेरे ।
कि शहज़ादे लगालें, शुभ घड़ी में ब्याह के फेरे ।।

पितामह ग़र्क़ रहते थे, इसी फ़िक्र-ओ-तरद्दुद में ।
बसा था यह ख़याल उनके नफ़स की आमद-ओ-शुद में ।।

लेहाज़ा एक दिन उनको किसी ने दी ख़बर आकर ।
स्यानी हो चुकी है वाली-ए-गंधार की दुख़्तर ।।

पितामह ने बडे बेटे का फिर पैग़ाम भिज़वाया ।
[1]सबुल ने जिस से गंधारी का बर मंज़ूर फ़रमाया ।।

वह गंधारी कि जिसने ज्योत भक्ती की जगाई थी ।
श्री शंकर से सौ पुत्रों का जो वरदान लाई थी ।।

देरीना = पुरानी

मरहुने-मिन्नत = अहसान तले

रफ़ता - रफ़ता = आगे चल कर

इन्क़ेलाब = बदलाव

नफ़स = श्वास

१) सबुल यानी वाली -ए- गंधार

کرشن جی کی پھوپھی پرتھا
بموسوم کنتی

پتامہ جی نے پانڈو کا بھی اک دن بیاہ ٹھہرا کر
کرشنا کی پھوپھی کو بیاہ لائے تھے بہ کرّو فر

مراری جی کے دادا شورسین اک مردِ عاقل تھے
جری تھے پارسا تھے، آشنائے رازِ منزل تھے

انہیں کی تھی وہ دختر جسکا پرتھا اسم اوّل تھا
شباب اس نازنیں مہوش حسینہ کا مکمل تھا

انہوں نے اپنی سندر کنیا کو اپنے جیون میں
بنا کر دھرم پتری دے دیا کنتی[1] کو بچپن میں

پھر اسکے بعد کنتی بھوج نے معصوم پرتھا کا
بدلکر نام کنتی رکھدیا مہوش حسینہ کا

خدمتِ کنتی پر دروا سامنی کا عطیہ

اور اسکے بعد کنتی پر قیامت کا شباب آیا
گئی بچپن کی شوخی اپنے والوں سے حجاب آیا

حقیقت میں پری وش کا شباب آگیں زمانہ تھا
ادائیں ساحرانہ تھیں تبسّم کافرانہ تھا

۱؎ راجہ کنتی بھوج

कृष्ण जी की फूफी प्रथा
ब-मौसूम कुन्ती

पितामह जी ने पांडू का भी इक दिन ब्याह ठहरा कर ।
कृष्णा की फूफी को, ब्याह ले आए ब-कर्रोफ़र ।।

मुरारी जी के दादा, शुरसेन इक मर्दे-आक़िल थे ।
जरी थे, पारसा थे, आशनाए-राज़े-मंज़िल थे ।।

उन्ही की थी वह दुख़्तर, जिसका "प्रथा" इस्मे-अव्वल था ।
शबाब उस नाज़नीं मेहवश हसीना का मुकम्मल था ।।

उन्होंने अपनी सुन्दर कन्या को, अपने जीवन में ।
बना कर धर्म पुत्री दे दिया [1]कुन्ती को बचपन में ।।

फिर उसके बाद कुन्ती भोज ने मासूम प्रथा का ।
बदलकर नाम कुन्ती रखदिया, मेहवश हसीना का ।।

ब-कर्रोफ़र = शानोशौकत के साथ
आक़िल = बुध्दिमान
आशनाए-राज़े-मंज़िल = दुनिया देखे हुवे

ख़िदमते-कुन्ती पर दुर्वासा मुनि का अतिया

और उसके बाद कुन्ती पर क़यामत का शबाब आया ।
गई बचपन की शोख़ी, अपने वालों से हिजाब आया ।।

हक़ीक़त में परी वश का, शबाब आगीं ज़माना था ।
अदाऐं साहिराना थीं, तबस्सुम काफ़िराना था ।।

शबाब = जवानि
हिजाब = लज्जा

१) राजा कुन्ती भोज

اُسے اِس سِن میں دروا سا منی کے پاس خدمت پر
مقرر کر دیا راجہ نے بھگتی اور ریاضت پر

رشی مہراج نے دیکھی جو گل اندام کی خدمت
خوشی سے ایک منتر دیکے بولے اے حسین صورت

یہ منتر زُود اثر اتنا ہے جب بھی تو اُسے پڑھکر
کریگی یاد جس بھی دیوتا کی، ہو کے وہ مضطر

ترے پاس آ کے فوراً تجھکو دکھلائیگا وہ درشن
اک انجانی خوشی سے ہوگا آسودہ ترا دامن

منتر کی آزمائش اور اس کا ردِ عمل

پھر اسکے بعد کنتی اپنے گھر آئی بصد عجلت
وہی منتر پڑھا بے خوف ہو کر بادلِ فرحت

برائے امتحاں سچ ہے وہ منتر لب پہ لے آئی
پھر اسکے بعد سورج دیوتا کو دھیان میں لائی

اِدھر انکا خیال آیا اُدھر وہ سامنے آئے
پئے نور و تجلّی سُوریہ تشریف لے آئے

یکایک "سوریہ" کو دیکھ کر ڈرنے لگی کُنتی
وِنتی دست بستہ ہو کے پھر کرنے لگی کُنتی

چھما اب کیجئے مہراج میں ہوں ایک اپرادھن
کیا تھا جاپ منتر کا پرکشا کے فقط کارن

کہا پھر "سوریہ" نے ہم یہاں جو آج آئے ہیں
یہ سارا کشٹ صرف اک فرض کی خاطر اٹھائے ہیں

علاوہ اسکے فارغ ہو کے باعصمت رہو گی تم
ہمیشہ پاکِ اطہر اور باعزت رہو گی تم

ا۔ دیکھو مہابھارت بھاشا صفحہ ۱۶ = جوالا پرشاد جی مشر

उसे इस सिन में दुर्वासा मुनि के पास ख़िदमत पर ।
मुक़र्रर कर दिया राजा ने, भगती और रियाज़त पर ।।

ऋषि महराज ने देखी, जो गुलअंदाम की ख़िदमत ।
खुशी से एक मंतर देके बोले ऐ हसीं सूरत ।।

यह मंतर ज़ूद असर इतना है जब भी तू इसे पढ़कर ।
करेगी याद जिस भी देवता की, होके वह मुज़तर ।।

तेरे पास आके फ़ौरन तुझको दिखलाएगा वह दर्शन ।
इक अनजानी खुशी से, होगा आसूदा तेरा दामन ।।

मंत्र की आज़माईश और इस का रद्दे-अमल

फिरउसके बाद कुन्ती अपने घर आई बसद-उजलत।
वही मंतर पढ़ा बे ख़ौफ़ होकर बादिले-फ़रहत।।

बराए इमतेहाँ सच है वह मंतर लब पे ले आई।
फिर उसके बाद सूरज देवता को ध्यान में लाई।।

इधर उनका ख़याल आया उधर वह सामने आए।
पए नूर-ओ-तजल्ली सूर्य-तशरीफ़ ले आए।।

यकायक "सूर्य" को देखकर डरने लगी कुन्ती।
विनंती दस्त बस्ता हो के फिर करने लगी कुन्ती।।

क्षमा अब कीजिए महराज मैं हूँ एक अपराधन।
किया था जाप मंतर का परिक्षा के फ़क़त कारण।।

कहा फिर "सूर्य" ने हम यहाँ जो आज आए हैं।
यह सारा कष्ट सिर्फ़ इक फ़र्ज़ की ख़ातिर उठाए हैं।।

अलावा इसके फ़ारिग़ होके बा-असमत रहोगी तुम।
हमेशा पाको-अतहर और बा-इज़्ज़त रहोगी तुम।।

रियाज़त = तपस्या

गुल अंदाम = फूल सा बदन,

मुज़तर = बेचैन

बसद उजलत = बहुत जल्दी

बादिले फ़रहत = खुशीसे

पए-नुर-ओ-तजल्ली = प्रकाश के साथ

बा असमत = पाक दामन

महाभारत भाषा पृष्ठ १६ पं. ज्वाला प्रशादजी मिश्र'

یہ کہکر سوریہ نے کر دیا کنتی کو بار آور
اور اسکے بعد واپس ہو گئے با حسنِ کرّوفر

ولادتِ کرن

ہوا کنتی کو جب پیدا تجلی یافتہ لڑکا
کوَچ کُنڈل کیساتھ اور "سوریہ" کے تیج کے جیسا

تو فوراً آگیا کنتی کے دل میں خوفِ رسوائی
زمانہ کہہ نہ دے مجھکو کلنکی اور ہرجائی

پھر اُسنے اپنے نور العین کو صندوق میں رکھکر
سپردِ آبِ گنگا کر دیا، دل پر رکھا پتھر

چلا بہتا ہوا صندوق پھر آہستہ آہستہ
کہ جس سے تھا مہابھارت کا اک کردار وابستہ

اِدھر اک سارتھی اور اسکی پتنی دونوں گنگا پر
بہت ہی مطمئن تھے کر رہے تھے غسل ہنس ہنس کر

وہی صندوق انکے سامنے بہتا ہوا آیا
ادھی رتھ اسکو دریا کے کنارے کھینچ کر لایا

اسے کھولا تو اسمیں مہرِ کے مانند تابندہ
نظر آیا انہیں اک پُتر نومولود رخشندہ

ادھی رتھ بے پسر تھا اسلئے اسکو محبت سے
اٹھا کر لے گیا گھر، اور پالا ناز و نعمت سے

پھر اسکے بعد اسکا "کرن" رکھا نام دونوں نے
پیا مسرور ہو کر یوں خوشی کا جام دونوں نے

यह कहकर सूर्य ने कर दिया कुन्ती को बार आवर।
और उसके बाद वापस हो गए बा हुस्ने-कर्रोफ़र।।

विलादते – कर्ण

हुआ कुन्ती को जब पैदा तजल्ली याफ़्ता लड़का।
कवच कुंडल के साथ और "सूर्य" के तेज के जैसा।।

तो फ़ौरन आगया कुन्ती के दिल में ख़ौफ़े-रूसवाई।
ज़माना कह न दे मुझको-कलंकी और हरजाई।।

फिर उसने अपने नूर-उल-ऐन को संदूक़ में रखकर।
सिपुर्दे-आबे - गंगा कर दिया, दिल पर रखा पत्थर।।

चला बहता हुआ संदूक़, फिर आहिस्ता आहिस्ता।
कि जिस से था महाभारत का इक किरदार वाबस्ता।।

इधर इक सार्थी, और उसकी पत्नी दोनों गंगा पर।
बहुत ही मुतमइन थे, कररहे थे गुस्ल हंस हंस कर।।

वही संदूक़ उनके सामने, बहता हुआ आया।
अधिरथ उसको दरिया के, किनारे खींच कर लाया।

उसे खोला तो उसमें, महर के मानिन्द ताबिंदा।
नज़र आया उन्हे, इक पुत्र नौमौलूद रख़शन्दा।।

अधिरथ बे पिसर था, इसलिए उसको मोहब्बत से ।
उठाकर ले गया घर, और पाला नाज़-ओ-नेमत से ।।

फिर इसके बाद उसका 'कर्ण' रक्खा नाम दोनों ने।
पिया मसरूर होकर, यूँ खुशी का जाम दोनों ने।।

बा-हुस्ने-कर्रोफ़र = बहुत शान शौकत के साथ

तजल्ली याफ़ता = रौशनी पाया हुआ

ख़ौंफ़ = डर

मुतमइन = निश्चिन्त

ताबिंदा = चमकने वाला
रख़शन्दा = चमकने वाला
पिसर = लड़का

मसरूर = खुश

کنتی اور مادری سے راجہ پانڈو کا بیاہ

یہ سب کچھ بیتنے کے بعد پانڈو بھوپ کی شادی
ہوئی کنتی سے باصد خیر و فرحت خانہ آبادی

علاوہ اسکے راجہ مُندر کی اک خوبرو دختر
کہ جسکا مادری شبھ نام تھا اور تھی بڑی سُندر

اسی کے ساتھ پانڈو نے رچالی دوسری شادی
وہ کنیا جو کہ راجہ مُندر کی تھی ایک شہزادی

غرض دو خوبصورت بیویوں کے آپ شوہر تھے
سلوک ان رانیوں کے ساتھ یکساں تھے برابر تھے

اقلیم کا سمراٹ

نظام ملک جب پانڈو[1] کے زیر اقتدار آیا
تو ان کا پرچم امن و اماں ہر سمت لہرایا

سنبھالا نظم و نسق ایسا کہ دنیا محوِ حیرت تھی
کہ ان کے دورِ شاہی میں خوش و خرم رعیّت تھی

رہا یہ ملک جتنے دن بھی زیر اقتدار ان کے
یہ سچ ہے چاروں جانب دم قدم سے تھی بہار انکے

مگر جونہی حکومت دوسروں کے ہاتھ میں آئی
فساد و فسق نے اسوقت لی ہر سمت انگڑائی

१) धृतराष्ट्र को अंधा विचार कर भीष्म पितामह ने पांडू को राज दिया। वह पांडू धनुष विद्या में अत्यंत निपुया हुए प्रति दिन योधाओं सहित शिकार को वन में जाते, अनेक जीवीओं का वध कर प्रसन्न होते थे ऐसा कोई दिन नहीं होता जिस दिन राजा शिकार खेल कर पाप संचित नहीं करते।।

कुन्ती और माद्री से राजा पांडू का ब्याह

यह सब कुछ बीतने के बाद पांडू भोप की शादी।
हुई कुन्ती से बॉ-सद खैर-ओ-फ़रहत ख़ाना आबादी।।

अलावा इसके राजा मुंद्र की इक खूबरु दुख़्तर।
कि जिसका माद्री शुभ नाम था और थी बड़ी सुन्दर।।

उसी के साथ पांडू ने रचाली दूसरी शादी।
वह कन्या जो के राजा मुंद्र की थी एक शहज़ादी।।

ग़रज़ दो खूबसूरत बीवीयों के आप शौहर थे।
सुलूक उन रानियों के साथ यकसाँ थे बराबर थे ।।

बॉ-सद खैर-ओ-फ़रहत = खुशी और शान्ति के साथ
खूबरू = सुन्दरी
दुख़्तर = पुत्री

अक़लीम का सम्राट

अक़लीम = बड़ा देश

निज़ामे-मुल्क जब [1]पांडू के ज़ेरे - इक़्तिदार आया।
तो उन का परचमे-अम्नो-अमाँ हर सम्त लहराया।।

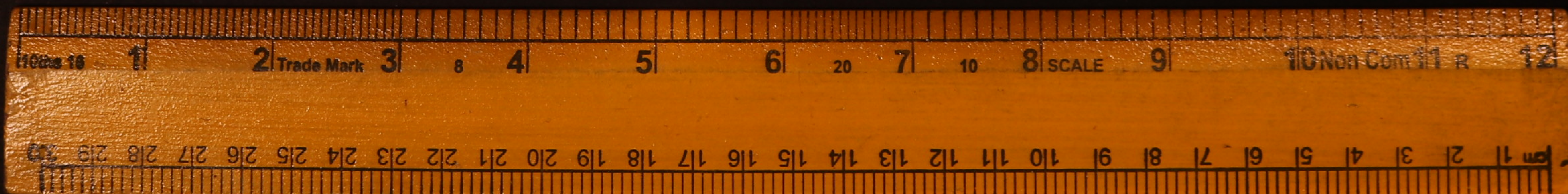
संभाला नज़्मो-नस्क़ ऐसा कि दुनिया महवे - हैरत थी।
कि उन के दौरे-शाही में खुश-ओ-खुर्रम रइय्यत थी।।

रहा यह मुल्क जितने दिन भी ज़ेरे - इक़्तिदार उनके।
यह सच है चारों जानिब दम-क़दम से थी बहार उनके।।

मगर जूँही हुकूमत दूसरों के हाथ में आई।
फ़सादो-फ़िस्क़ ने उस वक़्त ली हर सम्त अंगड़ाई।।

निज़ामे मुल्क = देश का शासन
ज़ेरे इक़्तिदार = हुकूमत की बागडोर
परचमे-अम्नो-अमाँ = शांति का झेन्डा
नज़्मो-नस्क = इन्तेज़ाम
रइय्यत = प्रजा
फ़सादो-फ़िस्क़ = गडबड

१) धृतराष्ट्र को अंधा विचार कर भीष्म पितामह ने पांडू को राज दिया। वह पांडू धनुष विद्या में अत्यंत निपुया हुए प्रति दिन योधाओं सहित शिकार को वन में जाते, अनेक जीवीओं का वध कर प्रसन्न होते थे ऐसा कोई दिन नहीं होता जिस दिन राजा शिकार खेल कर पाप संचित नहीं करते।।



ابھی تو دورِ راجہ پانڈو کے حالات کو سنئے
گلِ سوری کو صحنِ گلشنِ تاریخ سے چنئے

حکایت جو ہمارے سامنے اس ضمن میں آئی
مہرشی ویاس کی سچ پوچھئے ہے خامہ فرسائی

راجہ پانڈو پر کندم مُنی کا سراپ

بیاں کرتے ہیں یوں اس داستاں کو ویشپاین جی
کہ اک دن راجہ جنمئے جے سے بولے یوں گسائن جی

کہ راجہ پانڈو اک دن کھیلنے بن میں شکار آئے
پئے صید افگنی صحرا میں وہ مردانہ وار آئے

ہرن کے روپ میں کندم مُنی[1] اُس روز اُس بن میں
پئے تفریح محوِ گشت تھے صحرا کے دامن میں

ہرن کو دیکھ کر پانڈو نے ایسا تیر اک مارا
لگا کندم مُنی کو پھر تو ان کا چڑھ گیا پارا

کیا نفرین یہ کہہ کر منی نے پانڈو راجہ پر
ادا زوجین کا حق کر نہیں سکتا تو جیون بھر

وظیفہ زوجیت کا جب بھی چاہے گا ادا کرنا
مقدر میں ترے لکھ جائے گا اس روز کا مرنا

سراپ ان کا سنا، پانڈو تو اپنے من میں گھبرائے
سنہاسن چھوڑ کر مادن کے پربت پر چلے آئے

[1] اس واقعہ کو دوسری جگہ یوں بیان کیا گیا ہے کہ کندم مُنی، اپنی جنس تبدیل کر کے جنگل کی دوسری ہرنیوں کے ساتھ بہار کر رہے تھے کہ اتنے میں راجہ پانڈو نے انہیں بان مار کر زخمی کر دیا۔ پھر انہوں نے راجہ پانڈو کو سراپ دیا کہ جب تو استری گمن کریگا اسی سمے مر جائے گا۔ اس پرکار کے سراپ سے پانڈو کو اتینت کشٹ ہوا۔

अभी तो दौरे राजा पांडू के हालात को सुनिये।
गुले सूरी को सहने गुलशने-तारीख़ से चुनिये।।

हिकायत जो हमारे सामने इस ज़िम्न में आई।
महर्षि व्यास की सच पूछिये है ख़ामा फ़रसाई।।

ख़ामा फ़रसाई = लेखन

राजा पांडू पर किन्दम मुनि का श्राप

बयाँ करते हैं यूँ इस दास्ताँ को वैशपायन जी।
कि इक दिन राजा जन्मै जय से बोले यूँ गुसाईन जी।।

कि राजा पांडू इक दिन खेलने बन में शिकार आए।
पऐ सैद अफ़गनी सहरा में वह मरदाना वार आए।।

पऐ सैद अफ़गनी = शिकार खेलने के लिये

हरन के रुप में [1]किन्दम मुनि उस रोज़ उस बन में।
पऐ तफ़रीह महवे - गश्त थे सहरा के दामन में।।

हरन को देखकर पांडू ने ऐसा तीर इक मारा।
लगा किन्दम मुनि को फिर तो उनका चढ़ गया पारा।।

किया नफ़रीन यह कहकर मुनि ने पांडू राजा पर।
अदा ज़ौ जैन का हक़ कर नहीं सकता तू जीवन भर।।

नफ़रीन = श्राप

वज़ीफ़ा ज़ौजियत का जब भी चाहेगा अदा करना।
मुक़द्दर में तेरे लिख जाएगा उस रोज़ का मरना।।

वज़ीफ़ा ज़ौजियत = पत्नी से सम्बंध

श्राप उन का सुना, पांडू तो अपने मन में घबराए।
सिंहासन छोड कर "मादन" के पर्बत पर चले आए।।

पर्बत = पर्वत

[1] इस वाक्य को दूसरी जगह यूँ बयान किया गया है कि किंदम मुनि अपनी जिन्स तबदील करके जंगल की दूसरी हरनियो के साथ बहार कर रहे थे कि इतने में राजा पांडू ने उन्हे बान मार कर ज़ख़्मी कर दिया फिर उन्होने राजा पांडू को श्राप दिया कि तू स्त्री गमन करेगा उसी समय मरजाएगा। इस प्रकार के श्राप से पांडू को अत्यंत कष्ट हुआ।

راجہ پانڈو کا آدیش

وہاں پھر وہ رِشی مُنیوں کے منڈل میں ہوئے شامل
عبادت اور ریاضت کی ہوئی طے بیسوں منزل

پھر اس کے بعد فوراً اپنی پتنی سے کہا ! جاؤ
کسی بھی دیوتا سے بار آور ہو کے تم آؤ

کیا کنتی نے فوراً ان کے اِس آدیش کا پالن
وہی منتر پڑھا اور دھرم کا کرنے لگی سُمرن

یکایک دھرم "دیوا" غائبانہ طور سے آئے
تمنا باطنی انداز سے فی الفور بر لائے

ہوئے پیدا یُدھشٹر[1] تو صدا آکاش سے آئی
یُدھشٹر سے جگت میں دھرم کی ہوگی پذیرائی

ایک سو ایک کوروں کیساتھ دریودھن کی پیدائش

ہوئی آکاش وانی[2] جب یدھشٹر ہو گئے پیدا
انہی کالوں میں گندھاری[3] نے اک اتپن کیا تُمبا[4]

१) इसके उपरांत भीष्म को राज्य सौपं दोनों स्त्रियों सहित गंध मादन पर्वत को चले गये और वहाँ ऋृषियों की संगति से संतोष को प्राप्त हो शत धृण पर्वत पर तप करने लगे और कुन्ती से कह दिया कि तुम देवता अथवा ऋृषि से संतान उत्पन्न करो। तब कुन्ती न र्दुवासा मुनि के दिये मंत्र से धर्म को बुलाया पुत्र उत्पन्न किया उस काल आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र युधिष्ठिर नामक मातमीन धर्म ही है !!

२) आसमानी आवाज

३) यह आकाशवाणी सुन गर्भवती गंधारी ने पेट को कुटकर एक तूंबा उत्पन्न किया सो उस तंबू से भगवान वेदव्यास जी की आज्ञानुसार सूदम रुप सौ (१००) पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई तब अलग अलग धृत के कुंड में रखकर पालन किया यही दुर्योधनादि शत पुत्र हुए और दुशाला नामक कन्या हुई !! महाभारत भाषा पृष्ट १७ "ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद"

४) एक कदू नुमा शक्ल

राजा पांडू का आदेश

वहाँ फिर वह ऋृषि मुनियों के मंडल में हुए शामिल।
इबादत और रियाज़त की हुई तै बीसयों मंज़िल।।

फिर इसके बाद फ़ौरन अपनी पत्नी से कहा ! जाओ।
किसी भी देवता से बार आवर हो के तुम आओ।।

किया कुन्ती ने फ़ौरन उन के इस आदेश का पालन।
वही मंतर पढ़ा और धर्म का करने लगी स्मरण।।

यकायक धर्म "देवा" ग़ायबाना तौर से आए।
तमन्ना बातिनी अंदाज़ से फ़िलफ़ौर बर लाए।।

हुए पैदा [1]युधिष्ठिर तो सदा आकाश से आई।
युधिष्ठिर से जगत में धर्म की होगी पज़ीराई।।

रियाज़त = तपस्या

गायबाना = गुप्त रीती से
बातिनी = भीतरी

पज़ीराई = मानना, स्वीकार करना

एक सौ एक कौरवों के साथ दुर्योधन की पैदाईश

हुई [2]आकाशवाणी जब युधिष्ठिर हो गए पैदा।
उन्ही कालों में [3]गंधारी ने इक उत्पन्न किया [4]तुम्बा।।

१) इसके उपरांत भीष्म को राज्य सौपं दोनों स्त्रियों सहित गंध मादन पर्वत को चले गये और वहाँ ऋृषियों की संगति से संतोष को प्राप्त हो शत धृण पर्वत पर तप करने लगे और कुन्ती से कह दिया कि तुम देवता अथवा ऋृषि से संतान उत्पन्न करो। तब कुन्ती न र्दुवासा मुनि के दिये मंत्र से धर्म को बुलाया पुत्र उत्पन्न किया उस काल आकाशवाणी हुई कि यह पुत्र युधिष्ठिर नामक मातमीन धर्म ही है !!

२) आसमानी आवाज

३) यह आकाशवाणी सुन गर्भवती गंधारी ने पेट को कुटकर एक तूंबा उत्पन्न किया सो उस तंबू से भगवान वेदव्यास जी की आज्ञानुसार सूदम रुप सौ (१००) पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई तब अलग अलग धृत के कुंड में रखकर पालन किया यही दुर्योधनादि शत पुत्र हुए और दुशाला नामक कन्या हुई !! महाभारत भाषा पृष्ट १७ "ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद"

४) एक कदू नुमा शक्ल

جب اس تمبے سے اک سو ایک بچے ہو گئے اُتپن — تو انکو گھی کے سو کونڈوں میں رکھا، اور کیا پوشن

تھا ان پتروں میں دریودھن ہی سب سے اول و اکبر — جو اپنے بھائیوں میں سب سے تھا شہ زور و طاقتور

اِدھر جس وقت گندھاری نے اک تمبا کیا اُتپن

پون کے دیو کو کُنتی نے اس جانب کیا سُمرن

بھیم سین اور ارجُن کی ولادت

پون کے دیوتا، پھر بھیم جیسے دیو پیکر کو — گئے تولید فرما کر وہ اک مرد دلاور کو

ہوئی پھر دیو وانی صرف ہے اک بھیم اس قابل — کہ جسکو بل "ہزاروں[1] ہاتھیوں کا ہوگا اب حاصل

کہا جاتا ہے کُنتی ایک دن اک شیر کے ڈر سے — جو لیکر بھیم کو بھاگی تو بھیم آغوشِ مادر سے

گرا ایسا کہ کتنے ریزہ ریزہ ہو گئے پربت — پون کے دیوتا کے مثل اس بچے میں تھی طاقت

پھر اسکے بعد اک دن "اندر" کو کُنتی نے بُلوایا — تو ارجن غائبانہ کوکھ میں اسکی چلا آیا

१) जिस काल दुर्योधन उत्पन्न हुआ उसी समय कुन्ती ने पवन से भीम को उत्पन्न किया उस का जन्म होने पर भी देववाणी हुई कि यह भातृभक्त दस हज़ार हाथियों का बल धारण करेगा अनन्त कुन्ती व्याघ्र के भय से उस भीम पुत्र को गोद में लेकर उठी सो यह गोद में से गिर पड़े इस के गिरने से कितने ही पर्वत चूर्ण हो गये। इस कारण इनका यथार्थ भीम नाम हुआ। इस के उपरांत कुन्ती ने इन्द्र को बुलाकर अर्जुन नामक पुत्र उत्पन्न किया उसके जन्म होते समय इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं ने आकर पुष्प वृष्टि करी और आकाशवाणी हुई कि यह बालक बेरियों का नाश करने में इन्द्र के समान होगा !! "महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"

जब इस तुम्बे से इक सौ एक बच्चे हो गए उत्पन्न।
तो उनको घी के सौ कुंडों में रक्खा और किया पोषण।।

था उन पुत्रों में दुर्योधन ही सब से अव्वल-ओ-अकबर।
जो अपने भाईयों में सब से था शह-ज़ोर-ओ-ताक़तवर।।

इधर जिस वक़्त गंधारी ने इक तुम्बा किया उत्पन्न।
पवन के देव को कुन्ती ने उस जानिब किया सुमरण।।

भीम सेन और अर्जुन की विलादत

पवन के देवता, फिर भीम जैसे देव पैकर को।
गए तौलीद फ़रमाकर वह इक मर्दे - दिलावर को।।

हुई फिर देववाणी सिर्फ़ है इक भीम इस क़ाबिल।
कि जिसको बल [1]हज़ारों हाथियों का होगा अब हासिल।।

कहा जाता है कुन्ती एक दिन इक शेर के डर से।
जो लेकर भीम को भागी तो भीम आग़ोशे-मादर से।।

गिरा ऐसा कि कितने रेज़ा रेज़ा हो गए पर्बत।
पवन के देवता के मिस्ल इस बच्चे में थी ताक़त।।

फिर इसके बाद इक दिन "इन्द्र" को कुन्ती ने बुलवाया।
तो अर्जुन ग़ायबाना कोख में उसकी चला आया।।

अव्वल = पहला
अकबर = बड़ा

विलादत = पैदाईश

आग़ोशे-मादर = माँ की गोद से
रेज़ा रेज़ा = चूरा चूरा

ग़यबाना = पोशीदा, छुपा हुआ

१) जिस काल दुर्योधन उत्पन्न हुआ उसी समय कुन्ती ने पवन से भीम को उत्पन्न किया उस का जन्म होने पर भी देववाणी हुई कि यह भातृभक्त दस हज़ार हाथियों का बल धारण करेगा अनन्त कुन्ती व्याघ्र के भय से उस भीम पुत्र को गोद मे लेकर उठी सो यह गोद में से गिर पड़े इस के गिरने से कितने ही पर्वत चूर्ण हो गये। इस कारण इनका यथार्थ भीम नाम हुआ। इस के उपरांत कुन्ती ने इन्द्र को बुलाकर अर्जुन नामक पुत्र उत्पन्न किया उसके जन्म होते समय इन्द्रादि सम्पूर्ण देवताओं ने आकर पुष्प वृष्टि करी और आकाशवाणी हुई कि यह बालक बेरियों का नाश करने मे इन्द्र के समान होगा !! "महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"

یہ سچ ہے ویر ارجن کی ولادت باسعادت پر
مثالِ بھیم تھا آکاش وانی کا وہی منظر

صدا آکاش سے آتی تھی یہ ہے شیر دل ارجن
کہ اس بچے میں ہوں گے اندر کی مانند لاکھوں گن

یہ اپنے بیریوں کا ناش کر ڈالے گا اک چھن میں
کبھی دشمن کو پیٹھ اپنی دکھائیگا نہ یہ رَن میں

کنتی کی مہربانی سے مادری کی گود بھرنا

پھر اسکے بعد راجہ پانڈو کی رنگین پھلواری
ہوئی شاداب تر !! کہتے ہیں اسکو رحمتِ باری

اچانک ایک دن راجہ کے من میں یہ خیال آیا
بلا کر مہرباں کنتی کو اپنے پاس بٹھلایا

اور اسکے بعد راجہ نے کہا اے جانِ من کُنتی
مری اچھا ہے، کرپا سے تری اے گلبدن کُنتی

اگر یہ مادری بھی بار آور تجھ سے بن جائے
مٹے "سنتان" کا غم، میرے دل کو بھی قرار آئے

سُنی راجہ سے جب کُنتی نے یہ باتیں تو خوش ہو کر
بٹھا کر مادری کو سامنے اُسنے پڑھا منتر

१. तीन पुत्रों को देखकर पाणडू ने कुन्ती से कहा कि तेरी कृपा से माद्री भी पुत्र वती होवे तो अच्छा है। तब कुन्ती ने यह मंत्र जप माद्री से कहा कि किसी देवी देवता को स्मरण करो यह सुन माद्री ने आश्विनी कुमारों को स्मरण किया उन के दो पुत्र उत्पन्न हुए जिन का नाम नकुल और सहदेव था !!

"महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद"

यह सच है वीर अर्जुन की विलादत बा सआदत पर।
मिसाले-भीम था आकाशवाणी का वही मंज़र।।

सदा आकाश से आती थी यह है शेर दिल अर्जुन।
कि इस बच्चे में होंगे इन्द्र की मानिन्द लाखों गुण।।

यह अपने बैरयों का नाश कर डालेगा इक छन में।
कभी दुश्मन को पीठ अपनी दिखाएगा न यह रन में।।

सआदत = सौभाग्य

कुन्ती की मेहरबानी से माद्री की गोद भरना

फिर इसके बाद राजा पांडू की रंगीन फुलवारी।
हुई शादाब - तर !! कहते हैं इसको रहमते-बारी।।

रहमते-बारी = भगवान की दया

अचानक एक दिन राजा के मन में यह ख़्याल आया।
बुला कर महरबाँ कुन्ती को अपने पास बिठलाया।।

और उसके बाद राजा ने कहा ऐ जाने मन कुन्ती।
मेरि इच्छा है, [1] कृपा से तेरि ऐ गुलबदन कुन्ती।।

अगर यह माद्री भी बार आवर तुझ से बन जाए।
मिटे "सन्तान" का ग़म, मेरे दिल को भी करार आए।।

सुनी राजा से जब कुन्ती ने यह बातें तो खुश होकर।
बिठा कर माद्री को सामने उसने पढ़ा मन्तर।।

१) तीन पुत्रों को देखकर पांडू ने कुन्ती से कहा कि तेरी कृपा से माद्री भी पुत्रवती होवे तो अच्छा है। तब कुन्ती ने यह मंत्र जप माद्री से कहा किसी देवी देवता को स्मरण करो यह सुन माद्री ने अश्विणी कुमारों को स्मरण किया उन के दो पुत्र उत्पन्न हुए जिन का नाम नकुल और सहदेव था !! "महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद।

وہ منتر پڑھ کے کنتی نے کہا اے مادری برہن
تجھے جس دیوتا کی آرزو ہو کر اُسے سمرن

کیا پھر "اشونی" دیوؤں کو اسنے یاد بافرحت
وہ فوراً آگئے فریاد سنتے ہی بایں خلت

ہوئے پھر مادری کو اس طرح دو خوبرو فرزند
نکل، سہدیو، جیسے خوبصورت جنگجو فرزند

یدھشٹر، بھیم، ارجن اور نکل سہدیو سب ملکر
ہوئے ہیں پانچ بھائی رعب تھا جن کا ہزاروں پر

پانڈو کا وظیفۂ زوجیت اور اثرِ نفرین کندم

اک عرصہ بعد راجہ پانڈو نے اٹھکیلیاں کرتے
جو دیکھا بالکوں کو اپنے آگے شوخیاں کرتے

بہت ہی خوش ہوئے ان بالکوں کو پاس بلوایا
کیا جی بھر کے انکو پیار اور سینے سے لپٹایا

یہ سچ ہے کیف زا ہنگام سے تھا، خوب تر عالم
یہ عالم، کر رہا تھا نفس کو انگیختہ پیہم

اچانک ایسے عالم میں وہاں پھر مادری آئی
وسنتی رُت، پیامِ[1] مرگ راجہ کے لئے لائی

زخود رفتہ تھے اس شہوت فزا عالم سے وہ اتنا
ابھرتی خواہشیں اتنی، دباتے تھے انہیں جتنا

१. पांच पुत्रो की बालीका को देखकर पांडु को उपत्यंत प्राप्त हुआ। कुछ कालोपरांत बसंत ऋतु में वन की शोभा देख पाण्डु कामातुर हो माद्री से रमण करने लगे। उसी समय शाप का फल पाया अथति मृत्यु को प्राप्त हुए!!
"महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद!!"

वह मंतर पढ़ के कुन्ती ने कहा ऐ माद्री बिरहन।
तुझे जिस देवता की आरज़ू हो, कर उसे स्मरण।।

किया फिर "अश्विणी". देवों को उसने याद बा फ़रहत।
वह फ़ौरन आगए फ़रयाद सुनते ही बईं खुल्लत।।

हुए फिर माद्री को इस तरह दो खूबरु फ़रज़न्द।
नकुल, सहदेव जैसे खूबसूरत जंगजू फ़रज़न्द।।

युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन और नकुल, सहदेव सब मिलकर।
हुए हैं पाँच भाई, रोब था जिन का हज़ारों पर।।

पांडू का वज़ीफ़ा-ए-ज़ौजियत
और असरए-नफ़रीन किन्दम

इक अर्सा बाद राजा पांडू ने, अठ़केलियाँ करते।
जो देखा बालकों को अपने आगे, शोख़ियाँ करते।।

बहुत ही खुश हुएं, इन बालकों को पास बुलवायां।
किया जी भर के उनको प्यार और सीने से लिपटाया।।

यह सच है कैफ़-ज़ा-हंगाम से था, खूब तर आलम।
यह आलम, कर रहा था नफ़्स को अंगीख़्ता पैहम।।

अचानक ऐसे आलम में वहाँ फिर माद्री आई।
वसंती रुत [1]पयामे-मृग राजा के लिए लाई।।

ज़खुद-रफ़ता थे इस शहवत फ़ज़ा आलम से वह इतना।
उभरती ख़्वाहिशें उतनी, दबाते थे इन्हे जितना।।

मंतर = मंत्र
खुल्लत = प्रेम, मित्रता
फ़रज़न्द = पुत्र, बेटा
शोख़ियाँ = चंचल पन
कैफ़-ज़ा-हंगाम = उनशाला वक़्त शहवत
अंगीख़्ता पैहम = वासना भरा
ज़खुद-रफ़ता = खोया हुआ

१) पांच पुत्रों की बाललीला को देखकर पांडू को उपत्यंत प्राप्त हुआ। कुछ कालोपरांत वसंत ऋतु में वन की शोभा देख पांडू का कातुर हो माद्री से रमण करने लगे। उसी समय श्राप का फलपाया अर्थात मृत्यु को प्राप्त हुये।।
"महाभारत भाषा पृष्ट १७ ज्वाला प्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"!!

بالآخر رہ گئے شہوت کے ہاتھوں بنکے کٹھ پتلی
وہی کر گزرے جسکا انکو اندیشہ تھا جیتے جی

اثر نفرینِ کندم نے وہیں پر اپنا دکھلایا
بنامِ شاہ پیغامِ اجل پرلوک سے آیا

سدھارے لوک سے پانڈو معاً پرلوک کی جانب
سراپ آخر رشی مہراج کا اُنپر ہوا غالب

راجہ پانڈو کے ساتھ مادری کا ستی ہونا

ہوئی راجہ کی رحلت جب تو برہن مادری بولی
بہت ہی دکھ بھرے انداز میں اپنی زبان کھولی

پتی کو اُنس[1] تھا مجھ سے، پتی کو مجھ سے رغبت تھی
مجھے بھی عشق تھا ان سے، مجھے بھی اُن سے الفت تھی

انہیں پرلوک میں بھی چین اب مجھ بن نہ آئے گا
بن انکے ابتو اے کنتی جیا مجھ سے نہ جائے گا

اُدھر پرلوک میں سوامی کا چت مجھ میں لگا ہوگا
نہ میں پہنچی تو انکی آتما کو دکھ بڑا ہوگا

لہٰذا پیاری کنتی بالکوں کا تم کرو پوشن
گمن کرتی ہوں، سوامی سنگ تج کر اپنا میں جیون

یہ کہکر وہ اگن میں کر گئی پرویش بے کھٹکے
بھلا کبتک وہ کھاتی بیوگی کے دکھ بھرے جھٹکے

چتا میں بیٹھ کر خود اپنے تن کو بھسم کر ڈالا
ہوئی رخصت پھر اسکی روح سوئے عالمِ بالا

१.माद्री ने कुन्ती कि इन पुत्रो का तुम पालन करो क्योंकि मुझ में स्वामी का प्रेम आधिक था। सो मेरे बिना इन को परलोक मे भी सुख न मिलेगा इस कारण मैं भी इन के संग गमन करती हु। इस प्रकार कह कर माद्री ने पति के संग अग्नि में प्रवेश किया !!

बिलआख़िर रह गए शहवत के हाथों बनके कठपुतली।
वही कर गुज़रे जिसका उनको अन्देशा था जीतेजी।।

असर नफ़रीने-किन्दम ने वहीं पर अपना दिखलाया।
बनामे-शाह पैग़ामे-अजल परलोक से आया।।

सिधारे लोक से पान्डू मअन परलोक की जानिब।
श्राप आख़िर ऋषि महराज का उनपर हुआ ग़ालिब।।

राजा पान्डू के साथ माद्री का सती होना

हुई राजा की जब रहलत तो बिरहन माद्री बोली।
बहुत ही दुख भरे अन्दाज़ में अपनी ज़बाँ खोली।।

पति को [1]उन्स था मुझ से, पति को मुझ से रग़बत थी।
मुझे भी इश्क़ था उन से, मुझे भी उन से उलफ़त थी।।

उन्हें परलोक में भी चैन अब मुझ बिन न आएगा।
बिन उनके अबतो ऐ कुन्ती, जिया मुझ से न जाएगा।।

उधर परलोक में स्वामी का चित मुझ में लगा होगा।
न मैं पहुँची तो उनकी आत्मा को दुख बड़ा होगा।।

लेहाज़ा प्यारी कुन्ती बालकों का तुम करो पोषण।
गमन करती हूँ , स्वामी संग तज कर अपना मैं जीवन।।

यह कहकर वह अगन में कर गई प्रवेश बे खटके।
भला कबतक वह खाती बेवगी के दुख भरे झटके।।

चिता में बैठ कर खुद अपने तन को भस्म कर डाला।
हुई रुख़सत फिर उसकी रुह सूए आलमे-बाला।।

शहवत = वासना
नफ़रीन = श्राप
अजल = मौत
रहलत = मृत्यू
उन्स = मुहब्बत
इश्क़ = प्रेम
आलमे-बाला = परलोक

१) माद्री ने कुन्ती से कहा कि इन पुत्रों का तुम पालन करो क्योंकि मुझ में स्वामी का प्रेम अधिक था। सो मेरे बिना इन को परलोक में भी सुख न मिलेगा इस कारण मैं भी इन के संग गमन करती हूँ। इस प्रकार कह कर माद्री ने पति के संग अग्नि में प्रवेश किया।।

کُنتی اور پانچوں پانڈوؤں کی واپسی

پھر اسکے بعد ہی سارے شرنگ واسی مُنی مل کر — حضورِ پانڈواں آئے پئے پرسش بصد مضطر

دلاسا پانچوں پانڈو اور کُنتی کو دیا سب نے — شرن میں اپنے پانچوں بالکوں کو لے لیا سب نے

ہوئے جب رحلتِ پانڈو کو تیرہ[1] روز دنیا سے — تو ان کو ساتھ لیکر کوہ سے سارے رشی اترے

پہونچکر بھیشم کو سب نے سنائی داستانِ غم — محل میں بچھ گئی رودادِ غم سُنکر صفِ ماتم

پتامہ شام تک روتے رہے راجہ کی رحلت پر — الم دن بھر رہا بارِ گراں بنکر طبیعت پر

غرض دو چار دن میں مٹ گیا راجہ کا غم دل سے — مگر کُنتی نے اپنے غم پہ قابو پایا مشکل سے

پتامہ نے پھر اپنی زیرِ نگرانی بصد احسن !!!
کیا ہمراہ سو پتروں کے، پانڈو گن کا بھی پوشن

بعدِ مرگ پانڈو دھرت راشٹر تختِ شاہی پر

حکومت ہستنا کی چھوڑ، پانڈو چل بسے آخر — دھرت راشٹ اک جو نابینا تھے، وہ راجہ بنے آخر

१. युगवासी मुनियो ने तेरहवें दिन पांचो पुत्रों सहित कुन्ती को भीष्म के पास लाया पांडु ने संपुर्ण वृतांत कहा यह बात सुनकर अंतः पुर सहित भीष्म अत्यंत रूदन किया और फिर उनका संपुर्ण प्रेम कर्म कराया अनन्तर भीष्म धृतराष्ट के सौ और पांडु के पांच पुत्रों का समान भाव से पालन करने लगे! "महाभारत भाषा पृष्ट १८ ज्वालाप्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"

कुन्ती और पाँचों

पान्डवों की वापसी

फिर उसके बाद ही सारे शरंग वासी मुनि मिलकर।
हुजूरे-पान्डवॉ आए पऐ-पुरसिश बसद मुज़तर।।

दिलासा पाँचों पांडव और कुन्ती को दिया सब ने।
शरण में अपने, पाँचों बालको को ले लिया सब ने।।

हुए जब रहलते-पान्डू को [1]तेरह रोज़ दुनिया से।
तो उन को साथ लेकर कोह से सारे ऋषि उतरे।।

पहुँचकर, भीष्म को सब ने सुनाई दास्ताने-ग़म।
महल में बिछ गई रुदादे-ग़म सुनकर सफ़े-मातम।।

पितामह शाम तक रोते रहे राजा की रहलत पर।
अलम दिन भर रहा बारे-गिराँ बनकर तबीयत पर।।

ग़रज़ दोचार दिन में मिट गया राजा का ग़म दिल से।
मगर कुन्ती ने अपने ग़म पे क़ाबू पाया मुश्किल से।।

पितामह ने फिर अपनी ज़ेरे-निगरानी बसद अहसन!!!।
किया हमराह सौ पत्रों के, पांडव गन का भी पोषण।।

हुजूरे = सेवा में
पऐ-पुरसिश = पुरसे के लिये

कोह = पहाड़

अलम = खेद, दुःख
बारे-गिराँ = भारी बोझ

बसद अहसन = अच्छे तरीके से

बादे-मृग पान्डू ध्रुतराष्ट्र तख़्ते-शाही पर

हुकूमत हस्तिना की छोड़, पान्डू चल बसे आख़िर।
ध्रुतराष्ट्र इक, जो नाबीना थे, वह राजा बने आख़िर।।

१) युगवासी मुनियों ने तेरहवे दिन पांचों पुत्रों सहित कुन्ती को भीष्म के पास लाया पान्डू का संपूर्ण वृत्तांत कहा यह बात सुनकर अंतःपुर सहित भीष्म अत्यंत रुदन किया और फिर उनका संपूर्ण प्रेत कर्म कराया अनन्तर भीष्म धृतराष्ट्र के सौ और पान्डू के पांच पुत्रों का समान भाव से पालन करने लगे! "महाभारत भाषा पृष्ट १८ ज्वालाप्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"।

مگر در پردہ مالک راج گدی کا تھا دریودھن
حقیقت میں جو پانچوں پانڈواں کا تھا کھلا دشمن

غرض یہ لوگ تھے اک خانداں سے منسلک سارے
حسد کے جنکے سینوں پر سدا چلتے رہے آرے

ہوا ٹکراؤ مستقبل میں ان دونوں گروہوں کا
یہاں کا دیکھئے تاریخ[1] کے ابواب میں نقشہ

یہاں ہر وقت خونیں دیوتا کے سائے منڈلائے
مناظر قتل و غارت کے ہر اک جانب نظر آئے

کہ جسکو سن کے رستم کا کلیجہ منہ کو آتا ہے
تصور ہی سے ہر دئے سورما کا کانپ جاتا ہے

رشی سردھان جی سے کرپاچاریہ اور کرپی کی پیدائش

کسی دن جاپ میں مصروف[2] تھے سردھان جی بن میں
اچانک اروشی کو دیکھ کر مہراج کے من میں ۔

۱۔ تاریخ فرشتہ کے بیان کے مطابق اٹھارہ دن کے معرکۂ جنگ میں کوروں کی طرف سے گیارہ کشوں اور پانڈوں کی جانب سے سات کشوں لشکر تھا تھانیسر کے قریب کورچھیتر کے میدان میں نبرد آرا ہوا جسکی پوری تفصیل جنگ کے خاتمہ پر دینگے کہ ایک کشوں لشکر میں کتنے لوگ ہوتے تھے علاوہ یہ بھی بتائیں گے کہ اس جنگ میں کتنے افراد مرے اور کتنے زندہ بچے ۔

२) किसी समय वहां तप करते हुए सरधान मुनि का वीर्य उर्वशी को देखकर सरों के गुच्छे में गिरा उसके दो विभाग हुए एक कन्या दुसरा कुमार । इस समय शांतुन राजा बन में शिकार खेल रहे थे वहां उन को देखकर कृपा के वष होले आये इस कारण कन्या का नाम कृपी और पुत्र का नाम कृपा रखा ।।
"महाभारत भाषा पृष्ट १८ ज्वालप्रसाद जी मिश्रा मुरादाबाद ।।"

मगर दर - परदा मालिक, राज गद्दी का था दुर्योधन।
हक़ीक़त में जो पांचों पान्डवों का था खुला दुश्मन।।

ग़रज़ यह लोग थे इक ख़ानदाँ से मुनसलिक सारे।
हसद के जिनके सीनों पर सदा चलते रहे आरे।।

हुआ टकराव मुस्तक़बिल में इन दोनों गिरोहों का।
यहाँ का देखिए [1]तारीख़ के अबवाब में नक़्शा।।

यहाँ हर वक़्त ख़ूनीं देवता के साए मंडलाए।
मनाज़िर क़त्ल-ओ-ग़ारत के हर इक जानिब नज़र आए।।

कि जिसको सुनके रुसतम का कलेजा मुँह को आता है।
तसव्वुर ही से हृदय सूरमा का काँप जाता है।।

मुस्तक़बिल = भविष्य

ऋषि सरधान जी से कृपाचार्य और कृपी की पैदाईश

किसी दिन जाप में [2]मसरुफ़ थे सरधान जी बन में।
अचानक उर्वषि को देख कर महराज के मन में।।

१) तारीख़ फ़रिश्ता के बयान के मुताबिक़ अठारा दिन के मारकाए-जंग में कौरों की तरफ़ से ग्यारह कशों और पान्डवों की जानिब से सात कशों लश्कर था। थानेसर के करीब कुरुक्षेत्र के मैदान में निबर्द-आरा हुआ। जिसकी पुरी तफ़सील जंग कि ख़ातमें पर देंगे कि एक कशों लश्कर में कितने लोग होते थे। अलावा यह भी बताएंगे कि इस जंग में कितने अफ़राद मरे और कितने ज़िन्दा बचे।

२) किसी समय वहाँ तप करते हुए सरधान मुनि का वीर्य उर्वशी को देखकर सरों के गुच्छों में गिरा उसके दो विभाग हुए एक कन्या दूसरा कुमार ! इस समय शांतुन राजा बन में शिकार खेल रहे थे वहाँ उन को देखकर कृपा के वष होले आये इस कारण कन्या का नाम कृपी और पुत्र का नाम कृपा रखा !!
महाभारत भाषा पृष्ट १८ "ज्वालाप्रसादजी मिश्रा मुरादाबाद"!!.

اٹھی ابھلاک کی اک موج جس سے مضطرب ہو کر — بدقت روکنا چاہا مگر مہراج کا جوہر

سروں کے گچھوں میں ٹپکا تو انکے ویریہ کے کارن — وہیں سے اک کمار اور اک کماری ہو گئے اتپن

پئے صید افگنی اسوقت راجہ شانتنُ آئے — وہیں جنگل میں دو مولود لاوارث پڑے پائے

دیا سے دل بھر آیا بالکوں کی کسمپرسی پر — اٹھا کر شانتنُ لے آئے اُن دونوں کو اپنے گھر

رکھا کنیا کا "کرپی" نام "کرپا" پتر کا رکھا — حیاتِ آخری تک ان کو سینے سے لگا رکھا

کرپ نے بان وِدیا ایک شکتی مان سے سیکھا — جوانی میں یہ فن اپنے پتا سردھان سے سیکھا

وہ اپنی بان وِدیا میں مکمل ماہرِ فن تھے — دلاور تھے جری تھے جنگجو تھے شیر افگن تھے

ہوئی جب بھیشم پر ظاہر یہ کرپا کی صلاحیت — تفقُّد خسروانہ سے کیا ان کو عطا خلعت

پھر انکو بان وِدیا کوروں پانڈؤ کے سکھانے پر — پتامہ نے کیا ماَمور کامل مطمئن ہو کر

یہ سب شہزادے کرپا چاریہ سے درس لیتے تھے
ثبوت اپنی صلاحیت کا ہر موقع پہ دیتے تھے

उठी अभलाक की इक मौज जिस से मुज़तरिब हो कर।
ब-दिक़्क़त रोकना चाहा मगर महराज का जौहर।।

सरों के गुच्छों में टपका तो उनके वीर्य के कारण।
वहीं से इक कुमार और इक कुमारी हो गए उत्पन्न।।

पऐ-सैद अफ़गनी उस वक़्त राजा शान्तुन आए।
वहीं जंगल में दो मौलूद लावारिस पड़े पाए।।

दया से दिल भर आया बालकों की कस्म पुर्सी पर।
उठा कर शान्तुन ले आए उन दोनों को अपने घर।।

रखा कन्या का "कृपी" नाम "कृपा" पुत्र का रक्खा।
हयाते-आख़री तक उन को सीने से लगा रक्खा।।

कृप ने बान विद्या इक शक्ति मान से सीखा।
जवानी में यह फ़न अपने पिता सरधान से सीखा।।

वह अपनी बान विद्या में मुकम्मिल माहिरे-फ़न थे।
दिलावर थे, जरी थे, जंगजू थे, शेर अफ़गन थे।।

हुई जब भीष्म पर ज़ाहिर यह कृपा की सलाहियत।
तफ़क़्क़ुद ख़ुसरवाना से किया उन को अता ख़िलअत।।

फिर उनको बान विद्या कौरों पान्डव के सिखाने पर।
पितामह ने किया मामूर कामिल मुतमइन होकर।।

यह सब शहज़ादे कृपाचार्या से दर्स लेते थे।
सुबूत अपनी सलाहियत का हर मौके पे देते थे।।

मुज़तरिब = बेचैन

पऐ-सैद अफ़गनी = शिकार के लिये
मौलूद = अभी पैदा हुए बच्चे

शेर अफ़गन = शेर को मारने वाला

तफ़क़्क़ुद ख़ुसरवाना = ख़ातिर दारी
ख़िलअत = शाही वस्त्र

मामूर = मक़रई



دشمنی کی پہلی منزل

दुश्मनी की पहली मंज़िल



دشمنی کی پہلی منزل

بچپن کی شوخیاں

مگر ان شاہزادوں میں تھا سب سے بھیم طاقتور — لڑائی میں پٹخ دیتا تھا سب کوروں کو اکثر
بہت ہی تیز تھے وہ سطوت اورنگ کے فن میں — بڑے مشاق پانڈو ہو گئے تھے جنگ کے فن میں
کسی دن کھیلتے وقت اک شجر پر کور سب چڑھ کر — بہت ہی فوقیت جتلا رہے تھے اپنی بڑھ بڑھ کر
اچانک بھیم بھی اس پیڑ کے نیچے چلا آیا — شرارت کا وہ اک طوفان اپنے دل میں بھر لایا
اچک کر وہ بھی جا بیٹھا شجر کی ایک ٹہنی پر — ہلایا پیڑ کو اس زور سے وہ بے جگر ہو کر
ٹپاٹپ اک کے بعد اک گر پڑے پھر کور اوپر سے — کسی کا پاؤں ٹوٹا، ہاتھ اکھڑا خوں بہا سر سے
ادھر دیکھی جو دریودھن نے کورو گن کی یہ حالت — ہوئی پانڈو کی جانب سے اسے بے انتہا نفرت

یہیں سے اک خصومت کی ہوئی بس ابتدا دل میں
قدم کوروں نے رکھا دشمنی کی پہلی منزل میں

बचपन की शोख़ियाँ

मगर उन शाहज़ादों में था सब से भीम ताक़तवर।
लड़ाई में पटख़ देता था सब कौरों को यह अकसर।।

बहुत ही तेज़ थे वह सतवते-औरंग के फ़न में।
बड़े मश्शाक़ पान्डव हो गए थे जंग के फ़न में।।

किसी दिन खेलते वक़्त इक शजर पर कौर सब चढ़कर।
बहुत ही फ़ौक़ियत जतला रहे थे अपनी बढ़ बढ़कर।।

अचानक भीम भी इस पेड़ के नीचे चला आया।
शरारत का वह इक तूफ़ान अपने दिल में भरलाया।।

उचक कर वह भी जा बैठा शजर की एक टहनी पर।
हलाया पेड़ को इस ज़ोर से वह बे-जिगर होकर।।

टपा टप इक के बाद इक गिर पड़े फिर कौर ऊपर से।
किसी का पाँव टूटा, हाथ उखड़ा ख़ूँ बहा सर से।।

उधर देखी जो दुर्योधन ने कौरव गन की यह हालत।
हुई पान्डव की जानिब से उसे बे-इन्तेहा नफ़रत।।

यहीं से इक ख़ुसूमत की हुई बस इब्तेदा दिल में।
कदम कौरों ने रक्खा दुश्मनी की पहली मंज़िल में।।

सतवते-औरंग = बादशाही
मश्शाक़ = माहिर
शजर = पेड़
फ़ौक़ियत = शेख़ी
टहनी = डाली
ख़ुसूमत = बैरता, दुश्मनी

زہر سے زہر کا مرنا

رہا کرتا تھا دریودھن اسی فکر و تجسس میں — گزرتا تھا ہر اک لمحہ خصومت اور تسلس[1] میں

بالآخر مل گیا موقع اُسے بدلہ چکانے کا — بہادر بھیم کو پھر زہر کے لڈو کھلانے کا

ہلاہل کا تھا جتنا کام وہ اس نے کیا آخر — پھر اس کے بعد دریودھن کی مکاری ہوئی ظاہر

مکمل بیخودی جب چھا گئی اُس وِش[2] کے مودک[3] سے — لیا بدلہ سُپردِ آب کر کے ایک یُوک[4] سے

سُپردِ آب ہو کر بھیم اس بستی میں جا پہنچا — جہاں ناگوں کی کثرت تھی جو اک افعی علاقہ تھا

عجب منظر تھا ہیبت ناک افعی اُسکو ڈستے تھے — لپٹ جاتے تھے اس کے جسم سے، اور خوب کستے تھے

مگر ناگوں کے ڈسنے کا اثر اُلٹا نظر آیا — وہاں تو زہر نے تریاق کا نظارہ دکھلایا

حقیقت اسکی یہ تھی بھیم نے مودک کی صورت میں — جو دریودھن کے ہاتھوں کھا لیا تھا زہر غفلت میں

وہ سَمُّ الفار ہی تھا بے گماں اس بیچ میں حائل
کہ جس نے زہر افعی کو کیا تھا اس طرح زائل

[1] مکاری، [2] زہر [3] لڈو [4] جوان

ज़हर से ज़हर का मरना

रहा करता था दुर्योधन इसी फ़िकरो-तजस्सुस में।
गुज़रता था हर इक लम्हा खुसूमत और तसल्लुस में।।

बिलआख़िर मिल गया मौका उसे बदला चुकाने का।
बहादुर भीम को फिर ज़हर के लड्डू खिलाने का।।

हलाहल का था जितना काम, वह उस ने किया आख़िर।
फिर उसके बाद दुर्योधन की मक्कारी हुई ज़ाहिर।।

मुकम्मल बेखुदी जब छा गई उस विष के मोदक से।
लिया बदला सुपुर्दे-आब करके एक युवक से।।

सुपुर्दे-आब होकर भीम उस बसती में जा पहुँचा।
जहाँ नागों की कसरत थी जो इक अफ़ई इलाक़ा था।।

अजब मंज़र था हैबत-नाक अफ़ई उसको डसते थे।
लिपट जाते थे उस के जिस्म से, और खूब कसते थे।।

मग़र नागों के डसने का असर उलटा नज़र आया।
वहाँ तो ज़हर ने तिरयाक़ का नज़्ज़ारा दिखलाया।।

हक़ीक़त उसकी यह थी भीम ने मोदक की सूरत में।
जो दुर्योधन के हाथों खा लिया था ज़हर ग़फ़लत में।।

वह सम्मउल-फ़ार ही था बे-गुमां इस बीच में हायल।
कि जिस ने ज़हरे-अफ़ई को किया था इस तरह ज़ायल।।

फ़िकरो तजस्सुस = सोच, खोज
खुसूमत = दुश्मनी
तसल्लुस = मक्क़ारी,

सुपुर्दे-आब = दरया के हवाले

अफ़ई = सांप,

तिरयाक़ = ज़हेर का तोड़

सम्मउल-फ़ार = संखिया

ناگ راجہ کی مہمان نوازی اور بھیم کی واپسی

بزرگوں سے مثل مشہور ہے سننے میں آتا ہے
ہمیشہ زہر کو بس زہر ہی سے مارا جاتا ہے

یقیناً بھیم کی اس ضمن میں ایسی ہی کیفیت
رہی ہوگی جبھی تو رہ گیا زندہ وہ خوش قسمت

پھر اس کے بعد ان زہریلے ناگوں کا جو راجہ تھا
وہ راجہ بھیم کے نانا کا دیرینہ شناسا تھا

پرانی مِترتائی کے سبب پھر بھیم کو امرت
پلایا اور نواسوں کی طرح رکھا بصد شفقت

وہاں کافی دنوں تک وہ رہا پھر مہماں بن کر
جہاں اس نے گزارے عیش میں صبح و مسا یکسر

اُدھر پانڈو پریشاں تھے تلاشِ بھیم میں ہر سو
اِدھر بیچاری ماں، جو رو رہی تھی خون کے آنسو

مگر گھی کے دیے کورو اپنے منڈل میں جلاتے تھے
بجاتے تھے خوشی سے شادیانے گیت گاتے تھے

دلاور بھیم کو رہتے ہوئے گذری جب اک مدّت
بصد عزّ و وقار اس کو کیا راجہ نے پھر رخصت

وہ گھر آیا تو پانڈوؤ اور کنتی کا تھا یہ منظر
خوشی کے آنسوؤں کے دیپ تھے غمناک پلکوں پر

ورودِ بھیم کی پہنچی خبر ہر سمت پل بھر میں
کہ واپس بھیم آیا ہے ہوا چرچا یہ ہر گھر میں

خبر سنتے ہی کورو گن ہوئے اس طرح خاکستر
کہ جیسے برق لہرا کر گری ہو اُن کے منڈل پر

नाग राजा की मेहमान नवाज़ी और भीम की वापसी

बुजुर्गों से मसल मशहूर है, सुन्ने में आता है।
हमेशा ज़हर को बस ज़हर ही से मारा जाता है।।

यक़ीनन भीम की इस ज़िम्न में ऐसी ही कैफ़ियत।
रही होगी, जभी तो रह गया ज़िन्दा वह खुश क़िस्मत।।

फिर इसके बाद इन ज़हरीले नागों का जो राजा था।
वह राजा भीम के नाना का देरीना शनासा था।।

पुरानी मित्रताई के सबब फिर भीम को अमृत ।
पिलाया और नवासों की तरह रक्खा बसद शफ़क़त।।

वहाँ काफ़ी दिनों तक वह रहा फिर मेहमां बन कर।
जहाँ उसने गुज़ारे ऐश में सुबहो-मसा यकसर।।

उधर पान्डव परेशाँ थे तलाशे-भीम में हर सू।
इधर बेचारी माँ, जो रो रही थी खून के आँसू।।

मगर घी के दिए कौर अपने मंडल में जलाते थे।
बजाते थे खुशी से शादयाने गीत गाते थे।।

दिलावर भीम को रहते हुए गुज़री ज़ब इक मुद्दत।
बसद-इज़्ज़ो-वक़ार उसको किया राजा ने फिर रुख़सत।।

वह घर आया तो पान्डव और कुन्ती का था यह मंज़र।
खुशी के, आँसुओं के दीप थे ग़मनाक पलकों पर।।

वरुदे-भीम की पहुँची ख़बर हर सम्त पल भर में।
कि वापस भीम आया है, हुआ चर्चा यह हर घर में।।

ख़बर सुनते ही कौरव-गन हुए इस तरह ख़ाकिस्तर।
कि जैसे बर्क़ लहरा कर गिरी हो उन के मंडल पर।।

कैफ़ियत = हालत,

शफ़क़त = दया, सहानुभूति

शादयाने = बाजे

बसद-इज़्ज़ो-वक़ार = शान-ओ-शौकत के साथ

वरूद = आना,

खाकिस्तर = जल कर राख होना,
बर्क़ = बिजली

رشی بھردواج سے درونہ چاریہ کی پیدائش

درونہ چاریہ کی مختصر اب داستاں سنیئے
رشی جی ویاس کا اس ضمن میں یہ ہے بیاں سنیئے

بھردواج اک منی کا ویریہ جن کو دیکھ کر ٹپکا
وہ تھی اک اپسرا گھرتاچی جس کا نام نامی تھا

پھر ان کے ویریہ کو اک دونے میں رکھا گیا جس دم
ہوئے اس سے درونہ جیسے پیدا عالم وضیغم

درونہ ستر ودیا سیکھے خود اپنے پتاجی سے
مکمل طور سے واقف ہوئے اس فن کی خوبی سے

اشوت تھاما کی پیدائش اور راجہ دروپد کی پرتگیا

پھر اس کے بعد ہی اک شبھ گھڑی میں خیر و خوبی سے
درونہ کی ہوئی شادی کرپ کی باجی کرپی سے

انھیں کرپی سے کچھ دن بعد اک لڑکا ہوا اتپن
تھا جس کا نام اشوت تھاما جو تھا پیار کا مخزن

درونہ ایک پرشورام ماہر سے بصد مشکل
دھنروید آپ نے خفیہ طریقے سے کیا حاصل

علاوہ اس کے پرشوراج کا بیٹا دروپد بھی
دھنروید آیا پڑھنے بھردواج استھان پر جوں ہی

وہیں آخر درونہ اور دروپد کی شناسائی
ہوئی ایسی کہ دونوں بن گئے آپس میں پھر بھائی

ऋषि भारद्वाज से द्रोणाचार्य की पैदाईश

द्रोणाचार्य की मुख़्तसर अब दासताँ सुनिए।
ऋषिजी व्यास का इस ज़िम्न में यह है बयाँ सुनिए।।

भारद्वाज इक मुनि का वीर्य जिनको देखकर टपका।
वह थी इक अपसरा "घर ताची" जिसका नामे नामी था।।

फिर उन के वीर्य को इक दोने में रक्खा गया जिस दम।
हुए इस से द्रोणा जैसे पैदा आलिमो-ज़ैग़म।।

द्रोणा शस्त्र विद्या सीखे खुद अपने पिताजी से।
मुकम्मल तौर से वाक़िफ़ हुए इस फ़न की खूबी से।।

अश्वत्थामा की पैदाईश और राजा द्रौपद की प्रतिज्ञा

फिर उस के बाद ही इक शुभ घड़ी में ख़ैरो-खूबी से।
द्रोणा की हुई शादी कृप की बाजी कृपी से।।

उन्हें कृपी से कुछ दिन बाद इक लड़का हुआ उत्पन्न।
था जिसका नाम "अश्वत्थामा" जो था प्यार का मख़ज़न।।

द्रोणा एक परशूराम माहिर से बसद मुश्किल।
धनुर्वेद आप ने खुफ़िया तरीक़े से किया हासिल।।

अलावा इस के परशूराज का बेटा द्रौपद भी।
धनुर्वेद आया पढने भारद्वाज स्थान पर जूँ ही।।

वहीं आख़िर द्रोणा और द्रौपद की शनासाई।
हुई ऐसी के दोनों बन गए आपस में फिर भाई।।

ज़िम्न = सिलसिला

आलिमो-जैग़म = विद्वा[n]
और शेर

मख़ज़न = क्रोश

शनासाई = जान पहचान



درونہ سے دروپد نے کہا اک روز خوش ہو کر　　کہ میں جس وقت راجہ بن کے بیٹھوں گا سنہاسن پر

تمہیں اس وقت آدھا ملک آدھی سلطنت دونگا

یہ ہے پرتگیا میری اسے اک دن نباہونگا

مشعلِ امّید

وچن دینے کو اک عرصہ ہوا راجہ دروپد کو　　مگر غربت درونہ کی اِدھر پہنچی تھی اک حد کو

خیال آیا دروپد کا اسے پھر ایسے عالم میں　　دلِ پژمردہ میں اک تازگی سی آگئی دم میں

درونہ مشعلِ امّید لیکر یوں چلے گھر سے　　کہ اترے بوجھ وعدہ کا دروپد بھوپ کے سر سے

وہاں پہنچے تو درباں سے خبر کی اپنے آنے کی

گھڑی آئی پرانی آشنائی آزمانے کی

درونہ چاریہ کی مایوسی

مگر وہ وعدۂ شاہی بھی کیا، پورا جو ہو جائے　　وہ آخر دوستی کیسی وفا کی جس میں بو آئے

دروپد نے بھی اپنی آخرش پرتگیا توڑی　　مثال اک بے وفائی کی زمانے کیلئے چھوڑی

द्रोणा से द्रोपद ने कहा इक रोज़ खुश हो कर।
कि मैं जिस वक़्त राजा बन के बैठूँगा सिंहासन पर।।

तुम्हे उस वक़्त आधा मुल्क आधी सलतनत दूँगा।
यह है प्रतिज्ञा मेरी इसे इक दिन निबाहूँगा।।

सलतनत = हुकूमत

मशअले - उम्मीद

वचन देने को इक अर्सा हुआ राजा द्रोपद को।
मगर गुर्बत द्रोणा की इधर पहुँची थी इक हद को।।

अर्सा = ज़माना

ख़याल आया द्रोपद का उसे फिर ऐसे आलम में।
दिले-पसमुर्दा में इक ताज़गी सी आ गई दम में।।

दिले -पसमुर्दा = मुर्दा दिल

द्रोणा मशअले - उम्मीद लेकर यूँ चले घर से।
कि उतरे बोझ वादे का द्रोपद भोप के सर से।।

वहाँ पहुँचे तो दरबाँ से ख़बर की अपने आने की।
घड़ी आई पुरानी आशनाई आज़माने की।।

आशनाई = मित्रता

द्रोणाचार्य की मायूसी

मगर वह वादा-ए-शाही भी क्या पूरा जो हो जाए।
वह आख़िर दोस्ती कैसी, वफ़ा की जिस में बू आए।।

द्रोपद ने भी अपनी आख़रश प्रतिज्ञा तोड़ी।
मिसाल इक बे वफ़ाई की ज़माने के लिए छोड़ी।।

आख़रश = आख़िरकार

کہاں کی سلطنت آدھی کہاں کی دولت و ثروت
غریب اپنا سا منہ لیکر چلے آئے بایں خفت

درونہ چاریہ واپس ہوئے سینے میں غم لیکر
دلِ پرشوق میں اپنے دُروپد کا ستم لیکر

درونہ پھر قریبِ ہستنا آئے اسی بن میں
جہاں کھیلا کیے تھے کَورو پانڈو اپنے بچپن میں

وہیں بس اک کنوئیں میں گیند انکی گر گئی جا کر
کہ جس سے سارے بالک ہو گئے آزردہ و مضطر

حسنِ حکمت اور محل تک رسائی

درونہ چاریہ کی کام آئی پھر وہاں حکمت
نکالی گیند اس ترکیب سے سب کو ہوئی حیرت

خبر دی بالکوں نے بھیشم کو اس مردِ عاقل کی
بیاں دانائیاں کی آشنائے رازِ منزل کی

پتامہ نے درونہ کی سُنی دانائیاں جس دم
درونہ چاریہ کے پاس پہنچے پھر خوش و خرم

ہوئے یوں مُلتجی اے ارضِ عالم کے عظیم انساں
ہے رزم و بزم کی دولت سے آسودہ ترا داماں

تلمذ کا شرف تو بخش دے اب شاہزادوں کو
عطا افنانِ رزم و بزم کر دے، بے ارادوں کو

درونہ نے پھر ان کی التجا منظور فرمائی
انہیں قسمت بیاباں سے محل میں کھینچ کر لائی

कहाँ की सलतनत आधी, कहाँ की दौलत-ओ-सरवत।
गरीब अपना सामुहँ लेकर चले आए बईं ख़िफ़्फ़त।।

द्रोणाचार्य वापस हुये, सीने में ग़म लेकर।
दिले-पुर-शौक़ में अपने, द्रोपद का सितम लेकर।।

द्रोणा फिर क़रीबे-हस्तिना आए उसी बन में।
जहाँ खेला किये थे, कौरव पांडव अपने बचपन में।।

वहीं बस इक कुएँ में, गेंद उनकी गिर गई जा कर।
कि जिस से सारे बालक, हो गए आज़ुर्दा-ओ-मुज़्तर।।

हुस्ने-हिकमत और महल तक रसाई

द्रोणाचार्य की काम आई फिर वहाँ हिकमत।
निकाली गेंद इस तरक़ीब से, सब को हुई हैरत।।

ख़बर दी बालकों ने भीष्म को, उस मर्दे-आक़िल की।
बयाँ दानाइयाँ की आशनाए-राज मंज़िल की।।

पितामह ने द्रोणा की सुनी दानाइयाँ जिस दम।
द्रोणाचार्य के पास पहुँचे, फिर ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम।।

हुए यूँ मुलतजी, ऐ अर्ज़े-आलम के अज़ीम इन्साँ।
है रज़्म-ओ-बज़्म की दौलत से आसूदा तेरा दामाँ।।

तलम्मुज़ का शरफ़ तू बख़्श दे अब शाहज़ादों को।
अता अफ़नान रज़्म-ओ-बज़्म करदे बे इरादों को।।

द्रोणा ने फिर उन की इलतेजा मंज़ूर फ़रमाई।
उन्हे क़िस्मत बयाबाँ से महल में खींच कर लाई।।

बईं ख़िफ़्फ़त = शर्मिन्दा

आज़ुर्दा-ओ-मुज़्तर = उदास व बेचैन

मर्दे-आक़िल = अक़्लमंद आदमी

तलम्मुज़ = शगिर्दी
अफ़नान = हुनर, फ़न की जमा



فنِ جنگ و جدل کی تربیت

محل عیش و طرب کے ساز و ساماں سے مزیّن تھا
ہر اک گوشہ متاعِ علم اور حکمت کا مخزن تھا

درونہ کوروں پانڈو کو وہاں یوں درس دیتے تھے
سحر سے شام تک محنت کراتے مشق لیتے تھے

وہیں کچھ دوسرے دیشوں کے شہزادے بھی آ آ کر
کیا کرتے تھے حاصل ان سے رزم و بزم کے جوہر

گدا یُدھ میں ہوئے چالاک کافی بھیم و دریودھن
مگر یہ دونوں تھے اک دوسرے کی جان کے دشمن

نکُل شمشیر بازی میں ہزاروں میں یگانہ تھا
نہ تھا اس کا کوئی ثانی وہ یکتائے زمانہ تھا

یُدھشٹر دوسرے سہدیو فنِ شہسواری میں
جواب اپنا نہ رکھتے تھے وہ دونوں ہوشیاری میں

مگر اس کے علاوہ بھی، جوئے بازی کا اک فن تھا
یُدھشٹر کا دماغ اس فن سے بھی قدرے مزیّن تھا

انھیں ویروں میں تھا اک کرن بھی یکتا ہزاروں میں
درخشاں چاند ہو جس طرح انجم کی قطاروں میں

یہ سارے سورما تھے، اور سبھی تھے اک سے اک بڑھ کر
مگر اک ویر ارجن تھا، جو ان سب میں تھا بڑھ چڑھ کر

مثال اس کی تھی گویا ماہ و انجم میں ہو اک سورج
زمانہ صبح سے تا شام دیکھے جس کی ہر سج دھج

फ़ने ज़ंग-ओ-जदल की तरबियत

महल ऐश-ओ-तरब के साज-ओ-सामॉ से मुज़ैयन था।
हर इक गोशा मता-ए-इल्म और हिकमत का मख़ज़न था।।

द्रोणा कौरव पांडव को, वहाँ यूँ दर्स देते थे।
सहर से शाम तक, मेहनत कराते मश्क़ लेते थे।।

वहीं कुछ दूसरे देशों के शहज़ादे भी आ आ कर।
किया करते थे हासिल, उन से रज़्म-ओ-बज़्म के जौहर।।

गदा युद्ध में हुए चालाक काफ़ी भीम-ओ-दुर्योधन।
मगर यह दोनों थे इक दूसरे की जान के दुश्मन।।

नकुल शमशीर बाज़ी में हज़ारों में यगाना था।
न था इस का कोई सानी, वह यकताए-ज़माना था।।

युधिष्ठिर दूसरे सहदेव फ़न्ने-शहसवारी में।
जवाब अपना न रखते थे, वह दोनों होशयारी में।।

मगर इसके अलावा भी, जुए बाज़ी का इक फ़न था।
युधिष्ठिर का दिमाग़ इस फ़न से भी क़दरे-मुज़ैयन था।।

इन्हीं वीरों में था, इक कर्ण भी यकता हज़ारों में।
दरख़शाँ चाँद हो जिस तरह, अंजुम की क़तारों में।।

यह सारे सूरमा थे, और सब थे, इक से इक बढ़कर।
मगर इक वीर अर्जुन था, जो उन सब में था बढ़ चढ़ कर।।

मिसाल उस की थी गोया, माह-ओ-अंजुम में हो इक सूरज।
ज़माना सुबह से ता शाम देखे जिस की हर सज-धज।।

ऐश-ओ-तरब = आनंद और ख़ुशी
मुज़ैयन = सजा हुवा
गोशा = कोना
मताअ = सामान
मख़ज़न = ख़ज़ाना

शमशीर बाज़ी = तलवार चलाना
यगाना = अपनी मिसाल आप

माह-ओ-अंज़म = चंद्रमा और तारे



جشن برائے امتحاں

یہ سب شہزادے جب اپنے ہنر میں ہو گئے ماہر
وِدُرجی نے پھر ان کے امتحانِ عام کی خاطر

منایا شہر کے باہر اک ایسا جشن پر شوکت
کہ جس میں ہر جگہ سے آئے شہزادے بصد عظمت

تنے تھے شامیانے رنگ بھومی پر قرینے سے
ٹکے تھے جھالروں میں لعل اور گوہر نگینے سے

بنے تھے منچ اونچے اونچے چاروں سمت میداں میں
سنہاسن "اندر" کا گویا اٹھ آیا ہو بیاباں میں

دھرت راشٹر اور وِدُر کے سنگ اس جا بھیشم بھی آئے
نہایت شان و شوکت سے وہاں تشریف سب لائے

مسلح ہو کے شہزادے کنور بھی منچ پر بیٹھے
رؤسا اور وزیروں کے قریب اہلِ ہنر بیٹھے

درونہ سب سے آخر میں بحسن عز و شاں پہنچے
نئی پوشاک ابیض میں وہ استادِ زماں پہنچے

قدم جونہی رکھا اپنا انہوں نے رنگ بھومی پر
صنم پوجے، دیئے بوسے زمیں کو جبہہ سا ہو کر

کئی اقسام کے سازوں سے نغمہ ریز تھا عالم
فضا میں سحرِ موسیقی کا ہر سو تھا اثر قائم

جنگ و حرب کی ماہرانہ صلاحیت کا مظاہرہ

اچانک سب سے پہلے ہی یدھشٹر اٹھا آسن سے
کیا پرنام، مانگا اذن پھر استادِ خوش فن سے

जशन बराए-इम्तेहाँ

यह सब शहज़ादे जब अपने हुनर में हो गए माहिर।
विदुरजी ने फिर उन के इम्तेहाने-आम की ख़ातिर।।

मनाया शहर के बाहर इक ऐसा जश्न पुर शौकत।
कि जिस में हर जगह से आए शहज़ादे बसद अज़मत।।

तने थे शामयाने रंग भूमि पर क़रीने से।
टके थे झालरों में लाल और गौहर नगीने से।।

बने थे मंच ऊँचे ऊँचे चारों सम्त मैदाँ में।
सिंहासन "इन्द्र" का गोया उठ आया हो बयाबाँ में।।

धृतराष्ट्र और विदुर के संग उस जा भीष्म भी आए।
निहायत शान-ओ-शौकत से वहाँ तशरीफ़ सब लाए।।

मुसल्लाह हो के शहज़ादे, कुवंर भी मंच पर बैठे।
रऊसा और वज़ीरों के करीब अहले-हुनर बैठे।।

द्रोणा सब से आख़िर में ब-हुस्ने-इज़्ज़ो-शाँ पहुँचे।
नई पोशाक अबीज़ में वह उस्ताज़े-ज़मा पहुँचे।।

कदम जूँही रखा अपना उन्होंने रंग भूमि पर।
सनम पूजे, दिये बोसे ज़मीं को जब्बह-सा होकर।।

कई अक़साम के साज़ों से नग़मा-रेज़ था आलम।
फ़ज़ा में सहरे-मौसीक़ी का हर सू था असर क़ायम।।

जंग-ओ-हर्ब की माहिराना सलाहियत का मुज़ाहरा

अचानक़ सब से पहले ही युधिष्ठिर उठा आसन से।
किया प्रणाम, मांगा इज़्न फिर उस्ताज़े-खुश-फ़न से।।

जश्न पुर शौकत = शानदार जश्न

बयाबाँ = जंगल

मुसल्लह = हथयार बन्द,

अबीज़ = सफ़ेद

जब्बह-सा = माथा रगड़ना

इज़्न = इजाज़त

یدھشٹر نے کمالِ فن ہنر والوں کو دکھلایا
عوام الناس سے پھر ہدیۂ تحسین بھی پایا

پھر اس کے بعد ہی میداں میں آئے بھیم و دریودھن
یہ دونوں ویر تھے اک دوسرے کی جان کے دشمن

دکھائے خوب پھر دونوں نے جوہر گرزِ آہن کے
ہتوٹی سے کیا اک دوسرے پر وار تن تن کے

گدا[1] یدھ میں بڑے چالاک اور مشّاق تھے دونوں
وہ اپنے اپنے فن میں شہرۂ آفاق تھے دونوں

گداؤں کے تصادم سے معاً چنگاریاں جھڑتیں
اور ان کے ساتھ دونوں یووکوں کی قسمتیں لڑتیں

غرض وہ لڑتے لڑتے موت کا کرنے لگے سودا
کہ لاحق ہو گیا تھا جس سے ان کی جان کو خطرہ

درونہ نے انہیں جب اس طرح لڑتے ہوئے دیکھا
شراروں کو دہانِ گُرز سے جھڑتے ہوئے دیکھا

تو کی محسوس فوراً دشمنی دونوں جوانوں کی
کہ جس سے زندگی خطرے میں تھی ان پہلوانوں کی

معاً فرزند "اسوتھاما" کو میداں میں بھیجا
لڑائی روکنے کو، اُس کو اِس طوفان میں بھیجا

گیا سمجھانے اَسوت ان کو جو تھے ہوش سے غافل
چٹاں کی طرح ان کے بیچ میں وہ ہو گیا حائل

بڑی مشکل سے دونوں پہلواں میدان سے لوٹے
گدا کاندھے پہ رکھ کر فاتحانہ شان سے لوٹے

پھر اس کے بعد ارجن شیر کی مانند بل کھاتا
کماں تھامے ہوئے میداں میں آیا تیر برساتا

دکھایا اس نے ہر اک زاویئے سے پھر کمال اپنا
نمایاں کر دیا دنیا پہ فنِ بے مثال اپنا

کبھی پاتال میں گھستا کبھی آکاش میں جاتا
کبھی پورب کبھی پچھم کبھی اُتّر میں لہراتا

[1] گرز

युधिष्ठिर ने कमाले-फ़न, हुनर वालों को दिखलाया।
अवाम-उन्नास से फिर हदिया-ए-तहसीन भी पाया।।

फिर इसके बाद ही मैदाँ में आए भीम-ओ-दुर्योधन।
यह दोनों वीर थे इक दूसरे की जान के दुश्मन।।

दिखाए खूब फिर दोंनों ने जौहर गुर्ज़े-आहन के।
हतौटी से किया इक दूसरे पर वार तन तन के।।

गदा युध्द में बड़े चालाक और मश्शाक़ थे दोनों।
वह अपने अपने फ़न में शोहरए-आफ़ाक़ थे दोनों ।।

गदाओं के तसादुम से मअन चिंगारियाँ झड़तीं।
और उन के साथ दोनों युवकों की किस्मतें लड़तीं।।

ग़रज़ वह लड़ते-लड़ते मौत का करने लगे सौदा।
कि लाहिक़ हो गया था जिस से उन की जान को ख़तरा।।

द्रोणा ने उन्हे जब इस तरह लड़ते हुए देखा।
शरारों को दहाने गुर्ज़ से झड़ते हुए देखा।।

तो की मैहसूस फ़ौरन दुश्मनी दोनों जवानों की।
कि जिस से ज़िन्दगी ख़तरे में थी उन पहलवानों की।।

मअन फ़र्ज़न्द "अश्वत्थामा" को मैदान में भेजा।
लड़ाई रोकने को' उस को इस तूफ़ान में भेजा।।

गया समझाने अश्वत उन को जो थे होश से ग़ाफ़िल।
चटाँ की तरह उन के बीच में वह हो गया हाइल।।

बड़ी मुश्किल से दोनों पहलवाँ मैदान से लौटे।
गदा कांधे पे रखकर फ़ातेहाना शान से लौटे।।

फिर उसके बाद अर्जुन शेर की मानिन्द बल खाता।
कमाँ थामे हुए मैदाँ में आया तीर बरसाता।।

दिखाया उसने हर इक ज़ाविए से फिर कमाल अपना।
नुमायाँ कर दिया दुनिया पे फ़न्ने-बे-मिसाल अपना।।

कभी पाताल में घुसता, कभी आकाश में जाता ।
कभी पूरब, कभी पश्चिम, कभी उत्तर में लहराता।।

कमाले-फ़न = हुनर का कर्तब

शोहरए-आफ़ाक़ = दूर-दूर तक मशहूर

फ़र्ज़न्द्र = पुत्र

फ़ातेहाना शान = विजयता के समान

غرض اس نے بہ اندازِ دگر اپنی صلاحیّت
دکھائی اس طرح حیرت زدہ سب ہو گئی خلقت

کرن کی آمد

پھر اس کے بعد ہی یک لخت میداں سے ذرا ہٹکر — گرج اٹھی، کہ جیسے رہ گیا ہو آسماں پھٹ کر
ہوا مابعد ہی فوراً فضا میں رعد سا کڑکا — کہ جس سے سارے لوگوں کا کلیجہ زور سے دھڑکا
یہ سچ ہے اختلاجی کیفیت سب پر ہوئی طاری — پسینہ خوف سے فی الفور جسموں سے ہوا جاری
یہ طوفاں رنگ بھومی کی طرف بڑھتا ہوا آیا — بہ ہر لمحہ قریں ہنگامۂ بسیار کو پایا
یکایک دیکھتے کیا ہیں کوچ کنڈل کیئے دھارن — بہادر کرن کھم کو ٹھونکتا آتا ہے فیل افگن
دیا لوگوں نے اس کو راستہ آیا وہ میداں میں — قدم بوسی کو پہنچا خدمتِ استاذِ ذیشاں میں
پھر اس کے بعد ارجن کی طرح اس نے ہنر اپنا — دکھایا اور عوام النّاس پر ڈالا اثر اپنا

حرکتِ دریودھن پر بھیم و ارجن کا مشتعل ہونا

جو دریودھن نے دیکھا کرن جیسے مردِ میداں کو — تو بلوایا بڑی تکریم سے شیرِ نیستاں کو

ग़रज़ उस ने ब-अंदाज़े-दिगर अपनी सलाहियत।
दिखाई इस तरह हैरत-ज़दा सब हो गई ख़िल्क़त।।

ख़िल्क़त = जनता

कर्ण की आमद

फिर इसके बाद ही यक-लख़्त मैदाँ से ज़रा हटकर।
गरज उठी, कि जैसे रह गया हो आसमाँ फट कर।।

यक लख़्त = अचानक

हुआ मॉबाद ही फ़ौरन फ़ज़ा में राद सा कड़का।
कि जिस से सारे लोगों का कलेजा ज़ोर से धड़का।।

यह सच है इख़्तेलाजी कैफ़ियत सब पर हुई तारी।
पसीना ख़ौफ़ से फ़िलफ़ौर जिस्मों से हुआ जारी।।

इख़्तेलाजी कैफ़ियत = घबराहट की हालत

यह तूफ़ाँ रंग भूमि की तरफ़ बढ़ता हुआ आया।
ब हर लम्हा करीं हंगामा-ए-बिसियार को पाया।।

बिसियार = बहुत, अधिक

यक़ायक़ देखते क्या हैं कवच कुंडल किए धारण।
बहादुर कर्ण ख़म को ठोंकता आता है फ़ील अफ़ग़न।।

दिया लोगों ने उस को रास्ता, आया वह मैदाँ में।
क़दम बोसी को पहुँचा ख़िदमते-उस्ताज़े-ज़ीशाँ में।।

क़दम-बोसी = पैर चुमना

फिर उस के बाद अर्जुन की तरह उस ने हुनर अपना।
दिखाया और अवाम-उन्नास पर डाला असर अपना।।

अवाम-उन्नास = आम जनता

हरकते-दुर्योधन पर भीम-ओ-अर्जुन का मुश्तइल होना

जो दुर्योधन ने देखा कर्ण जैसे मर्दे-मैदाँ को।
तो बुलवाया बड़ी तकरीम से शेरे-नयस्ताँ को।।

शेरे-नयस्ताँ = जंगल का शेर

تفقدؔ اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا — اور اس کے بعد اس کو پیار سے آسن پہ بٹھلایا

بڑی دریا دلی سے اس نے چمپاوی[1] حکومت کو — ہبہ کردی بنامِ کرن موروثی ولایت کو

یہ حرکت ساری دریودھن کی مبنی تھی شرارت پر — کیا تھا کرن کو قابض جو آبائی ولایت پر

یہ دیکھا بھیم و ارجن نے تو فوراً مشتعل ہو کر — کمانیں تھام کر دونوں اٹھے آسن سے بل کھا کر

جو دریودھن نے دیکھی جشن کی بدلی ہوئی حالت — تو اس کی بھی شجاعت کی پھڑک اٹھی رگِ غیرت

دھنش اور بان لیکر وہ بھی اٹھا اپنے آسن سے — کہ دکھلا کر شجاعت، داد پائے دوست دشمن سے

مگر فوراً غروبِ مہر کا پیغام آ پہنچا — اجالا کم ہوا میداں سے، وقت شام آ پہنچا

اور اس کے بعد چھائی تیرگی جب رنگ بھومی پر
تو واپس ہو گئے دونوں دلوں میں دشمنی لیکر

گرو دکشنا

درونا نے پھر اک دن اپنے شاگردوں کو بلوایا — مخاطب ہو کے اس نے اس طرح ارشاد فرمایا

بنایا دان ودیا دے کے، میں نے ہی تمہیں دانا — مگر اب تک گرو کا حق ملا ہے اور نہ نذرانہ

کرو تم اپنے سر سے بار ہلکا دکشنا دے کر — نوازا میں نے تم کو علم و فن اور کلپنا دے کر

[1] چمپا پوری

तफ़क़्क़ुद और रवादारी का मंज़र खूब दिखलाया ।
और इस के बाद उस को प्यार से आसन पे बिठलाया।।

बडी दरियादिली से उस ने [1]चम्पावी हुकूमत को।
हिबा कर दी बनामे-कर्ण मौरुसी विलायत को।।

यह हरकत सारी दुर्योधन की मबनी थी शरारत पर।
किया था कर्ण को क़ाबिज़ जो आबाई विलायत पर।।

यह देखा भीम-ओ-अर्जुन ने तो फ़ौरन मुश्तइल हो कर।
कमानें थाम कर दोनों उठे आसन से बल खा कर।।

जो दुर्योधन ने देखी जश्न की बदली हुई हालत।
तो उसकी भी शुजाअत की फड़क उठी रगे-ग़ैरत।।

धनुष और बान लेकर वह भी उठ्ठा अपने आसन से ।
कि दिखलाकर शुजाअत, दाद पाये दोस्त दुश्मन से।।

मगर फ़ौरन गुरुबे-महर का पैग़ाम आ पहुँचा।
उजाला कम हुआ मैदॉ से, वक़्ते-शाम आ पहुँचा।।

और इसके बाद छाई तैरगी, जब रंग भूमि पर।
तो वापस हो गए दोनौं दिलों में दुश्मनी लेकर।।

तफ़क़्क़ुद = मेहरबानी,
हिबा = कोई चीज किसी के नांम करदेना
मौरुसी विलायत = बाप दादा की हुकूमत
मुशतइल = गुस्से में भर कर
शुजाअत = बहादुरी
तैरगी = अन्धेरा

गुरु दक्षिणा

द्रोणा ने फिर इक दिन अपने शागिर्दो को बुलवाया।
मुख़ातिब हो के उस ने इस तरह इरशाद फ़रमाया।।

बनाया दान विद्या दे कर, मैं ने ही तुम्हें दाना।
मगर अब तक गुरु का हक़ मिला है और न नज़राना।।

करो तुम अपने सर से बार हल्का दक्षिणा देकर।
नवाज़ा मैं ने तुम को इल्मो-फ़न और कल्पना देकर।।

मुख़ातिब = संबोदय
नज़राना = दक्षिणा

[1] चम्पा पूरी

یہ سن کر سارے شہزادے بصد عجز و ادب بولے
کہ جو بھی آپ چاہیں دکشنا مانگیں، وہ ہم دینگے

گرو کو یاد تھی اب تک درو پد کی ریاکاری
ہوئی تھی دورِ ماضی میں جو ان کے ساتھ غداری

درونہ نے کہا پنچال راجہ کو پکڑ لاؤ
پھنسا کر قوس گردن میں اسے تم کھینچتے آؤ

یہی ہے دکشنا میری یہی ہے میرا نذرانہ!!
دروپد کو پکڑ لاؤ دکھاؤ شانِ مردانہ

خیر سے بدھو گھر کو آئے

یہ سن کر گھیر لی کوروں نے سیما پھر دروپد کی
مگر پنچال نے کی ناکہ بندی ایسی سرحد کی

کہ جس سے پیش قدمی رک گئی ان کی بہر صورت
دکھائی یوں تو سب نے خوب اپنی جرأت و ہمت

مگر ممکن نہ تھا پنچال ان سے زیر ہو جاتا
گروہِ گرگ آکر ان کے آگے شیر ہو جاتا

وہی آخر ہوا امید تھی جو بات ہونے کی
وقارِ کور کے لٹنے کی اور عظمت کے کھونے کی

دکھائی پشت پھر قالین کے شیروں نے میداں سے
ہٹے، ہٹکر رفو چکر ہوئے رفتارِ طوفاں سے

بچا کر جان بھاگ آئے، دروپد کی قلمرو سے
شکستِ فاش تھی یہ، جنگ کے آئینی پہلو سے

यह सुनकर सारे शहज़ादे बसद इज्ज़ो-अदब बोले।
कि जो भी आप चाहें दक्षिणा माँगें, वह हम देंगे।।

गुरु को याद थी अब तक द्रौपद की रिया कारी।
हुई थी दौरे माज़ी में जो उन के साथ ग़द्दारी।।

द्रोणा ने कहा पंचाल राजा को पकड़ लाओ।
फंसा कर कौस गर्दन में उसे तुम खींचते आओ।।

यही है दक्षिणा मेरी, यही है मेरा नज़राना !! ।
द्रौपद को पकड़ लाओ, दिखाओ शाने-मरदाना।।

ख़ैर से बुध्दू घर को आए

यह सुन कर घेर ली कौरों ने सीमा फिर द्रौपद की।
मगर पंचाल ने की नाका-बंदी ऐसी सरहद की।।

कि जिस से पेश क़दमी रुक गई उन की बहर सूरत।
दिखाई यूँ तो सब ने खूब अपनी जुर्अत-ओ-हिम्मत।।

मगर मुम्किन न था पंचाल उन से ज़ेर हो जाता।
गिरोहे गुर्ग आकर उन के आगे शेर हो जाता।।

वही आखिर हुआ उम्मीद थी जो बात होने की।
वकारे-कौर के लुटने की और अज़मत के खोने की।।

दिखाई पुश्त फिर कालीन के शेरों ने मैदाँ से ।
हटे, हटकर रफ़ू चक्कर हुए रफ़्तारे-तूफ़ाँ से।।

बचा कर जान भाग आए, द्रौपद की क़लम-रौ से।
शिकस्ते-फ़ाश थी यह, जंग के आईनी पहलू से।।

वसद् इज्ज़ो-अद्‌ब = बहुत आदर के साथ

रियाकारी = मक्कारी

कौस = कमान

पेश क़दमी = बढ़ते क़दम

बहर सुरत = हर हाल में

वकार = शानो शौकत,

पुश्त = पीठ

क़लम-रौ = राज्य



بھیم اور ارجن کی جرأت آزمائی

اب اس کے بعد جرأت آزمائی پر کمر بستہ — ہوئے تھے بھیم ارجن برسرِ پیکار برجستہ
انہیں راجہ دروپد کو جوابِ جنگ دینا تھا — خراجِ برتری شیطاں صفت راجہ سے لینا تھا
مسلح ہو کے پہنچے سرحدِ پنچال میں پانڈو — دروپد سے تھے برتر عزم و استقلال میں پانڈو
مچا جنگ و جدل کا اس طرح پنچال میں طوفاں — نظر آتا تھا میدانِ وغا اک حشر کا میداں

غرض فوجِ دروپد پھر فنا کے گھاٹ آپہنچی
چلو فرصت ہوئی وہ لوک سے پرلوک جا پہنچی

شکست خوردہ راجہ دروپد درونہ چاریہ کے حضور میں

ہوا پنچال راجہ زیر ارجن کے مقابل میں — شکستِ فاش سے حد درجہ شرمندہ ہوا دل میں
انوکھے ڈھنگ سے وہ شبد بھیدی کا بنا قیدی — چلا سمتِ درونہ بخت کا مارا ہوا قیدی
کماں ارجن کی تھی حلقہ گرفتِ گردنِ فائق — بڑے لوگوں کے کیا حلقوم ہوتے ہیں اسی لائق
جو کھینچی جائے گردن میں پھنسا کر قوس میلوں میل — مثال ایسی نہ پائیں گے جلا کر ڈھونڈیے قندیل

भीम और अर्जुन की जुरअत आज़माई

अब इस के बाद जुरअत आज़माई पर कमर बस्ता।
हुए थे भीम अर्जुन बरसरे-पैकार बर जस्ता।।

उन्हें राजा द्रौपद को जवाबे-जंग देना था।
ख़िराजे-बरतरी शैताँ सिफत राजा से लेना था।।

मुसल्लह होके पहुँचे सरहदे-पंचाल में पान्डव।
द्रौपद से थे बरतर अज़्म-ओ-इस्तक़लाल में पान्डव।।

मचा जंग-ओ-जदल का इसतरह पंचाल में तूफाँ।
नज़र आता था मैदाने-वग़ा इक हश्र का मैदाँ।।

ग़रज़ फ़ौजे-द्रौपद फिर फ़ना के घाट आ पहुँची।
चलो फुरसत हुई वह लोक से परलोक जा पहुँची।।

कमर बस्ता = कमर बांधे हुए
बरसरे-पैकार = लड़ाई पर तैयार
बर जस्ता = तुरंत
मुसल्लह = हथियार बंद
मैदाने-वग़ा = रणभूमि
हश्र = क़यामत
फ़ना = मृत्यु

शिकस्त खुर्दा राजा द्रौपद द्रोणाचार्य के हुज़ूर में

हुआ पंचाल राजा ज़ेर, अर्जुन के मुक़ाबिल में।
शिकस्ते-फ़ाश से हद दर्जा शर्मिन्दा हुआ दिल में।।

अनोखे ढंग से वह शब्द भेदी का बना क़ैदी।
चला सम्ते-द्रोणा बख़्त का मारा हुआ क़ैदी।।

कमाँ अर्जुन की थी हलक़ा गिरिफ़ते-गर्दने-फ़ायक़।
बड़े लोगों के क्या हलकूम होते हैं उसी लायक़।।

जो खींची जाए गर्दन में फंसा कर कौस मीलों मील।
मिसाल ऐसी न पाएँगे जला कर ढूंडये क़न्दील।।

बख़्त = भाग्य
हलका गिरिफ़त = पकड
गर्दने-फ़ायक़ = उंची गर्दन
हलकूम = गला

غرض پنچال راجہ کو وہ یوں ہی کھینچ کر لایا
اسی حالت میں استاذِ زماں کے پاس پہنچایا

درونہ نے اسے جس وقت دیکھا ایسی حالت میں
کمی محسوس کی پھر اپنی دیرینہ کدورت میں

درونہ نے مخاطب ہو کے یوں راجہ سے فرمایا
تجھے یہ آج کا دن تیری بدعہدی نے دکھلایا

ابھی کچھ وقت ہے پرتگیا کا اپنی کر پالن
بچالے داغِ بدعہدی سے ناداں اپنا تو دامن

نہیں تو آنے والی نسل لعنت تجھ پہ بھیجے گی
ترا جس وقت نام آئے گا دنیا تجھ پہ تھوکے گی

درویدنے سنا تو دل پہ اک سنگِ گراں رکھکر
حکومت نصف دیدی جبر کر کے اپنے سینے پر

مگر دل میں خلش باقی رہی پنچاں کے تاہم
بباطن دشمنی رکھی، بظاہر بن گیا ہمدم

بغاوت کا خطرہ

درویدکی شکستِ فاش اور پانڈو کی نصرت نے
لگادی آگ سی کوروں کے منڈل میں کدورت نے

علاوہ اس کے پرجا کو بھی پانڈو ہی سے الفت تھی
عوام الناس کو حدِ عقیدت تک محبت تھی

اِدھر جنتا کی الفت اور اُدھر ان کی صلاحیت
بڑھادی اور ان دونوں نے ان کی قدر اور وقعت

مگر اب اک نئی چنتا سے دریودھن پریشاں تھا
اسے پانڈو کی جانب سے بغاوت کا بھی امکاں تھا

ग़रज़ पंचाल राजा को वह यूँही खींच कर लाया।
इसी हालत में उस्ताज़े-ज़मां के पास पहुंचाया।।

द्रोणा ने उसे जिस वक़्त देखा ऐसी हालत में।
कमी महसूस की फिर अपनी देरीना कदूरत में।।

द्रोणा ने मुख़ातिब हो के यूँ राजा से फ़रमाया।
तुझे यह आज का दिन तेरी बद-अहदी ने दिखलाया।।

अभी कुछ वक़्त है प्रतिज्ञा का अपनी कर पालन।
बचा ले दाग़े-बद-अहदी से नादाँ अपना तू दामन।।

नहीं तो आने वाली नस्ल लानत तुझ पे भेजेगी।
तेरा जिस वक़्त नाम आएगा दुनिया तुझ पे थूकेगी।।

द्रौपद ने सुना तो दिल पे इक संगे-गिराँ रखकर।
हुकूमत निस्फ़ देदी जब्र करके अपने सीने पर।।

मगर दिल में ख़लिश बाक़ी रही पंचाल के ताहम।
ब-बातिन दुश्मनी रखी, बज़ाहिर बन गया हमदम।।

उस्ताज़े - ज़मां = जगत गुरु
देरीना = पुरानी
कदूरत = दुश्मनी
नस्ल = पीढ़ी
बातिन = छिपा हुआ
बज़ाहिर = खुले तौर पर

बग़ावत का ख़तरा

द्रौपद की शिकस्ते-फ़ाश और पान्डव की नुसरत ने।
लगा दी आग सी कौरों के मंडल में कदूरत ने।।

अलावा इसके प्रजा को भी पान्डव ही से उलफ़त थी।
अवाम-उन्नास को हद्दे-अक़ीदत तक मोहब्बत थी।।

इधर जनता की उलफ़त और उधर उन की सलाहियत।
बढ़ादी और, इन दोनों ने उन की कद्र और वक़अत।।

मगर अब इक नई चिन्ता से दुर्योधन परेशाँ था।
उसे पान्डव की जानिब से बग़ावत का भी इमकाँ था।।

शिकस्ते-फाश = खुली हुइ हार
उलफ़त = प्यार, प्रेम

کہ پانڈو اب کہیں جنتا کی شہ اور اپنی قوت پر
بغاوت کر کے قبضہ ہی نہ کر لیں اس حکومت پر

سازشِ کوراں

خیال اس قسم کا آتے ہی دریودھن نے سر ہو کر
کیا فی الفور آمادہ پتا کو اپنے سازش پر

انوکھا وار والد کے توسط سے کیا اس نے
چلی اک شاطرانہ چال فوراً بر ملا اس نے

خوشی سے وہ پھر اپنے پتا کے سامنے آیا
کہ پانڈو شہر کے باہر رہیں فرمان لکھوایا

پروچن کو بلا کر اس نے سازش میں کیا شامل
جو معماری کے فن میں تھا بہت ہشیار اور قابل

اُسے وارن وتی میں اک محل ایسا بنانے پر
کیا مامور دریودھن نے اپنا فن دکھانے پر

محل ہو بانس اور شہتیر کی بنیاد پر قائم
ہر اک حصہ ہو اس کا بس مرے ارشاد پر قائم

پروچن نے دکھایا اپنا فنِ رال اور پٹ سن
ملا ایسا در و دیوار اور چھت پر لک[1] و روغن

کہ ادنیٰ سے شرارے آگ کا وہ شعلہ بھڑکائیں
محل کے ساتھ جس میں پانڈواں بھی جل کے مر جائیں

محل تھا واقعی معمار کا شہکارِ معماری
پروچن کی فنِ تعمیر سے ظاہر تھی ہشیاری

مکمل ہو چکا جب یہ مکاں تو اس نے عجلت سے
خبر پہنچائی دریودھن کو ظالم نے شرارت سے

[1] لک = لاکھ، یعنی نباتاتی کیڑوں کا اگال۔

कि पांडव अब कहीं जनता की शैह और अपनी कुव्वत पर।
बग़ावत करके क़ब्ज़ा ही न कर लें इस हुकूमत पर।।

साज़िशे - कौरवाँ

ख़याल इस क़िस्म का आते ही दुर्योधन ने सर होकर।
किया फ़िलफ़ौर आमादा पिता को अपने, साज़िश पर।।

अनोखा वार वालिद के तवस्सुत से किया उस ने।
चली इक शातेराना चाल फ़ौरन बर-मला उस ने।।

ख़मुशी से वह फिर अपने पिता के सामने आया।
कि पांडव शहर के बाहर रहें, फ़रमान लिखवाया।।

प्रोचन को बुलाकर उस ने साज़िश में किया शामिल।
जो मेमारी के फ़न में था बहुत हुशयार और क़ाबिल।।

उसे "वारणवति" में इक महल ऐसा बनाने पर।
किया मामूर दुर्योधन ने अपना फ़न दिखाने पर।।

महल हो बाँस और शैहतीर की बुनियाद पर क़ायम।
हर इक हिस्सा हो उसका, बस मेरे इर्शाद पर कायम।।

प्रोचन ने दिखाया अपना फ़न्ने-राल और पटसन।
मला ऐसा दरो-दीवार और छत पर लक-ओ-रौग़न।।

कि अदना से शरारे आग का वह शोला भड़काएं।
महल के साथ जिस में पांडवाँ भी जल के मर जाएं।।

महल था वाकई मेमार का शहकारे-मेमारी।
प्रोचन की फ़ने-तामीर से ज़ाहिर थी हुशयारी।।

मुकम्मल हो चुका जब यह मकाँ तो उस ने उजलत से।
ख़बर पहुचांई दुर्योधन को ज़ालिम ने शरारत से।।

फ़िलफ़ौर = फ़ौरन
आमादा = राज़ी

तवस्सुत = द्वारा
शातेराना = चालाकी से

मेमारी = घर बनाने का काम
फ़न = हुनर

शैहतीर = लकड़ी की बल्लियाँ

लक = लाख यानी नबाताती कीड़ों का उगाल।

शरारा = चिंगारी

शहकार = हुनर मन्दी का नमुना

پانڈوؤں کا اخراج

ہوا تعمیرِ ایواں سے بہت مسرور دریودھن
کہا اپنے پتا سے باادب یوں چوم کر دامن!!

محل تو بن گیا ہے آپ آگے حکم فرمائیں
کہ پانڈو چھوڑ دیں یہ شہر، اور وارن وتی جائیں

دیا پانڈو کو فوراً حکم پھر راجہ نے جانے کا
کہ تھا پہلے سے سارا بندوبست ان کو بسانے کا

یدھشٹر، بھیم، ارجن اور نکل سہدیو سب مل کر
ملے کرپا، درونہ، اور پتامہ سے بہ چشمِ تر

چرن چھو کر ادب سے ہو گئے استادہ سب بھائی
اجازت مانگ کر لوٹے تو سب کی آنکھ بھر آئی

چلے وارن وتی کی سمت اور چھوڑا دیار اپنا
پلٹ کر دیکھتے جاتے تھے گھر اپنا دیار اپنا

بہ ہر لمحہ قدم منزل کی جانب بڑھتے جاتے تھے
فرازِ زینۂ منزل پہ پانڈو چڑھتے جاتے تھے

سازش کا انکشاف اور تفحصِ سرنگ

اچانک مل گئے ان کو ودُرجی راہ میں آکر
کیا آگاہ چھل سے دشت و کوہ و کاہ میں آکر

الگ لے جا کے، کہہ دی راز کی باتیں یدھشٹر سے
فریب آمیز دریودھن کی سب گھاتیں یدھشٹر سے

पान्डवों का इख़राज

हुआ तामीरे-ऐवाँ से बहुत मसरूर दुर्योधन।
कहा अपने पिता से बा-अदब यूँ चूम कर दामन।।

महल तो बन गया है आप आगे हुक्म फ़रमाएं।
कि पांडव छोड़दें यह शहर, और वारणवति जाएं।।

दिया पांडव को फ़ौरन हुक्म फिर राजा ने जाने का।
कि था पहलेसे सारा बन्दोबस्त उन को बसाने का ।।

युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन और नकुल, सहदेव सब मिलकर।
मिले कृपा, द्रोणा और पितामह से ब-चष्मे-तर।।

चरण छूकर अदब से होगए इस्तादा सब भाई।
इजाज़त माँग कर लौटे तो सब की आँख भर आई।।

चले वारणवति की सम्त और छोड़ा दयार अपना।
पलट कर देखते जाते थे घर अपना दयार अपना ।।

ब हर लम्हा क़दम मंज़िल की जानिब बढते जाते थे।
फ़राज़े-ज़ीना-ए-मंज़िल पे पांडव चढते जाते थे।।

साज़िश का इन्केशाफ़ और तफ़ह्-हुसए-सुरंग

अचानक मिल गए उन को विदुरजी राह में आकर।
किया आगाह छल से दश्तो-कोहो-काह में आकर।।

अलग लेजाके, कहदी राज़ की बातें युधिष्ठिर से।
फ़रेब आमेज़ दुर्योघन की सब घातें युधिष्ठिर से।।

ऐवाँ = महल
मसरूर = प्रसन्न

इस्तादा = खड़ा हुआ

दयार = नगर
ब हरलम्हा = हर लम्हा,
फ़राज़े-जीना-ए-मंज़िल = मंज़िल की बुलन्दी पर

इन्केशाफ़ = भेद
तफ़ह-हुस्से-सुरगं = सुरंग का खोदना ,

दश्तो-कोहो-काह = दुर जंगल और पहाड़

یدھشٹر نے سنا جب کوروں کا فعل شیطانی
کہا اس نے کہ اب تو سر سے اونچا ہو گیا پانی

مگر پھر بھی تحمّل کا نہ دامن ہاتھ سے چھوڑا
قدم بڑھتے رہے منزل کی جانب رُخ نہیں موڑا

یدھشٹر میں تھی اس فتنے سے بچنے کی صلاحیت
سرِ فتنہ کچلنے کی اسے معلوم تھی حکمت

لیا رستے سے اس نے ایک کارِ حفر کا ماہر
سُرنگیں کھودنے کے فن میں تھا جو چست اور شاطر

چلے منزل بہ منزل راہ طے کرتے ہوئے پانڈو
قدم آگے بڑھاتے ڈگ پہ ڈگ بھرتے ہوئے پانڈو

غرض اک روز پانڈو منزلِ مقصود پر پہنچے
بایں ہمت ہتھیلی پر لیے وہ اپنا سر پہنچے

پروچن اور بھیلنی کی ناکامی

پروچن نے کیا پھر بڑھ کر استقبال پانڈو کا
نہایت دلکُشا لہجے میں پوچھا حال پانڈو کا

دکھایا اس نے پھر خاطر تواضع کا حسیں منظر
مگر چھل اور کپٹ کے صاف تھے پوری طرح تیور

مگر پانڈو بھی اس سے کم نہ تھے چالاک اور شاطر
ذرا بھی اپنے ماتھے پر نہ ہونے دی شکن ظاہر

چنانچہ رہتے رہتے ان کو کافی دن وہاں بیتے
حیات و زیست کی بازی کبھی ہارے کبھی جیتے

اِس عرصہ میں سُرنگ آخر بہت خفیہ طریقے سے
مکمل ہو چکی تھی حسن و خوبی اور سلیقے سے

युधिष्ठिर ने सुना जब कौरवाँ का फ़ेल-शैतानी।
कहा उसने कि अब तो सर से ऊँचा हो गया पानी।।

मगर फिर भी तहम्मुल का, न दामन हाथ से छोड़ा।
क़दम बढते रहे मंज़िल की जानिब रुख़ नही मोड़ा।।

युधिष्ठिर में थी इस फ़ितने से बचने की सलाहियत।
सरे-फ़ितना कुचलने की उसे मालूम थी हिकमत।।

लिया रस्ते से उसने एक कारे-हफ़र का माहिर।
सुरंगें खोदने के फ़न में था जो चुस्त और शातिर।।

चले मंज़िल ब मंज़िल राह तै करते हुए पांडव।
क़दम आगे बढाते डग पे डग भरते हुए पांडव।।

ग़रज़ इक रोज़ पांडव मंज़िले-मक़सूद पर पहुँचे ।
बई हिम्मत हथेली पर लिए वह अपना सर पहुँचे।।

फ़ेल = काम/कार्य
तहम्मुल = धिरज
रुख = सिम्त/दिशा
फ़ितना = उपद्रव
हिकमत = गुर
हफ़्र = सुरंग खोदने का काम
मंज़िले मक़सूद = जहां पह चने का इरादा हो,

प्रोचन और भीलनी की नाकामी

प्रोचन ने किया फिर बढ कर इस्तक़बाल पांडव का।
निहायत दिल कुशा लहजे में पूछा हाल पांडव का।।

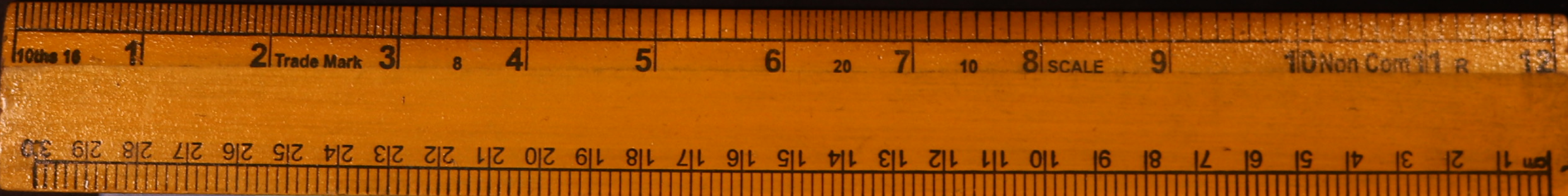
दिखाया उस ने फिर ख़ातिर तवाज़े का हसीं मंज़र।
मगर छल और कपट के साफ़ थे, पूरी तरह तेवर ।।

मगर पांडव भी उस से कम न थे चालाक और शातिर।
ज़रा भी अपने माथे पर न होने दी शिकन ज़ाहिर।।

चुनांचे रहते रहते उन को काफ़ी दिन वहाँ बीते।
हयात-ओ-ज़ीस्त की बाज़ी कभी हारे कभी जीते।।

इस अरसे में सुरंग आख़िर बहुत खुफ़िया तरीक़े से।
मुकम्मल हो चुकी थी हुस्नो-खूबी और सलीक़े से।।

इस्तक़बाल = स्वागत
दिल कुशा = मनोहर दिल को खिलाने वाला
हयात-ओ-ज़ीस्त = ज़िंदगी की बाज़ी



ادھر موقع طلب اب تک پروچن تھا ستم پرور
مگر ارمان اس کے، دل ہی دل میں رہ گئے گھٹ کر

کہ اک دن اتفاقاً اس جگہ اک بھیلنی آئی
جو اپنے پانچ بیٹوں کو بھی اپنے ساتھ تھی لائی

کہا جاتا ہے وہ عورت بھی اس سازش میں شامل تھی
جو مکاری میں یکتا اور عیاری میں کامل تھی

مگر اُن سارے بدبختوں کو ایواں کے جلانے کا
نہ موقع مل سکا مطلق محل کی خاک اڑانے کا

یدھشٹر نے ادھر سوچا کہ اچھا وقت آیا ہے
مجھے بھگوان کی لیلا نے یہ موقع دلایا ہے

کہ میں پہلے نہ کیوں ان سے لگا دوں آگ ایواں کو
محل کے ساتھ کر دوں بھسم ان سب دشمنِ جاں کو

یہ سب کچھ سوچ کر شب میں لگا دی آگ ایواں میں
سُرنگی راہ سے پھر چل دیئے پانڈو بیاباں میں

لاکھ کا محل تودۂ خاک کی صورت میں

سحر نے اک تحیّر کا سماں لوگوں کو دکھلایا
محل کو خاک کے تودہ کی صورت میں پڑا پایا

جلی لاشیں پڑی پائی گئیں انبار کے نیچے
ملی تھیں سات لاشیں تودۂ دیوار کے نیچے

یہ لاشیں دیکھ کر لوگوں نے سمجھا مر گئے پانڈو
یقیناً عالمِ فانی سے رحلت کر گئے پانڈو

خبر قصبے کے لوگوں نے یہ دریودھن کو پہنچائی
محل کے ساتھ کنتی اور پانچوں جل گئے بھائی

उधर मौक़ा तलब अब तक प्रोचन था सितम परवर।
मगर अरमान उस के, दिल ही दिल में रह गए घुट कर।।

कि इक दिन इत्तेफ़ाक़न उस जगह इक भीलनी आई।
जो अपने पाँच बेटों को भी अपने साथ थी लाई।।

कहा जाता है वह औरत भी इस साज़िश में शामिल थी।
जो मक्कारी में यकता और अय्यारी में कामिल थी।।

मगर उन सारे बद-बख़्तों को ऐवाँ के जलाने का।
न मौक़ा मिल सका मुतलक़, महल की ख़ाक उड़ाने का।।

युधिष्ठिर ने इधर सोचा कि अच्छा वक़्त आया है।
मुझे भागवान की लीला ने यह मौक़ा दिलाया है।

कि मैं पहले न क्यों उन से लगा दूँ आग ऐवाँ को।
महल के साथ करदूँ भस्म, उन सब दुश्मने-जाँ को।।

यह सब कुछ सोच कर शब में लगादी आग ऐवाँ में।
सुरंगी राह से फिर चल दिए पांडव बयाबाँ में।।

लाख का महल
तोदा-ए-ख़ाक की सूरत में

सहर ने इक तहय्युर का समाँ लोगों को दिखलाया।
महल को ख़ाक के तोदह की सूरत में पड़ा पाया।।

जली लाशें पड़ी पाई गईं अंबार के नीचे।
मिली थीं सात लाशें तोदा-ए-दीवार के नीचे।।

यह लाशें देखकर लोगों ने समझा मर गए पांडव।
यक़ीनन आलमे-फ़ानी से रहलत कर गए पांडव।।

ख़बर क़सबे के लोगों ने यह दुर्योधन को पहुँचाई।
महल के साथ कुन्ती और पाँचों जल गए भाई।।

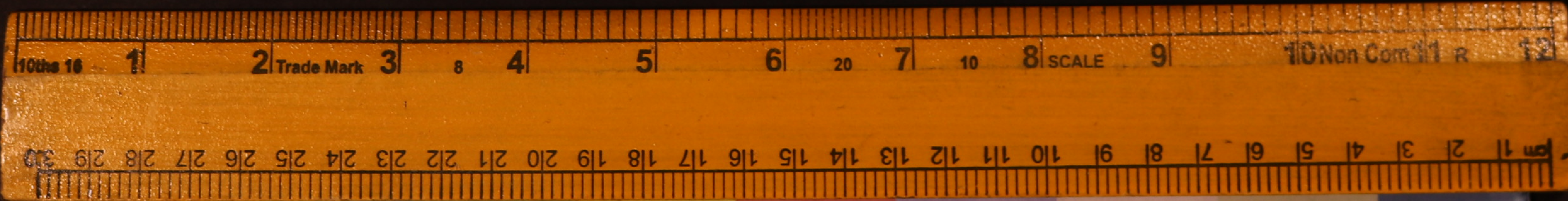
मौक़ा तलब = समय की प्रतिक्षा
सितम परवर = ज़ालिम

यकता = अकेला
कामिल = माहिर

शब = रात

तोदा-ए-ख़ाक = राख का ढेर

सहर = सबेरा
तहय्युर = आश्चर्य



ملی ہے یہ خبر جس وقت دریودھن بداختر کو
خوشی سے جھوم اٹھّا اور اونچا کر لیا سر کو

پانڈو بیاباں میں

محل کو پھونک کر نکلے سرنگی راہ سے پانڈو
چلے مجبور ہو کر اپنی عشرت گاہ سے پانڈو

ہوئے روپوش آخر کار جنگل اور بیاباں میں
بسیرا کر لیا کوہ و دمن میں دشت ویراں میں

وطن سے دور ہو کر بن گئے تھے آج صحرائی
مقدر نے بصد افسوس ان سے خاک چھنوائی

تھا قلبِ بھیم احساسِ صعوبت سے بہت گریاں
وہ اپنی بے بسی اور کسمپرسی پر تھا سرگرداں

حسین ٹکراؤ

کئی دن بعد انہیں اک راکشش نے دشت میں دیکھا
تو اس کے منہ سے پانی لحم آدم کیلئے چھوٹا

کیا جب اشتہائے لحمِ آدم نے اسے مضطر
معاً اس نے کہا خواہر سے اپنی دشت میں جاکر

فلاں جانب گروہِ آدمی نے ڈیرا ڈالا ہے
پکڑ لا ایک کو، انساں بھی کیسا تر نوالا ہے

मिली है यह ख़बर जिस वक़्त दुर्योधन बद-अख़्तर को।
खुशी से झूम उठ्ठा और ऊँचा कर लिया सर को।।

बदअख़्तर = बदकि़स्मत

पांडव बयाबाँ में

महल को फूंक कर निकले सुरंगी राह से पांडव।
चले मजबूर हो कर अपनी इशरत गाह से पांडव।।

इशरत गाह = आराम की जगह

हुए रुपोश आख़िरकार जंगल और बयाबाँ में।
बसेरा कर लिया कोहो - दमन में दश्त वीराँ में।।

रुपोश = छुपे
कोह = पहाड
दमन = मैदान
दश्त = जंगल
वीराँ = सुनसान
मुकद्दर = भाग्य

वतन से दूर होकर बनगए थे आज सहराई ।
मुक़द्दर ने बसद अफ़सोस उन से ख़ाक छनवाई।।

था क़ल्बे-भीम एहसासे-सउबत से बहुत गिरयाँ।
दह अपनी बेबसी और कस्मपुरसी पर था सर-गरदाँ।।

क़ल्ब = दिल/ह्रदय
सउबत = कष्ट/तकलीफ़
गिरयाँ = रोता हुआ
कस्म पुरसी = बेसहारा
पन सर गरदाँ= परेशान

हसीन टकराव

कई दिन बाद उन्हें इक राक्षश ने दश्त में देखा।
तो उस के मुँह से पानी, लहमे-आदम के लिए छूटा।।

लहमे-आदम = इन्सान का मास

किया जब इश्तेहाए-लहमे-आदम ने उसे मुज़तर।
मअन उस ने कहा ख़्वाहिर से अपनी, दश्त में जाकर।।

इश्तेहाए = भूक
मुज़तर = बेचैन

फलाँ जांनिब गिरोहे-आदमी ने डेरा डाला है।
पकड़ ला एक को, इन्साँ भी कैसा तर निवाला है।।

یہ سن کر وہ وہاں پہنچی جہاں پانڈو کا ڈیرا تھا
ستم کُشتہ پریشاں حال کا جس جا بسیرا تھا

نظر اُس کی پڑی یک لخت پہلے بھیم کے اوپر
وہاں سے جب ہٹی تو لی نگاہِ بھیم سے ٹکر

نگاہوں کا تصادم پیار کا پیغام لے آیا
نظر پلٹی تو دل میں اک انوکھا درد سا پایا

نظر کا تیر پہلی ہی نظر میں کر گیا گھایل
کلیجہ اپنا اپنا تھام کر بس رہ گئے بیکل

حسیں ٹکراؤ کا آخر نتیجہ بھی حسیں نکلا!
بشکلِ ازدواجِ زیست عشرت آفریں نکلا

جوشِ غیرت اور مقابلہ بھیم و راکشش

ادھر تاخیرِ خواہر سے تھا کافی راکشش حیراں
کبھی غصّہ اسے آتا کبھی ہوتا وہ سرگرداں

بالآخر خود ہی پیچ و تاب وہ کھاتا ہوا پہنچا
جہاں پانڈو تھے اس جا گُرز لہراتا ہوا پہنچا

بہن کو بھیم کے پہلو میں جب بیٹھا ہوا پایا
اہانت کا ہوا احساس اور غیرت نے اکسایا

گدا لے کر وہ جھپٹا بھیم جیسے فیل افگن پر
کیا بھرپور پہلا وار اس نے اپنے دشمن پر

بدل کر پینترا اس نے گدا کو گُرز پر روکا!!
اچانک وار کرنے پر نہ اس کو بھیم نے ٹوکا

यह सुन कर वह वहाँ पहुँची जहाँ पांडव का डेरा था।
सितम कुश्ता परेशाँ हाल का जिस जा बसेरा था।।

नज़र उसकी पडी यक लख़्त पहले भीम के ऊपर।
वहाँ से जब हटी तो, ली निगाहे-भीम से टक्कर।।

निगाहों का तसादुम प्यार का पैग़ाम ले आया।
नज़र पलटी तो दिल में इक अनोखा दर्द सा पाया।।

नज़र का तीर पहली ही नज़र में कर गया घायल।
कलेजा अपना अपना थाम कर बस रह गए बेकल।।

हसीं टकराव का आख़िर नतीजा भी हसीं निकला।
बशक्ले-अज़दवाजे-ज़ीस्त इशरत आफ़रीं निकला।।

जोशे-ग़ैरत और मुक़ाबलाए भीम-ओ-राक्षस

उधर ताख़ीरे- ख़्वाहिर से था काफ़ी राक्षस हैराँ।
कभी गुस्सा उसे आता कभी होता वह सरगरदाँ।।

बिलआख़िर खुद ही पेचो-ताब वह खात हुआ पहुँचा।
जहाँ पांडव थे उस जा गुर्ज़ लहराता हुआ पहुँचा।।

बहेन को भीम के पहलू में जब बैठा हुआ पाया।
अहानत का हुआ एहसास और ग़ैरत ने उकसाया।।

गदा लेकर वह झपटा भीम जैसे फ़ील अफ़गन पर।
किया भरपूर पहला वार उसने अपने दुश्मन पर।।

बदल कर पैतरा उस ने गदा को गुर्ज़ पर रोका!!।
अचानक वार करने पर न उस को भीम ने टोका।।

सितम कुश्ता = मुसिबत की मारीं
यक लख़्त = अचानक

निगाहों का तसादुम = आखों का मिलना

इशरत = आनन्द
आफ़रीन = शाबाश

ताख़ीरि ख़्वाहिर = बहेन के आने में देर
हैराँ = आश्चर्य

फ़ील अफ़गन = हाथी को पछाड़ने वाला.

دکھائی عزم و پامردی کی ایسی شان دونوں نے
لڑائی وہ لڑی جس میں لڑادی جان دونوں نے

گدائیں جب بھی ٹکراتیں فضائیں جھنجھنا اٹھتیں
دماغ و قلب کی جتنی رگیں تھیں سنسنا اٹھتیں

کبھی تو ٹوٹ کر کنگورے گرتے گرزِ آہن کے
کبھی جھڑتے شرارے ایسے جیسے پھول ایندھن کے

وہ ہم پلّہ تھے دونوں اور چوٹیں تھیں برابر کی
سرِ میداں لگی تھی آج بازی جان اور سر کی

یکایک راکشش نے جوش میں یوں پیترا بدلا
سبک دستی سے کاوا دے کے پشتِ بھیم پر آیا

وہیں سے ضرب اک ایسی لگائی بھیم کے سر پر
مگر اوچھا پڑا اُس کا یہ مُہلک وار مغفر پر

بہت کافی تھا یہ چرکا ہی اُس شیرِ نیستاں کو
اک انجانے میں دعوت دی گئی ہو جیسے طوفاں کو

بھبھوکا بن کے وہ غصّے میں پلٹا پینترا بدلا
بدل کر پینترا اس راکشش سے لیا بدلہ

کیا اک ایسا مہلک وار اُس نے گرزِ آہن کا
کہ سر سے دور بھیجا جا پڑا مغرور دشمن کا

مگر دم بھر رہا ساکت وہ اک تصویر کی مانند
اور اس کے بعد فوراً گر پڑا شہتیر کی مانند

پانڈوؤں کی صحرا نوردی اور ویاس جی کا درشن

ادھر پانڈو نے اب اپنی اقامت گاہ کو چھوڑا
زمیں کو راکشش کی، دشتِ کوہ و کاہ کو چھوڑا

दिखाई अज़्मो-पामरदी की ऐसी शान दोनों ने।
लड़ाई वह लड़ी जिस में लड़ादी जान दोनों ने।।

गदाएँ जब भी टकरातीं फ़ज़ाएँ झनझना उठतीं।
दिमागो़-क़ल्ब की जितनी रगें थीं सनसना उठतीं।।

कभी तो टूट कर कंगूरे गिरते गुर्ज़े-आहन के।
कभी झड़ते शरारे ऐसे जैसे फूल ईन्धन के।।

वह हम पल्ला थे दोनों और चोटें थीं बराबर की।
सरे मैदाँ लगी थी आज बाज़ी जान और सर की।।

यकायक राक्षस ने जोश में यूँ पैतरा बदला।
सुबक दस्ती से कावा देके पुश्ते-भीम पर आया।।

वहीं से ज़ब्र इक ऐसी लगाई भीम के सर पर।
मगर ओछा पड़ा उस का यह मोहलिक वार मिग़फ़र पर।।

बहुत काफ़ी था यह चरका ही उस शेरे-नयस्ताँ को।
इक अनजाने में दावत दी गई हो जैसे तूफॉं को।।

भभूका बन के वह गुस्से में पलटा पैंतरा बदला।
बदल कर पैंतरा उस राक्षस से ले लिया बदला।।

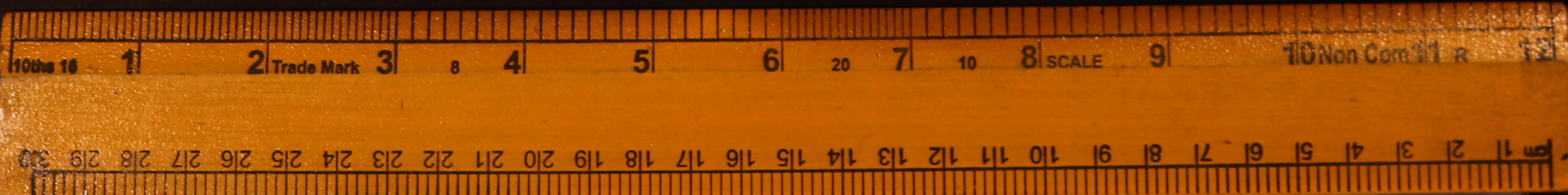
किया इक ऐसा मोहलिक वार उस ने गुर्ज़े-आहन का।
कि सर से दूर भेजा जा पड़ा मग़रूर दुश्मन का।।

मगर दम भर रहा साकित वह इक तसवीर की मानिन्द।
और इस के बाद फ़ौरन गिर पड़ा शैहतीर की मानिन्द।।

पान्डवों की सहरा नवरदी और व्यासजी का दर्शन

इधर पांडव ने अब अपनी अक़ामत गाह को छोड़ा।
ज़मीं को राक्षस की, दश्ते-कोहो-काह को छोड़ा।।

सुबक दस्ती = हलके हाथ से
मोहलिक = जानलेवा
मिग़फ़र = लोहे का टोप
शेरे नयस्तां = जंगल का शेर
मानिन्द = जैसा
अकामत गाह = रहने की जगह



سفر کرنے سے پہلے اپنا حُلیہ اِس طرح بد لا — کہ اب پہچاننا مشکل تھا چہرا، اِس طرح بدلا

سفر کرتے رہے وہ بے ارادہ دشت وصحرا میں — یونہی پھرتے رہے وہ پاپیادہ دشت وصحرا میں

سفر کی سختیوں سے جان عاجز آگئی سب کی — طبیعت اِس مسلسل جُہد سے گھبرا گئی سب کی

جو دیکھا بھیم نے سب ہو گئے ہیں چور اب تھک کر — سکت باقی نہیں چلنے کی اُن کے جسم کے اندر

تو ماتا کو بٹھایا پشت پر اور دو کو کاندھوں پر — چلا سہدیو کو خوش ہو کے اپنی گود میں لیکر

دیا پھر پانڈوؤں کو ویاس جی نے راہ میں درشن — کہا تم چکر پوری میں گزارو اپنا اب جیون

بھیم کا ایثار

گئے وہ چکر پوری بھیس میں خاصے برہمن کے — وہاں اک برہمن کے گھر رہے مہمان وہ بن کے

اسی نگری کے باہر اک دئیت ہیکل کا ڈیرا تھا — کہ جس کا نام "بک" تھا اور جنگل میں بسیرا تھا

نگروا سی دئیت کو باری باری اک منش دیکر — تباہی سے بچائے رکھا تھا بستی کا ہر اک گھر

جہاں مہمان تھے پانڈو اسی کے گھر کی باری تھی — حواسِ برہمن پر بیہوشئِ مرگ طاری تھی

یہ عالم دیکھکر کنتی کا دل بھی غم سے بھر آیا — برہمن میزباں کو اس نے پھر یہ کہہ کے سمجھایا

مقدر میں جو لکھا ہے وہی اب پیش آئے گا — ترے فرزند کے بدلے میں میرا بھیم جائیگا

सफ़र करने से पहले अपना हुलया इसतरह बदला।
कि अब पहचानना मुश्किल था चैहरा, इस तरह बदला।।

सफ़र करते रहे वह बे इरादा दश्तो-सहरा में।
यूँही फिरते रहे वह पा-पियादा दश्तो-सहरा में।।

सफ़र की सख़्तियों से जान आजिज़ आ गई सबकी।
तबियत इस मुसलसल जहद से घबरा गई सब की।।

जो देखा भीम ने सब हो गए हैं चूर अब थक कर।
सकत बाक़ी नहीं चलने की उन के जिस्म के अन्दर।।

तो माता को बिठाया पुश्त पर और दो को कांधों पर।
चला सहदेव को, खुश होके अपनी गोद में लेकर।।

दिया फिर पांडवों को व्यास जी ने राह में दर्शन।
कहा तुम "चक्र पुरी" में गुज़ारो अपना अब जीवन।।

दश्त व सहरा = मैदान और जंगल
पा-पियादा = नंगे पांव
जहद = मेहनत

भीम का ईसार

गए वह "चक्र पुरी" भेस में ख़ासे ब्राह्मण के।
वहाँ इक ब्राह्मण के घर रहे महमान वह बन के।।

उसी नगरी के बाहर इक दैत्य हैकल का डेरा था।
कि जिसका नाम 'बक' था और जंगल में बसेरा था।।

नगर वासी दैत्य को बारी बारी इक मनुष्य देकर।
तबाही से बचाए रखा था बसती का हर इक घर।।

जहाँ मेहमान थे पांडव उसी के घर की बारी थी।
हवासे-ब्राह्मण पर बेहशीए-मृग तारी थी।।

यह आलम देखकर कुन्ती का दिल भी ग़म से भर आया।
ब्राह्मण मेज़बाँ को उसने फिर यह कह के समझाया।।

मुक़द्दर में जो लिक्खा है वही अब पेश आएगा।
तेरे फ़रज़न्द के बदले में मेरा भीम जाएगा।।

मुक़द्दर = भाग्य
फ़रज़न्द = पुत्र

کرو تیار بھوجن اور بتاؤ وہ جگہ چل کر
جہاں لینے بلیدان آتا ہے وہ راکشش خودسر

بُھوکا بھیم

غرض پھر گاؤں والے بھیم کے ہمراہ سب آئے
جہاں وہ راکشش تھا اس کا بھوجن ساتھ میں لائے

جگہ بتلا کے واپس ہو گئے سب ایک ہی چھن میں
فقط اک بھیم تنہا رہ گیا صحرا کے دامن میں

رکھا تھا سامنے ہی راکشش کا روغنی کھانا
کہ اس کھانے کی خوشبو نے بنایا اس کو دیوانہ

کئی دن سے نہ کھایا تھا بہت بھوکا تھا فیل افگن
وہ خود ہی بیٹھ کر اس کی جگہ کرنے لگا بھوجن

وہ تھا معروف کھانے میں کہ اتنے میں دیت آیا
جب اس نے اپنا کھانا بھیم کو کھاتے ہوئے پایا

تو غصے میں بھبھوکا بن کے فوراً بھیم پر جھپٹا
کبھی گھونسوں سے کی خاطر تواضع اور کبھی لپٹا

مگر اک بھیم تھا جو کھانا کھانے سے نہ باز آیا
کہ جس کی وجہ سے وہ اور بھی غصّے میں جھنجھلایا

پھر اس کے بعد برسانے لگا وہ بھیم پر پتھّر
وہ پتھر گر رہے تھے بھیم کے نزدیک دھرتی پر

یہ سب ہوتا رہا اس پر بھی اُس نے دم نہیں مارا
تو پھر اُس راکشش کا اور بھی کچھ چڑھ گیا پارا

اُکھاڑا اک تناور پیڑ اس نے سیخ پا ہو کر
چلا اس پیڑ ہی سے مارنے کو وہ خفا ہو کر

करो तैयार भोजन और बताओ वंह जगह चल कर।
जहाँ लेने बलिदान आता है वह राक्षस खुद-सर।।

भूका भीम

गरज़ फिर गॉव वाले भीम के हमराह सब आए।
जहाँ वह राक्षस था, उस का भोजन साथ में लाए।।

जगह बतला के वापस हो गए सब एक ही छन में।
फ़क़त इक भीम तन्हा रह गया सहरा के दामन में।।

रखा था सामने ही राक्षस का रौग़नी खाना।
कि इस खाने की खुशबू ने बनाया उसको दीवाना।।

कई दिन से न खाया था, बहुत भूका था फ़ील अफ़गन।
वह खुद ही बैठ कर उसकी जगह करने लगा भोजन।।

वह था मसरुफ़ खाने में कि इतने, में दैत्य आया।
जब उस ने अपना खाना भीम को खाते हुए पाया।।

तो गुस्से में भभूका बन के फ़ौरन भीम पर झपटा।
कभी घूंसों से की ख़ातिर तवाज़े और कभी लपटा।।

मगर इक भीम था, जो खाना खाने से न बाज़ आया।
कि जिस की वजह से वह और भी गुस्से में झुंझलाया।।

फिर उसके बाद बरसाने लगा वह भीम पर पत्थर।
वह पत्थर गिर रहे थे भीम के नज़दीक धरती पर।।

यह सब होता रहा इस पर भी उस ने दम नहीं मारा।
तो फिर उस राक्षस का और भी कुछ चढ़ गया पारा।।

उखाड़ा इक तनावर पेड़ उस ने सीख़-पा होकर।
चला उस पेड़ ही से मारने को वह ख़फ़ा होकर।।

खुद सर = ज़िद्दी

हमराह = साथ

रौग़नी = घी में तला हुआ

भूका = भूखा

ख़ातिर तावाज़े = मेहमान नवाज़ी

सीख़-पा-= पिछले पैरो पर खड़ा होनेवाला

بھیم اور راکشش کا مقابلہ

بس اتنے میں تو فرصت پا چکا تھا بھیم بھوجن سے
جھٹکتا جھاڑتا وہ گرد اٹھا اپنے دامن سے

بڑھا پھر راکشش اک شور و ہنگامہ بپا کرتا
شجر کو دیکے چکر نعرہ ہائے رعدسا بھرتا

قریبِ بھیم آکر پیڑ سے حملہ کیا اس پر
ادھر کھم ٹھونک کر پھر بھیم بھی بس پل پڑا اس پر

شجر کا وار خالی دیکھ بدلا پینترا اپنا
بدل کر پینترا پھر بھیم اس انداز سے اچھلا

کہ اس کے ہاتھ ہی میں آگئی اس پیڑ کی ڈالی
پھر اس کے بعد کیا تھا، دستِ دشمن رہ گیا خالی

شجر تو آچکا تھا بھیم کے مضبوط ہاتھوں میں
خیال آیا نہ گزرے وقت اب بیکار باتوں میں

شجر کو پھینک کر جھپٹا تو اس کو سامنے پایا
ملایا ہاتھ اور کھم ٹھونک کر چوڈنڈے پر آیا

نوٹ:- اس واقعہ کی حقیقت صرف اتنی ہے کہ بھیم اور راکشش میں مقابلہ ہوتا ہے اور بھیم راکشش کو ایسا پٹختا ہے کہ وہ مر جاتا ہے۔ کشتی کے داؤں پیچ اضافی ہیں محض واقعہ کو دلچسپ بنانے کیلئے لکھے گئے ہیں۔ فروغ

भीम और राक्षस
का मुक़ाबला

बस इतने में तो फुरसत पा चुका था भीम भोजन से।
झटकता झाड़ता वह गर्द, उठ्ठा अपने दामन से।।

बढा फिर राक्षस इक शोरो-हंगामा बपा करता।
शज़र को देके चक्कर नारा-हाए रादसा भरता।।

करीबे-भीम आकर पेड़ से हमला किया उस पर।
इधर खम ठोंक कर फिर भीम भी बस पिल पडा उस पर।।

शजर का वार ख़ाली देके बदला पैंतरा अपना।
बदल कर पैंतरा फिर भीम इस अंदाज़ से उछला।।

कि इसके हाथ ही में आगई उस पेड़ की डाली।
फिर उसके बाद क्या था ? दस्ते-दुश्मन रह गया ख़ाली।।

शजर तो आचुका था भीम के मज़बूत हाथों में।
ख़याल आया न गुज़रे वक़्त अब बेकार बातों में।।

शजर को फेंक कर झपटा तो उसके सामने पाया।
मिलाया हाथ और ख़म ठोंक कर चौ डंडे पर आया।।

फुरसत = छुटकारा, मुक्ति,

नारा हाए रादसा = बिजली का कड़का

इस वाक्य की हक़ीक़त सिर्फ़ इतनीं है कि भीम और राक्षस में मुक़ाबला होता है। और भीम राक्षस को ऐसा पटखता है कि वह मर जाता है । कुश्ती के दावँ पेच इज़ाफ़ी हैं। महज़ वाक्य को दिलचस्प बनाने के लिए लिखे गए हैं । फ़रोग



کشتی کے داؤں پیچ

معاً گردن پہ اس کے تھاپ دی اور کھینچ کر دیکھا
بتولا دے کے اک ہلکا سا دستی کھینچنا چاہا

مگر یہ بھیم کی کوشش نہ مطلق کام جب آئی
تو فوراً اک ہنر نے ذہن میں لی اس کے انگڑائی

مگر وہ راکشش بھی کم نہ تھا ہشیار اور شاطر
فنِ کشتی کا اک چالاک لڑویا تھا اور ماہر

ابھی تک بھیم کا اک داؤں پر ہی زور تھا سارا
ادھر مدِ مقابل نے کلا جنگ اس طرح مارا

بعجلت جھک کے پہلے ہاتھ ڈالا ٹانگ کے اندر
زمیں پر ٹیک کر گھٹنا، اٹھایا بھیم کو اوپر

کماں کرتا ہوا سر تک وہ لایا بھیم کو آخر
گماں تھا مار کھا جائے گا اب تو بھیم سا ماہر

مگر فوراً وہیں سے توڑ کر دی، ماہرِ فن نے
پکڑ کر پیر کا پنجہ مروڑا فیل افگن نے

پھر اس کے بعد چوڈنڈے پہ دونوں چھوٹ کر آئے
ہنر میں دونوں یکتا ماہرِ خوش فن نظر آئے

کبھی انٹھی لگائی اور کبھی کھینچا کسی نے پٹ
کبھی ایسے لڑے جیسے گتھے ہوں سانڈ دو اربٹ

کبھی ماری کسی نے ان میں سے دھوبی پچھاڑ ایسی
کبھی ہاتھ اور سینہ گانٹھ کر ماری اکھاڑ ایسی

کہ منکے ریڑھ کے ڈھیلے پڑے اور ہڈیاں چٹخیں
دم آنے لگ گیا دونوں کو، سانسیں دونوں کی الجھیں

یونہی ہوتی رہی زور آزمائی دونوں شیروں میں
مگر دم خم ابھی تک تھا وہی دونوں دلیروں میں

कुश्ती के दावँ पेच

मअन गर्दन पे उस के थाप दी और खींच कर देखा।
बतोला दे के इक हलका सा, दस्ती खींचना चाहा।।

मगर यह भीम की कोशिश न मुतलक़ काम जब आई।
तो फ़ौरन इक हुनर ने ज़हन में ली उस के अंगड़ाई।।

मगर वह राक्षस भी कम न था हुशयार और शातिर।
फ़ने-कुश्ती का इक चालाक लड़वय्या था और माहिर।।

अभी तक भीम का इक दावँ पर ही ज़ोर था सारा।
उधर मद्दे-मुक़ाबिल ने कला जंग इस तरह मारा।।

ब उजलत झुक के पहले हाथ डाला टांग के अंदर।
ज़मीं पर टेक कर घुटना, उठाया भीम को ऊपर।।

कमाँ करता हुआ सर तक वह लाया भीम को आख़िर।
गुमाँ था मार खा जाऐगा, अब तो भीम सा माहिर।।

मगर फ़ौरन वहीं से तोड कर दी, माहिरे-फ़न ने।
पकड़ कर पैर का पंजा मरोड़ा फ़ील-अफ़गन ने।।

फिर इस के बाद चौडंडे पे दोनों छूट कर आए।
हुनर में दोनों यकता, माहिरे-खुश-फ़न नज़र आए।।

कभी अनठी लगाई और कभी खींचा किसी ने पट ।
कभी ऐसे लड़े जैसे गुथे हों सान्ड दो अरबट।।

कभी मारी किसी ने उन में से धोबी पछाड़ ऐसी।
कभी हाथ और सीना गांठ कर मारी उखाड़ ऐसी।।

कि मनके रीढ़ के ढीले पड़े और हड्डियाँ चटख़ीं।
दम आने लग गया दोनों को, साँसें दोनों की उलझीं।।

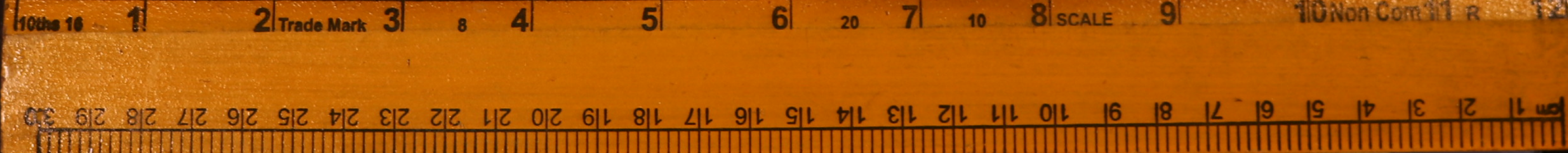
यूँही होती रही ज़ोर-आज़माई दोनों शेरों में।
मगर दम ख़म अभी तक था वही दोनों दिलेरों में।।

मअन = फ़ौरन

मुतलक़ = बिलकुल

शातिर = चालाक

बउजलत = तेज़ी के साथ



یکایک بھیم نے پھر ایسی ماری بھر کے ملتانی
کماں کھا کر گرا یوں سر کے بل وہ دشمنِ جانی

کہ گرتے ہی سر اس کا اک بڑے پتھر سے ٹکرایا
اور اس کے بعد اُس کم بخت کا بھیجا نکل آیا

کچھ عرصہ بعد آخر راکشش نے اپنا دم توڑا
سسکتا آہ بھرتا عالمِ فانی سے منہ موڑا

بھیم کی واپسی اور مشورے

مرا جب راکشش تو بھیم بھی رخصت ہوا بن سے
خوشی سے رقص کرتا جھومتا صحرا کے دامن سے

وہ گھر آیا تو اس کو دیکھ کر سب خوش ہوئے بھائی
ملے فرطِ محبت سے، خوشی سے آنکھ بھر آئی

پھر اس کے بعد مشفق والدہ سے اپنی وہ بولا
بہت ہی رازدارانہ طریقے سے دہن کھولا

زیادہ دن کسی بھی اک جگہ رکنا نہیں بہتر
مرا منشا ہے ہم آباد ہوں پنچال میں جا کر

خیالِ بھیم سے سب متفق ہو کر بصد فرحت
چلے منزل[1] بہ منزل جانبِ پنچال با عجلت

[1] پانڈو نے یہ سفر ۱۶ (سولہ) دن میں طے کیا۔ ماں کو، کولال کے گھر چھوڑ کر پانچوں بھائی سوئمبر میں پہنچے

यकायक भीम ने फिर ऐसी मारी भरके मुलतानी।
कमाँ खाकर गिरा यूँ सर के बल वह दुश्मने-जानी।।

कि गिरते ही सर उस का इक बड़े पत्थर से टकराया।
और इसके बाद उस कम-बख़्त का भेजा निकल आया।।

कुछ अरसा बाद आख़िर राक्षस ने अपना दम तोड़ा।
सिसकता, आह भरता, आलमे-फ़ानी से मुँह मोड़ा।।

आलमे-फ़ानी = ख़त्म हो जाने वाली दुनिया

भीम की वापसी और मशविरे

रुख़सत = विदा होना

मरा जब राक्षस तो भीम भी रुख़सत हुआ बन से ।
खुशी से रक़्श करता झूमता सहरा के दामन से।।

वह घर आया तो उस को देखकर सब खुश हुए भाई।
मिले फ़र्ते-मोहब्बत से, खुशी से आँख भर आई।।

फिर उसके बाद मुशफ़िक़ वालिदा से अपनी वह बोला।
बहुत ही राज़दाराना तरीक़े से दहन खोला।।

ज़्यादा दिन किसी भी इक जगह रुकना नहीं बेहतर।
मेरा मंशा है हम आबाद हों पंचाल में जाकर।।

ख़याले-भीम से सब मुत्तफ़िक़ हो कर बसद फ़रहत।
चले मंज़िल ब मंज़िल जानिबे-पंचाल बा-उज़लत।।

पांडव ने यह सफर १६ (सोला) दिन में तै किया। माँ को, "कुलाल" के घर छोड़ कर पाँचों भाई स्वयंवर में पहुँचे।

سوئمبر

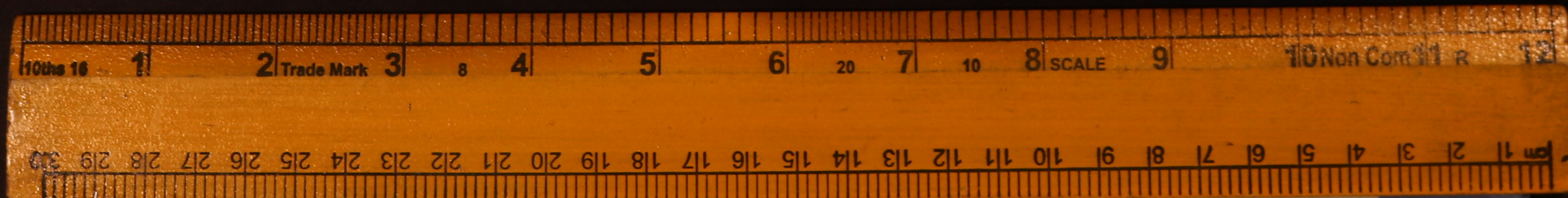
یعنی

جشنِ انتخابِ شوہر

स्वयंवर

यानी जश्न

इन्तेख़ाबे-शौहर



سرزمینِ پنچال میں

سوئمبر کی تیاریاں

ایک عرصہ بعد پانڈو سرحدِ پنچال میں پہنچے
خوشی سے کارگاہِ نیک و فرخ فال میں پہنچے

اُسی دن شہر میں راجہ دروپد نے بایں عظمت
دیا ترتیب شہرِ کنبلا[1] میں جشن با برکت

نشاط و کیف میں ڈوبا ہوا ہر ایک منظر تھا
بہت ہی شبھ گھڑی میں راج کنیا کا سوئمبر تھا

وہاں ہر دیش سے جانباز شہزادے بھی آئے تھے
تمناؤں کا جو طوفان اپنے دل میں لائے تھے

کنور کے ساتھ راجے اور مہاراجے تھے ضو افگن
لگا تھا با قرینہ سارے راجاؤں کا سنگھاسن

وہیں کچھ برہمن اک سمت بیٹھے تھے مچانوں پر
انھیں کے ساتھ پانڈو بھی براجے تھے مچانوں پر

درونہ، کرشن، کرپہ اور پتامہ، کرن، دریودھن
سبھی تشریف فرما تھے سنبھالے ایک اک آسن

حسنِ پنچالی کا قلمی عکس

یکایک ایک جانب سے سبھا میں برق لہرائی
خرامِ ناز فرماتے ہوئے اک نازنیں آئی

[1] پنچال نگر کا دوسرا نام

सर ज़मीने-पंचाल में

स्वयंवर की तैयारियाँ

एक अर्सा बाद पांडव सरहदे-पंचाल में पहुँचे।
खुशी से कार-गाहे नेक-ओ-फ़र्रूख़-फ़ाल में पहुँचे।।

उसी दिन शहर में राजा द्रौपद ने बईं अज़मत।
दिया तरतीब शहरे [1]कुंबला में जशने-बा-बरकत ।।

निशात-ओ-कैफ़ में डूबा हुआ हर एक मंज़र था।
बहुत ही शुभ घड़ी में राज कन्या का स्वयंवर था।।

वहाँ हर देश से जाँबाज़ शहज़ादे भी आए थे।
तमन्नाओं का जो तूफ़ान अपने दिल में लाए थे।।

कुंवर के साथ राजे और महाराजे थे ज़ौ-अफ़गन।
लगा था बा क़रीना सारे राजाओं का सिंहासन।।

वहीं कुछ ब्राह्मण इक सम्त बैठे थे मचानों पर।
उन्ही के साथ पांडव भी बिराजे थे मचानों पर।।

द्रोणा, कृष्ण, कृपा और पितामह, कर्ण, दुर्योधन।
सभी तशरीफ़ फ़रमा थे संभाले एक इक आसन।।

अर्सा = मुद्दत
कार गाहे नेक-ओ-फरूर्ख -फाल = स्वयंवर का शुभ स्थान
निशातो-कैफ़ = खुशी और नशा
जाँबाज़ = जान से खेलने वाले

हुस्ने-पंचाली का क़लमी अक्स

यकायक एक जानिब से सभा मे बर्क़ लहराई ।
ख़िरामे नाज़ फ़रमाते हुए इक नाज़नीं आई।।

बर्क = बिजली
नाज़नी = कन्या

१) पंचाल नगर का दूसरा नाम

لچکتی چال مستانہ روش میں سینکڑوں فتنے
مچل کر رہ گئے عشاق کے سینوں میں دل کتنے

خرامِ ناز سے پامال تھا لالہ کا پیراہن
حنائی پا سے فرشِ مخملیں تھا اور شعلہ زن

درخشاں عارضِ گلگوں پہ بَل کھائے ہوئے گیسو
وہ کجلائی ہوئی آنکھیں تھیں یا چلتا ہوا جادو

خمیدہ طاقِ ابرو روزنِ قوسینِ میخانہ
گھنی پلکوں کے سائے میں لطافت بیز پیمانہ

لبِ لعلیں کی قاشوں میں دُرِ دنداں کی تابانی
ہمہ لحظہ ہمہ عالم تکلّم کی گُل افشانی

جبینِ ضوفشاں پر قشقۂ گل رنگ کیا کہئے
کلاہ و تاج کا وہ فاخرانہ ڈھنگ کیا کہئے

سرشتہ[1] مُشک و عنبر فام زلفوں کا وہ بَل کھانا
کسی افعی کا ہر ہر گام پر ڈس کر پلٹ جانا

مہکتی سانس کا وہ زیر و بم توبہ شکن توبہ
مسامیرِ گلِ رخسار اور چاہِ ذقن توبہ

وہ پیکر جس کا قامت شاخِ گل سا نرم و نازک تھا
عیاں ہر گام پر شاہی تحمّل اور تمسّک تھا

بشانِ دلربائی، لے کے ورمالا بڑھی جس دم
بہ رعبِ حسن فوراً ہو گئیں سب کی نگاہیں خم

دروپد کنیا وہ شہرۂ آفاق پنچالی
کہ جس کے واسطے اک مسندِ زربفت تھی خالی

سوئمبر کی سبھا میں ناز فرماتی ہوئی آئی..
بچھائیں عاشقوں نے اپنی آنکھیں قدر فرمائی

[1] گوندھا ہوا

लचकती चाल, मस्ताना रविश में सैकड़ों फ़ितने।
मचल कर रह गए उश्शाक़ के सीनों में दिल कितने।।

ख़िरामे-नाज़ से पामाल था लाला का पैराहन।
हिनाई पा से, फ़र्शे-मख़मलीं था और शोला ज़न।।

दरख़्शाँ-आरिज़े-गुलगूँ पे बल खाए हुए गेसू।
वह कजलाई हुई आँखें थीं या चलता हुआ जादू।।

ख़मीदा ताके-अब्रू रौज़ने-क़ौसैने-मैख़ाना।
घनी पलकों के साए में लताफ़त-बेज़ पैमाना।।

लबेलालीं की क़ाशों में दुरे-दनदाँ की ताबानी।
हमा-लहजा, हमा-आलम, तकल्लुम की गुल अफ़शानी।।

जबीने ज़ौ-फ़िशाँ पर क़शक़ए गुल-रंग क्या कहिए।
कुलाह-ओ-ताज का वह फ़ाख़िराना ढंग क्या कहिए।।

सरिश्ता मुश्क़-ओ-अंबर-फ़ाम ज़ुलफ़ों का वह बल खाना।
किसी अफ़ई का हर हर गाम पर डस कर पलट जाना।।

महकती सांस का वह ज़ेर-ओ-बम तौबा शिकन तौबा।
मसामीरे-गुले-रुख़सार और चाहे-ज़क़न तौबा।।

वह पैकर जिस का क़ामत शाख़े गुल सा नर्म-ओ-नाज़ुक था।
अयाँ हर गाम पर शाही तहम्मुल और तमासुक था।।

ब शाने दिलरूबाई, लेके वरमाला बढ़ी जिस दम।
ब रोबे-हुस्न फ़ौरन हो गईं सब की निगाहें ख़म।।

द्रौपद कन्या वह शोहरए-आफ़ाक़ पंचाली।
कि जिस के वास्ते इक मसनदे-ज़र-बफ़्त थी ख़ाली।।

स्वयंवर की सभा में नाज़ फ़रमाती हुई आई।
बिछाईं आशिक़ों ने अपनी आँखें क़द्र फ़रमाई।।

उश्शाक़ = प्रेमियों

ख़रामे नाज़ = गर्व की चाल
हिनाई पा = मेहंदी लगे पैर
फ़र्शे मख़मलीं = मख़मल की ज़मीन
शोला ज़न = आग की तरह लाल
दरख़शाँ आर्जे गुलगूँ पे बाल खाए हुए गेसू = चमकते हुए लाल गालों पर बिखरी हुई बालो की लटें
ख़मीदा ताके अब्रू रौज़ने-कौसेने मैख़ाना = कमान की तरहा भवे, जैसे शराब खाने की खिड़कियाँ
लबेलालीं की क़ाशों में दुरे दनदाँ की ताबानी =लाल होटों के दरमियान मोती समान चमकते हुए दांत
जबीने ज़ौ फ़िशाँ पर क़शक़ए-गुलरंग = चमकते माथे पर फूल के रंग का टिका
सरिश्ता = गुन्धा हुआ
मुश्क़ व अंबर = सुगंध
ज़ेर व बम = ऊंच नींच
पैकर = पुतला
क़ामत = क़द
शाख़ेगुल = फूल की डाली
हरगाम = हर क़दम
ब रोबे-हुस्न = सुन्दरता का दबदबा

سوئمبر کی شرط اور شہ زوروں کے حوصلے

وہیں تھی بام پر گردش میں اک لٹکی ہوئی مچھلی
رکھی تھی سامنے ہی اک کماں فولاد کی بھاری

دروپدی نے لگا رکھی تھی شرط ایسی سوئمبر کی
کہ ہمت ہی نہ بڑھتی تھی کسی مرد دلاور کی

سر محفل دکھائے کون آکر تیر اندازی
نشانہ چشم ماہی کو بنا کر جیت لے بازی

یقیناً آزمائش تھی وہاں ہر مرد رامی کی
اک ایسے شبد بھیدی سورما نامی گرامی کی

وہاں تھے بیسیوں ایسے کہ جنکے دل میں جرأت تھی
نشانہ مارنے کے فن میں قدرت او رمہارت تھی

مگر ہمت نہ ہوتی تھی کہ اٹھ کر سامنے آئیں
سر دربار جوہر تیر اندازی کے دکھلائیں

مگر دو چار دس ایسے بھی تھے جو حوصلہ کر کے
اٹھے آسن سے اپنے قلب میں یہ ولولہ بھر کے

کہ ہم شہ زور ہیں قوس گراں کو ہم اٹھائینگے
یقیناً چشم ماہی کو نشانہ ہم بنائینگے

سورماؤں کی زور آزمائی

یہ کر کے فیصلہ اک نوجواں پھر سامنے آیا
تمنائے وصال جان جانانہ نے اکسایا

بحسرت جائزہ لے کر اٹھایا قوس آہن کو
دیا ہنسنے کا موقع آپ اس نے اپنے دشمن کو

स्वयंवर की शर्त और शैह-ज़ोरों के हौसले

वहीं थी बाम पर गरदिश में इक लटकी हुई मछली।
रखी थी सामने ही इक कमाँ फ़ौलाद की भारी।।

द्रौपद ने लगा रक्खी थी शर्त ऐसी स्वयंवर की।
कि हिम्मत ही न बढ़ती थी किसी मर्दे-दिलावर की।।

सरे-महफ़िल दिखाए कौन आकर तीर अंदाज़ी।
निशाना चष्मे-माही को, बना कर जीत ले बाज़ी।।

यक़ीनन आज़माईश थी वहाँ हर मर्दे-रामी की।
इक ऐसे शब्द भेदी सूरमा नामी-गरामी की।।

वहाँ थे बीसियों ऐसे कि जिनके दिल में जुरअत थी।
निशाना मारने के फ़न में कुदरत और महारत थी।।

मगर हिम्म्त न होती थी कि उठ कर सामने आएँ।
सरे-दरबार, जौहर तीर अन्दाजी़ के दिखलाएँ।।

मगर दोचार दस ऐसे भी थे जो हौसला करके।
उठे आसन से अपने क़ल्ब में यह वलवला भरके।।

कि हम शैह-ज़ोर हैं, क़ौसे-गिराँ को हम उठाएँगे।
यक़ीनन चष्मे माही को निशाना हम बनाएँगे।।

सूरमाओं की ज़ोर आज़माई

यह करके फ़ैसला इक नौजवाँ फिर सामने आया।
तमन्नाए विसाले-जाने-जाना-ना ने उकसाया।।

ब हसरत जाएज़ा लेकर उठाया कौसे-आहन को।
दिया हँसने का मौक़ा आप उस ने अपने दुश्मन को।।

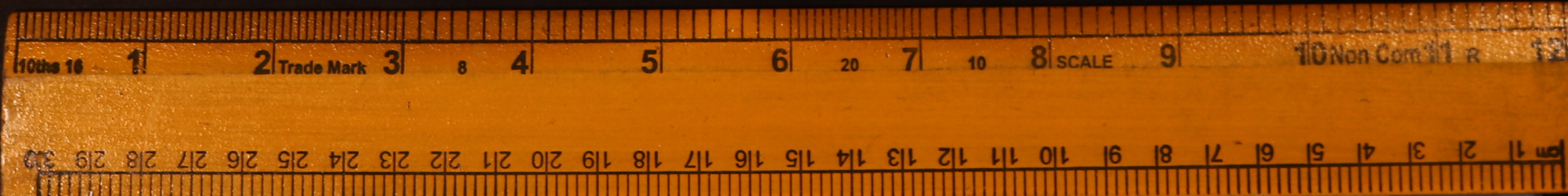
बाम = खिड़की
गरदिश = घुमती हुई

आज़माइश = परीक्षा
रामी = तीरअंदाजं

कुदरत = काबू
महारत = हुनरमंदी

क़ल्ब = दिल
वलवला = साहस
शैह-जोर = बलवान

कौसे आहन = लोहे की कमान



کماں کو جب ہوئی مطلق نہ جنبش اس دِلاور سے
پشیماں ہو کے آخر لوٹ آیا وہ سوئمبر سے

پھر اُسکے بعد اُٹھا دوسرا اک نامور رامی
بڑھا سمتِ کماں جرأت سے فوراً باہنر رامی

بہ مشکل قوسِ آہن کو وہ تھوڑا سا اُٹھا پایا
پسینہ جس کے کارن اسکے ماتھے پر جھلک آیا

خجل ہو کر ہُوا واپس وہاں سے فیل تن رامی
کیا پھر قہقہوں نے اُس کا استقبالِ ناکامی

پھر اسکے بعد آئے اک سے اک بڑھ کر جواں ہمت
درو پد کنیا کے چاہنے والے بصد جرأت

مگر انجام عزم و جرأت و ترکیب یہ نکلا
نتیجہ ان جواں مَردوں کا بالترتیب یہ نکلا

کوئی جنبش کماں کو دے سکا کوئی نہ دے پایا
اٹھایا کوئی گھٹنوں تک کسی نے صدر تک لایا

کماں اُٹھ بھی گئی جوں توں کسی اک بخت آور سے
تو چڑھ پایا نہ چِلّا اس کماں کا پھر دِلاور سے

اگر قسمت سے کوئی قوسِ آہن کو چڑھا پایا
نشانہ چشمِ ماہی پر نہ مطلق وہ لگا پایا

وہاں کھُل ہی گیا سب سُورماؤں کا بھرم آخر
کہ ان کے بازوئے شہ زور میں تھا کتنا دم آخر

بھیم کی تقریر

ہوئے ناکام واپس جب وہ سارے آہنی پیکر
تو اُترے بھیم اور ارجن مچاں سے رنگ بھومی پر

دھنش کے پاس پہنچے یوں وہ دونوں نور کے پیکر
کہ جیسے چاند ہوں دو جلوہ ریز اک برج کے اندر

कमाँ को जब हुई मुतलक़ न जुंबिश इस दिलावर से।
पशेमाँ होके आख़िर लौट आया वह स्वयंवर से।।

फिर उसके बाद उठ्ठा दूसरा इक नाम वर रामी।
बढा सम्ते-कमाँ जुरअत से फ़ौरन, बा हुनर रामी।।

ब मुश्किल क़ौसे-आहन को वह थोड़ा सा उठा पाया।
पसीना जिस के कारण, उसके माथे पर झलक आया।।

ख़जिल होकर हुआ वापस वहाँ से फ़ील तन रामी।
किया फिर क़हक़हों ने उस का इस्तक़बाले-नाकामी।।

फिर इसके बाद आए इक से इक बढ कर जवाँ हिम्मत।
द्रौपद कन्या के चाहने वाले बसद जुरअत।।

मगर अंजाम, अज़्म-ओ-जुरअतो-तरकीब यह निकला।
नतीजा इन जवाँ मर्दों का बिलतरतीब यह निकला।।

कोई जुंबिश कमाँ को दे सका, कोई न दे पाया।
उठाया कोई घुटनों तक, किसी ने सदर तक लाया।।

कमाँ उठ भी गई ज्यों-त्यों किसी इक बख़्त आवर से।
तो चढ़ पाया न चिल्ला, उस कमाँ का फिर दिलावर से।।

अगर क़िस्मत से कोई क़ौसे-आहन को चढ़ा पाया।
निशाना चष्मे-माही पर न मुतलक़ वह लगा पाया।।

वहाँ खुल ही गया सब सूर्माओं का भरम आख़िर।
कि उन के बाज़ू-ए-शैह-ज़ोर में था कितना दम आख़िर।।

भीम की तक़रीर

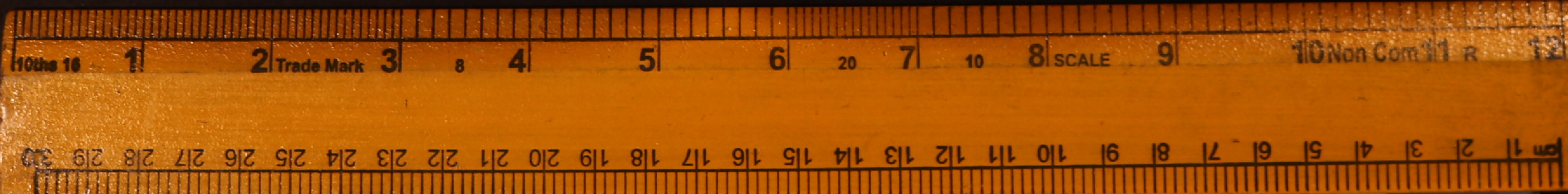
हुए नाकाम वापस जब वह सारे आहनी पैकर।
तो उतरे भीम और अर्जुन मचाँ से रंग भूमि पर।।

धनुष के पास पहुँचे यूँ वह दोनों नूर के पैकर।
कि जैसे चाँद हों दो जलवा-रेज़ इक बुर्ज के अन्दर।।

जुंबिश = हलना/हरकत करना

सदर = सीना

चष्मे-माहि = मछली की आँख



اچٹتی سی نظر پھر بھیم نے چاروں طرف ڈالی
نظر آئی نہ مسند سورماؤں سے اُسے خالی

کیا پھر حاضرینِ بزمِ رنگیں سے خطاب اس نے
انوکھے ڈھنگ سے تقریر کی اک لاجواب اس نے

پکارا چھتریوں کے کارناموں اور شجاعت کو
اُبھارا ان کی جرأت کو دلایا جوش غیرت کو

کہا اس نے کہ اے چرخِ شجاعت کے مہ و انجم
تمہیں کیا سانپ نے سونگھا ہے کیوں بیٹھے ہو یوں گم سُم

اٹھو آؤ دکھاؤ اے جواں مردو جواں مردی
تمہارے قلبِ فولادی میں کس نے بزدلی بھر دی

بتاؤ تو ہوئے ہیں کس لیے بازو تمہارے شل
کہاں چھوڑ آئے اپنی طاقتیں تم، کیا ہوا کس بل

تمہاری وہ حمیت اور غیرت کیا ہوئی آخر
وہ دیرینہ شجاعت اور جرأت کیا ہوئی آخر

وہی تم ہو جو کل طوفان کا رُخ موڑ دیتے تھے
غرورِ موجِ بحرِ بیکراں کو توڑ دیتے تھے

تمہاری ٹھوکروں میں تھی بلندی کوہساروں کی
تمہارے پاؤں پر کل تک جبیں تھی چاند تاروں کی

کہاں ہے سورما اسلاف کی وہ داستاں آخر
بتاؤ کیا ہوئے وہ قصۂ تیغ و سناں آخر

میں تم سے پوچھتا ہوں اسقدر کیوں بوکھلائے ہو
نہیں ہے تم میں جب دم خم تو کیوں میداں میں آئے ہو

تمہیں روکا نہ کیوں آخر تمہارے ان مشیروں نے
یہاں آنے دیا کس واسطے تم کو وزیروں نے

سرِ میداں پشیمانی سے اب نظریں چراتے ہو
کیوں اپنے خانداں کے نام پر بٹہ لگاتے ہو

اٹھو جاؤ پہن لو ساڑیاں اب ہے یہی بہتر
نہ بیٹھو بزدلوں کی طرح اب تم ان مچانوں پر

उचटती सी नज़र फिर भीम ने चारों तरफ़ डाली।
नज़र आई न मसनद सूरमाओं से उसे ख़ाली।।

किया फिर हाज़रीने-बज़्म-रंगीं से ख़िताब उस ने।
अनोखे ढंग से तक़रीर की इक ला जवाब उसे ने।।

पुकारा क्षत्रियों के कारनामों और शुजाअत को।
उभारा उन की जुरअत को, दिलाया जोश ग़ैरत को।।

कहा उसने कि ऐ चर्ख़े-शुजाअत के महो-अंजुम।
तुम्हें क्या सांप ने सूंघा है, क्यों बैठे हो यूँ गुम सुम।।

उठो, आओ, दिखाओ ऐ जवाँ मरदो जवाँ मरदी।
तुम्हारे क़ल्बे-फ़ौलादी में किस ने बुज़दिली भरदी।।

बताओ तो, हुए हैं किस लिए बाज़ू तुम्हारे शल।
कहाँ छोड आए अपनी ताकतें तुम, क्या हुआ कस बल।।

तुम्हारी वह हमैयत, और ग़ैरत, क्या हुई आख़िर।
वह देरीना शुजाअत और जुरअत क्या हुई आख़िर।।

वही तुम हो जो कल तूफ़ान का रुख़ मोड़ देते थे।
गरूरे-मौजे-बहरे-बेकराँ को तोड़ देते थे।।

तुम्हारी ठोकरों में थी बुलंदी कोह-सारों की।
तुम्हारे पाँव पर कल तक जबीं थी चाँद तारों की।।

कहाँ है सूरमा असलाफ़ की वह दास्ताँ आख़िर।
बताओ क्या हुए वह क़िस्सए-तेग़-ओ-सना आख़िर।।

मैं तुम से पूछता हूँ इसकदर क्यों बौखलाए हो।
नहीं है तुम में जब दम-ख़म तो क्यों मैदाँ में आए हो।।

तुम्हें रोका न क्यों आख़िर तुम्हारे उन मुशीरों ने।
यहाँ आने दिया किस वास्ते तुम को वज़ीरों ने।।

सरे मैदाँ पशेमानी से अब नज़रें चुराते हो।
क्यों अपने ख़ानदाँ के नाम पर बट्टा लगाते हो।।

उठो जाओ पहन लो साड़ियाँ अब है यही बेहतर।
न बैठो बुज़दिलों की तरह अब तुम इन मचानों पर।।

हाज़रीन = उपस्थित

गरूरे-मौजे-बहरे-बेकराँ = विशाल समुद्र की लहरों का घमन्ड
कोहसारों = पहाड़ों

असलाफ़ = प्राचीन काल के लोग.

یہ لو یہ چوڑیاں ہیں ان کو پہنو اور گھر جاؤ
رہو اب چلمنوں کی چھاؤں میں باہر نہ تم آؤ

اگر کچھ شرم ہے تم میں تو پھر کیسی پشیمانی
کہ چلو بھر بہت کافی ہے مرنے کے لیے پانی

خطابت کا نیا اسلوب

یہ کہہ کر بھیم نے تقریر کے انداز کو بدلا
خطیبانہ ادا سے اپنی پھر آواز کو بدلا

پکڑ کر بازوئے ارجن کو بولا یہ برہمن ہے
مگر تم سب سے دانشمند ہے ماہر ہے خوش فن ہے

ادھر دیکھو ادھر اے بزدلو کیوں سر جھکائے ہو
حیا سے برہمن کے سامنے کیوں منہ چھپائے ہو

یہی دیکھو نشانہ چشم ماہی کو بنائے گا
تمہارے کالے منہ پر اور بھی کالک لگائے گا

یہاں لیکن جلیل المرتبت کچھ ہستیاں بھی ہیں
گلا دیں جو پہاڑوں کو کچھ ایسی بجلیاں بھی ہیں

نہیں ہے باخدا روئے سخن ان کی طرف میرا
نہ میں نے ان کی عظمت اور مراتب سے ہے منہ پھیرا

درونا اور پتامہ قابل توقیر و عظمت ہیں
ضعیف العمر ہیں پھر بھی علمدار شجاعت ہیں

سبب ان کی حریفی کا یہاں پیدا نہیں ہوتا
سوئمبر کے تقابل کی جسارت کا نہیں ہوتا

وہ اس عالم میں اس قوس گراں کو کیوں اٹھائینگے
پشیمانی کا وہ خود کو نشانہ کیوں بنائیں گے

انہیں خود بھی گراں ہوگا حریف نوجواں بننا
ضعیفی کے زمانے میں مذاق دوستاں بننا

یہاں موجود ہیں انکے علاوہ شیام بنواری
یقیناً خوبصورت نوجواں ہیں کرشن گردھاری

यह लो यह चूड़ियाँ हैं, इन को पहनो और घर जाओ।
रहो अब चिलमनों की छाँव में, बाहर न तुम आओ।।

अगर कुछ शर्म है तुम में, तो फिर कैसी पशेमानी।
कि चुल्लू भर बहुत काफ़ी है मरने के लिए पानी।।

चिलमन = दरवाज़े का पर्दा

ख़िताबत का नया उसलूब

यह कहकर भीम ने तक़रीर के अंदाज़ को बदला।
ख़तीबाना अदा से अपनी फिर आवाज़ को बदला।।

पकड़ कर बाज़ूए अर्जुन को बोला यह ब्राह्मण है।
मगर तुम सब से, दानिशमंद है, माहिर है, खुश-फ़न है।।

इधर देखो इधर ऐ बुज़दिलो क्यों सर झुकाए हो।
हया से ब्राह्मण के सामने क्यों मुँह छुपाए हो।।

यही, देखो निशाना चश्म माही को बनाएगा ।
तुम्हारे काले मुंह पर और भी कालक लगाएगा ।।

यहाँ लेकिन जलील-उल्-मर्तबत कुछ हस्तियाँ भी हैं।
गला दें जो पहाड़ों को कुछ ऐसी बिजलियाँ भी हैं।।

नहीं है बा-खुदा रुए-सुख़न उन की तरफ़ मेरा।
न मैंने उनकी अज़मत और मरातिब से है मुंह फेरा।।

द्रोणा और पितामह क़ाबिले तौक़ीर-ओ-अज़मत हैं।।
ज़ईफ़-उल्-उम्र हैं फिर भी अलमदारे-शुजाअत हैं।।

सबब उनकी हरीफ़ी का यहाँ पैदा नहीं होता।
स्वयंवर के तक़ाबुल की जसारत का नहीं होता।।

वह इस आलम में इस क़ौसे-गिराँ को क्यों उठाएंगे।
पशेमानी का वह खुद को निशाना क्यों बनाएंगे।

उन्हें खुद भी गिराँ होगा, हरीफ़े-नौजवाँ बन्ना।
ज़ईफ़ी के ज़माने में मज़ाक़े-दोस्ताँ बन्ना।।

यहाँ मौजूद हैं उन के अलावा श्याम बनवारी।
यक़ीनन खूबसूरत नौजवाँ हैं कृष्ण गिरधारी।।

तक़रीर = भाषण
ख़तीबाना अदा = उपदेश देने के अन्दाज़ में

जलील-उल्-मर्तबत = आदरणिय पुरुष

तैक़ीर अज़मत = बढाई और आदर
ज़ईफ़-उल्-उम्र = बहुत बुढ़ा
सबब = कारण

مگر وہ ایک عورت کے لیے اب اسقدر زحمت — بتاؤ تو اٹھائیں بے ضرورت کس لیے کلفت

کہ جب سولہ ہزار اور ایک سو کُل آٹھ استریاں[1] — ہیں انکے پاس تو کیوں اور لیں وہ درد کا ساماں

یہ زحمت وہ اٹھائے جس کو خواہش ہو ضرورت ہو — جو معمورِ ہوس ہو جس کی شہوانی طبیعت ہو

مگر اس وقت اس جشنِ نشاط و کیف آگیں میں — ہے شامل کرن جیسا سورما شیرانِ قالیں میں

وہ دیکھو وہ ہے بیٹھا بے حیا کورو کے منڈل میں — بھگوڑے اور بزدل سورما شہ زور کے دل میں

بتا اے کرن کس جذبہ نے آخر تجھ کو اُکسایا — نہ تھا جب بازوؤں میں تیرے دم تو کیوں یہاں آیا

یہاں بیٹھا ہوا کانوں کے کنڈل کو ہلاتا ہے — یہ کنڈل سچ بتا کیا تجھ کو غیرت بھی دلاتا ہے

حیا ہوتی اگر تجھ میں زمیں میں گڑ گیا ہوتا — خزاں کے سوکھے پتوں کی طرح تو جھڑ گیا ہوتا

کرن کی جوابی تقریر

سُنی جب کرن نے یہ طنزیہ تقریر دشمن سے — بھبھوکا بن کے بل کھاتا ہوا اٹھا وہ آسن سے

کہا اس نے کہ اب تو بند کر ہفوات کو اپنی — نہ بھول اے کم نظر گستاخ تو اوقات کو اپنی

بھری محفل میں للکارا گیا ہے میری غیرت کو — مری جرأت مری ہمت مرے جوشِ شجاعت کو

نہ بزدل ہوں نہ بزدل دوستوں کا ساتھ دیتا ہوں — لہو چھاتی پہ چڑھ کر دشمنوں کا چوس لیتا ہوں

[1] دیکھو مہابھارت بھاشا

मगर वह एक औरत के लिए अब इसक़दर ज़हमत।
बताओ तो उठाऐं बे-ज़रुरत किस लिए कुलफ़त।।

कि जब सोला हज़ार और एक सौ कुल आठ स्त्रियाँ।
हैं उनके पास तो क्यों और लें वह दर्द का सामाँ।।

यह ज़हमत वह उठाए जिस को ख़्वाहिश हो, ज़रूरत हो।
जो मामूरे हवस हो जिस की शहवानी तबियत हो।।

मगर इस वक़्त इस जश्ने-निशात-ओ-कैफ़ आगीं में।
है शामिल कर्ण जैसा सूरमा शेराने-क़ालीं में।।

वह देखो वह है बैठा बेहया कौरों के मंडल में।
भगोड़े और बुज़दिल सूरमा शैह-जो़र के दल में।।

बता ऐ कर्ण किस जज़्बे ने आख़िर तुझ को उकसाया।
न था जब बाजुओं में तेरे दम, तो क्यों यहाँ आया।।

यहाँ बैठा हुआ कानों के कुंडल को हिलाता है।
यह कुंडल सच बता क्या तुझ को ग़ैरत भी दिलाता है।।

हया होती अगर तुझ में ज़मीं में गड़ गया होता।
ख़िजाँ के सूखे पत्तों की तरह तू झड़ गया होता।।

कर्ण की जवाबी तकरीर

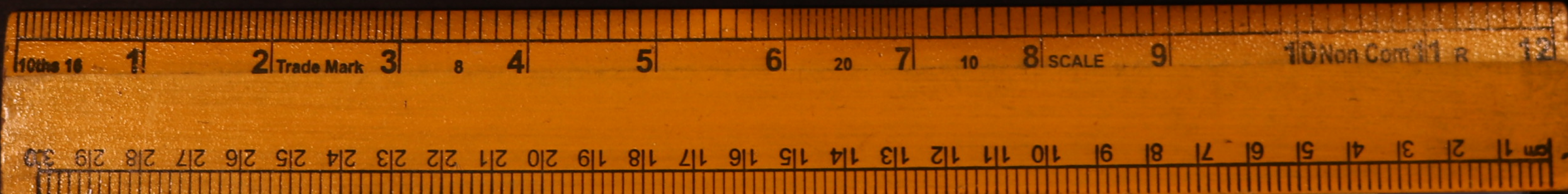
सुनी जब कर्ण ने यह तंज़िया तक़रीर दुश्मन से।
भभूका बन के बल खाता हुआ उठ्ठा वह आसन से।।

कहा उसने कि अब तू बंद कर हफ़वात को अपनी।
न भूल ऐ कम नज़र गुस्ताख़, तू औक़ात को अपनी।।

भरी महफ़िल में ललकारा गया है मेरी ग़ैरत को।
मेरी जुरअत मेरी हिम्मत मेरे जोशे-शुजाअत को।।

न बुज़दिल हूँ न बुज़दिल दोस्तों का साथ देता हूँ।
लहू छाती पे चढ़ कर दुश्मनों का चूस लेता हूँ।।

ज़हमत = कष्ट
कुलफ़त = तकलीफ़
ख़्वाहिश = इच्छा
खिजाँ = पतझड़ की ऋतु
तंज़िया = चूभने वाली



مجھے طعنہ نہ دے تو بزدلی کا مجھ میں ہمت ہے
مرے مضبوط پنجوں میں بڑی قوت ہے طاقت ہے

اگر چاہوں تو جبڑا چیر ڈالوں شیرِ شرزہ کا
جواب آساں ہے میرے پاس تیرے طرزِ ہرزہ کا

پہاڑوں کو کچل دینے کی مجھ میں اب بھی قوت ہے
ترے جیسوں کو چٹکی میں مسل دینے کی طاقت ہے

یہ کہہ کر کرن آخر جانبِ قوسِ گراں لپکا
بپھر کر شیر کی مانند وہ مردِ جری جھپٹا

یکایک زمزمہ خیز ایک جانب سے صدا اٹھی
فضائے جشنِ رنگیں نغمگی سے گنگنا اٹھی

نظر یکبارگی اس سمت اٹھی اہلِ محفل کی
جدھر سے زمزمہ ریزی ہوئی تھی ماہِ کامل کی

خرام ناز فرماتے ہوئے پنچال کی دختر
قریبِ قوس آئی ماہ پیکر غیرتِ نیر

مخاطب کرن سے ہو کر کہا یوں بے حجاب اس نے
کیا اندازِ شاہانہ تمسک سے خطاب اس نے

جو غیرت تجھ میں ہو، تیر و کماں سے دور ہی رہنا
نہ چھونا بان کو قوسِ گراں سے دور ہی رہنا

تو ہے اک نطفۂ بے اصل، تیری اس قدر ہمت
سوئمبر کے پوتر استھان پر آنے کی یہ جرأت

کسی حالت میں بھی اسکا تجھے تو حق نہ تھا حاصل
یقیناً تو شریکِ جشن ہونے کے نہ تھا قابل

یہ سنتے ہی گری اک کرن پر بجلی سی لہرا کر
گھڑوں پانی سرِ دربار گویا پڑ گیا اس پر

پسینہ مارے غیرت کے نکل آیا سرِ میداں
نظر آنے لگی تھی زندگی سے موت اسے آساں

ہوا واپس وہاں سے وہ، ہوئی بے حد پشیمانی
نہ عزت پر کبھی اسکے پھرا تھا اس طرح پانی

मुझे ताना न दे तू बुज़दिली का मुझ में हिम्मत है।
मेरे मज़बूत पंजों में, बड़ी कुव्वत है ताक़त है।।

अगर चाहूँ तो जबड़ा चीर डालूँ शेरे-शरज़ह का।
जवाब आसाँ है मेरे पास तेरे तर्ज़े-हरज़ह का।।

पहाड़ों को कुचल देनें की मुझ में अब भी कुव्वत है।
तेरे जैसों को चुटकी में मसल देने की ताक़त है।।

यह कह कर कर्ण अख़िर जानिबे-क़ौसे-गिराँ लपका।
बिफर कर शेर की मानिन्द वह मर्दे-जरी झपटा।।

यकायक ज़मज़मा खे़ज़ एक जानिब से सदा उठ्ठी।
फ़ज़ाए-जशने-रंगीं नग़मगी से गुनगुना उठ्ठी।।

नज़र यकबारगी उस सम्त उठ्ठी अहले-महफ़िल की ।
जिधर से ज़मज़मा रेज़ी हुई थी माह कामिल की।।

ख़िरामे-नाज़ फ़रमाते हुए पंचाल की दुख़्तर।
क़रीबे-क़ौस आई माह पैकर ग़ैरते-नय्यर।।

मुख़ातिब कर्ण से होकर कहा यूँ बे-हिजाब उस ने।
किया अंदाज़े-शाहाना तमासुक से ख़िताब उस ने।।

जो गैरत तुझ में हो, तीरो-कमाँ से दूर ही रहना।
न छूना बान को क़ौसे-गिराँ से दूर ही रहना।।

तू है इक नुतफ़ए-बे-अस्ल, तेरी इस क़दर हिम्मत।
स्वयंवर के पवित्र स्थान पर आने की यह जुरअत।।

किसी हालत में भी इसका तुझे तो हक़ न था हासिल।
यक़ीनन तू शरीके जश्न होने के न था क़ाबिल।।

यह सुनते ही गिरी इक कर्ण पर बिजली सी लहरा कर।
घड़ों पानी सरे-दरबार गोया पड़ गया उस पर।।

पसीना मारे ग़ैरत के निकल आया सरे-मैदाँ।
नज़र आने लगी थी ज़िन्दगी से मौत उसे आसाँ।।

हुआ वापस वहाँ से वह, हुई बेहद पशेमानी।
न इज़्ज़त पर कभी उसके फिरा था इस तरह पानी।।

जानिबे-क़ौसे गिराँ = भारी कमान की ओर

ज़मज़मा खे़ज़ = मधुर संगीत

हक़ = अधिकार

حیا سے کرن جیسے سورما کی گردن فائق!!!
جھکی ایسی کہ دوبارہ نہ اٹھنے کے رہی لائق

ارجن کی کامیاب تیراندازی

ہوا واپس وہاں سے کرن اب ارجن کی باری تھی
کماں تھی، تیر تھا اور اسکی اپنی پختہ کاری تھی

نظر اک بار ڈالی جانبِ مسند نشیں اس نے
کسا پٹکا کمر کا اور چڑھالی آستیں اس نے

بڑھایا ہاتھ، تھامی قوس پھر مردِ دلاور نے
اٹھایا ایک ہی جھٹکے میں اس کو بخت آور نے

چڑھائی قوس اسکے بعد وہ پنجوں کے بل بیٹھا
یونہی بیٹھے ہی بیٹھے اس طرح پہلو بدل بیٹھا

کہ اس کا ایک گھٹنا ٹک گیا اس طرح دھرتی پہ
کہ بس، بجرنگ جی بیٹھے ہوں جیسے گرز کو لیکر

وہیں بیٹھے ہوئے اس نے کماں میں تیر کو جوڑا
کماں کھینچی نشانہ باندھ کر پھر تیر کو چھوڑا

کماں سے تیر چھوٹا اور ادھر بیٹھا نشانے پر
ہنر دکھلا دیا ارجن نے اپنا وقت آنے پر

ور مالا کی رسم

نشانہ لگتے ہی کوروں کے تلووں سے زمیں نکلی
ادھر سب کے لبوں سے اک صدائے آفریں نکلی

ادھر گھنشیام کے لب پر تبسم رقص فرما تھا
ادھر فرطِ پشیمانی سے سر کوروں کا نیچا تھا

हया से कर्ण जैसे सूरमा की गरदने-फ़ायक़ !!!।
झुकी ऐसी कि दोबारा न उठने के रही लायक़।।

अर्जुन की कामयाब तीर-अंदाज़ी

हुआ वापस वहाँ से कर्ण, अब अर्जुन की बारी थी।
कमा थी, तीर था, और उसकी अपनी पुख़्ता-कारी थी।।

नज़र इक बार डाली जानिबे-मसनद-नशीं उस ने।
कसा पटका कमर का, और चढ़ाली आसतीं उसने।।

बढ़ाया हाथ, थामी क़ौस, फिर मर्दे-दिलावर ने।
उठाया एक ही झटके में, उस को बख़्त-आवर ने।।

चढ़ाई क़ौस, उसके बाद, वह पंजों के बल बैठा।
यूँही बैठे ही बैठे इस तरह पहलू बदल बैठा।।

कि उसका एक घुटना टिक गया इस तरह धरती पर।
कि बस, 'बजरंग' जी बैठे हों जैसे गुर्ज़ को लेकर।।

वहीं बैठे हुए उसने कमाँ में तीर को जोड़ा।
कमाँ खींची निशाना बाँध कर फिर तीर को छोड़ा।।

कमाँ से तीर इधर छूटा और उधर बैठा निशाने पर।
हुनर दिखला दिया अर्जुन ने अपना वक़्त आने पर।।

वर माला की रस्म

निशाना लगते ही कौरों के तलवों से ज़मीं निकली।
उधर सब के लबों से इक सदाए-आफ़रीं निकली।।

इधर घनश्याम के लब पर तबस्सुम रक़्स फ़रमा था।
उधर फ़र्ते-पशेमानी से सर कौरों का नीचा था।।

फ़ायक़ = उठी हुई

पुख़्ताकारी = हुनरमन्दी

मसनद नशीं = आसन पर बैठे हुए लोग

बख़्तआवर = भाग्य वान

तबस्सुम रक़्स फ़रमा = होंटों पर हंसी का नाच

फ़र्ते-पशेमानी = खेद

رہا کچھ دیر تک غوغا صدائے داد و تحسیں کا — خوشی سے ایک طبقہ جھوم اٹھا جشنِ رنگیں کا

ہوا پھر محفلِ اشراف کا کچھ شور کم آخر — دروپد نے اشارے سے کیا پھر مدعا ظاہر

دروپد کنیا وہ ماہ وش پنچال کی دختر — بڑھی ہاتھوں میں ورمالا لئے انوار کی پیکر

قریب ارجن کے فوراً ناز فرماتی ہوئی پہنچی — بڑی ہی دلربائی سے وہ شرماتی ہوئی پہنچی

خمیدہ تھیں جو پلکیں اٹھ گئیں بیخوف سی ہو کر — نظر ٹکرائی دونوں کی تبسم آ گیا لب پر

ابھی شوخی تبسم کی نمایاں تھی حسیں لب سے — کہ فوراً مرمریں باہیں اٹھیں اک حسنِ اغرب سے

بشکلِ قوس ورمالا تھی اسکے ہاتھ میں اب تک — رخِ ارجن پہ چشمِ ماہوش مرکوز تھی بے شک

اٹھیں تھیں قوس کے مانند اوپر مرمریں باہیں — نگاہوں سے دلوں تک کھل گئی تھیں پیار کی راہیں

ہوئے مبہوت دونوں اس طرح سکتہ سا طاری تھا — نہ بے ہوشی کا عالم تھا نہ وقتِ ہوشیاری تھا

نگاہوں کے فسوں نے کائناتِ ہوش کو لوٹا — طلسمِ سرخوشی ان کا اچانک اس طرح ٹوٹا

کہ ارجن کے دہانِ خشک سے بے وقت تھرّا کر — سسک کر ایک آہِ سرد نکلی دل سے گھبرا کر

ادھر ارجن کے لب سے آہ نکلی تھی کہ عجلت سے
ادھر پہنا دی پنچالی نے ورمالا محبت سے

रहा कुछ देर तक ग़ौग़ा सदाए-दाद-ओ-तहसीं का।
ख़ुशी से एक तबक़ा झूम उठ्ठा जश्ने-रंगीं का।।

हुआ फिर महफ़िले-अशराफ़ का कुछ शोर कम आख़िर।
द्रौपद ने इशारे से किया फिर मुद्दआ ज़ाहिर।।

द्रौपद कन्या वह माहवश पंचाल की दुख़्तर।
बढ़ी हाथों में वरमाला लिए अनवार की पैकर।।

क़रीब अर्जुन के फ़ौरन नाज़ फ़रमाती हुई पहुँची।
बड़ी ही दिलरुबाई से वह शरमाती हुई पहुँची।।

ख़मीदा थीं जो पलकें उठ गईं बेख़ौफ़ सी होकर।
नज़र टकराई दोनों की तबस्सुम आ गया लब पर।।

अभी शोख़ी तबस्सुम की नुमायाँ थी हसीं लब से।
कि फ़ौरन मरमरीं बाहें उठीं इक हुस्ने-अग़रब से।।

ब शकले क़ौस वरमाला थी उसके हाथों में अबतक।
रुख़े-अर्जुन पे चष्मे-माहवश मरकूज़ थी बेशक।।

उठीं थीं क़ौस के मानिन्द ऊपर मरमरीं बाहें।
निगाहों से दिलों तक खुल गई थीं प्यार की राहें।।

हुए मबहूत दोनों इसतरह, सकता सा तारी था।
न बेहोशी का आलम था न वक़्ते-होशियारी था।।

निगाहों के फुसुँ ने क़ायनाते-होश को लूटा।
तिलस्मे-सर ख़ुशी उन का अचानक इस तरह टूटा।।

कि अर्जुन के दहाने ख़ुश्क़ से बेवक़्त थर्राकर।
सिसक कर एक आहे-सर्द निकली दिल से घबराकर।।

इधर अर्जुन के लब से आह निकली थी कि उलजत से।
उधर पहना दी पंचाली ने वरमाला मोहब्बत से।।

ग़ौग़ा = शोर
सदाए दाद-ओ-तहसीन = मुबारक बाद की आवाज़ें
महफ़िले अशराफ़ = आदरणीय पुरुशों का मंडल
माहवश = चांद की मानिन्द

ख़मीदा = झुकी हुई
तबस्सुम = हंसी
लब = होंट
हसीं लब = सुन्दर होंट
मरमरीं बाहें = संगे मरमर के सफीद पत्थर की तरह सुन्दर बाज़ू
बशकले कौस = कमान के जैसा
रुख़ = चेहरा
चष्मे-माहवश = चंद्रमा सी कन्या की आंखे
मरकुज़ = जमी हुई
फुसुँ, तिलस्म = जादू
मबहूस = हक्का बक्का

کوروؤں اور چھتریوں کا راجہ دروپد پر حملہ

ادھر پڑتے ہی مالا شیر دل ارجن کی گردن میں
بھڑک کر رہ گیا شعلہ دماغ و قلبِ دشمن میں

اسے اپنی ہتک محسوس کی چھتری جوانوں نے
اہانت اور اک توہین سمجھی پہلوانوں نے

کہ چھتری کے مقابل جیت لے اک برہمن بازی
ہمارے سامنے دِکھلائے فنِ تیر اندازی

نہیں ہرگز نہیں یہ تو دروپد کی شرارت ہے
سرِ محفل ہماری اِس میں ذلت ہے اہانت ہے

دروپد سے لیا جائے گا اب تو انتقام اِس کا
مٹا ڈالیں گے ہم تو صفحۂ ہستی سے نام اس کا

یہ کہہ کر کورو چھتری اور سارے سُورما مل کر
کیا اک ساتھ سب راجاؤں نے حملہ دروپد پر

جو دیکھی اِس طرح کی بھیم اور ارجن نے کیفیت
نکل آئے دروپد کی حمایت میں بصد جرأت

اُکھاڑہ اک تناور پیڑ فوراً بھیم نے بڑھ کر
کماں لیکر اِدھر ارجن بھی چڑھ آیا تھا دشمن پر

پڑا گھمسان کا رن سیکڑوں مارے گئے رستم
نہ کام آیا کسی اک سُورما کا بھی وہاں دم خم

شری گھنشیام نے ماحول کی دیکھی جو یہ حالت
کیا سمجھا بجھا کر سارے راجاؤں کو پھر رخصت

یہ فتنہ دب گیا گھنشیام کے حُسنِ تدبر سے
نکالی آشتی کی راہ، دانش اور تفکر سے۔

कौरवों और क्षत्रियों का राजा द्रौपद पर हमला

इधर पड़ते ही माला शेर-दिल अर्जुन की गर्दन में।
भड़क कर रह गया शोला, दिमाग़-ओ-क़ल्बे-दुश्मन में।।

इसे अपनी हतक मेहसूस की क्षत्रिय जवानों ने।
अहानत और इक तौहीन समझी पहेलवानों ने।।

कि क्षत्रिय के मुक़ाबिल जीत ले इक ब्राह्मण बाज़ी।
हमारे सामने दिखलाए फ़न्ने-तीर अन्दाज़ी।।

नहीं हरगिज़ नहीं, यह तो द्रौपद की शरारत है।
सरे-महफ़िल हमारी, इसमें ज़िल्लत है, अहानत है।।

द्रौपद से लिया जाएगा अब तो इन्तेक़ाम इसका।
मिटा डालेंगे हम तो सफ़ह ए-हस्ती से नाम इसका।।

यह कह कर कौर-ओ-क्षत्रिय और सारे सूरमा मिलकर ।
किया इक साथ सब राजाओं ने हमला द्रौपद पर।।

जो देखी इसतरह की भीम और अर्जुन ने कैफ़ियत।
निकल आए द्रौपद की हिमायत में बसद जुरअत।।

उखाड़ा इक तनावर पेड़ फ़ौरन भीम ने बढ़कर।
कमाँ लेकर इधर अर्जुन भी चढ़ आया था दुश्मन पर।।

पड़ा घमसान का रन सैकड़ों मारे गए रुस्तम।
न काम आया, किसी इक सूरमा का भी, वहाँ दम ख़म।।

श्री घनश्याम ने माहौल की देखी जो यह हालत।
किया, समझा बुझा कर सारे राजाओं को फिर रुख़सत।।

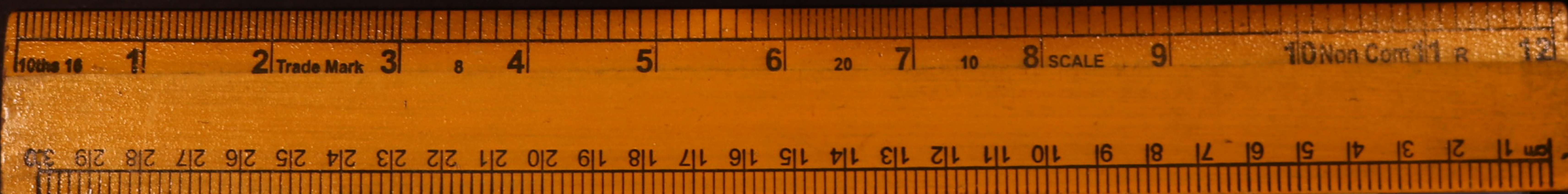
यह फ़ितना दब गया घनश्याम के हुस्ने-तदब्बुर से।
निकाली आश्ती की राह, दानिश और तफ़क्कुर से।।

हतक = अपमान
अहानत,तौहीन = बेइज़्ज़ती

इन्तेक़ाम = बदला
सफ़ह ए-हस्ती = जग, दुनिया

हिमायत = सहायता

तदब्बुर = अकलमंदी
तफ़क्कुर = विचार
आश्ती = दोस्ती, मित्रता



پانڈوؤں کی واپسی اور ماں کا حکم

ہوئے سب سورما واپس مقامِ جشنِ رنگیں سے
بچا کر دامنوں کو شعلہ ہائے جنگ آگیں سے

چلے پانڈو وہاں سے دخترِ پنچال کو لے کر
خوشی سے جھومتے گاتے ہوئے پہنچے وہ اپنے گھر

پہنچ کر دی صدا پھر پانڈوؤں نے بابِ خانہ پر
کہ ماتا کھول دو، دروازہ اور دیکھو یہاں آکر

کہ اک تحفہ دروپد کے محل سے ہم جو پائے ہیں
اُسے ماتا تمہاری خدمتِ اقدس میں لائے ہیں

صدا پانڈو کی جس دم کان میں کُنتی کے یہ آئی
کہا کُنتی نے اس کو بانٹ لیں آپس میں سب بھائی

یہ جملہ کیا سُنا ارجن کے دل پر لگ گیا بھالا
پکارا ہائے ماں، بِن دیکھے تم نے کیا یہ کہہ ڈالا

یہ ایسا تحفہ ہے ماتا، جو بانٹا جا نہیں سکتا
یہ جیو ارپن ہے جو تقسیم میں اب آ نہیں سکتا

تمہارا لیکن اک اک شبد پارائن سے ہے احسن
تمہاری بات کا پالن ہے، پالنہار کا پالن

سرِ تسلیم خم ہے ماں تمہارے حکم کے آگے
ہمارا بھاگ ممکن ہے اسی اک وجہ سے جاگے

یکجہتیٔ زوجین

شری گھنشیام نے پھر آکے سب لوگوں کو سمجھایا
تو پانڈو نے خوشی کیساتھ پنچالی کو اپنایا

पान्डवों की वापसी
और माँ का हुक्म

हुए सब सूरमा वापस मुक़ामे-जश्ने-रंगीं से।
बचाकर दामनों को शोला हाए जंगे-आगीं से।।

चले पांडव वहाँ से दुख़्तरे पंचाल को लेकर।
खुशी से झूमते गाते हुए पहुँचे वह अपने घर।।

पहुँच कर दी सदा फिर पान्डवों ने बाबे-ख़ाना पर।
कि माता खोल दो, दरवाज़ा और देखो यहाँ आकर।।

कि इक तोहफ़ा द्रौपद के महल से हम जो पाए हैं।
उसे माता तुम्हारी ख़िदमते-अक़दस में लाए हैं।।

सदा पांडव की जिस दम कान में कुन्ती के यह आई।
कहा कुन्ती ने उसको बाँट लें आपस में सब भाई।।

यह जुमला क्या सुना, अर्जुन के दिल पर लग गया भाला।
पुकारा हाय माँ, बिन देखे तुम ने क्या यह कह डाला।।

यह ऐसा तोहफ़ा है माता, जो बाँटा जा नहीं सकता।
यह जीव अर्पण है, जो तक़सीम में अब आ नहीं सकता।।

तुम्हारा, लेकिन इक इक शब्द पारायन से है अहसन।
तुम्हारी बात का पालन है, पालनहार का पालन।।

सरे-तसलीम ख़म है माँ, तुम्हारे हुक्म के आगे।
हमारा भाग्य मुमकिन है उसी इक वजह से जागे।।

यकजैहती-ए-ज़ौजैन

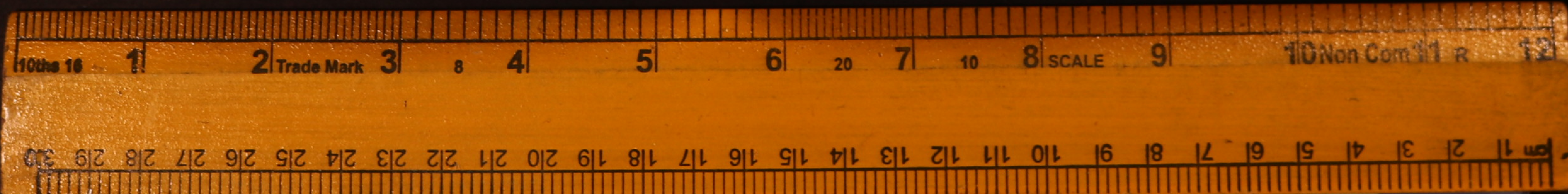
श्री घनश्याम ने, फिर आके सब लोगों को समझाया।
तो पांडव ने खुशी के साथ पंचाली को अपनाया।।

शोला हाए जंगेआगीं = युद्ध की आग से

सदा = आवाज़
बाबे-ख़ाना = घर के दरवाजे पर

अहसन = उत्तम

सरे तसलीम खम = आदेश के आगे शीष झुकाना



بہ شرکت منسلک پانچوں ہوئے پھر ایک عورت سے — بنایا سب نے اس کو بھاریہ ماں کی اطاعت سے

ہر اک دن ایک اک بھائی بصد یکجہتی و رغبت — کیا کرتا رہا آباد اپنا حجلۂ عشرت

خبر گوشِ دروپد تک جب اس عنوان کی پہنچی — نہایت ہی ملال و رنج کے سامان کی پہنچی

ہمہ تن غرق ہو کر رہ گیا وہ غم کے طوفاں میں — لگی بیٹھے بٹھائے آگ اسکے قلبِ فرحاں میں

کہ اتنے میں مہرشی ویاس جی نے درشن دکھلایا — یہ شدنی اور ہونی ہے یہ کہہ کر اسکو سمجھایا

جوازِ زوجین

سُنایا واقعہ اس ضمن میں مہراج نے اسکو — سُنائی داستانِ شیو، شہِ بے تاج نے اسکو

کہ پارو اور شنکر تھے براجے اک بیاباں میں — نشاط و کیف کے گل چن رہے تھے اپنے داماں میں

کہ اتنے میں انہوں نے کام دھینو کو وہاں دیکھا — کہ جس کے ساتھ تھا، واں ایک جتھا پانچ بیلوں کا

کہا پارو نے ہنس کر کیا تجھے غیرت نہیں آتی — جو تو بیلوں کے ساتھ اے بیحیا پھرتی ہے اٹھلاتی

یہ سنکر گائے بولی مجھ پہ کیوں ہنستی ہو اے خوشخو — کہ اگلے جنم میں تم پر بھی یہ وقت آئیگا بنّو

بنوگی بھاریہ اسوقت تم بھی پانچ مردوں کی — مصیبت تم کو بھی سہنی پڑیگی پانچ مردوں کی

۱ یدھشٹر بولے یہ پانچوں کی بھاریہ (بیوی) ہوگی۔ یہ سنکر راجہ دروپد شوک ساگر میں ڈوب گئے تب ان کا سندیہہ دور کرنے کے لئے استری کا یگیہ مہامنی وید ویاس جی حاضر ہوئے۔ ۲ شیو شنکر مہادیو یہ سب نام ایک ہی آدمی کے ہیں۔ ۳ پاربتی کا مخفف۔ ۴ ایک بیوی پانچ بیلوں کے سنگ کام دھینو کو دیکھ کر پاربتی ہنسی تب کام دھینو نے شراپ دیا کہ تم بھی پانچ مردوں کی بھاریہ ہوگی (دیکھو مہابھارت ۳۰،۳۱)

ब शिरकत मुनसलिक पांचों हुए फिर एक औरत से।
बनाया सब ने उस को [1]भार्या माँ की अताअत से।।

हर इक दिन एक इक भाई बसद यकजहती-ओ-रग़बत।
किया करता रहा आबाद अपना हुजलए-इशरत।।

ख़बर गोशे-द्रौपद तक जब इस उनवान की पहुँची।
निहायत ही मलाल-ओ-रंज के सामान की पहुँची।।

हमा तन ग़र्क़ होकर रह गया वह ग़म के तूफ़ाँ में।
लगी बैठे बिठाए आग उसके क़ल्बे-फ़रहाँ में।।

कि इतने में महर्षि व्यास जी ने दर्श दिखलाया।
यह शुदनी और होनी है, यह कह कर उसको समझाया।।

बशिरकत = भिन्न

हमा तन = सर से पैर तक

जवाज़े - ज़ौजैन

सुनाया वाक़्या इस ज़िम्न में महराज ने उसको।
सुनाई दास्ताने-[2]शिव, शहे-बे ताज़ ने उसको।।

कि [3]पारो और शंकर थे बिराजे इक बयाबाँ में।
निशात-ओ-कैफ़ के गुल चुन रहे थे अपने दामाँ में।।

कि इतने में उन्हों ने [4]"काम धेनू" को वहाँ देखा।
कि जिस के साथ था, वाँ एक जत्था पाँच बैलों का।

कहा पारो ने हंस कर, क्या तुझे ग़ैरत नहीं आती।
जो तू बैलों के साथ, ऐ बेहया फिरती है इठलाती।।

यह सुनकर गाय बोली मुझ पे क्यों हंसती हो, ऐ खुशखू।
`कि अगले जन्म में तुम पर भी यह वक़्त आएगा बिन्नो।।

बनोगी भार्या उसवक़्त तुम भी पाँच मर्दों की।
मुसीबत तुम को भी सहनी पड़ेगी पाँच मर्दों की।।

१) युधिष्ठिर बोले यह पाँचों की भार्या (बीवी होगी) यह सुनकर राजा द्रौपद शोक सागर में डूब गए तब उन का संदेह दूर करने के लिए स्त्री का यज्ञ महर्षि वेद व्यास जी हाज़िर हुए । २) शिवशंकर महादेव यह सब नाम एक ही आदमी के हैं। ३) पार्वति का मख़फ़्फ़क । ४) पाँच बैलों के संग काम धेनू को देख कर पार्वति हंसी तब काम धेनू ने श्राप दिया कि तुम भी पाँच मर्दों की भार्या होगी। (महाभारत ३०,३१)

طیشِ شنکر اور برہما ہتیا

یہ سُنکر پڑ گیا فق اس کا چہرہ خوف کے مارے / دلِ شنکر پہ بھی تشویش کے چلنے لگے آرے

جبیں پر فکر کے آثار ان کے ہو گئے ظاہر / پئے درماں وہ پھر پیشِ برہما پہنچے بالآخر

سُنایا قصۂ غم ان سے جب پاروؔ کا شنکر نے / صدا اک کھرؔ[۱] کے جیسی دی پھر انکے پانچویں سر نے

جواب اس طرح کا سُنتے ہی شنکر جی کو طیش آیا / یدِ شنکر بڑھا، اور ان کے سر کو قطع کر لایا

چپک کر رہ گیا سر، قطع ہو کر ہاتھ میں ان کے / یہ دست و سر رہے ہیں پھر ہمیشہ ساتھ میں ان کے

چھڑائے سے نہ دستِ شیو سے سر چھوٹا کسی صورت / برہما ہتیا سے پھر نہ ان کو مل سکی فرصت

جتن یوں تو کئے لاکھوں کہ پائیں سر سے چھٹکارا / مگر شدنی کے آگے چل سکا ان کا نہ کچھ یارا

پاپ سے مُکتی پانے کا حل اور
پانڈوؤں سے دروپدی کا بیاہ

بالآخر ہتیا سے پوچھا شنکر نے بتا تُو ہی / کہ ہوگی کیسے مکتی پاپ سے اب کہہ ذرا تُو ہی

کہا ہتیا نے اٹھارہ ہزار اکشونی، سینا کا / پلاؤ خون تو اس پاپ سے پاؤ گے چھٹکارا

[۱] ایک کرخت سی آواز۔

तैशे-शंकर और ब्रह्मा हत्या

यह सुनकर पड़ गया फ़क़ उस का चेहरा ख़ौफ़ के मारे।
दिले-शंकर पे भी तशवीश के चलने लगे आरे।।

जबीं पर फ़िक्र के आसार उन के हो गए ज़ाहिर।
पए दरमाँ वह फिर पेशे ब्रह्मा पहुँचे बिलआख़िर।।

सुनाया किस्सा-ए-ग़म उन से, जब पारो का शंकर ने।
सदा इक [१]"खर" के जैसी दी, फिर उनके पॉचवें सर ने।।

जवाब इस तरह का सुनते ही शंकर जी को तैश आया।
यदे-शंकर बढ़ा, और उन के सर को कता कर लाया।।

चिपक कर रह गया सर, कता होकर हाथ में उन के।
यह दस्त-ओ-सर रहे हैं फिर, हमेशा साथ में उनके।।

छुड़ाए से न दस्ते-शिव से सर छूटा किसी सूरत।
ब्रह्मा हत्या से फिर, न उन को मिल सकी फुरसत।।

जतन यूँ तो किये लाखों, कि पाऐ सर से छुटकारा।
मगर शुदनी के आगे, चल सका उनका न कुछ यारा।।

पाप से मुक्ति पाने का हल
और पांडवों से द्रौपदी का ब्याह

बिलआख़िर हत्या से पूछा शंकर ने बता तू ही।
कि होगी कैसे मुक्ति पाप से, अब कह ज़रा तू ही।।

कहा हत्या ने अठ्ठारह हज़ार अक्षूवणी सेना का।
पिलाओ खून तो उस पाप से पाओगे छुटकारा।।

तशवीश = अशंका

जबीं = माथे

पए दरमां = मुक्ती के लिए

क़ता = काटना

दस्त = हाथ

शुदनी = होनी

अक्षूवणी = अक्षौहिणी

[१] एक करख़्त सी आवाज़

کیا شیوجی نے دواپر جگ میں وعدہ خوں پلانے کا / ملا اس طرح موقع ہاتھ سے سر کو چھڑانے کا

کہ دواپر کے لیے وشنو نے دیدی آگیا آخر / یہ تیرا روپ ہوگا پانڈوؤں کی شکل میں ظاہر

علاوہ اس کے پارو روپ پنچالی کا دھارے گی / وہ جیون پانچ پتیوں سنگ پھر اپنا گزارے گی

دروپدنے مہرشی ویاس کی یہ گفتگو سنکر / سر تسلیم اپنا خم کیا دل پر رکھا پتھر

پھر اسکے بعد پانچوں پانڈوؤں کا اپنی دختر سے / دروپدنے رچایا بیاہ[1] اترا بار اک سر سے

پانڈو کو زندہ دیکھ کر دریودھن کا کرودھ

غرض اس طرح رہتے رہتے گزری انکو اک مدت / ہوئی پھر رفتہ رفتہ پانڈوؤں کی شہر میں شہرت

خبر اس بات کی جس وقت دریودھن کے پاس آئی / پئے تحقیق فوراً اک جماعت اس نے بھجوائی

اسی کے ساتھ دریودھن بھی تحقیقات کی خاطر / گیا فی الفور شہر کنبلا میں باغم وافر

وہاں جب پانڈوؤں کو اس نے جیتا جاگتا دیکھا / تو مارے خوف ودہشت کے زسرتاپا لرز اٹھا

خبر جھوٹی ملی تھی آگ میں پانڈو کے جلنے کی / فقط افواہ تھی یہ، موت کے سانچے میں ڈھلنے کی

وہ لوٹ آیا نہایت جوش اور غصے میں بل کھا کر
خجالت سے پشیمانی سے اور غیرت سے جھنجھلا کر

[1] دروپدی کا بیاہ پانچ دنوں تک ہوتا رہا کیونکہ روزانہ ایک ایک بھائی سے دروپدی بیاہی گئی (دیکھو مہابھارت بھاشا صفحہ ۳۲)

किया शिवजी ने द्वापर युग में वादा ख़ूँ पिलाने का।
मिला इस तरह मौका, हाथ से सर को छुड़ाने का।।

कि द्वापर के लिऐ विष्णू ने देदी आज्ञा आख़िर।
यह तेरा रुप होगा पांडवों की शक्ल में ज़ाहिर।।

अलावा इस के पारो रुप पंचाली का धारेगी।
वह जीवन पाँच पतियों संग फिर अपना गुज़ारेगी।।

द्रौपदी ने महर्षि व्यास की यह गुफ़्तगू सुनकर।
सरे तसलीम अपना ख़म किया, दिल पर रखा पत्थर।।

फिर इसके बाद पाँचों पांडवों का अपनी दुख़्तर से।
द्रौपद ने रचाया [1]ब्याह, उतरा बार इक सर से।।

सरे-तसलीम ख़म = झुका हुआ सर

पांडव को ज़िन्दा देखकर दुर्योधन का क्रोध

ग़रज़ इस तरह रहते रहते गुज़री उनको इक मुद्दत।
हुई फिर रफ़्ता रफ़्ता पान्डवों की शहर में शोहरत।।

ख़बर इस बात की जिस वक़्त दुर्योधन के पास आई।
पए तहक़ीक़ फ़ौरन इक जमाअत उस ने भिजवाई।।

इसी के साथ दुर्योधन भी तहक़ीक़ात की ख़ातिर।
गया फ़िलफ़ौर शहरे-कुंबला में बा-ग़मे-वाफ़िर।।

वहाँ जब पान्डवों को उस ने जीता जागता देखा।
तो मारे खौफ़-ओ-दहशत के वह सरता पा लरज़ उठ्ठा।।

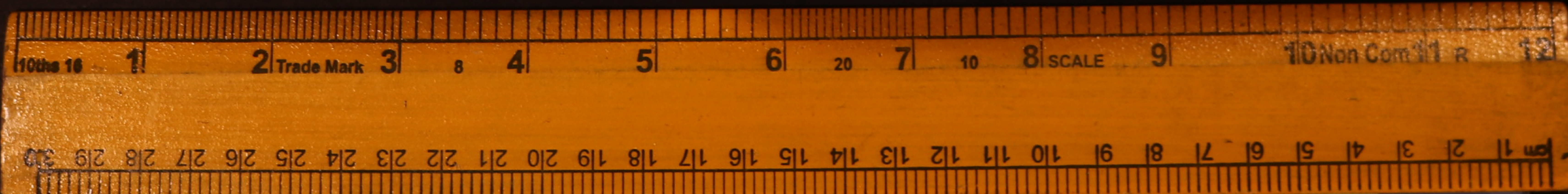
ख़बर झूटी मिली थी आग में पांडव के जलने की।
फ़क़त अफ़वाह थी यह मौत के सांचे में ढलने की।।

वह लौट आया निहायत जोश और गुस्से में बल खाकर।
ख़िज़ालत से, पशेमानी से और ग़ैरत से झुँझला कर।।

पए तहक़ीक़ = खोज और जानकारी के लिये
जमाअत = टोली दल

ख़िज़ालत = शर्म

[1] द्रौपदी का ब्याह पाँच दिनों तक होता रहा क्योंकि रोज़ाना एक एक भाई से द्रौपदी ब्याही गयी।।(महाभारत भाषा पृष्ठ ३२)



دریودھن کی کدورت پر راجہ کو فکر

یہ سارا واقعہ پانڈو کا دریودھن نے گھر جا کر
کہا اپنے پتا سے اس طرح غصے میں بل کھا کر

وجود اب پانڈوں کا خار سا دل میں کھٹکتا ہے
ہمیشہ سر پہ گویا موت کا تیغہ لٹکتا ہے

نہیں ہے مجھ میں تاب ضبط اور برداشت کی قوت
نہ میں چھوڑونگا زندہ پانڈوں کو اب کسی صورت

پتا نے جب سنیں اس قسم کی فرزند سے باتیں
تو کیسے ان سنی کرتے وہ یہ ساری خرافاتیں

درونہ چاریہ اور بھیشم کو فوراً ہی بلوایا
پھر ان سے مشورہ اس ضمن میں فی الفور فرمایا

بھیشم پتامہ کا مشورہ

پتامہ نے سنی سب گفتگو ان کی متانت سے
دیا پھر مشورہ ان کو تدبر اور لیاقت سے

مخاطب ہو کے دریودھن سے بولے بے جھجک ہو کر
مناسب ہے کرے انساں نہ باتیں ہوش کو کھو کر

حقیقت ہے کہ اس سن میں دلوں میں جوش رہتا ہے
جوانی کے نشے میں آدمی مدہوش رہتا ہے

مگر انساں وہی ہے جو تدبر اور فراست سے
بچا لے جائے دامن زندگی کا قتل و غارت سے

تقاضائے خرد بھی ہے یہی پانڈو کو بلوا کر
انہیں دیدو حکومت نصف، احساں تم کرو ان پر

दुर्योधन की कदूरत पर राजा को फ़िक्र

यह सारा वाक़्या पान्डव का दुर्योधन ने घर जाकर।
कहा अपने पिता से इस तरह गुस्से में बल खाकर।।

वजूद अब पान्डवों का ख़ार सा दिल में खटकता है।
हमेशा सर पे गोया मौत का तेग़ा लटकता है।।

नहीं है मुझ में ताब-ओ-ज़ब्त और बर्दाश्त की कुव्वत।
न मैं छोड़ूँगा ज़िन्दा पान्डवों को अब किसी सूरत।।

पिता ने जब सुनीं इस क़िस्म की फ़रज़न्द से बातें।
तो कैसे अन सुनी करते वह यह सारी खुराफ़ातें।।

द्रोणाचार्य और भीष्म को फ़ौरन ही बुलवाया।
फिर उन से मशवरा इस ज़िम्न में फ़िलफ़ौर फ़रमाया।।

भीष्म पितामह का मशवरा

पितामह ने सुनी सब गुफ़्तगू उन की मतानत से।
दिया फिर मशवरा उन को, तदब्बुर और लियाक़त से।।

मुख़ातिब हो के दुर्योधन से बोले बे झिझक होकर।
मुनासिब है, करे इन्साँ, न बातें होश को खोकर।।

हक़ीक़त है, कि इस सिन में दिलों में जोश रहता है।
जवानी के नशे में आदमी मद-होश रहता है।।

मगर इन्साँ वही है जो तदब्बुर और फ़िरासत से।
बचाले-जाए दामन ज़िन्दगी का क़त्ल-ओ-ग़ारत से।।

तक़ाज़ाए-ख़िरद भी है यही, पान्डव को बुलवा कर।
उन्हें देदो हुकूमत निस्फ़, एहसाँ तुम करो उन पर।।

ख़ार = कांटे

गुफ़्तगू = बातें

तक़ाज़ाए-ख़िरद = अक़्ल की बात

وہ لیکن تم سے پانچوں کم نہیں جرأت میں طاقت میں
وہ ہر میداں میں بیشک تم سے بڑھ کر ہیں لیاقت میں

علاوہ اسکے خود ہیں کرشن ان کی خیرخواہی پر
بھروسہ مت کرو تم اپنی قوت اور شاہی پر

یہ سنکر ہوش دریودھن کو آیا خوابِ غفلت سے
کیا منظور ان کا مشورہ لیکن کدورت سے

ناردمنی کا ودھان اور سبھدرا کا اغوا

بلا کر پانڈؤں کو بخش دی جاگیر راجہ نے
دکھائی خُلق اور اخلاص کی تصویر راجہ نے

ہوئے آباد کھانڈو بن میں پانڈو اور پنچالی
وہیں اک اندر[1] نامی شہر کی بنیاد بھی ڈالی

کچھ عرصہ بعد ہی ناردمنی جی ان کے پاس آئے
سنائی داستاں ایسی کہ جو ان کو بھی راس آئے

بنایا بھاریہ[2] کے سنگ وچرن کا ودھان ایسا
کہ مستقبل میں یک جہتی کا ہو جائے نشان اونچا

مگر ارجن نے اک دن جب اصولِ باہمی توڑا
تو اس اپرادھ میں بارہ برس تک اس نے گھر چھوڑا

بہت کچھ واقعہ اس دور میں ارجن کو پیش آیا
سبھدرا کو کرشنا جی کے ایما سے بھگا لایا

سبھدرا کرشن اور بلدیو جی دونوں کی بھگنی تھی
اس اغوا سے شری بلدیو کو تکلیف پہنچی تھی

مگر گھنشیام نے بلدیو جی کو بات سمجھائی
کہ ارجن بھی تو آخر بھیشم کا پوتا ہے اے بھائی

بہت کچھ سن کے راضی ہو گئے وہ پھر تو بنواری
جہیز اور دان لیکر خود ہی پہنچے کرشن گردھاری

(۱) اندر پرستھ موجودہ دہلی کا پرانا نام

(۲) بیوی کا قانون۔ نارد منی نے آپس میں اتحاد و اتفاق قائم رکھنے کے لیے ایک قانون بنایا تھا جسکی رو سے دروپدی پانچوں بھائیوں کے پاس صرف ایکدن اور ایک رات باری باری رہ سکتی تھی۔ جو بھائی اس اصول کو کسی وجہ سے توڑتا تھا اسے بارہ برس گھر بار چھوڑ کر بیابان جانا پڑتا۔ (مہابھارت)

वह लेकिन तुम से पाँचों कम नहीं जुरअत में ताक़त में।
वह हर मैदाँ में बेशक़, तुम से बढ़कर हैं लियाक़त में।।

अलावा इसके खुद हैं कृष्ण उन की ख़ैर-ख़्वाही पर।
भरोसा मत करो तुम अपनी कुव्वत और शाही पर।।

यह सुनकर होश दुर्योधन को आया ख़्वाबे-ग़फ़लत से।
किया मंजूर उनका मशवरा लेकिन कदूरत से।।

नारद मुनि का विधान और सुभद्रा का इग़वा

बुला कर पान्डवों को बख़्श दी जागीर राजा ने।
दिखाई खुल्क़ और इख़लास की तसवीर राजा ने।।

हुए आबाद खाण्डव बन में पान्डव और पंचाली।
वहीं इक [1]'इन्द्र' नामी शहर की बुनयाद भी डाली।।

कुछ अर्सा बाद ही नारद मुनिजी उन के पास आए।
सुनाई दास्ताँ ऐसी, कि जो उन को भी रास आए।।

बनाया [2]भार्या के संग, विचरण का विधान ऐसा।
कि मुस्तक़बिल में यकजहती का होजाए निशाँ ऊँचा।।

मगर अर्जुन ने इक दिन सब उसूले-बाहमी तोड़ा।
तो इस अपराध में बारह बरस तक उस ने घर छोड़ा।।

बहुत कुछ वाकेया इस दौर में अर्जुन को पेश आया।
सुभद्रा को कृष्णा जी के इमासे भगा लाया।।

सुभद्रा, कृष्ण और बलदेवजी दोनों की भगनी थी।
इस इग़वा से श्री बलदेव को तकलीफ़ पहुँची थी।।

मगर घनश्याम ने बलदेवजी को बात समझाई।
कि अर्जुन भी तो आख़िर भीष्म का पोता है ऐ भाई।।

बहुत कुछ सुन के राज़ी हो गए वह, फिर तो बनवारी।
जहेज़ और दान लेकर खुद ही पहुचे कृष्णगिर्धारी।।

मुस्तक़बिल = भविष

जहेज़ = दहेज

१) इन्द्र प्रस्थ, मौजूदा देहली का पुराना नाम

२) नारदमुनि ने आपस में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ क़ायम रखने के लिए एक कानून बनाया था जिसकी रुसे द्रौपदी पाँचों भाइयों के पास सिर्फ एक दिन और एक रात बारी बारी रह सकती थी। जो भाई इस उसूल को किसी वजह से तोड़ता था उसे बारह बरस घर बार छोड़ कर बयाबान जाना पड़ता (महाभारत भाषा)

ابھیمنو کی پیدائش

ادھر ارجن سبھدرا کو جب اپنے گھر میں لے آیا
اسے پھر اپنی ماتا اور پنچالی سے ملوایا

سبھدرا نے کہا پھر تھام کر دامانِ پنچالی
کنیزِ کمتریں سمجھیں مجھے اے ملکۂ عالی

سبھدرا کے اس اندازِ سخن میں خاکساری تھی
محبت تھی، خلوص و خلق تھا اور بُردباری تھی

یہ سنتے ہی دروپد کنیا نے اپنے سینے سے
اسے لپٹا لیا بڑھ کر محبت کے قرینے سے

کہا اس نے کہ جب تم کرشن جی کی خاص خواہر ہو
تو اے پیاری سبھدرا تم بھی اک میری بہن پھر ہو

سبھدرا کو کچھ عرصہ بعد اک لڑکا ہوا اُتپن
ابھیمنو تھا اس کا نام جو تھا پیار کا مخزن

شری گھنشیام اور ارجن نے اپنی ودیا ساری
ابھیمنو کو سکھلا دی، ہنرمندی و ہشیاری

جواں ہو کر ابھیمنو اکیلا سب پہ سربر تھا
یہ ارجن اور شری گھنشیام کے جیسا دلاور تھا

پانڈو کی بیویاں

علاوہ اسکے پنچالی کو بھی پانڈو سے مستحسن
ہوئے تھے پانچ کُل بیٹے علی الترتیب[1] یوں اُتپن

سکھایا ویر ارجن نے فنِ جنگ و جدل ان کو
ہوئے مشّاق کافی، مل گیا محنت کا پھل ان کو

۱ یدھشٹر سے پرتی یدھ۔ ۲ بھیم سے شرت سوم ۳ ارجن سے شردتی کیرتی ۴ سہدیو سے شردتی کر ۵ نکل سے شتانیک۔
یہ پانچوں بیٹے پانچ بھائیوں سے دروپدی کو ہوئے۔

अभिमन्यु की पैदाइश

इधर अर्जुन सुभद्रा को जब अपने घर में ले आया।
इसे फिर अपनी माता और पंचाली से मिलवाया।।

सुभद्रा ने कहा फिर थाम कर दामाने-पंचाली।
कनीज़े-कमतरीं समझें मुझे ऐ मलका-ए-आली।।

सुभद्रा के इस अन्दाज़े-सुख़न में ख़ाकसारी थी।
मोहब्बतं थी, खुलूस-ओ-खुल्क़ था और बुर्दबारी थी।।

यह सुनते ही द्रौपद कन्या ने अपने सीने से।
उसे लिपटा लिया बढ़ कर मोहब्बत के क़रीने से।।

कहा उसने कि जब तुम कृष्ण जी की ख़ास ख्व़ाहिर हो।
तो ऐ प्यारी सुभद्रा तुम भी इक मेरी बहन फिर हो।।

सुभद्रा को कुछ अरसा बाद इक लड़का हुआ उत्पन्न।
अभिमन्यु था उस का नाम जो था प्यार का मख़ज़न।।

श्री घनश्याम और अर्जुन ने अपनी विद्या सारी।
अभिमन्यु को सिखलादी, हुनरमंदी-ओ-हुशयारी।।

जवाँ होकर अभिमन्यु अकेला सब पे सर-बर था।
यह अर्जुन और श्री घनश्याम के जैसा दिलावर था।।

कनीज़े-कमतरीं = नौकरानी
मलका ए आली = महारानी

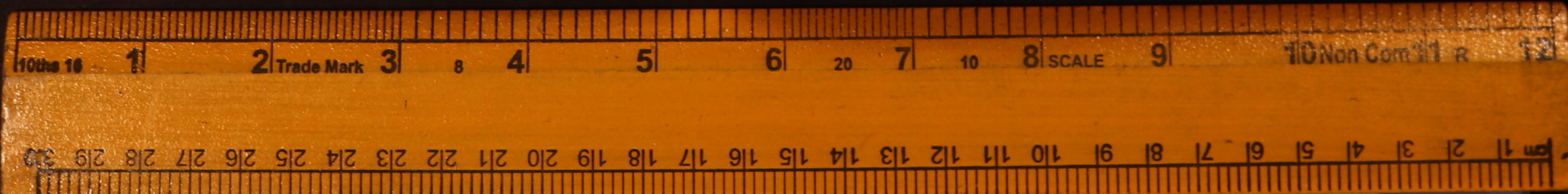
पान्डव की बीवियाँ

अलावा इसके पंचाली को भी पान्डव से मुस्तहसन।
हुए थे पाँच कुल बेटे [1]अललतरतीब यूँ उत्पन्न।।

सिखाया वीर अर्जुन ने फ़ने-जंग-ओ-जदल उन को।
हुए मश्शाक़ काफ़ी, मिल गया मेहनत का फल उन को।।

फ़ने जंग-ओ-जदल = लड़ाई का गुर
मश्शाक़ = माहिर

१) युधिष्ठिर से प्रति युध्द, भीम से शुर्त सूवम अर्जुन से श्रवति कीर्ती सहदेव से श्रवति कर, नकुल से शतायंक।
यह पांचो बेटे पांच भाईयोसे द्रोपदी को हुवे ।



پھر اسکے بعد پانچوں نے الگ ایک ایک عورت سے
رچایا بیاہ اپنے وقر و عظمت اور جزالت سے

یدھشٹر نے حسیں بنتِ گواہن سے سوئمبر میں
رچایا بیاہ لے آیا وہ اک خورشید کو گھر میں

ہوا پیدا پسر پھر یودھ نامی اُس حسینہ سے
نہایت نیک سیرت ماہرو اُس با قرینہ سے

پھر اسکے بعد کاشی دیش کے راجہ کی دختر سے
رچایا بیاہ اپنا بھیم نے اک رشک نیّر سے

تھا جس کا نام کالی اس سے اک لڑکا ہوا اُتپن
اسی کا نام تھا سروانگ گویا تھا وہ کلتارن[1]

نکل نے اپنی چے دی راج کی بیٹی کرینو سے
جو کی شادی، ہوا نرمت اُتپن گھر میں پھر اسکے

پھر اسکے بعد کی سہدیو نے دومنت کی دختر
سوئمبر میں رچایا بیاہ، لایا اس کو اپنے گھر

تھا جس کا نام وجیا جو بلا کی خوبصورت تھی
سراپا نور و نغمہ تھی مجسّم اک لطافت تھی

ہوا اس کو تولد طالعور اک خوب رو فرزند
جگر گوشہ اگر وہ ماں کا تھا تو باپ کا دلبند

غرض یہ چاروں بچے اپنے نانا کی حکومت پر
ہوئے فائز، جواں ہو کر بشانِ ناز و کرّ و فر

اگنی دیوتا کی بدہضمی

کسی موقع پہ کھانڈو بن میں ارجن اور مرلی دھر
براجے تھے کہ اگنی دیوتا نے اس جگہ آکر

کہا اب تو بگڑ کر رہ گیا ہے ہاضمہ میرا
اسی کارن ہوا ہے پھر سے اس بن میں مرا پھیرا

[1] گھر کا چراغ

फिर उसके बाद पाँचों ने अलग एक एक औरत से।
रचाया ब्याह अपने वक्र-ओ-अज़मत और जज़ालत से।।

युधिष्ठिर ने हसीं बिन्ते-गवाहन से स्वयंवर में।
रचाया ब्याह ले आया वह इक खुर्शीद को घर में।।

हुआ पैदा पिसर फिर "योध्द" नामी उस हसीना से।
निहायत नेक सीरत माहरू उस बा क़रीना से।।

फिर उसके बाद काशी देश के राजा की दुख़्तर से।
रचाया ब्याह अपना भीम ने इक रश्के-नय्यर से।।

थो जिस का नाम काली, उस से इक लड़का हुआ उत्पन्न।
उसी का नाम था "सरवांग" गोया था वह कुल्तारण।।

नकुल ने अपनी, चेदी राज की बेटी "करेनिव" से।
जो की शादी, हुआ "निर्मित" उत्पन्न घर में फिर उसके।।

फिर इसके बाद की सहदेव ने दोमन्त की दुख्तर।
स्वयंवर में रचाया ब्याह, लाया उसको अपने घर।।

था जिसका नाम "विज्या" जो बला की खूबसूरत थी।
सरापा नूर-ओ-नग़मा थी, मुजस्सम इक लताफ़त थी।।

हुआ उस को तवल्लुद तालेवर इक खूबरु फ़रज़न्द।
जिगर गोशा, अगर वह माँ का था, तो बाप का दिलबंद।।

ग़रज़ यह चारों बच्चे अपने नाना की हुकूमत पर।
हुए फ़ायज़, जवाँ होकर बशाने-नाज़-ओ-करो फ़र।।

अग्नि देवता की बद हज़मी

किसी मौके पे खाण्डव बन में अर्जुन और मुरलीधर।
विराजे थे कि अग्नि देवता ने उस जगह आकर।।

कहा अब तो बिगड़ कर रह गया है हाज़मा मेरा।
इसी कारण हुआ है फिर से इस बन में मेरा फेरा।।

वक्रओ-अज़मत और जज़ालत = बड़ापन

माहरू = चंद्रमा सा सुंदर

नय्यर = सूरज

कुल्तारण = घर का चिराग़

तवल्लुद = पैदा
तालेवर = भाग्यवान

تمہاری ہی مدد سے دُور ہوگی میری بدہضمی — گرانی ختم ہوگی تو، تپش بڑھ جائے گی میری
نہ جانے مَیں نے کتنی بار چاہا اس گھنے بن کو — جلا کر بھسم کر دوں، روند دوں صحرا کے دامن کو
کہ اسکی آگ سے ہی ٹھیک میرا ہاضمہ ہوگا — گرانی ختم ہوگی بے کلی کا خاتمہ ہوگا
مگر اس بن کے باشی اور سارے راکشش مِل کر — بجھا دیتے ہیں جب اُٹھتا ہے کوئی شعلۂ مضطر

کرو رکھشا مری اے ویر ارجن شیام بنواری
نہ ہوگی گر تپش افزوں تو گھر کرے گی بیماری

رکھشا

یہ بپتا سُنکے ارجن اور کنہیا جی نے فرمایا — تری بیچارگی سُنکر ہمارا دل بھی بھر آیا
مگر کیسے کریں رکھشا تری ہم ایسے موقع پر — نہ ہو جب ساتھ سامانِ وغا تو ہم لڑیں کیونکر
یہ سُنکر اس نے اک رتھ، چار ابیض رنگ کے گھوڑے — دیئے تھے ترکش و پرچم اور اسکے ساتھ کچھ کوڑے
کوچ کیساتھ ارجن کو دیا گاڈیو دھنش اس نے — کیا تھا منتخب اک باصلاحیت منش اس نے
علاوہ اسکے اس نے شیام جی کو حربہ کاری — سُودرشن چکر اور کومود کی بخشی گدا بھاری
پھر اسکے بعد اگنی دیو، ارجن اور مُرلی دھر — مُصِر اُٹھے کہ کھانڈو بن کو کردیں آج خاکستر

तुम्हारी ही मदद से दूर होगी मेरी बद हज़मी।
गिरानी ख़त्म होगी तो, तपिश बढ़ जाएगी मेरी।।

न जाने मैंने कितनी बार चाहा इस घने बन को।
जला कर भस्म करदूँ , रौन्द दूँ सहरा के दामन को।।

कि उसकी आग से ही ठीक मेरा हाज़मा होगा।
गिरानी ख़त्म होगी बेकली का ख़ातमा होगा ।।

मगर उस बन के बासी और सारे राक्षस मिल कर।
बुझा देते हैं जब उठता है कोई शोला-ए-मुज़तर।।

शोलाए मुज़तर = भड़कती आग

करो रक्षा मेरी ऐ वीर अर्जुन, श्याम बनवारी।
न होगी गर तपिश अफ़ज़ूँ तो घर कर लेगी बीमारी।।

रक्षा

यह बिपता सुनके अर्जुन और कन्हैया जी ने फ़रमाया।
तेरी बेचारगी सुनकर हमारा दिल भी भर आया।।

मगर कैसे करें रक्षा तेरी, हम ऐसे मौके पर।
न हो जब साथ सामाने-वग़ा, तो हम लड़ें क्योंकर।।

सामाने वग़ा = लड़ाई के हथियार

यह सुनकर उस ने इक रथ, चार अबयज़ रंग के घोड़े।
दिये थे तरकशो-परचम और उसके साथ कुछ कोड़े।।

कवच के साथ अर्जुन को दिया "गाण्डीव धनुष" उस ने।
किया था मुन्तखिब इक बा सलाहियत मनुष उस ने।।

अलावा उसके उस ने श्याम जी को. हरबा-ए-कारी।
सुदर्शन चक्र और कौमूद की बख़्शी गदाभारी।।

हरबा-ए-कारी = हथियार

फिर उसके बाद अग्नि देव, अर्जुन, और मुरलीधर।
मअन उठ्ठे कि खाण्डव बन को कर दें आज़ खाकिस्तर।।

بہت سے دیوتا اور اندر تھے خود بھی شریکِ جنگ
ہوئے تھے قافیئے اُنکے مگر اس معرکہ میں تنگ

مچا تھا ایک ہاہا کار کھانڈو بن کی دھرتی پر
ہر اک شے جزوِ آتش بن گئی شعلہ فشاں ہو کر

اچانک نکلا میدانو بھڑکتے شعلہ زاروں سے
کہا مجھ کو شرن میں لو، بچا لو ان شراروں سے

شری گھنشیام کے کہنے پر ارجن نے اسے بڑھ کر
شرن میں لے کے اپنے کر دیا اُپکار اک اس پر

تحفۂ میدانو

شری گھنشیام ارجن اور میدانو نے پھر مل کر
کیا جمنا کے تٹ پر یوگ، کھانڈو بن کے کھنڈن پر

خیال اک روز میدانو کے دل میں اس طرح آیا
کہ میں پانڈو کے کارن آگ میں جلنے نہیں پایا

اب اس احساں کا سر سے بار میں اپنے اتاروں گا
حضوری میں بطورِ خاص کچھ نذریں گذاروں گا

یہ سوچا اور گمن ہو کر، گیا بندو سرور پر
وہاں سے تین چیزیں اندر نگری کو چلا لے کر

اک ان میں شنکھ تھا اور دوسرا تھا گرزِ فولادی
سبھا تیار کرنے کی تھی سوم ایک سامگری

یہ تحفہ جات بخشے اس طرح پانڈو کو الفت سے
کہ پہلا شنکھ بخشا ویر ارجن کو محبت سے

پھر اسکے بعد ہیکل بھیم کو اس نے گدا بخشی
دگر اسکے یدھشٹر کو سبھا کی دیدی سامگری

बहुत से देवता और इन्द्र थे, खुद भी शरीके-जंग।
हुए थे क़ाफ़िये उनके मगर इस मारका में तंग।।

मचा था एक हाहा कार खाण्डव बन की धरती पर।
हर इक शै जुज़्वे-आतिश बन गई शोला-फ़िशाँ होकर।।

अचानक निकला मय दानव भड़कते शोला ज़ारों से।
कहा मुझ को शरण में लो, बचालो इन शरारों से।।

श्री घनश्याम के कहने पर, अर्जुन ने उसे बढ़ कर।
शरण में ले के अपने, कर दिया उपकार इक उस पर।।

जुज़्वे-आतिश = आग का हिस्सा

शरारों = चिंगारियों

तोहफ़ा-ए-मय दानव

श्री घनश्याम, अर्जुन और मय दानव ने फिर मिल कर।
किया जमना के तट पर योग खाण्डव बन के खंडन पर।।

ख़याल इक रोज़ मय दानव के दिल में इस तरह आया।
कि मैं पान्डव के कारण आग में जलने नहीं पाया।।

अब इस एहसाँ का सर, से बार मैं अपने उतारुँगा।
हुज़ूरी में बतौरे-ख़ास कुछ नज़रें गुज़ारुँगा।।

यह सोचा और गमन होकर गया बिन्दु सरोवर पर।
वहाँ से तीन चीज़ें, इन्द्र नगरी को चला लेकर।।

इक उन में शंख था और दूसरा था गुर्ज़े-फ़ौलादी।
सभा तयार करने की थी सुवम एक सामग्री।।

यह तोहफ़ाजात बख़्शे इस तरह पान्डव को उलफ़त से।
कि पहला शंख बख़्शा, वीर अर्जुन को मोहब्बत से।।

फिर उसके बाद हेकल भीम को उसने गदा बख़्शी।
दिगर उसके युधिष्ठिर को, सभा की देदी सामग्री।।

ख़याल = विचार

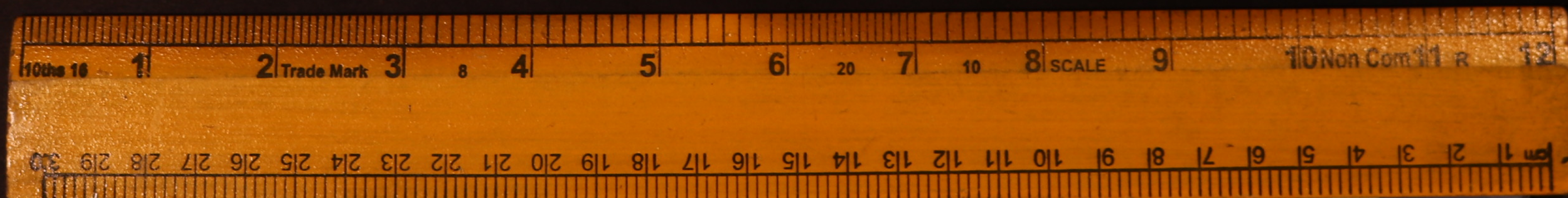
हुज़ूरी = सेवा

سلسلۂ

راجسوئی یگیہ

सिलसिला-ए

राजसूय यज्ञ



نارد منی کا مشورہ

اور راجسوئی یگیہ

کسی دن پانڈوؤں کو درشن نارد جی نے دکھلایا
وہاں کی دیکھکر شوبھا یدھشٹر کو بھی بلوایا

کہا نارد نے یوں راجہ یدھشٹر سے بہ رنج و غم
تجھے اسکی خبر بھی ہے کہ پانڈو کا ہے کیا عالم

بھلے مانس، اِدھر دنیا میں تُو خوشیاں مناتا ہے
اُدھر انکو نرک میں دکھ بہت پہنچایا جاتا ہے

یہ شوبھا اس سبھا کی دیکھکر دل میرا روتا ہے
عذاب اُن پر اُدھر پرلوک میں صد حیف ہوتا ہے

یہ سنتے ہی یدھشٹر ہو گیا آزُردہ و مضطر
بہت پُر درد لہجہ میں کہا اس نے بہ چشم تر

منی جی اب کوئی ترکیب چھٹکارے کی بتلائیں
کہ جس سے ہم پتا کو اس مصیبت سے چھڑا لائیں

کہا نارد منی نے راجسوئی یگ سے مشکل
اسی صورت میں حل ہو گی، ملیگی چین کی منزل

یدھشٹر نے کہا ترکیب کیا ہے یگن کرنیکی
ہمیں بتلائیں حکمت اس سمندر سے ابھرنے کی

منی نے یگ کرنے کی اُسے ترکیب بتلائی
بڑے ہی مخلصانہ طور سے ہر بات سمجھائی

नारद मुनि का मशविरा

और राजसूय यज्ञ

किसी दिन पान्डवों को दर्श नारद जी ने दिखलाया।
वहाँ की देखकर शोभा युधिष्ठिर को भी बुलवाया।।

कहा नारद ने यूँ राजा युधिष्ठिर से ब रंज-ओ-ग़म।
तुझे उसकी ख़बर भी है, कि पांड् का है क्या आलम।।

भले मानुष, इधर दुनिया में तू खुशियाँ मनाता है।
उधर उनको नरक में दुख बहुत पहुँचाया जाता है।।

यह शोभा इस सभा की, देखकर दिल मेरा रोता है।
अज़ाब उन पर उधर परलोक में सद हैफ़ होता है।।

यह सुनते ही युधिष्ठिर हो गया आजुर्दा-ओ-मुज़तर।
बहुत पुर दर्द लहजे में कहा उस ने बचष्मे-तर।।

मुनि जी अब कोई तरकीब कफ़्फ़ारे की बतलाएँ।
कि जिस से हम पिता को इस मुसीबत से छुड़ा पाएँ।।

कहा नारदमुनि से राजसूय यज्ञ से मुश्किल।
इसी सूरत में हल होगी मिलेगी चैन की मंज़िल।।

युधिष्ठिर ने कहा तरकीब क्या है यज्ञ करने की।
हमे बतलाएँ हिकमत इस समन्दर से उभरने की।।

मुनि ने यज्ञ करने की उसे तरकीब बतलाई।
बडे ही मुख़लिसाना तौरसे हर बात समझाई।।

आलम = हालत
अज़ाब = कष्ट/दुख
आजुर्दा = उदास
मुज़तर = बेचैन
चष्मे तर = आसुं भरी आंख
हिकमत = तरकीब

راجسوئی یگیہ کا طریقہ

وہ بولے راجسوئی یگین سے ہوتی ہے حل مشکل
اسی ترکیب سے ہوتا ہے قُربِ ایزدی حاصل

طریقہ راجسوئی یگ کرنے کا ہے یہ اُولیٰ
جلا کر آتشِ انبوہ یعنی شعلۂ بالا

پھر اس میں غلّہ و میوہ علاوہ عنبر و روغن
کیا جائے پھر ان سب کو سپُردِ شعلۂ روشن

علاوہ اسکے ثانی یگین کرنے کی ہے یہ صورت
خزینہ ہائے ہفت اقلیم کر کے جمع باعزت

منائے جشن ان سارے لوازم سے اگر کوئی
تو ہو سکتی ہے ثانی یگ کی پھر آرزو پوری

پانڈوَ کے حوصلے اور تقسیمِ کار

پھر اسکے بعد ہی سب بھائیوں نے فرطِ عجلت سے
بنایا ایک منصوبہ سلیقے اور لیاقت سے

کہا ارجن نے میں لنکا سے سونا لیکے آؤنگا
نکُل بولا کہ اب پاتال سے منڈپ میں لاؤنگا

کہا سہدیو نے میں کرشن جی کو دوارکا جاکر
یہاں لے آؤنگا فوراً انھیں حالات سمجھا کر

राजसूय यज्ञ का तरीक़ा

वह बोले राजसूय यग्न से होती है हल मुशकिल।
इसी तरक़ीब से होता है कुर्बे-ऐज़दी हासिल।।

तरीक़ा राजसूय यज्ञ करने का है यह ऊला।
जला कर आतिशे-अनबोह यानी शोला-ए-बाला।।

फिर इस में ग़ल्ला-ओ-मेवा अलावा अंबर-ओ-रौग़न।
किया जाए फिर उन सबको सिपुर्दे-शोला-ए-रौशन।।

अलावा इसके सानी यग्न करने की है यह सूरत ।
ख़ज़ीना हाए हफ़्त अक़लीम करके जमआ बा इ़ज़्ज़त।।

मनाए जश्न इन सारे लवाज़िम से अगर कोई।
तो हो सकती है सानी यज्ञ की फिर आरज़ू पूरी।।

पांडव के हौसले और तक़सीमे-कार

फिर इसके बाद ही सब भाइयों ने फ़र्ते-उजलत से।
बनाया एक मनसूबा सलीक़े और लियाक़त से।।

कहा अर्जुन ने मैं लंका से सोना लेके आऊँगा।
नकुल बोला कि अब पाताल से मंडप मैं लाऊँगा।।

कहा सहदेव ने मैं कृष्ण जी को, द्वारका जा कर।
यहाँ ले आऊँगा फ़ौरन, उन्हे हालात समझा कर।।

कूर्बे-ऐज़दी = इश्वर की दया और क्षमा

ऊला = पहला
आतिशे-अनबोह = बहुत बड़ी आग
अंबर = खुशबु
रौग़न = घी और तेल

ख़ज़ीना हाए हफ़्त अक़लीम = सात राज्यों के ख़ज़ानें

लवाज़िम = सामग्री

मनसूबा = योजना

کہا پھر بھیم نے میں سارے راجاؤں کو لاؤنگا جو قیدی ہیں جراسندھ کے انھیں جاکر چھڑاؤنگا

یدھشٹر نے کہا میں آج ستیہ دھرم کا سُمرن
کرونگا کام دھینو کے لئے با خُلّت و احسن

یوگنی سے جنگ و صلح

جب اپنی اپنی کہکر ہو گئے خاموش سب بھائی پھر اسکے بعد ہی ذہن یدھشٹر میں یہ بات آئی
کہ پہلے کرشن جی کو دوارکا سے کوئی لے آؤ پھر انکے مشورے سے یگ کا سب کام نمٹاؤ
یہ سنکر چل پڑا سہدیو سمت شیام بنواری کہ اسکے ساتھ ہی تشریف لائیں کرشن گردھاری
ملی سہدیو کو پھر راہ میں اک یوگنی خود سر بھینکر روپ سے لڑنے پہ آمادہ ہوئی جم کر
ہوئی دونوں میں جنگ ایسی نہ یہ جیتی نہ وہ ہارا سوائے صلح کے آپسمیں دونوں کو نہ تھا یارا
برائے دوستی سہدیو کو پھر اُسنے خوش ہوکر
کروڑوں روپ میں تبدیلِ ہئیت کا بخشا ور

ع۱ یگیہ

कहा फिर भीम ने मैं सारे राजाओं को लाऊँगा।
जो क़ैदी हैं जरासंघ के, उन्हें जाकर छुड़ाऊँगा।।

युधिष्ठिर ने कहा मैं आज सत्य धर्म का स्मरण।
करुंगा काम धेनू के लिए बा खुल्लत-ओ-अहसन।।

योगिनी से जंग-ओ-सुलाह

जब अपनी अपनी कहकर हो गए ख़ामोश सब भाई।
फिर उसके बाद ही ज़हने-युधिष्ठिर में यह बात आई।।

कि पहले कृष्ण जी को द्वारका से कोई ले आओ।
फिर उनके मशविरे से यज्ञ का सब काम निमटाओ।।

यह सुनकर चल पड़ा सहदेव सम्ते-श्याम बनवारी।
कि उसके साथ ही तशरीफ़ लाएँ कृष्ण गिरधारी।।

मिली सहदेव को फिर राह में इक योगिनी खुद सर।
भयंकर रूप से लड़ने पे आमादा हुई जम कर।।

हुई दोनों में जंग ऐसी, न यह जीती न वह हारा।
सिवाए सुलह के आपस में दोनों को न था यारा।।

बराए दोस्ती, सहदेव को फिर उसने खुश होकर।
करोड़ों रूप में तबदिलीए-हय्यत का बख़्शा वर।।

ख़ामोश = चुप
ज़हन = दिमाग़
खुद सर = अड़यल
सिवाए सुलह = मिलाप के अलावा

سہدیو اور یادوں سے جنگ اور شری گھنشام کی صلح وصفائی

وہاں سے وہ نکل کر دوارکا پہنچا بہر صورت
وہاں بھی پیش آئی جنگ کی اُسکو وہی حالت

پئے پیکار یادو سامنے چھپّن کروڑ آئے
غرور و تمکنت کے ساتھ شہزوری پہ اِترائے

اسی انداز سے سہدیو نے بھی روپ پھر بدلا
ہوا طرفین کی جانب سے حملہ خوب زوروں کا

بہت مارے گئے اِس جنگ میں یادو سرِ میداں
بھیانک ایک منظر تھا "بپا تھا موت کا طوفاں

شری گھنشام نے ماحول کی دیکھی جو یہ حالت
بہت سمجھا مناکر سب کو میداں سے کیا رخصت

قول اور وردان

پھر اسکے بعد ہی سہدیو سے بولے یہ مُرلی دھر
میں تجھ سے خوش ہوا، تو مانگ لے اب مجھسے کوئی وَر[1]

کہا سہدیو نے میں بھی ہوا پرسّن[2] اے بھگوت
کہ مجھسے بھی کوئی وَر آپ مانگیں اب مہابلونت

کہا گھنشام نے اچھا تو پھر اظہار کر اس کا
نہ یادوں[3] سے لڑوں گا میں کبھی، اقرار کر اس کا

کیا سہدیو نے گھنشام سے وعدہ نہ لڑنے کا
دیا وَردان خوش ہو کر نہ آپسمیں جھگڑنے کا

[1] وردان کا مخفف بمعنی قول وقرار [2] خوش [3] کرشن جی کے عزیز واقارب اور خانداں والے

सहदेव और यादवों से जंग और श्री घनश्याम की सुलह व सफ़ाई

वहाँ से वह निकल कर द्वारका पहुँचा बहर सूरत।
वहाँ भी पेश आई जंग की उसको वही हालत।।

पए पैकार यादव सामने छप्पन करोड आए।
गुरूर-ओ-तमकनत के साथ शहजोरी पे इतराए।।

इसी अंदाज़ से सहदेव ने भी रूप फिर बदला।
हुआ तरफ़ैन की जानिब से हमला खूब ज़ोरों का।।

बहुत मारे गए इस जंग में यादव सरे-मैदाँ।
भयानक एक मंज़र था, बपा था मौत का तूफ़ाँ।।

श्री धनश्याम ने माहौल की देखी जो यह हालत।
बहुत समझा मना कर सब को मैदाँ से किया रुख़सत।।

क़ौल और वरदान

फिर इसके बाद ही सहदेव से बोले यह मुरलीधर।
मैं तुझ से खुश हुआ, तू माँग ले अब मुझ से कोई [1]वर।।

कहा सहदेव ने, मैं भी हुआ प्रसन्न ऐ भगवत।
कि मुझ से भी कोई वर आप मांगें अब महाबलवंत।।

कहा घनश्याम ने अच्छा तो फिर इज़हार कर इसका।
न [2]यादवों से लडुँगा मैं कभी, इक़रार कर इसका।।

किया सहदेव ने घनश्याम से वादा न लड़ने का।
दिया वरदान खुश होकर, न आपस में झगड़ने का।।

पए पैकार = युद्ध के लिए
गुरूर = घमंड
तमकनत = दबदबा, शानो-शौकत

सरे मैदाँ = रणभूमि

इज़हार = प्रकट करना
इक़रार = मानना
१) मुख़फ़्फ़फ़ = संक्षिप्त
२) अज़ीज़ = दोस्त
२) अकारिब = क़रिबी मित्र

१) वरदान का मुख़फ़्फ़फ़ बमानी कौल व क़रार   २) कृष्णजी के अजीज़ व अक़ारिब और ख़ानदान वाले

کہا سہدیو نے، دیں آپ بھی وردان اب مجھکو
دکھائیں ایسی الطاف وکرم کی شان اب مجھکو

کہ ہم سب بھائیوں کو زندگی بھر شیام بنواری
مدد دینے کا وعدہ کیجئے اے کرشن گردھاری

کیا گھنشام نے، سہدیو سے وعدہ اعاذت کا
مصیبت اور پریشانی میں امداد و اعانت کا

کہا سہدیو نے سرکار، میں لینے کو آیا ہوں
سفر کا دکھ فقط اک آپ کی خاطر اٹھایا ہوں

یدھشٹر اور پانڈو منتظر ہیں آپ کے سجّن
چلے چلئے یہاں سے اندر نگری اب تو من موہن

وہاں اب یگ کا سب، نظم اے گھنشام کرنا ہے
لہذا آپ ہی کے مشورے سے کام کرنا ہے

زرِ انبوہ

یہ سنکر دوارکا سے چل پڑے پھر شیام بنواری
اور اپنی منزلِ مقصود پر پہنچے بہ دشواری

پھر اسکے بعد ارجن اور شری گھنشام جی ملکر
شری لنکا، برائے مال و زر پہنچے بہ کرّوفر

قریبِ بحر پہنچے اور کیا ہنمان کا درشن
عبورِ یم کیا، بجرنگ کی امداد کے کارن

وہاں سے دولت و ثروت کا اک انبار لے آئے
دُرو لعل و جواہر، سیم و زر بسیار لے آئے

یدھشٹر نے کبھی دیکھی نہ تھی اتنی بڑی دولت
خوشی سے جھوم کر بولا یہ ہے بھگوان کی قدرت

कहा सहदेव ने, दें आप भी, वरदान अब मुझको।
दिखाएँ ऐसी अलताफ़-ओ-करम की शान अब मुझको।।

कि हम सब भाईयों को ज़िन्दगी भर श्याम बनवारी।
मदद देने का वादा किजिए ऐ कृष्णगिर्धारी।।

किया घनश्याम ने सहदेव से वादा इआज़त का।
मुसीबत और परेशानी में इमदाद-ओ-इआनत का।।

कहा सहदेव ने सरकार, मैं लेने को आया हूँ।
सफ़र का दुःख फ़क़त इक आप की ख़ातिर उठाया हूँ।।

युधिष्ठिर और पांडव मुन्तज़िर हैं आप के सज्जन।
चले चलिए यहाँ से इन्द्र नगरी, अब तो मनमोहन।।

वहाँ अब यज्ञ का सब, नज़्म ऐ घनश्याम करना है।
लिहाज़ा आप ही के मशविरे से काम करना है।।

अलताफ़ व करम = मेहरबानी
इआज़त = पनाह में लेना
इआनत = मदद, चंदा
ख़ातिर = वास्ते
मुन्तज़िर = प्रतिक्षा करने वाला
नज़्म = प्रबंध

ज़रे-अनबोह

यह सुनकर द्वारका से चल पड़े फिर श्याम बनवारी।
और अपनी मंज़िले-मक़सूद पर पहुँचे ब-दुशवारी।।

फिर इसके बाद अर्जुन और श्री घनश्याम जी मिलकर।
श्री लंका, बराए मालोज़र पहुँचे ब कररोफ़र।।

क़रीबे-बहर पहुँचे और किया हनुमान का दर्शन।
उबूरे-यम किया, बजरंग की इमदाद के कारण।।

वहाँ से दौलतो-सरवत का इक अंबार ले आए।
दुरो-लालो-जवाहिर, सीमो-ज़र बिसयार ले आए।।

युधिष्ठिर ने कभी देखी न थी इतनी बड़ी दौलत।
खुशी से झूम कर बोला यह है भगवान की कुदरत।।

ब-दुशवारी = कठिनाई के साथ
मालोज़र = धन, दौलत
कररोफ़र = गर्व
दुर = मोती
सीमो-ज़र = धन, दौलत

فقط اک ملک لنکا سے ملا ہے جبکہ مال اتنا
تو باقی اور ملکوں سے ملیگا مال وزر کتنا

یہ باتیں سوچکر وہ اپنے دل میں خوب شاداں تھا
زرِ انبوہ سے اس کا دماغ و قلب فرحاں تھا

تسخیرِ ہفت اقلیم

یدھشٹر نے کہا گھنشام سے کیا کام کرنا ہے
بتاؤ یگ کا کیا نظم دل آرام کرنا ہے

کہا گھنشام نے تسخیرِ ہفت اقلیم باقی ہے
نظامِ حکمرانی میں ابھی ترمیم باقی ہے

یدھشٹر نے یہ سنکر بھائیوں کو اپنے بلوایا
انھیں تسخیرِ ہفت اقلیم پر مامور فرمایا

کہا اس نے کہ تم سب پھیل جاؤ سارے عالم میں
کمی آنے نہ پائے اب تمھارے عزمِ محکم میں

چلے پھر بھیم ارجن اور نکل سہدیو سب بھائی
قدم بڑھ بڑھکے اُنکے چومتا تھا اوجِ دارائی

کوئی مصر و مراکش اور کوئی ایران تک پہنچا
کوئی افغان و بابل اور کوئی یونان تک پہنچا

کوئی ان میں سے برما چین اور جاپان میں آیا
بہر جادہ بہر منزل جہانِ رنگ و بو پایا

مسخر کرلیا پھر سب نے ملکر ارضِ عالم کو
جھکایا ساری دنیا کے شہنشاہوں کے پرچم کو

طلائے تاب و سیمیں لے کے وہ لوٹے غنیمت میں
نہایت شان سے داخل ہوئے اپنی ولایت میں

پھر اس مالِ غنیمت کو اکھٹے کرکے پانڈو نے
بجائے خوب ملکر شادیانے اور نقارے

फ़क़त इक मुल्के-लंका से मिला है जब कि माल इतना।
तो बाक़ी और मुल्कों से मिलेगा मालो-ज़र कितना।।

यह बातें सोचकर वह अपने दिल, में खूब शादाँ था।
ज़रे-अनबोह से उसका दिमाग़-ओ-क़ल्ब फ़रहाँ था।।

तसख़ीरे-हफ़्त अक़लीम

युधिष्ठिर ने कहा घनश्याम से क्या काम करना है।
बताओ यज्ञ का क्या नज़्म, दिल आराम करना है।।

कहा घनश्याम ने तसख़ीरे-हफ़्त अक़लीम बाक़ी है।
निज़ामे-हुक्म-रानी में अभी तरमीम बाक़ी है।।

युधिष्ठिर ने यह सुनकर भाइयों को अपने बुलवाया।
उन्हें तसख़ीरे-हफ़्त अक़लीम पर मामूर फ़रमाया।।

कहा उसने कि तुम सब, फैल जाओ सारे आलम में।
कमी आने न पाए अब तुम्हारे अज़्मे-मुहकम में।।

चले फिर भीम, अर्जुन और नकुल, सहदेव सब भाई।
क़दम बढ़ बढ़के उनके, चूमता था औजे-दाराई।।

कोई अफ़ग़ान-ओ- बाबिल और कोई ईरान तक पहुँचा।।
कोई मिस्रो मराक़श और कोई युनान तक पहुँचा।

कोई इनमें से बरमा, चीन और जापान में आया।
बहर जादा, बहर मंज़िल जहाने-रंग-ओ-बू पाया।।

मुसख़्ख़र कर लिया फिर सब ने मिलकर अर्ज़े-आलम को।
झुकाया सारी दुनिया के शहंशाहों के परचम को।।

तलाए ताब-ओ-सीमीं लेके वह लौटे ग़नीमत में।
निहायत शान से दाख़िल हुए अपनी विलायत में।।

फिर इस माले-ग़नीमत को इकट्ठे करके पांडव ने।
बजाए खूब मिलकर शादयाने और नक़्क़ारे।।

शादाँ = खुश
फ़रहाँ =प्रसन्न
ज़रे-अनबोह = बहुत ज़्यादा धन
तसख़ीरे-हफ़्त अक़लीम = सात राज्यों को विजय करना

निज़ामे-हुक़्म-रानी = राज्य का शासन

आलम = जग
अज़्मे-मुहकम = मज़बूत इरादा
औज =उंचाई
दाराई = बादशाही

मुसख़्ख़र =विजयी कर लिया अर्ज़े-आलम = सारी पृथ्वी
तलाए-ताब व सीमी = सोना और चांदी
विलायत = राज्य
माले-ग़नीमत = लूट का माल

مال غنیمت کا جائزہ

پھر اسکے بعد ہی گھنشام جی نے فتح و نصرت کا
لیا اچھی طرح سے جائزہ مالِ غنیمت کا

فقط مُلکِ جراسنگ رہ گیا تھا فتح ہونے سے
بچا تھا شاہ جسکا، موت کے پہلو میں سونے سے

کہا گھنشام جی نے ہے جراسنگ[1] کا نشاں جبتک
نہو گا یگ[2]، باقی اسکی ہے عمرِ رواں جبتک

مٹاؤ پہلے بڑھکر صفحۂ ہستی سے نام اس کا
بڑھو اور منتقل پرلوک میں کردو مقام اسکا

یہ سنکر بھیم و ارجن اور جنابِ کرشن گردھاری
جراسنگی حکومت میں ہوئے داخل بہ دشواری

بدلکر لیا تھا بھیس تینوں نے برہمن کا
حفاظت شرط تھی چونکہ وطن تھا ایک پُرفن کا

اِدھر راجہ جراسنگ نے فقط جادو کی طاقت سے
لیا کارِ نگہبانی تحیّر خیز قوت سے

کچھ ایسی ہڈیاں آویزاں کردی بابِ ایواں پر
کہ جو دشمن ہو میرا سامنے آجائے وہ کھُل کر

اسی کارن شری گھنشام ارجن بھیم نے مل کر
محل کی توڑدی دیوار، اور داخل ہوئے اندر

آرزوئے جنگ

غریبوں کو جہاں راجہ جراسنگ دان کرتا تھا
خوشی سے جھولیاں ہر روز محتاجوں کی بھرتا تھا

[1] یہ لفظ جراسندھ ہے۔ لیکن شعری ضرورت کیلئے جراسنگ استعمال کیا گیا ہے۔ [2] یگیہ

माले-ग़नीमत का जाएज़ा

फिर इसके बाद ही घनश्याम जी ने फ़तहो-नुसरत का।
लिया अच्छी तरह से जाएज़ा, माले-ग़नीमत का।।

फ़क़त मुल्के-जरासंग रह गया था फ़तह होने से।
बचा था शाह जिसका, मौत के पहलू में सोने से।।

कहा घनश्यामजी ने, है [1]जरासंग का निशाँ जब तक।
न होगा यज्ञ, बाक़ी उसकी है उम्रे-रवाँ जबतक।।

मिटाओ पहले बढ़कर सफहा-ए-हस्ती से नाम उसका।
बढ़ो, और मुन्तक़िल परलोक में, कर दो मक़ाम उसका।।

यह सुनकार भीम-ओ-अर्जुन और जनाबे कृष्ण गिरधारी।
जरासंगी हुकूमत में हुए दाख़िल ब दुशवारी।।

बदलकर ले लिया था भेस त़ीनों ने ब्रह्मण का।
हिफ़ाज़त शर्त थी चूँके, वतन था एक पुर-फ़न का।।

इधर राजा जरासंग ने, फ़क़त जादू की ताक़त से।
लिया कारे-निगहबानी तहय्युर ख़ेज़ कुव्वत से।।

कुछ ऐसी हड्डियाँ आवेज़ाँ करदी, बाबे-ऐवाँ पर।
कि जो दुश्मन हो मेरा, सामने आजाए वह खुल कर।।

इसी कारण श्री घनश्याम, अर्जुन, भीम ने मिलकर।
महल की तोड़दी दीवार, और दाख़िल हुए अदंर।।

आरज़ू-ए-जंग

ग़रीबों को जहाँ राजा जरासंग दान करता था।
खुशी से झोलियाँ हर रोज़ मोहताजों की भरता था।।

फ़तहो-नुसरत = विजय
माले-ग़नीमत = प्राप्त धन
जाएज़ा = निरक्षण

कारे-निगहबानी = चौकशी कार्य
तहय्युर = आश्चर्य
बाबे-ऐवाँ = महल के द्वार

१) यह लफ़्ज़ जरासन्ध है लेकिन शेरी ज़रुरत के लिए जरासंग इस्तेमाल किया गया है।

وہیں خیرات لینے کیلئے یہ لوگ آ بیٹھے ۔ گروہِ برہمن کے ساتھ تینوں ملکے جا بیٹھے

بالآخر دان لے کر برہمن اٹھ گئے سارے ۔ مگر اپنی جگہ بیٹھے رہے یہ تینوں مہہ پارے

جراسنگ نے کہا کیوں، کسلیئے بیٹھے ہو تم آخر ۔ تمھیں تو دان بھی میں دے چکا اب کیا کروں حاضر

وہ بولے اے مہاراجہ جراسنگ ہو کرم ہم پر ۔ یہاں ہم تینوں آئے ہیں بہت ہی دُور سے چلکر

ہماری اک تمنا ہے اگر پوری وہ ہو جائے ۔ تو قسمت جاگ اٹھے گلشنِ دل میں بہار آئے

کہا راجہ نے میں اس بات کا اظہار کرتا ہوں ۔ جو تم مانگو گے، دونگا شوق سے اقرار کرتا ہوں

کہا گھنشام نے راجہ جراسنگ تُو سرِ میداں

لڑائی کے لیے تیار ہو، بس ہے یہی ارماں

جوابِ جراسنگ

یہ سنکر ہنس پڑا وہ، اور بولا خیر نادانو ۔ لڑائی چاہتے ہو تو لڑو، تم مجھ سے دیوانو

مگر تم نے لڑائی کے لئے پاپڑ یہ کیوں بیلا ۔ یہ بچوں جیسی ہٹ اور چھل کپٹ کا کھیل کیوں کھیلا

اگر ایسے بھی تم مجھ سے لڑائی کے لئے کہتے ۔ تو کیا اپنے ارادے میں کبھی ناکام تم رہتے

لڑائی سے مجھے انکار کب ہے شوق سے آؤ ۔ لڑو اور لڑ کے اپنی ہمتِ مردانہ دکھلاؤ

वहीं ख़ैरात लेने के लिए यह लोग आ बैठे।
गिरोहे-ब्रह्मण के साथ तीनों मिल के जा बैठे।।

बिलआख़िर दान लेले कर ब्रह्मण उठ गये सारे।
मगर अपनी जगह बैठे रहे, यह तीनों मह पारे।।

जरासंग ने कहा, क्यों किस लिए बैठे हो तुम आख़िर।
तुम्हें तो दान भी मैं दे चुका, अब क्या करूँ हाज़िर।।

वह बोले, ऐ महाराजा जरासंग हो करम हम पर।
यहाँ हम तीनों आए हैं, बहुत ही दूर से चलकर।।

हमारी इक तमन्ना है, अगर पूरी वह हो जाए।
तो क़िस्मत जाग उठ्ठे गुलशने-दिल में बहार आए।।

कहा राजा ने मैं, इस बात का इज़हार करता हूँ।
जो तुम माँगोगे, दूंगा शौक़ से इक़रार करता हूँ।।

कहा घनश्याम ने, राजा जरासंग तू सरे-मैदाँ।
लड़ाई के लिए तैयार हो, बस है यही अरमाँ।।

जवाबे-जरासंध

यह सुनकर हँस पड़ा, वह और बोला ख़ैर नादानों।
लड़ाई चाहते हो तो लड़ो, तुम मुझ से दीवानों।।

मगर तुम ने लड़ाई के लिए पापड़ यह क्यों बेला।
यह बच्चों जैसी हट, और छल कपट का खेल क्यों खेला।।

अगर ऐसे भी तुम मुझ से, लड़ाई के लिए कहते।
तो क्या अपने इरादे में कभी नाकाम तुम रहते।।

लड़ाई से मुझे इनकार कब है, शौक़ से आओ।
लड़ो और लड़ के अपनी, हिम्मते-मरदाना दिखलाओ।।

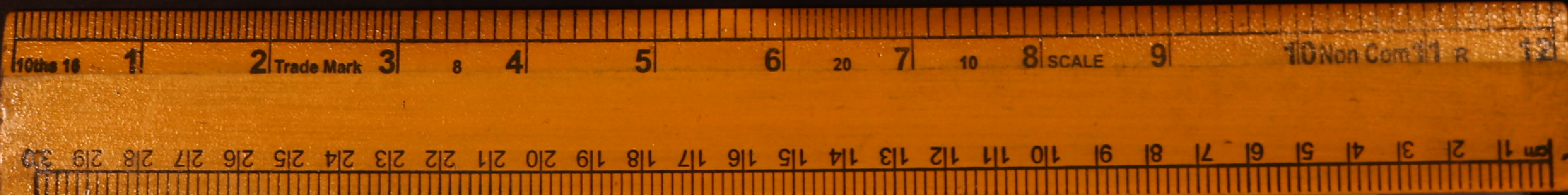
महं पारे = चद्रंमा के टुकड़े

करम = दया

तमन्ना = कामना

सरे-मैदाँ = रणभूमि

ख़ैर नादानों = अच्छा मुर्खो



مگر تم نے تو اپنی بزدلی کی انتہا کردی
محل کی توڑ کر دیوار دکھلائی ہے نامردی

چلو اچھا کیا تم نے بہت اچھا کیا تم نے
ہے کتنا زور تم میں یہ بھی اب دکھلا دیا تم نے

مگر لڑنے سے پہلے یہ کہو تم کون ہو، کیا ہو
کہاں سے آئے ہو کیا نام ہے کس رن کے یُودھا ہو

کرشن جی کا ارشاد

یہ سنکر شیام جی بولے یہ ارجن وہ دلاور ہے
کہ جس نے فتح پائی اندر پر شیرِ غضنفر ہے

جلا کر جس نے کھانڈو بن کو پل میں بھسم کر ڈالا
سوئمبر میں جسے پہنائی پنچالی نے وَر مالا

مجھے پہچان میں ہوں کرشن جسنے کنس کو مارا
دلیری کا مری دیکھا ہے اس دنیا نے نظارّہ

مرے بعد اس جگہ جو تیسرا ہے فیل افگن ہے
ہے جسکا نام نامی بھیم جو فولاد و آہن ہے

بہت سے راکشش کی چیر ڈالی چھاتیاں جس نے
چبا ڈالی ہیں شیرانِ وغا کی ہڈیاں جس نے

اب ان میں سے جراسنگ کس سے لڑنے کا ارادہ ہے
تری ٹکّر کا موزوں کون تینوں میں زیادہ ہے

جراسنگ کا مکرّر اظہارِ خیال

یہ سنتے ہی متانت سے جراسنگ نے دہن کھولا
نہایت پُر اثر انداز میں وہ اسطرح بولا

मगर तुम ने तो अपनी, बुज़दिली की इन्तेहा कर दी।
महल की तोड़कर दीवार, दिखलाई है ना मर्दी।।

चलो अच्छा किया तुम ने, बहुत अच्छा किया तुमने।
है कितना जो़र तुम में, यह भी अब दिखला दिया तुमने।।

मगर लड़ने से पहले, यह कहो तुम कौन हो क्या हो।
कहाँ से आए हो, क्या नाम है, किस रण के योध्दा हो।।

कृष्णजी का इरशाद

यह सुनकर श्यामजी बोले, यह अर्जुन वह दिलावर है।
कि जिस ने फ़तह पाई इन्द्र पर, शेरे-ग़ज़न्फ़र है।।

शेरे-ग़ज़न्फ़र = दहाड़ता शेर

जला कर जिसने खाण्डव बन को, पल में भस्म कर डाला।
स्वयं वर में जिसे पहनाई पंचाली ने वर माला।।

मुझे पहचान मैं हूँ कृष्ण, जिसने कन्स को मारा।
दिलेरी का मेरी देखा है, इस दुनियॉ ने नज़्ज़ारा।।

मेरे बाद इस जगह जो तीसरा है, फ़ील अफ़ग़न है।
है जिसका नामे-नामी भीम, जो फ़ौलाद-ओ-आहन है।।

बहुत से राक्षश की, चीर डाली छातियाँ जिस ने।
चबा डाली हैं शेराने-वग़ा की, हड्डियाँ जिसने।।

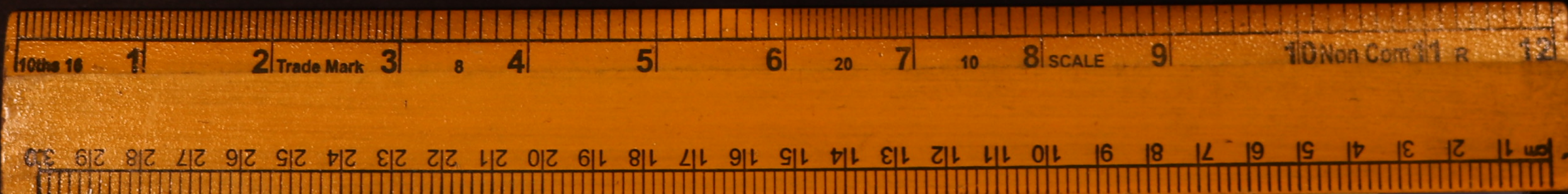
अब इनमें से जरासंग किस से लड़ने का इरादा है।
तेरी टक्कर का मौज़ूँ कौन, तीनों में ज़्यादा है।।

मौज़ूँ = बराबर का

जरासंध का मुकर्रर इज़हारे- ख़याल

यह सुनते ही मतानत से, जरासंग ने दहन खोला।
निहायत पुर असर अंदाज़ में, वह इसतरह बोला।।

मतानत = गंभीरता
दहन = मूंह



کہ اے بالک، کشن کہتا ہے، تیرا نام ہے ارجن
دگر اسکے ہیں تجھ میں اندر کے مانند لاکھوں گُن

اگرچہ تو ہی ارجن ہے، تو لڑنے کی نہ کر جرأت
نہ دے اٹھتی جوانی میں تو اپنی موت کو دعوت

یہ دونوں جو ترے ساتھی ہیں وہ مکّار و پُرفن ہیں
تجھے مروانا مجھ سے چاہتے ہیں، تیرے دشمن ہیں

ہے میرا مشورہ یہ، انکی باتوں میں نہ تُو آنا
چڑھا دینگے تجھے اب بھینٹ پر یہ ہیں بڑے دانا

ابھی تو کھیلنے کھانے کے دن ہیں تیرے اے ناداں
ادھر تو آگیا ہے، ماں اُدھر ہوگی تری حیراں

ہے اب بھی وقت اے نادان بچے ضد نہ کر گھر جا
خبر تجھکو نہیں ہے خیر و شر کی، بے خبر گھر جا

اگرچہ تلخ سے بھی تلخ تر ہے گفتگو میری
مگر یہ سوچ کیا لڑنے کے قابل عمر ہے تیری

میں بچوں کو ہمیشہ ہی نظر انداز کرتا ہوں
جو ہم پلّہ ہیں ان سے جنگ کا آغاز کرتا ہوں

بھلا بچوں کے آگے کوئی جوہر کیسے دکھلائے
برابر کی جو چوٹیں ہوں تو لڑنے میں مزہ آئے

یہاں اب بچ گئے ہیں صرف تیرے بعد دو دشمن
مگر ان میں سے ہے اک کرشن، جو شاطر ہے اور پُرفن

بتا اے شیام، کیوں تو بارہا لڑنے کو آتا ہے
دکھا کر چھل کپٹ پھر بزدلی سے بھاگ جاتا ہے

مجھے خود بھی حیا آتی ہے اک کائر سے لڑنے کو
مگر اک تو ہے جو ہر بار آتا ہے جھگڑنے کو

نہیں ہے تو بھی اس قابل، ابھی اے بزدلِ دوراں
کہ تُو میرے مقابل ٹک سکے آکر سرِ میداں

اب اِسکے بعد صرف اک بھیم ہی رہتا ہے اس قابل
کہ جس سے آج لڑنے میں خوشی ہوگی مجھے حاصل

कि ऐ बालक, किशन कहता है, तेरा नाम है अर्जुन।
दिगर इसके हैं तुझ में इन्द्र के मानिन्द लाखों गुण।।

अगरचे तूही अर्जुन है, तो लड़ने की न कर जुरअत।
न दे उठती जवानी में, तू अपनी मौत को दावत।।

यह दोनों जो तेरे साथी हैं, वह मक्कार-ओ-पुर फ़न हैं।
तुझे मरवाना मुझ से चाहते हैं, तेरे दुश्मन हैं।।

है मेरा मशविरा यह इन की बातों में न तू आना।
चढ़ा देंगे तुझे अब भेंट पर, यह है बड़े दाना।।

अभी तो खेलने खाने के दिन हैं तेरे ऐ नादाँ।
इधर तू आ गया है, माँ उधर होगी तेरी हैराँ।।

है अब भी वक़्त, ऐ नादान बच्चे, ज़िद न कर घर जा।
ख़बर तुझ को नहीं है ख़ैर-ओ-शर की, बे ख़बर घर जा।।

अगरचे तल्ख़ से भी तल्ख़तर है गुफ़्तगू मेरी।
मगर यह सोच, क्या लड़ने के क़ाबिल उम्र है तेरी।।

मैं बच्चों को हमेशा ही, नज़र अंदाज़ करता हूँ।
जो हम-पल्ला हैं उन से, जंग का आग़ाज़ करता हूँ।।

भला बच्चों के आगे, कोई जौहर कैसे दिखलाए।
बराबर की जो चोटें हों, तो लड़ने में मज़ा आए।।

यहाँ अब बच गए हैं सिर्फ़, तेरे बाद दो दुश्मन।
मगर इनमें से है इक कृष्ण, जो शातिर है और पुर-फ़न।।

बता ऐ श्याम, क्यों तू बारहा लड़ने को आता है।
दिखा कर छल कपट, फिर बुज़दिली से भाग जाता है।।

मुझे खुद भी हया आती है इक कायर से लड़ने को।
मगर इक तू है, जो हर बार आता है झगड़ने को।।

नहीं है तू भी इस क़ाबिल, अभी ऐ बुज़दिले-दौराँ।
कि तू मेरे मुक़ाबिल टिक सके, आकर सरे-मैदाँ।।

अब इसके बाद सिर्फ़ इक भीम ही रहता है इस क़ाबिल।
कि जिस से आज लड़ने में खुशी होगी मुझे हासिल।।

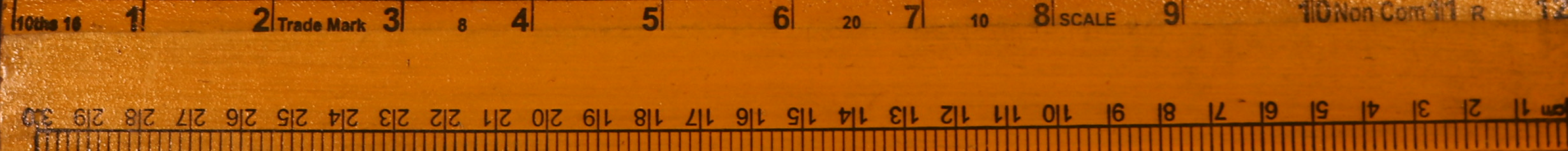
हैराँ = परेशान

ख़ैर-ओ-शर = अच्छा बुरा
तल्ख़ = कठोर

आग़ाज़ = शुरुआत

बारहा = हमेशा

बुज़दिले-दौराँ = कायर



وہ ہے میرے برابر کا میں ہوں اسکے برابر کا
وہی اک سورما اب رہ گیا ہے میری ٹکر کا

گرزِ آہنی کے جوہر

یہ کہہ کر اُٹھ گیا راجہ جراسنگ چھوڑ کر آسن
وہیں منگوالیں فوراً دو گدائیں یُدھ کے کارن

اور اس میں سے گدا، اک بھیم کو دیدی، دلاور نے
دکھائی شان آئینِ وغا کی مردِ سربر نے

اور اسکے بعد دونوں مردِ میداں شہر کے باہر
گدا لے کر چلے خودبین و نازاں شہر کے باہر

پہنچکر یُدھ بھومی پر ہوئے استادہ لڑنے پر!
نظر آتے تھے دونوں سورما آمادہ لڑنے پر

گدا لے کر بڑھا راجہ جراسنگ بھیم کی جانب
رہا ما بعد پہلا وار کرنے میں وہی غالب

بہادر بھیم معمولی تو لڑویا نہ تھا کوئی
وہ اک فنکار تھا، جاٹ اور پُوربیا نہ تھا کوئی

جراسنگ کے اچانک وار پر گھبرا کے رہ جاتا
جو ضربِ گُرز پر سر ٹیکتا، تھرا کے رہ جاتا

بدل کر پینترا فوراً، بچایا خود کو دشمن سے
نِکل آیا وہ مثلِ تیر اسکی ضرب سے سَن سے

اب اسکے بعد باری بھیم کی تھی وار کرنے کی
نہ مُہلت بھیم نے دی اسکو ذرہ بھر ابھرنے کی

کئے پھر بے تحاشہ پے بہ پے سات آٹھ وار ایسے
جھڑے ہیں خدّ و خالِ گُرز سے برق و شرار ایسے

کہ جیسے رات میں جگنو فضا میں جھلملاتے ہوں
ہزاروں دیپ گویا جلتے بُجھتے ٹمٹماتے ہوں

वह है मेरे बराबर का, मैं हूँ उसके बराबर का।
वही इक सूरमा, अब रह गया है मेरी टक्कर का।।

गुर्ज़े-आहनी के जौहर

यह कह कर उठ गया राजा जरासंग छोड़ कर आसन।
वहीं मंगवालीं फ़ौरन दो गदाएँ युध्द के कारण।।

और इस में से, गदा इक भीम को देदी, दिलावर ने।
दिखाई शान, आईन-ए-वग़ा की, मर्दे-सरवर ने।।

और इसके बाद दोनों मर्दे-मैदाँ शहर के बाहर।
गदा लेकर चले खुदबीन-ओ-नाज़ाँ शहर के बाहर।।

पहुँचकर युध्द भूमि पर, हुए इस्तादा लड़ने पर।
नज़र आते थे दोनों सूरमा, आमादा लड़ने पर।।

गदा लेकर बढ़ा राजा जरासंग भीम की जानिब।
रहा माबाद पहला वार करने में वही ग़ालिब।।

बहादुर भीम, मामूली तो लड़वैया ना था कोई।
वह इक फ़नकार था, जाट और पुरबिया ना था कोई।।

जरासंग के अचानक वार पर, घबरा के रह जाता।
जो ज़र्बे-गुर्ज़ पर सर टेकता, थर्रा के रह जाता।।

बदल कर पैतरा फ़ौरन, बचाया खुद को दुश्मन से।
निकल आया वह मिस्ले-तीर, उसकी ज़र्ब से सन से।।

अब इसके बाद बारी भीम की थी वार करने की।
न मोहलत भीम ने दी उसको ज़र्राभर उभरने की।।

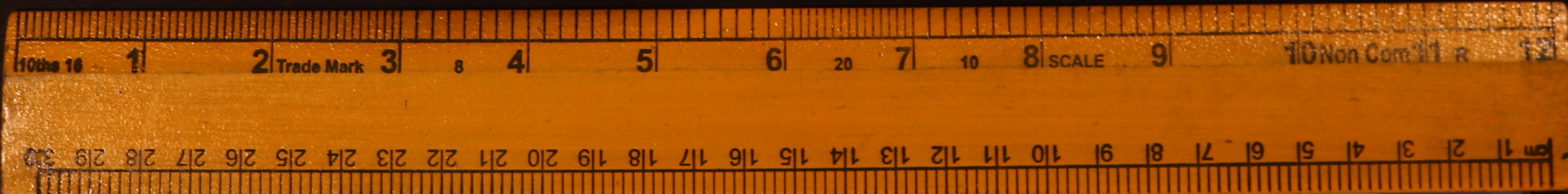
किए फिर बे तहाशा, पै ब पै सात आठ वार ऐसे।
झड़े हैं ख़द्दो-ख़ाले-गुर्ज़ से, बर्क़-ओ-शरार ऐसे।।

कि जैसे रात में जुगनू फ़ज़ा में झिलमिलाते हों।
हज़ारों दीप गोया, जलते बुझते टिमटिमाते हों।।

आईन-ए-वगा = लड़ाई का कानून

खुदबीन-ओ-नाज़ाँ = घमन्ड गौरव

बे तहाशा = ताबड़तोड़
बर्क़-ओ-शरार = चिंगारी



عرض دونوں ہی شہہ زوری میں یکتائے زمانہ تھے
ہنرمندی میں اوحد تھے، دلیری میں یگانہ تھے

گدا آپسمیں ٹکراتے تو کڑکا رعد سا ہوتا
گرجتے بادلوں کی گڑگڑاہٹ سے سوا ہوتا

فضائیں کانپ اٹھتی تھیں گداؤں کے دھماکے سے
پہاڑوں کے جگر پھٹتے تھے گرزوں کے جھماکے سے

بالآخر لڑتے لڑتے ضربِ گرزِ گراں ٹوٹے
مگر ہمت نہ ٹوٹی اور نہ انکے حوصلے چھوٹے

مَلّھ یُدّھ کے جوہر یعنی
کشتی کے داؤں پینچ

گدا کو چھوڑ، آمادہ ہوئے وہ ہاتھا پائی پر
کہ جیسے سانڈ دو ٹکرائیں بے حد مشتعل ہو کر

صدا خم ٹھوکنے کی بار بار اٹھتی تھی میداں سے
بہم دست و گریباں تھے وہ پورے عزم و ایقاں سے

کبھی گردن پہ وہ اک دوسرے کی تھاپ دیتے تھے
اسی انداز سے پھر جائزہ قوت کا لیتے تھے

وہیں سے ٹانگ کوئی مارنے کی سمت تھا مائل
کوئی پٹ کھینچنے کی کر رہا تھا سعئی لاحاصل

کسی نے کھینچ کر دستی، کمر کو زور سے گانٹھا
مگر ہاتھوں کا حلقہ چیر کر، کوئی نکل بھاگا

کبھی کوئی یکایک لڑتے لڑتے گر پڑا نیچے
وہیں سے ڈھیکلی کھا کر وہ آیا، پیٹھ کے پیچھے

गरज़ दोनों ही शह जोरी में यकता-ए-ज़माना थे।
हुनर मंदी में औहद थे, दिलेरी में यगाना थे।।

गदा आपस में टकराते, तो कड़का राद सा होता।
गरजते बादलों की गड़गड़ाहट से, सिवा होता।।

फ़ज़ाएँ कांप उठती थीं गदाओं के धमाके से।
पहाड़ों के जिगर फटते थे गुर्ज़ों के झमाके से।।

बिलआख़िर लड़ते लड़ते, ज़र्ब से गुर्ज़े-गिराँ टूटे।
मगर हिम्मत न टूटी, और न उनके हौसले छूटे।।

शहज़ोरी = ताक़त

गदरा = बादल की गरज

फ़ज़ाएँ = [illegible]

ज़र्ब = मार [illegible]
गुर्ज़े-गिराँ = भारी गदा

मल्लयुध्द के जौहर
यानी कुश्ती के दाँव पेंच

गदा को छोड़, आमादा हुए वह हाथा पाई पर।
कि जैसे साड़ दो टकराएँ, बेहद मुशतईल हो कर।।

सदा ख़म ठोकने की, बार बार उठती थी मैदाँ से।
बहम दस्त-ओ-गिरेबाँ थे, वह पूरे अज़्मो-इकाँ से।।

कभी गर्दन पे वह इक दूसरे की थाप देते थे।
इसी अंदाज़ से फिर, जाएज़ा कुव्वत को लेते थे।।

वहीं से टाँग कोई, मारने की सम्त था माईल।
कोई पट खींचने की, कर रहा था सईए-ला हासिल।।

किसी ने खींच कर दस्ती, कमर को ज़ोर से गांठा।
मगर हाथों का हलक़ा चीर कर, कोई निकल भागा।।

कभी कोई यकायंक, लड़ते-लड़ते गिर पड़ा नीचे।
वहीं से ढेकली खाकर वह आया पीठ के पीछे।।

आमादा = तैयार
मुशतईल = ग़ुस्से में
कुव्वत = ताक़त

کبھی نیچے کوئی لاکر رستا خوب دھرتی پر
کبھی گردن سُجھا دیتا تھا کوئی گھٹنا رکھ رکھ کر

کوئی ان میں سے سانڈی کھینچکر گھِسا لگاتا تھا
کبھی تنگ آکے پورے جوش میں مونڈھے چڑھاتا تھا

کوئی فوراً نکلتا سر کی ٹکّی کھاکے نیچے سے
اچانک ڈال دیتا جانگئے میں ہاتھ پیچھے سے

بالآخر لڑتے لڑتے دونوں چوڈنڈے پہ پھر آئے
ہنر کے پینترے اک دوسرے کو خوب دکھلائے

اچانک خوبصورت داؤں مارا بھیم نے اُس پر
جراسنگ چاروں شانے چِت گرا پھر سامنے آکر

لپک کر بھیم فوراً چڑھ گیا یوں اسکے سینے پر
ہو جیسے شیر آمادہ لہو گردن کا پینے پر

مگر فوراً جراسنگ زورِ فطری اور طاقت سے
پلٹ کر ہو گیا پٹ اپنی دیرینہ مہارت سے

اُسے پھر خوب رِسا چھل گئے تھے ہاتھ پیر اسکے
جراسنگ جیسا شیطاں ڈھیلا کب پڑتا بغیر اسکے

غروبِ مہر تک یوں دھر پٹک ہوتی رہی آخر
مگر اک دوسرے کو زیر کرنے سے رہے قاصر

ثباتِ بھیم میں تزلزل

دساتیرِ وغا میں یہ بھی تھا دستور اک بہتر
لڑائی بند ہو جاتی تھی سورج ڈوب جانے پر

غروبِ مہر پر دونوں جواں لڑنے سے باز آئے
پلٹ کر رنگ بھومی سے بہ شانِ فخر و ناز آئے

कभी नीचे कोई लाकर रिमस्ता खूब धरती पर।
कभी गर्दन सुजा देता था कोई, घुटना रख रख कर।।

कोई इनमें से सांडी खींचकर घिस्सा लगाता था।
कभी तंग आके पूरे जोश में, मोंढे चढ़ाता था।।

कोई फ़ौरन निकलता, सर की टिक्की खा के नीचे से।
अचानक डाल देता, जांघिये में हाथ पीछे से।।

बिलआख़िर लड़ते लड़ते, दोनों चौ डंडे पे फिर आए।
हुनर के पैंतरे, इक दूसरे को खूब दिखलाए।।

अचानक खूबसूरत दावँ मारा भीम ने उसपर।
जरासंग चारों शाने चित गिरा, फिर सामने आकर।।

लपक कर भीम फ़ौरन, चढ़ गया यूँ उसके सीने पर।
हो जैसे शेर आमादा, लहू गर्दन का पीने पर।।

मगर फ़ौरन जरासंग, ज़ोरे-फ़ितरी और ताक़त से।
पलट कर हो गया पट, अपनी देरीना महारत से।।

उसे फिर खूब रिमसा, छिल गए थे हाथ पैर उसके।
जरासंग जैसा शैताँ, ढीला कब पड़ता बग़ैर इसके।।

गुरूबे-महर तक यूँ धर-पटक होती रही आख़िर।
मगर इक दूसरे को ज़ेर करने से रहे क़ासिर।।

गुरूबे-महर = सूरज का डूबना
ज़ेर = पराजित

सबाते-भीम में तज़लज़ुल

दसातीरे-वग़ा में यह भी था दस्तूर इक बेहतर।
लड़ाई बंद हो जाती थी, सूरज डूब जाने पर।।

गुरूबे-महर पर दोनों, जवाँ लड़ने से बाज़ आए।
पलट कर रंग भूमि से, ब शाने-फ़ख़रो-नाज़ आए।।

दसातीरे-वग़ा = युद्ध का कानून

لہذا یوں ہی میداں میں وہ روزآنہ نکلتے تھے
سحر سے شام تک کشتی کے داؤں پیچ چلتے تھے

وہ ستائیس دن تک دھرپٹک کرتے رہے یونہی
نتیجہ آخرش نکلا نہ اتنے روز میں کوئی

تو ستائیسویں دن مَلّھ یدُھ سے بھیم گھبرا کر
شری گھنشیام سے کہنے لگا یوں بادلِ مضطر

جراسنگ سے تو اب سنگھرش کی جرأت نہیں مجھ میں
لڑوں اُس فیل پیکر سے، نہیں طاقت نہیں مجھ میں

یہی عالم رہا تو میں یقیناً مارا جاؤں گا
کسی صورت سے بھی میں زیر اسکو کر نہ پاؤنگا

جواب اب دے چکی ہے میری ہمت اور مری قوت
بچائیں آپ اس شیطان سے مجھ کو بہر صورت

شری کرشن کی رہنمائی اور داؤں پینچ کے گرُ

شری گھنشیام جی نے غور سے اسکی سُنی باتیں
بتائیں پھر انھوں نے اسکو گرُ کی بات اور گھاتیں

وہ بولے حوصلے سے کام لے اے بھیم فرزانے
ہمیشہ کھیلتے ہیں شمع کی لَو سے ہی پروانے

حوادث میں عمل اور جُہد ہی مردوں کا جوہر ہے
جو سینہ چیر کر موجوں کا نکلے وہ شناور ہے

یہ میں بھی جانتا ہوں، ہے جراسنگ آہنی پیکر
دلیری اور شہہ زوری میں وہ تجھسے نہیں کمتر

مگر وہ کل تیرے ہاتھوں ہی رن میں مارا جائیگا
قضا کا جام تو ہی کل اُسے جاکر پلائے گا

लेहाज़ा यूँ ही मैदाँ में, वह रोजा़ना निकलते थे।
सहर से शाम तक, कुश्ती के दावँ पेंच चलते थे।।

वह सत्ताईस[२७] दिन तक, धर पटक करते रहे यूँही।
नतीजा आख़िरश, निकला न इतने रोज़ में कोई।।

तो सत्ताईस्वें दिन मल्ल युध्द से भीम घबरा कर।
श्री घनशाम से कहने लगा यूँ बा दिले-मुज़तर।।

जरासंग से तो अब संघर्ष की, जुरअत नहीं मुझ में।
लड़ूँ उस फ़ील पैकर से, नहीं ताक़त नहीं मुझ में।।

यही आलम रहा तो मैं, यक़ीनन मारा जाऊँगा।
किसी सूरत से भी मैं ज़ेर उसको कर ना पाऊँगा।।

जवाब अब दे चुकी है मेरी हिम्मत और मेरी कुव्वत।
बचाएँ आप उस शैतान से मुझ को बहर सूरत।।

श्री कृष्ण की रहनुमाई और दावँ पेंच के गुर

श्री घनश्यामजी ने ग़ौर से उसकी सुनी बातें।
बताईं फिर उन्होंने, उसको गुर की बात और घातें।।

वह बोले हौसले से काम ले ऐ भीम फ़रज़ाने।
हमेशा खेलते हैं शमा की लौ से ही परवाने।।

हवादिस में अमल और जुहद ही, मर्दों का जौहर है।
जो सीना चीर कर मौजों का निकले वह शनावर है।।

यह मैं भी जानता हूँ, है जरासंग आहनी पैकर।
दिलेरी और शैह ज़ोरी में वह तुझसे नहीं कमतर।।

मगर वह कल तेरे हाथों ही रण में मारा जाएगा।
क़ज़ा का जाम तू ही कल, उसे जाकर पिलाएगा।।

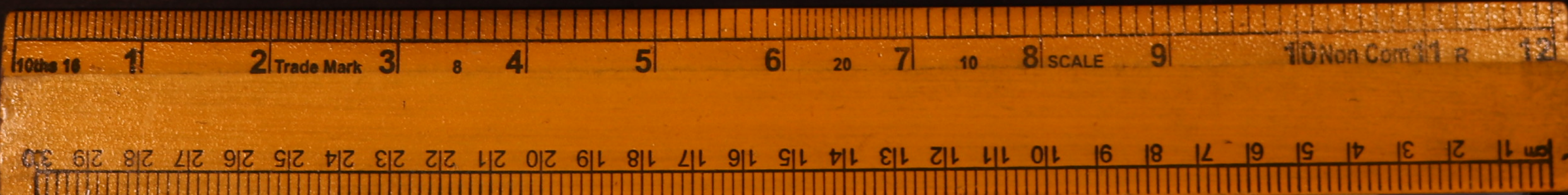
आख़िरश = अन्त में

बा दिले-मुज़तर = बेचैन दिल

फ़रज़ाने = बुद्धिमान

हवादिस = संकट
जुहद = कोशिश
जौहर = शान
शनावर = तैराक

कज़ा = मृत्यु



وہ کل تیرا مقابل بنکے جب آئے سرِ میداں　　اُسے تو کھینچ کر نیچے ہی لے آنا بہر امکاں

پھر اسکے بعد اپنی ٹانگ اسکی ٹانگ پر رکھ کر
پکڑ کر چیر دینا درمیاں سے نیچے سے اوپر

جراسنگ کیفرِ کردار تک

اِسی شب کی سحر نے بھیم کو بخشی توانائی　　نئے سر سے ارادوں میں پھر اسکے پختگی آئی

طلوعِ شمس کی پہلی کرن کے ساتھ میداں میں　　لگا دی بھیم نے اک جست آتش خیز طوفاں میں

جراسنگ بھی اِدھر میدان میں خم ٹھونک کر آیا　　بدلکر پینترا جھپٹا تو اس کو سامنے پایا

ملا کر ہاتھ، بایاں ہاتھ رکھا اس کی گردن پر　　جھکولا دیکے اِک ٹنگا لگایا جوش میں آکر

مگر اس کی یہ کوشش رائیگاں گذری بہر صورت　　نہ برتی بھیم نے ذرہ برابر اس سمے غفلت

پھر اسکے بعد دونوں جُٹ گئے زور آزمائی پر　　زمانہ ششدر و حیران تھا انکی لڑائی پر

ہنر اک دوسرے پر کر رہے تھے دونوں بڑھ چڑھ کر　　فنِ کشتی کا انکی کھُل رہا تھا ایک اک جوہر

یونہی لڑتے ہوئے پھر دوپہر گذری دلیروں کو　　ابھی تک کوئی زک پہنچی نہ تھی اُن دونوں شیروں کو

دلیرانِ وغا کی بے نتیجہ جنگ نے آخر　　شری گھنشیام کو خاموش رہنے سے کیا قاصر

वह कल तेरा मुक़ाबिल, बनके जब आए सरे-मैदाँ।
उसे तू खींच कर नीचे ही ले आना बहर इमकाँ।।

फिर इसके बाद अपनी टांग उसकी टांग पर रख कर।
पकड़ कर चीर देना दरमियाँ से, नीचे से ऊपर।।

मुकाबिल = शत्रु
बहर इमकाँ = जहा तक सभंव हो सके
दरमियाँ = बीच

जरासंध कैफ़रे-किरदार तक

उसी शब की सहर ने, भीम को बख़्शी तवानाई।
नए सिर से इरादों में, फिर उसके पुख़्तगी आई।।

तुलूए-शम्स की पहली किरण के साथ मैदाँ में।
लगादी भीम ने इक जस्त आतिश ख़ेज़ तूफ़ाँ में।।

तुलूए-शम्स = सूरज का निकलना
जस्त = छलांग

जरासंग भी इधर मैदान में खम ठोंक कर आया।
बदलकर पैंतरा झपटा, तो उस को सामने पाया।।

मिला कर हाथ, बायाँ हाथ रखा उस की गर्दन पर।
झकोला देके इक टंगा लगाया, जोश में आकर।।

मगर उसकी यह कोशिश रायगाँ गुज़री बहर सूरत।
न बरती भीम ने ज़र्रा बराबर इस समय ग़फ़लत।।

रायगाँ = बेकार

फिर इसके बाद दोनों जुट गए ज़ोर आज़माई पर।
ज़माना शश्दर-ओ-हैरान था, उन की लड़ाई पर।।

शश्दर व हैरान = आश्चर्य , चकित

हुनर इक दूसरे पर, कर रहे थे दोनों बढ़ चढ़कर।
फ़ने-कुश्ती का उनकी, खुल रहा था एक इक जौहर।।

यूँही लड़ते हुए फिर, दोपहर गुज़री दिलेरों को।
अभी तक कोई ज़क, पहुँची न थी उन दोनों शेरों को।।

ज़क = हानि

दिलेराने-वग़ा की बे नतीजा जंग ने आख़िर।
श्री घनश्याम को ख़ामोश रहने से किया क़ासिर।।

क़ासिर = मजबूर

دکھائی پھر انھوں نے بھیم کو دانائی و حکمت　　وہیں سے اک شجر کی شاخ کو توڑا بصد عجلت

پھر اسکو بھیم کے آگے شری گھنشیام نے چیرا　　تعجب سے نگاہ و چشم اس کی رہ گئی خیرہ

وہ سب یاد آگئیں فوراً ہی انکی رات کی باتیں　　بتائی تھیں انھوں نے جسقدر گُر کی اسے گھاتیں

بہادر بھیم اسکے بعد ہی خم ٹھونک کر اُٹھا　　لگایا کہہ کے "یا بجرنگ" اک ہیبت اثر نعرہ

ابھی اِس نعرۂ ہیبت اثر کا شور و ہنگامہ　　ہوا تھا کم نہ ذرّہ بھر کہ اٹھا بخت کا خامہ

لکھا فرمانِ رحلت اسنے یوں راجہ جراسنگ کا　　رہا بجرنگ کا میدان میں نام و نشاں اونچا

لگی تھی ساتھ ہی نعرہ کے اسکی ٹھیک ملتانی　　یہ چونکہ بھیم کا تھا آزمودہ داؤں لاثانی

نہ بچ پایا ہنر کی ضرب سے وہ ماہرِ خوش فن　　گرا پھر چاروں شانے چت جراسنگ پیکرِ آہن

لپک کر جا دبوچا بھیم نے اس فتنہ ساماں کو　　زمیں پر چاروں جانب خوب رگڑا دشمنِ جاں کو

اور اسکے بعد اس نے اسطرح اک ٹانگ کو پکڑا　　پکڑ کر ٹانگ، دونوں آہنی پنجوں میں پھر جکڑا

پھر اپنا پیر اسکی دوسری اک جانگھ پر رکھ کر　　بیک رُخ چیر ڈالا درمیاں سے بھیم نے یکسر

اسیرانِ جراسنگ کی رہائی

جراسنگ فیل تن کا جُثّۂ خاکی سرِ میداں　　دوپارہ ہو کے خاک و خون میں ہوتا رہا غلطاں

दिखाई फिर उन्होंने भीम को दानाई-ओ-हिकमत।
वहीं से इक शजर की शाख़ को, तोड़ा बसद उजलत।।

फिर उसको भीम के आगे, श्री घनश्याम ने चीरा।
तअज्जुब से निगाह-ओ-चष्म उसकी रह गई ख़ीरा।।

वह सब याद आगईं फ़ौरन ही उनकी रात की बातें।
बताई थीं उन्हों ने, जिसक़दर गुर की उसे घातें।।

बहादुर भीम उसके बाद ही खम ठोंक कर उठ्ठा।
लगाया कह के 'या बजंरग' इक हैबत असर नारा।।

अभी इस नाराए-हैबत असर का शोर-ओ-हंगामा।
हुआ था कम न ज़र्रा-भर, कि उठ्ठा बख़्त का ख़ामा।।

लिखा फ़रमाने-रहलत उसने यूँ राजा जरासंग का।
रहा 'बजरंग' का मैदान में, नामो-निशाँ ऊँचा।।

लगी थी साथ ही नारे के, उसकी ठीक मुलतानी।
यह चूँके भीम का था आज़मूदा दावँ लासानी।।

न बच पाया हुनर की ज़र्ब से, वह माहिरे-खुश फ़न।
गिरा फिर चारों शाने चित, जरासंग पैकरे आहन।।

लपक कर जा दबोचा भीम ने उस फ़ितना सामाँ को
ज़मीं पर चारों जानिब खूब रगड़ा दुश्मने-जाँ को।।

और इसके बाद उसने इसतरह इक टाँग को पकड़ा।
पकड़ कर टाँग, दोनों आहनी पंजों में फिर जकड़ा।।

फिर अपना पैर उसकी दूसरी इक जांघ पर रख कर।
बयक रूख़ चीर डाला, दरमियाँ से भीम ने यकसर।।

दानाई व हिकमत = होशयारी, चालाकी

तअज्जुब = आश्चर्य
निगाह = चितवन
चश्म = नेत्र आंख
ख़ीरा = चका चौन्द

असीराने-जरासंध की रिहाई

जरासंग फ़ील तन का, जुस्सा-ए-ख़ाकी सरे-मैदाँ।
दोपारा होके, ख़ाक-ओ-खून में, होता रहा गलताँ।।

जुस्सा-ए-ख़ाकी = मिट्टी का बदन
दोपारा = दो टुकड़े

مچا تھا شوروغل کا ایک ہنگامہ رعیّت میں
اضافہ ہو رہا تھا دم بدم جوش و کدورت میں

مگر گھنشیام جی نبّاضِ عالم نے، سیاست سے
کیا ہیجان کو ٹھنڈا نہایت ہی فراست سے

اسیرانِ جراسنگ نے بھی آخر مخلصی پائی
نہ جانے کس قدر لمبی تھی انکی قیدِ تنہائی

لہذا سب اسیرانِ جراسنگ ہوگئے شاداں
اک عرصہ بعد پایا بے کسوں نے درد کا درماں

یگیّہ کا جائزہ

ہوئے واپس وہ تینوں سورما مرگِ جراسنگ پر
خوشی کے ساتھ پہنچے اندر نگری کامراں ہوکر

لیا اک بار سب نے جائزہ پھر یگ کا، مل کر
کہ باقی رہ گیا ہے کام آخر کتنا کس کے سر

نکُل بولا کہ میں اب شیام جی کے ساتھ جاتا ہوں
اور اُن کے ساتھ جاکر سورن منڈپ لیکے آتا ہوں

نکُل اور شیام جی ناگوں کی دنیا میں ہوئے داخل
وہاں سے سورن منڈپ پھر انھوں نے کرلیا حاصل

فقط اب مسئلہ تھا کام دِھینو جی کے آنے کا
یدھشٹر نے لیا تھا آج ذمّہ انکو لانے کا

غرض پھر کام دھینو کا یدھشٹر نے کیا سمرن
ہوا آسودہ جنکے دم قدم سے یگّ کا دامن

मचा था शोरोगुल का एक हंगामा रइय्यत में।
इज़ाफ़ा हो रहा था, दम बदम जोशे-कदूरत में।।

मगर घनश्याम जी नब्बाज़े-आलम ने, सियासत से।
किया हीजान को ठंडा, निहायत ही फ़िरासत से।।

असीराने-जरासंग ने भी आख़िर मुख़लिसी पाई।
न जाने किस कदर लम्बी थी उनकी क़ैदे-तनहाई।।

लेहाज़ा सब असीराने-जरासंग हो गए शादाँ।
इक अर्सा बाद पाया, बे कसों ने दर्द का दरमाँ।।

रइय्यत = जनता
कदूरत = शत्रुता
शादाँ = प्रसन्न

यज्ञ का जायज़ा

हुए वापस वह तीनों सूरमा मरगे-जरासंग पर।
खुशी के साथ पहुँचे, इन्द्र नगरी कामराँ होकर।।

लिया इक बार सब ने जायज़ा फिर यज्ञ का मिलकर।
कि बाक़ी रह गया है काम, आख़िर कितना किस के सर।।

नकुल बोला कि मैं अब, श्यामजी के साथ जाता हूँ।
और उनके साथ जाकर, स्वर्ण मंडप लेके आता हूँ।।

नकुल और श्यामजी नागों की दुनिया में हुए दाख़िल।
वहाँ से स्वर्ण मंडप, फिर उन्होंने कर लिया हासिल।।

फ़क़त अब मसअला था काम धीनूजी के आने का।
युधिष्ठिर ने लिया था आज ज़िम्मा उनको लाने का।।

ग़रज़ फिर काम धीनू का युधिष्ठिर ने किया स्मरण।
हुआ आसूदा जिनके दम क़दम से यज्ञ का दामन।।

जायज़ा= किए गए कामों का विवरण
हासिल = प्राप्त
मसअला = समस्या
आसूदा = अभारी

جشن کی آرائش

اور یگیہ کا منظر

یدھشٹر انتظامِ جشن میں مصروف تھا پیہم
نشاط و کیف میں ڈوبا ہوا تھا یگیہ کا عالم

ہزاروں گز کے رنگیں شامیانے رنگ بھومی پر
سجائے جا رہے تھے، خوشنما تھے راہ و بام و در

سرشتہ تھیں زر و نقرہ کی آمیزش سے سب کڑیاں
مزیّن کی گئیں ان میں دُرِ شہوار کی لڑیاں

ستونوں میں جڑائے جا رہے تھے گوہر و نیلم
زمرد لعل اور مرجان شہتیروں میں تھے مدغم

نمونے اک سے اک زربفت پر تھے دستکاری کے
کئی شہکار تھے زرگر کے فنِ زرنگاری کے

کسی جا ریشم و کمخواب کے پردے تھے آویزاں
بچھے تھے شامیانوں میں کہیں قالین اور دریاں

گلاب اور مشک و عنبر سے معطر شاہراہیں تھیں
زر و نقرہ کی آب و تاب سے خیرہ نگاہیں تھیں

ہر اک سو نغمہ و آہنگ سے اک کیف چھایا تھا
فضا میں ساز و موسیقی نے اک جادو جگایا تھا

کہیں تھا ڈھیر سا لعل و جواہر اور دولت کا
نہ دیکھا تھا کسی نے اسقدر انبار ثروت کا

کہیں تھا دودِ صندل اور کہیں تھا شعلۂ روشن
کہیں تھا غلہ و میوہ کہیں عنبر کہیں روغن

عجب پر کیف و راحت بخش تھا اس یگیہ کا منظر
براجے تھے ہزاروں لوگ اُس جا اک سے اک بڑھکر

जश्न की आराईश

और यज्ञ का मनज़र

युधिष्ठिर इन्तेज़ामे-जश्न में मसरूफ़ था पैहम।
निशतो-कैफ़ में, डूबा हुआ था यज्ञ का आलम।।

हजा़रों गज़ के रंगीं, शामयाने रंग भूमि पर।
सजाए जारहे थे, खुश्नुमा थे राह-ओ-बाम-ओ-दर।।

सरिश्ता थीं ज़रो-नुक़रा की आमेज़िश से सब कड़ियाँ।
मुज़य्यन की गयीं उन में, दुरे-शहवार की लड़ियाँ ।।

सुतूनों में जडाए जारहे थे गौहरो-नीलम।
ज़मररूद, लाल, और मरजान शहतीरों में थे मदग़म।।

नमूने इक से इक, ज़रबफ़्त पर थे दस्तकारी के।
कई शहकार थे ज़रगर के, फ़न्ने-ज़र निगारी के।।

किसी जा रेशम-ओ-कमख़्वाब के परदे थे आवेजा़ँ।
बिछे थे शामयानों में, कहीं क़ालीन और दरियाँ।।

गुलाब और मुशको-अंबर से मुअत्तर शाहराहें थीं।
ज़रो-नुक़रा की आबो-ताब से, ख़ीरा निगाहें थीं।।

हर इक सू नग़मा-ओ-आहंग् से इक कैफ़ छाया था।
फ़ज़ा में साज़ो-मौसीक़ी ने, इक जादू जगाया था।।

कहीं था ढेर सा, लालो-जवाहिर और दौलत का।
न देखा था किसी ने इस क़दर, अंबार सरवत का।।

कहीं था दूदे-संदल और कहीं था शोला-ए-रौशन।
कहीं था ग़ल्ला-ओ-मेवा, कहीं अंबर कहीं रौग़न।।

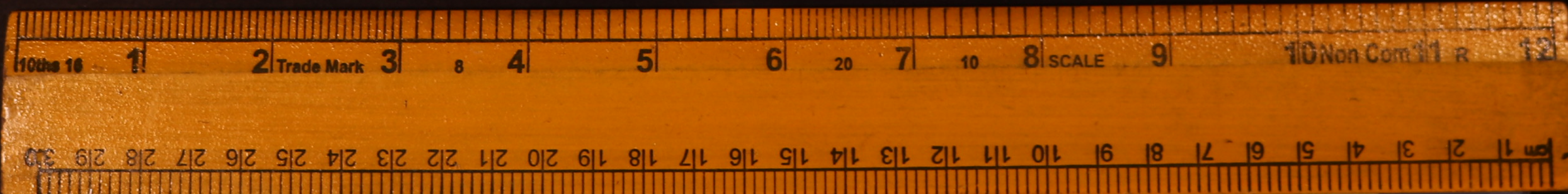
अजब पुर कैफ़ो-राहत बख़्श था उस यज्ञ का मनज़र।
विराजे थे हज़ारों लोग उस जा, इक से इक बढ़कर।।

बाम-ओ-दर = द्वार खिड़की
सरिश्ता = गुंधा हुआ
आमेज़िश = मिला हुआ
मुज़य्यन = सजाना
दुरे-शहवार = बड़ा मोती
ज़रबफ़्त = ज़री का कपड़ा
ज़रगर = सुनार

मुअत्तर = खुशबूदार
ज़रो-नुकरा = सोना चाँदी

लालो-जवाहिर = मोती

दूदे-संदल = चंदन का धुआँ



پاکدامن مہمانوں سے یگ کی زینت

شریکِ جشن ہو کر جو وہاں مہماں پدھارے تھے
وہ اٹھیاسی ہزار افلاکِ عالم کے ستارے تھے

مگر ان میں سے تھے کچھ ضو فشاں مہتاب کی مانند
گلستاں کے شگوفوں میں گُلِ شاداب کی مانند

ہزاروں سجنوں میں چند ایسے پاک دامن تھے
کہ جن میں ویاس، نارد، پیل، رِتو اور چیون تھے

علاوہ اسکے پرشورام، وِیتی ہونترا اور سُومنت
بھرادواج اور وِرچھ چھندا براجے تھے سبھی بھگونت

مہرشی جیمنی، آسِت، کدرو اور پارِشر
رِشی کشیپ، وشوامتر اور تھے دھوم جلوہ گر

مُنی تِرتی مہرشی سُومتی، اِکترا اور گوتم
جہاں تھے رام شِشّ، ویسن پائن محسن عالم

وہاں موجود تھے انکے علاوہ شیام بنواری
درونا، بھیشم، کرپا، اک سے اک بڑھکر جٹا دھاری

یگ کی اجازت

یدھشٹر نے بقدرِ مرتبہ ہر ایک مہماں کو
بٹھایا مسندِ زریں پہ سارے اہلِ عرفاں کو

الگ تھیں مسندیں راجاؤں کی اور نوجوانوں کی
بہادر شاہزادوں کی دلاور پہلوانوں کی

पाकदामन मेहमानों से यज्ञ की ज़ीनत

शरीके-जश्न होकर, जो वहाँ मेहमाँ पधारे थे।
वह अठ्यास्सी हज़ार, अफ़लाके-आलम के सितारे थे।।

मगर इनमें से थे कुछ, ज़ौ-फ़िशाँ महताब की मानिन्द।
गुलिस्ताँ के शगूफ़ों में, गुले-शादाब की मानिन्द।।

हज़ारों सज्जनों में, चंद ऐसे पाक दामन थे।
कि जिन में व्यास, नारद, पील, ऋतु और चेवन थे।।

अलावा इसके परशूराम, व्यति होनत्र और सूमन्त।
भारद्वाज और विर्छ छन्दा, विराजे थे सभी भगवंत।।

महर्षि जैमनी आसित्य, कदरू और पारेशर।
ऋिषि कश्यप, विश्वामित्र और थे धूम, जलवागर।।

मुनित्रिती, महर्षि सूम्ती, एकत्र और गौतम।
जहाँ थे रामशिष्य, वेसन पाइन मोहसिने-आलम।।

वहाँ मौजूद थे उनके अलावा श्याम बनवारी।
द्रोणा, भीष्म, कृपा, इक से इक बढ़कर जटा धारी।।

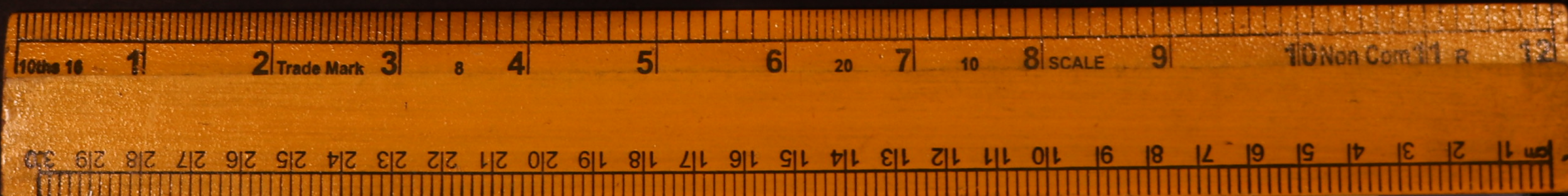
शरीक = उपस्थित
अफ़लाके-आलम = आकाश के तारे
ज़ौ-फ़शाँ = चमकते हुये
महताब = चंद्रमा
मानिन्द = समान
गुलिस्ताँ = बागीचा
शगूफे, गुले-शदाब = कोमल फूल

यज्ञ की इजाज़त

युधिष्ठिर ने बक़दरे-मरतबा हर एक मेहमाँ को।
बिठाया मसनदे-ज़र्री पे, सारे अहले इरफ़ाँ को।।

अलग थीं मसनदें राजाओं की, और नौजवानों की।
बहादुर शाहज़ादों की, दिलावर पहेलवानों की।।

बक़दरे-मरतबा = हर व्यक्ति के सम्मान के अनुसार
मसनदे-ज़र्री = चमकती गादी



پھر اسکے بعد لوگوں نے بہ اندازِ خلوصانہ
یدھشٹر کو کیا پھر پیش باری باری نذرانہ

ملی رسم تحائف اور نذرانوں سے جب فرصت
تو بلوائے گئے واں برہمن فوراً باعظمت

انھوں نے کھود ڈالا پرتھوی کو سورن کے ہَل سے
بنایا کھنڈ منڈپ تیز دھاری دار اک پھل سے

جلائیں سینکڑوں من لکڑیاں پھر اسمیں چندن کی
بھڑک کر ہو رہی تھی دم بدم لو تیز گلخن کی

مکمل ہو چکا جب انتظامِ جشن بابرکت
یدھشٹر نے اجازت یگّ کی دیدی بصد فرحت

یگ کا منظر

دیا انجام کارِ برہما ویاس نے بڑھ کر
لیا آچاریہ کا دھومیے نے سب کام اپنے سر

علاوہ اسکے جتنے بھی رشی تھے یگ میں شامل
سنبھالا سب نے اک اک کام کو تھا جس کے جو قابل

کوئی رگ وید کے اشلوک پڑھکر جاپ کرتا تھا
شکمِ گلخن کا کوئی روغن و میوہ سے بھرتا تھا

ہوئی تینتیس کروڑ اس یگ میں کل دیوتاؤں کی
عبادت اور پرستش ظاہر و باطن خداؤں کی

غرض ہوتا رہا یہ راجسوئی یگّ مدت تک
رہی محدود لیکن رسم یہ رسمِ عبادت تک

फिर इसके बाद लोगों ने, ब अन्दाज़े-ख़ुलूसाना।
युधिष्ठिर को किया फिर पेश बारी बारी नज़राना।।

मिली रस्मे-तहाएफ़ और नज़रानों से जब फ़ुरसत।
तो बुलवाए गये वाँ ब्राह्मण, फ़ौरन बाई अज़मत।।

उन्होंने खोद डाला पृथ्वी को स्वर्ण के हल से।
बनाया खंड मंडप, तेज़ धारीदार इक फल से।।

जलाईं सैंकड़ों मन लकड़ियाँ फिर इसमें चंदन की।
भड़क कर हो रही थी, दम बदम लौ तेज़ गुलख़न की।।

मुकम्मल हो चुका जब, इन्तेज़ामे-जश्न बा बरकत।
युधिष्ठिर ने इजाज़त यज्ञ की देदी बसद फ़रहत।।

खुलूसाना = प्रेम मोहब्बत
नज़राना = चढ़ावा

यज्ञ का मनज़र

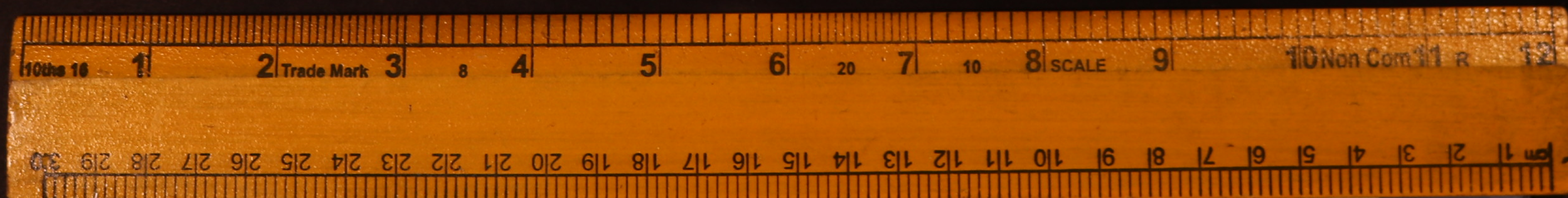
दिया अंजाम कारे-ब्रह्मा, फिर व्यास ने बढ़ कर।
लिया आचार्य का धौम ने, सब काम अपने सर।।

अलावा इसके जितने भी ऋषि ये यज्ञ में शामिल।
संभाला सब ने इक इक काम को, था जिस के जो क़ाबिल।।

कोई रग वेद के श्लोक पढ़कर जाप करता था।
शिकम गुलख़न का कोई, रोग़नो-मेवा से भरता था।।

हुई तैंतीस (३३००००००००) करोड़ इस यज्ञ में, कुल देवताओं की।
इबादत और परस्तिश, ज़ाहिरो-बातिन ख़ुदावों की।।

ग़रज़ होता रहा यह राजसूय यज्ञ मुद्दत तक।
रही महदूद लेकिन रस्म, यह रस्मे-इबादत तक।।



تِلک کی رسم اور گھنشام کی پوجا

اِسی انداز سے کافی دِنوں تک جشن پُر عظمت
وہاں ہوتا رہا یہ راجسوئی یگ بابرکت

دن آیا سوما بھیشک کا تو خوش ہو کر یدھشٹر نے
بہادر بھیشم سے پھر گفتگو کی یوں مفکّر نے

بتاؤ تو تِلک کِسکو لگے، ہے کون اس قابل
عبادت کِس کی، کی جائے ذرا حل کیجئے مشکل

یہاں اُس دیوتا کی، آج پوجا اور اطاعت ہو
کہ جسکے پوجنے سے سب خداؤں کی عبادت ہو

پتاما نے یوں اپنی رائے کا اظہار فرمایا
عبادت کا شری گھنشام جی کو اہل ٹھرایا

شری گھنشام جی کی شخصیت ہے صرف اس قابل
کہ جنکے پوجنے سے سب کی ہوگی بندگی حاصل

یہ سنتے ہی یدھشٹر نے شری گھنشیام کی پوجا
نہایت شان سے کی پیکرِ کرام کی پوجا

شری گھنشام کی پرستش پر ششوپال کا سیخ پا ہونا

ششوپال انکی پوجا دیکھکر پہلے تو جھنجلایا
پھر اسکے بعد غصّے میں یدھشٹر پر برس اٹھّا

کہا اُسنے مجھے افسوس ہے تیری فراست پر
ہنسی آتی ہے تیری بیوقوفی اور حماقت پر

तिलक की रस्म और घनश्याम की पूजा

इसी अंदाज़ से काफ़ी दिनों तक जश्न पुर अज़मत।
वहाँ होता रहा यह राजसूय यज्ञ बा बरकत।।

दिन आया 'सोमा भीषक' का, तो खुश हो कर युधिष्ठिर ने।
बहादुर भीष्म से फिर गुफ़्तगू की, यूँ मुफ़क्किर ने।।

बताओ तो तिलक किसको लगे, है कौन इस क़ाबिल।
इबादत किस की कीजाए, ज़रा हल किजिए मुश्किल।।

यहाँ उस देवता की, आज पूजा और अताअत हो।
कि जिसके पूजने से, सब खुदाओं की इबादत हो।।

पितामह ने यूँ अपनी राए का इज़हार फ़रमाया।
इबादत का श्री घनश्याम जी को, अहल ठहराया।।

श्री घनश्यामजी की शख़्सियत है सिर्फ़ इस क़ाबिल।
कि जिनके पूजने से, सब की होगी बन्दगी हासिल।।

यह सुनते ही युधिष्ठिर ने श्री घनश्याम की पूजा।
निहायत शान से की, पैकरे-कर्राम की पूजा।।

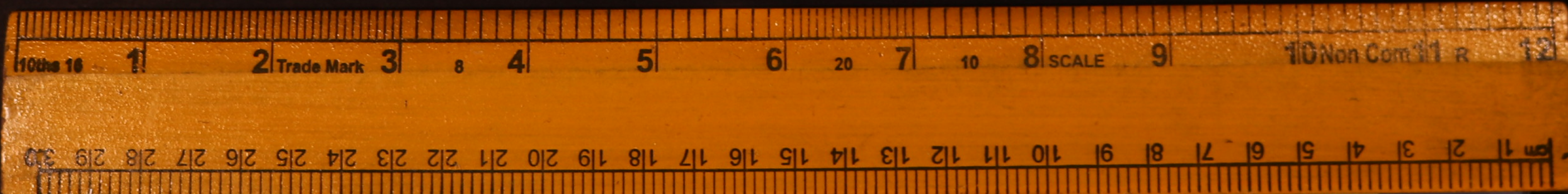
श्री घनश्याम की परस्तिश पर शिशु पाल का सीख़पा होना

शिशु पाल उनकी पूजा देखकर पहले तो झुझंलाया।
फिर इसके बाद गुस्से में युधिष्ठिर पर बरस उठ्ठा।।

कहा उसने मुझे अफ़सोस है तेरी फ़िरासत पर।
हंसी आती है तेरी बेवकूफ़ी और हिमाक़त पर।।

गुफ़्तगू = वार्तालाप

फ़िरासत = बुद्धि



مجھے تو بھیشم کے ادراک پر بھی شک گذرتا ہے
بڑھاپے میں عموماً آدمی ایسا ہی کرتا ہے

ستم کی بات ہے سہدیو جیسے طفل کی بدّھی
بڑوں کی عقل سے بھی بڑھ گئی اندھیر ہے یہ بھی

جہاں ہوں ویاس، نارد اور وشوامتر بھی حاضر
وہاں ہو اک گوالے کی پرستش کس طرح آخر

کرشنا جیسے مورکھ اور چرواہے کی یہ عزّت
گنوار اور جاٹ کی ہو اسقدر توقیر اور عظمت

نہیں ہرگز نہیں، میں ضبط مطلق کر نہیں سکتا
کسی بھی شکل میں پوجا کی حامی بھر نہیں سکتا

اگر ہونے لگے دنیا میں چرواہوں کی رقیّت
تو پھر کرنے لگے ہر ذرہ دعوائے الوہیّت

ششوپال کی پیدائش پر برہمنوں کی پیش گوئی

یہ سنکر بھیم غصّے میں بھبوکا بن گیا یکلخت
گدا کو ہاتھ میں لیکر، بپھر کر تن گیا یکلخت

یہ حالت بھیم کی جب بھیشم نے دیکھی تو سمجھایا
حکیمانہ لب و لہجے میں یوں ارشاد فرمایا

ہوا تھا جب ششو پیدا تو تھا بدشکل اور بدرو
اور اسکی تین آنکھوں کے علاوہ چار تھے بازو

یہ بچّہ پیدا ہوتے ہی کچھ ایسا رعد سا کڑکا
کہ سچ مچ راکشش ہے جیسے، یہ انسان کا لڑکا

मुझे तो भीष्म के इदराक पर भी शक गुज़रता है।
बुढ़ापे में उमूमन आदमी ऐसा ही करता है।।

सितम की बात है, सहदेव जैसे तिफ़्ल की बुध्दि।
बड़ों की अक़्ल से भी बढ़ गई, अन्धेर है यह भी।।

जहाँ हों व्यास, नारद और विश्वामित्र भी हाज़िर।
वहाँ हो इक ग्वाले की परस्तिश किस तरह आख़िर।।

कृष्णा जैसे मूरख और चरवाहे की यह इज़्ज़त।
गंवार और जाट की हो, इस क़दर तौक़ीर और अज़मत ।।

नहीं, हरगिज़ नहीं, मैं ज़ब्त मुतलक़ कर नहीं सकता।
किसी भी शक्ल में, पूजा की हामी भर नहीं सकता।।

अगर होने लगे दुनिया में चरवाहों की रक़ियत।
तो फिर करने लगे हर ज़र्रा, दावाए-उलूहियत।।

इदराक = बुद्धि, अक़्ल

तिफ़्ल = बच्चा

तौक़ीर, अज़मत = महानता

रक़ियत = इज़्ज़त सम्मान

उलूहीयत = ख़ुदाई

यक लख़्त = अचानक

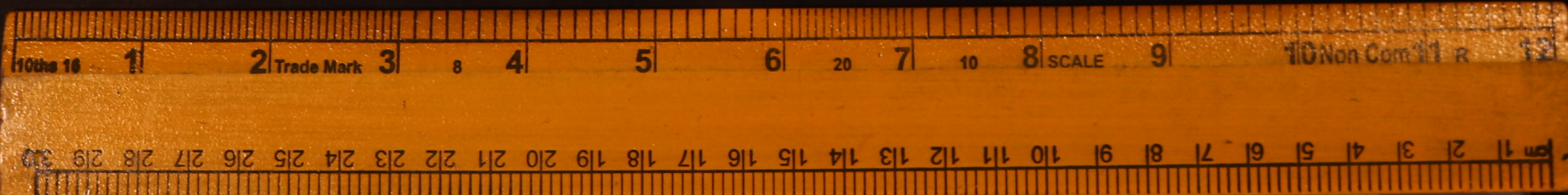
शिशुपाल की पैदाइश पर ब्राह्मणों की पेश गोई

यह सुनकर भीम गुस्से में भभूका बन गया यकलख़्त।
गदा को हाथ में लेकर, बिफर कर तन गया यकलख़्त।।

यह, हालत भीम की जब, भीष्म ने देखी तो समझाया।
हकीमाना लबो-लहजे में यूँ, इरशाद फ़रमाया।।

हुआ था जब शिशु पैदा, तो था बद शक्ल और बदरू।
और उसकी तीन ऑखों के अलावा चार थे बाज़ू।।

यह बच्चा पैदा होते ही, कुछ एसा राद सा कड़का।
कि सचमुच राक्षश है जैसे, यह इन्सान का लड़का।।



جب اس ہیّت کا بچہ دیکھا اسکی غمزدہ ماں نے تو بلوا کر برہمن سے کہا اس سوختہ جان نے

بتاو زائچہ تم کھینچ کر اس کا ہے کیا کارن بھوش میں کسطرح بیتے گا نومولود کا جیون

گروہِ برہمن نے بردباری اور ذہانت سے کہا اس مسئلہ پر غور فرما کر متانت سے

کہ سارے ملک سے راجوں مہاراجوں کو بلواؤ پھر اُنکی گود میں اس راکشش بچے کو بٹھلاؤ

اگر بچے کے جسکی گود میں بھی بیٹھ جانے سے دو بازو، اور سوئم چشم، اپنے آپ گر جائے

تو سمجھو اسکے ہاتھوں سے یہ بچّہ مارا جائے گا

غرورِ خودسری کا اس جہاں میں پھل وہ پائیگا

شری کرشن کی جانب سے ششوپال کے سو اپرادھ کی بخشش کا وعدہ

یہ سنتے ہی ششو کو اسکی ماں نے سارے شاہوں کی دیا آغوش میں زینت بنا وہ سب کے باہوں کی

یہ بچہ جب شری گھنشام کی آغوش میں آیا تو فوراً چشم اور باہوں سے پایا اسنے چھٹکارا

ششو کی ماں نے اپنے پتر کا جب دیکھا یہ منظر کہا اپنے بھتیجے کرشن سے یوں مُلتجی ہو کر

تمہارے ہاتھ سے اے شیام بنواری مرا بیٹا مرے گا، برہمن کہتے ہیں، یہ تقدیر کا ہیٹا

जब इस हैयत का बच्चा, देखा उसकी ग़मज़दा माँ ने।
तो बुलवाकर ब्राह्मण से, कहा उस सोख़्ता जाँ ने।।

बताओ ज़ाइचा तूम खींचकर, इस का है क्या कारण।
भविष्य में किस तरहा बीतेगा, नौ मौलूद का जीवन।।

गिरोहे-ब्राह्मण ने बुर्द-बारी और ज़हानत से।
कहा इस मसअले पर ग़ौर फ़रमा कर मतानत से।

कि सारे मुल्क से राजों महाराजों को बुलवाओ।
फिर उन की गोद में, इस राक्षश बच्चे को बिठलाओ।

अगर बच्चे के जिसकी गोद में भी बैठ जाने से।
दो बाज़ू, और सूवम चष्म, अपने आप गिरजाए।।

तो समझो उसके हाथों से, यह बच्चा मारा जाएगा।
गुरूरो-खुदसरी का इस जहाँ में फल वह पाएगा।।

श्री कृष्ण की जानिब से शिशुपाल के सौ अपराध की बख़्शिश का वादा

यह सुनते ही शिशु को उस की माँ ने सारे शाहों की।
दिया आग़ोश में, ज़ीनत बना वह सब के बाहों की।।

यह बच्चा जब श्री घनश्याम की आग़ोश में आया।
तो फ़ौरन चष्म और बाहों से पाया, उसने छुटकारा।।

शिशु की मॉ ने अपने पुत्र का जब देखा यह मनज़र।
कहा अपने भतीजे़ कृष्ण से, यूँ मुलतजी होकर।।

तुम्हारे हाथ से ऐ श्याम बनवारी मेरा बेटा।
मरेगा, ब्राह्मण कहते हैं, यह तक़दीर का हेटा ।।

हैयत = सूरत
सोख़्ता जाँ = दुःखी

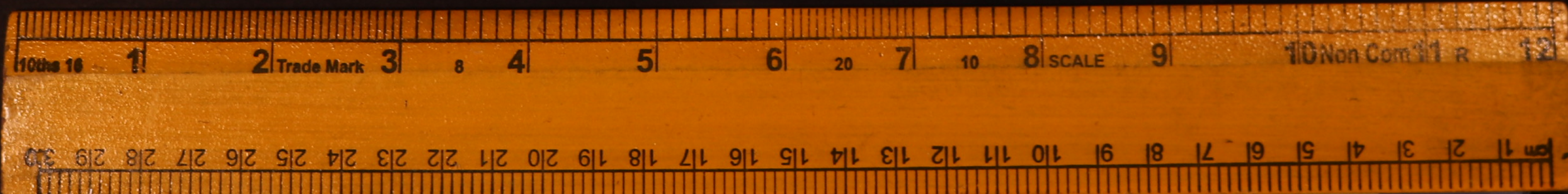
जाइचा = जन्म कुंडली

ज़हानत = अक़लमन्दी
मतानत = गंभीरता

सूवम चष्म = तीसरी आँख
खुदसरी = स्वेच्छाचार

आग़ोश = गोद

मुलतजी = प्रार्थी



معاف اُسکی خطائیں کر کے احسان مجھ پہ تم کر دو
مری جھولی عطوفت کے درِ سہوار سے بھر دو

یہ سنکر شیام نے اپنی پھوپھی سے ہنسکے فرمایا
مگر اپنی زباں پر حرفِ آخر اسطرح لایا

کہ سو اپرادھ تک اسکو میں اپنے لطفِ احسن سے
شما کر دوں گا ناتے داری کے دیرینہ بندھن سے

مگر اس سے زیادہ میں نہ بخشونگا کسی صورت
سزا پائیگا یہ اپنی خطاؤں کی بہر حالت

پتامہ اتنا کہہ کر رک گئے اور بھیم سے بولے
بہت آہستہ جیسے کوئی امرت کان میں گھولے

کہ یہ مجرم شری کیشو کا ہے، وہ خود نپٹ لیں گے
نہ آؤ جوش میں تم، وہ اُسے خود ہی سزا دیں گے

شری گھنشام کے ہاتھوں
ششوپال قضا کی گود میں

ششوپال اُنکی باتیں سنکے ایسا غیظ میں آیا
اٹھا پھُنکار کر، اور سانپ کی مانند بل کھایا

کہا اسنے کہ پوجا کرنے اور کروانے والوں کو
میں اپنی اہلیت کی آگ میں سارے جیالوں کو

ہون کرتا ہوں چاہے بھیشم ہو یا کرشن سا بدبخت
مسل سکتا ہوں میں پانڈو کو چیونٹی کی طرح یک لخت

یہ کہکر اسنے فوراً ہی لگادی جست آسن سے
بپھر کر تن گیا بدبخت ظالم بے تکے پن سے

मआफ़ उसकी ख़ताएँ, कर के अहसाँ मुझपे तुम कर दो।
मेरी झोली अतूफ़त के, दुरे-शहवार से भर दो।।

यह सुनकर श्याम ने अपनी फुफी से हंस के फ़रमाया।
मगर अपनी ज़बाँ पर हर्फ़े-आख़िर इस तरह लाया।।

कि सौ अपराध तक उस को मैं अपने लुतफ़े-अहसन से।
क्षमा कर दूँगा नातेदारी के, देरीना बंधन से।।

मगर इस से ज़्यादा मैं न बख़्शूंगा किसी सूरत।
सज़ा पाएगा यह अपनी, ख़ताओं की बहर हालत।।

पितामह इतना कह कर रुक गये और भीम से बोले।
बहुत आहिस्ता जैसे, कोई अमृत कान में घोले।।

कि यह मुजरिम श्री केशव का है, वह खुद निपट लेंगे।
न आओ जोश में तुम, वह उसे खुद ही सज़ा देंगे।।

अतूफ़त = मेहरबानी, दया
दुरे-शहवार = हीरे और मोती
देरीना = पुराना

श्री घनश्याम के, हाथों
शिशुपाल क़ज़ा की गोद में

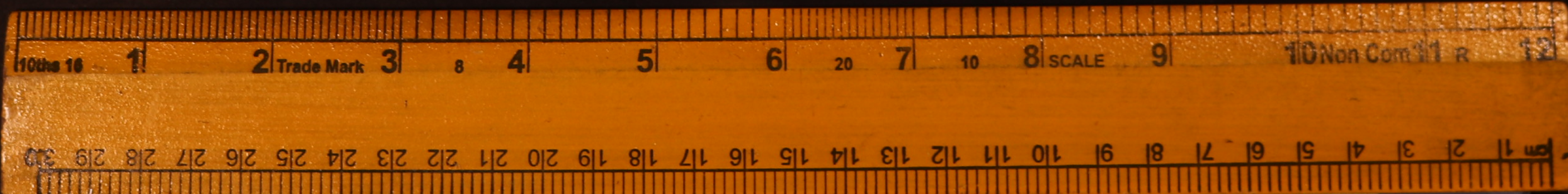
शिशुपाल उनकी बातें सुनके, ऐसा ग़ैज़ में आया।
उठा फुंकार कर, और सांप की मानिन्द बल खाया।।

कहा उस ने की पूजा करने और करवाने वालों को।
मैं अपनी अहलियत की आग में, सारे जियालों को।।

हवन करता हूँ चाहे, भीष्म हो या कृष्ण सा बद बख़्त।
मसल सकता हूँ मैं पांडव को, चियूंटी की तरह यक लख़्त।।

यह कहकर उसने फ़ौरन ही लगादी जस्त आसन से।
बिफर कर तन गया बद बख़्त ज़ालिम बेतुके पन से।।

ग़ैज़ = गुस्सा



خطائیں سو سے اوپر ہو گئی تھیں اس ستمگر کی — ہوئیں سوہانِ دل، گستاخیاں مغرور خودسر کی

کہا گھنشام نے آخر بہ اندازِ شریفانہ — کہ اسکی زندگی کا بھر گیا ہے آج پیمانہ

یہ کہکر شیام بنواری نے اس شیطان کی جانب — سودرشن چکر پھینکا جو تھا اپنی موت کا طالب

قضا کی گود میں پہنچا سودرشن چکر سے آخر — ملا چھٹکارا ظالم کو جہانِ مکر سے آخر

یگ کے اختتام کا اعلان
اور مخصوص مہمانوں کا رکنا

ششو جب اس جہانِ رنگ و بو سے پا گیا فرصت — تو پھر گھنشام اور راجہ یدھشٹر نے بصد شفقت

بٹھایا اسکے بیٹے کو بہ فرحت تختِ شاہی پر — نہ ڈالا ہاتھ دولت پر نہ اسکی کج کلاہی پر

نہایت شان و شوکت سے ہوا یہ جشن بابرکت — کہ جس سے پانڈوؤں کی بڑھ گئی توقیر اور عظمت

یدھشٹر نے کیا پھر اختتامِ جشن کا اعلان — ہوئے واپس وہاں سے اک کے بعد اک پھر سبھی مہماں

مگر راجہ نے کچھ مخصوص مہمانوں کو رکوایا — بوجہہ رشتہ داری انکو کچھ دن اور ٹھہرایا

کہ جن میں تھے شری گھنشام کوروں اور دریودھن
انھیں رکنا پڑا دیرینہ رسم و راہ کے کارن

ख़ताएँ सौ से उपर होगई थीं उस सितमगर की।
हुई सोहाने-दिल, गुस्ताख़ियाँ मग़रूर खुदसर की।।

कहा घनश्याम ने आख़िर ब अन्दाज़े-शरीफ़ाना।
कि उसकी ज़िन्दगी का भर गया है आज पैमाना।।

यह कहकर श्याम बनवारी ने उस शैतान की जानिब।
सुदर्शन चक्र फेंका, जो था अपनी मौत का तालिब।।

क़ज़ा की गोद में पहुँचा, सुदर्शन चक्र से आख़िर।
मिला छुटकारा ज़ालिम को, जहाने-मक्र से आख़िर।।

सोहाने = ना-गवार
तालिब = चाहने वाला

यज्ञ के इख़्तिताम का एलान और मख़सूस मेहमानों का रुकना

शिशु जब इस जहाने-रंगो-बू से, पागया फुरसत।
तो फिर घनश्याम और राजा युधिष्ठिर ने बसद शफ़क़त।।

बिठाया उसके बेटे को, ब फ़रहत तख़्ते-शाही पर।
न डाला हाथ दौलत पर, न उसकी कजकुलाही पर।।

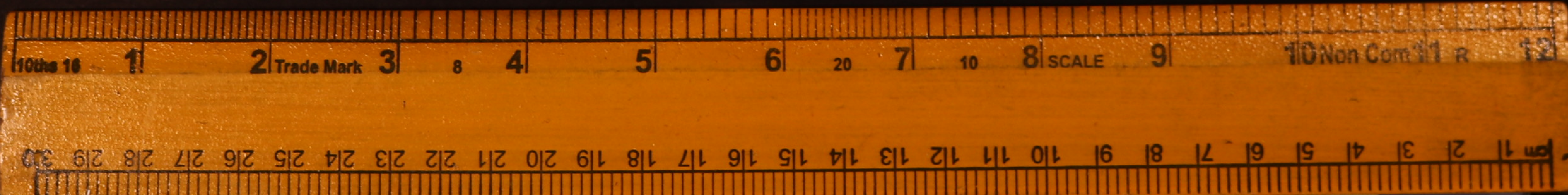
निहायत शानो-शौकत से हुवा यह जश्ने-बा बरकत।
कि जिस से पांडवों की बढ़ गई, तौक़ीर और अज़मत।।

युधिष्ठिर ने किया फिर इख़्तितामे-जश्न का एलान।
हुए वापस वहां से, इक के बाद इक फिर सभी मेहमान।।

मगर राजा ने कुछ मख़सूस मेहमानों को रुकवाया।
ब वजहे-रिशतेदारी, उनको कुछ दिन और ठहराया।।

कि जिन में थे श्री घनश्याम कौरवँ और दुर्योधन।
उन्हे रुकना पड़ा, देरिना रस्मो-राह के कारण।।

शफ़क़त = रहम, दया
कजकुलाही = बादशाही
इख़्तिताम = समाप्ती



سوزشِ رشک و حسد

یہ سچ ہے مہماں مسرور تھے اس یگّ سے سارے
مگر اک قلبِ دریودھن پہ بس چلتے رہے آرے

حسد کی آگ میں ہر لمحہ وہ جلتا رہا یونہی
اُسے پانڈو کا جشنِ دلنشیں کھلتا رہا یونہی

یدھشٹر کو سبھا تیار کرنے کی جو سامگری
کسی احساں کے بدلے میں میدانو نے بخشی تھی

اسی محفل میں بیٹھا تھا یدھشٹر ایک آسن پر
نظر کے سامنے تھا جشنِ شاہانہ کا ہر منظر

اسی عالم میں دریودھن سبھا کی سمت جا پہنچا
قریبِ بزم مثلِ ماربل کھاتا ہوا پہنچا

دکھایا اپنا غصّہ اُسنے پہلے پہرہ داروں پر
جو دربانی پہ تھے ماموران خدمت گذاروں پر

پھر اسکے بعد یوں داخل ہوا دربار کے اندر
نگاہِ قہر سب پر ڈالتا آگے بڑھا خود سر

دریودھن کی حماقت اپنے عروج پر

بڑھا جونہی مجلّا فرش اک اُس کو نظر آیا
مگر اُس فرش پر دھوکا سرابِ ریگ سا کھایا

اُسے اک چشمۂ آبِ رواں سمجھا تھا دریودھن
اٹھایا اپنا کپڑا اسنے گھٹنے تک اسی کارن

وہاں پانی کہاں تھا وہ تو اک فرشِ مجلّا تھا
کمالِ حسنِ صناعی تھا یا نظروں کا دھوکا تھا

सोज़िशे-रश्को-हसद

यह सच है मेहमाँ मसरूर थे, इस यज्ञ से सारे।
मगर इक क़ल्बे-दुर्योधन पे, बस चलते रहे आरे।।

हसद की आग में हर लमहा वह जलता रहा युँही।
उसे पांडव का ज़श्ने-दिलनशीं खलता रहा युँही।।

युधिष्ठिर को सभा तयार करने की जो सामग्री।
किसी एहसान के बदले में, मयदा नव ने बख़्शी थी।।

इसी महफ़िल में बैठा था युधिष्ठिर एक आसन पर।
नज़र के सामने था जश्ने-शाहाना का हर मनज़र।।

इसी आलम में दुर्योधन सभा की सम्त जा पहुँचा।
क़रीबे-बज़्म, मिस्ले-मार, बल खाता हुआ पहुँचा।।

दिखाया अपना गुस्सा उसने, पहले पहरेदारों पर।
जो दरबानीं पे थे मामूर, उन ख़िदमत गुज़ारों पर।।

फिर इस के बाद यूँ दाख़िल हुआ दरबार के अन्दर।
निगाहे-क़हर सब पर डालता आगे बढ़ा खुद-सर।।

दुर्योधन की हिमाक़त अपने उरूज पर

बढ़ा जूँही मुजल्ला फ़र्श, इक उसको नज़र आया।
मगर इस फ़र्श पर धोका, सराबे-रेग सा खाया।।

उसे इक चष्मा-ए-आबे-रवाँ समझा था दुर्योधन।
उठाया अपना कपड़ा उसने घुटने तक इसी कारण।।

वहाँ पानी कहाँ था, वह तो इक फ़र्शे-मुजल्ला था।
कमाले-हुस्ने-सनाई था, या नज़रों का धोका था।।

दिलनशीं = हृदयंगम

मिस्ले-मार = सर्प, साँप की मानिन्द

मुजल्ला = दरपण जैसा फ़र्श

कमाले-हुस्ने-सनाई = कारीगरी का कमाल

پھر اسکے بعد وہ آگے بڑھا تو دیکھتا کیا ہے
کہ ویسا ہی وہاں اک دوسرا فرشِ مجلّا ہے

قدم فوراً بڑھایا اس نے آگے بے خطر ہوکر
یہاں بھی کھا گیا دھوکا گرا وہ آب کے اندر

مگر وہ بوکھلا کر جلد پانی سے نکل آیا
حیا سے کٹ گیا اور اپنی نادانی پہ شرمایا

غلام اور داسیاں ہنسنے لگے اسکی حماقت پر
بھبوکا بن گیا شرمندگی سے اپنی درگت پر

وہاں سے وہ بعجلت چاہتا تھا بس نکل جانا
مگر قسمت کو تھا کچھ اور ہی منظور دکھلانا

بڑھا تیزی سے آگے، سامنے دیوار تھی حائل
مگر "در" جان کر دیوار میں ہونے لگا داخل

پھر اسکے بعد کیا تھا؟ منظرِ حیرت نظر آیا
اسی دیوار سے ساون کا اندھا جا کے ٹکرایا

مزاح وطنز کے نشتر

ہنسی اور قہقہوں کا چاروں جانب سے اٹھا طوفاں
مزاح وطنز کا یاروں کو گویا مل گیا ساماں

نکُل سہدیو ارجن اور دلاور بھیم نے مل کر
چبھوئے قلب میں اسکے، مزاح وطنز کے نشتر

یدھشٹر نے جو دریودھن کو دیکھا تو ترس آیا
پھر اپنے بھائیوں کو روکا، ڈانٹا اور سمجھایا

مگر گھنشام کی شہ پر وہ ہنسنے سے نہ باز آئے
فنِ طعنہ زنی کے سب نے جوہر خوب دکھلائے

کسی نے کہہ دیا اندھے کا اندھا ہے حقیقت میں
ازل سے کور چشمی ہی لکھی ہے اسکی قسمت میں

फिर इसके बाद वह आगे बढ़ा तो देखता क्या है।
कि वैसा ही वहाँ इक दूसरा फ़र्शे-मुजल्ला है।।

क़दम फ़ौरन बढ़ाया, उस ने आगे बे ख़तर होकर।
यहाँ भी खा गया धोका, गिरा वह आब के अन्दर।।

मगर वह, बोखला कर जल्द पानी से निकल आया।
हया से कट गया और अपनी नादानी पे शर्माया।।

गुलाम और दासियाँ हँसने लगे उसकी हिमाक़त पर।
भभूका बन गया शरमिंदगी से, अपनी दुर्गत पर।।

वहाँ से वह, ब उजलत चाहता था बस निकल जाना।
मगर क़िस्मत को था, कुछ और ही मंजूर दिखलाना।।

बढ़ा तेजी से आगे, सामने दीवार थी हाइल।
मगर "दर" जान कर, दीवार में होने लगा दाख़िल।।

फिर इसके बाद क्या था ? मनज़रे-हैरत नज़र आया।
इसी दीवार से सावन का अंधा, जा के टकराया।।

फ़र्शे-मुजल्ला = पानी या दर्पण समान भूमि
आब = पानी
हया = लाज
ब उजलत = शीघ्र
हाइल = खड़ी

मिज़ाह-ओ-तन्ज़ के नश्तर

हँसी और क़हक़हों का चारों जानिब से उठा तूफ़ाँ।
मिज़ाह-ओ-तन्ज़ का यारों को गोया मिल गया सामाँ।।

नकुल, सहदेव, अर्जुन और दिलावर भीम ने मिल कर।
चुभोये क़ल्ब में उसके, मिज़ाह-ओ-तन्ज़ के नशतर।।

युधिष्ठिर ने जो दुर्योधन को देखा तो तरस आया।
फिर अपने भाईयों को रोका, डांटा और समझाया।।

मगर घनश्याम की शह पर वह हँसने से न बाज़ आए।
फ़ने-ताना ज़नी के, सब ने जौहर खूब दिखलाए।।

किसी ने कह दिया अंधे का अंधा है हक़ीक़त में।
अज़ल से कोर-चशमी ही, लिखी है इसकी क़िस्मत में।।

اسی انداز سے چاروں طرف سے اُٹھا آوازہ ۔۔۔ بکھر کر رہ گیا جس سے خرد کا اسکی شیرازہ

ہزاروں پینچ و خم کھاتا ہوا پلٹا رعونت سے

وہاں سے بھاگ نکلا ویر دریودھن خجالت سے

راجہ پانڈو کے نجات پانیکی خوشخبری اور نارد منی کی پیشگوئی

یدھشٹر سے وہ آخر بن ملے واپس چلا آیا ۔۔۔ حسد کا ایک کالا داغ سینے میں چھپا لایا

پھر اسکے بعد ہی نارد منی نے درشن دکھلایا ۔۔۔ یدھشٹر سے مخاطب ہو کے یوں ارشاد فرمایا

مبارک ہو کہ تیرا راجسوئی یگ با برکت ۔۔۔ ہوا ہے کامیاب و کامراں یہ جشنِ پُر عظمت

پتا تیرے جہنم سے نکل کر پہنچے جنت میں ۔۔۔ لیا ایشور نے خوش ہو کر انھیں آغوشِ رحمت میں

طفیلِ یگ اب آساں ہوئی ہے انکی ہر مشکل ۔۔۔ رہِ پُر خار میں صد شکر ہے انکو ملی منزل

علاوہ اسکے اقلیمِ جہاں کی بادشاہت میں ۔۔۔ تو ہی سمراٹ کہلانے کے قابل ہے حقیقت میں

مگر بارہ برس کے بعد اِس سرسبز دھرتی پر

ترے ہاتھوں قلم ہونگے کروڑوں چھتریوں کے سر

इसी अंदाज़ से, चारों तरफ़ से उठ्ठा आवाज़ा।
बिखर कर रह गया जिस से, ख़िरद का उसकी शीराज़ा।।

हज़ारों पेंचो-ख़म, खाता हुआ पलटा रऊनत से।
वहाँ से भाग निकला वीर दुर्योधन खिज़ालत से।।

ख़िरद = बुद्धि
शीराज़ा = बंधन
पेंचोख़म = चक्कर और बल
रऊनत = गर्व
खिज़ालत = शर्म

राजा पांडू के नजात पानेकी ख़ुशख़बरी और नारद मुनि की पेशगोई

युधिष्ठिर से वह आख़िर बिन मिले वापस चला आया।
हसद का एक काला दाग़ सीने में छिपा लाया।।

फिर इसके बाद ही नारद मुनि ने दर्श दिखलाया।
युधिष्ठिर से मुख़ातिब होके यूँ इरशाद फ़रमाया।।

मुबारक हो कि तेरा राजसूय यज्ञ बा बरकत।
हुआ है कामयाबो-कामराँ, यह जश्ने-पुर अज़मत।।

पिता तेरे जहन्नुम से निकल कर, पहुँचे जन्नत में।
लिया ईश्वर ने खुश होकर, उन्हें आग़ोशे-रहमत में।।

तुफ़ैले-यज्ञ अब आसाँ, हुई है उनकी हर मुशकिल।
रहे-पुर-ख़ार में सद शुक्र है, उनको मिली मंज़िल।।

अलावा इसके अक़लीमे-जहाँ की बादशाहत में।
तूही सम्राट कहलाने के क़ाबिल है हक़ीक़त में।।

मगर बारह[१२] बरस के बाद, इस सरसब्ज़ धरती पर।
तेरे हाथों क़लम होंगे करोड़ों क्षत्रियों के सर।।

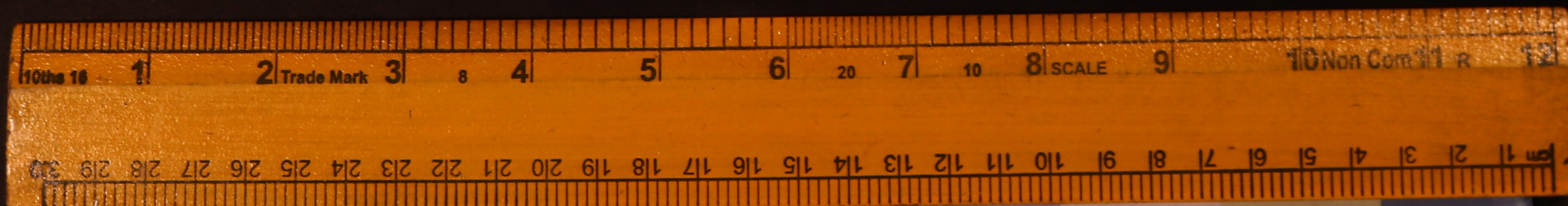
बा बरकत = शुभ
जश्ने-पुर अज़मत = महान समारोह

आग़ोश = गोद

तुफ़ैले-यज्ञ = यज्ञ के कारण
रहे-पुरख़ार = कांटों भरा मार्ग
अक़लीमे-जहां = जगराज्य
सरसब्ज़ = हरी भरी

سلسلہ قماربازی

सिलसिला-ए कुमार बाज़ी



دریودھن کی صحت پر حسد کا اثر

اِدھر پانڈو کا آسودہ تھا نقدِ عیش سے دامن
اُدھر اندر ہی اندر جل رہا تھا قلبِ دریودھن

اثر سوزِ حسد کا پڑ رہا تھا اسکی صحت پر
گراں ہوتا چلا تھا بارِ کد پیہم طبیعت پر

حسد اور دشمنی سے دن بدن ہوتا گیا لاغر
سبب اس ناتوانی کا نہ تھا ہر ایک پر ظاہر

شکونی کو خبر تھی اس لیے وہ ہو گیا مضطر
اور اسکے بعد دریودھن کے والد سے ملا جا کر

بتایا حالِ دریودھن، شکونی نے قرینے سے
کہ دریودھن حسد کی وجہ سے ہے تنگ جینے سے

دھرت راشٹر کے سمجھانے پر دریودھن کا جواب

یہ سنکر باپ نے فوراً ہی دریودھن کو بُلوایا
نہایت پیار سے اپنے جگر گوشہ کو سمجھایا

سُنی باتیں مقدس باپ کی اس نے متانت سے
بہت پُر درد لہجہ میں کہا لیکن سماجت سے

پتاجی سچ ہے جو کچھ آپ نے ارشاد فرمایا
پتہ سوزِ دروں کا آپ نے لیکن نہیں پایا

یہ سچ ہے میری ٹھوکر میں حکومت اور دولت ہے
میں اپنے دشمنوں سے دور ہوں، یہ بھی حقیقت ہے

दुर्योधन की सेहत पर हसद का असर

इधर पांडव का आसूदा था, नक़्दे-ऐश से दामन।
उधर अन्दर ही अन्दर, जल रहा था क़ल्बे-दुर्योधन।।

असर सोज़े-हसद का, पड़ रहा था उसकी सेहत पर।
गिराँ होता चला था बारे-कद, पैहम तबीयत पर।।

हसद और दुश्मनी से दिन ब दिन होता गया लाग़िर।
सबब इस ना तवानी का, न था हर एक पर ज़ाहिर।।

शकुनी को ख़बर थी, इस लिए वह हो गया मुज़तर।
और इसके बाद, दुर्योधन के वालिद से मिला जा कर।।

बताया हाले-दुर्योधन, शकुनी ने क़रीने से।
कि दुर्योधन, हसद की वजह से है तंग जीने से।।

धृतराष्ट्र के समझाने पर दुर्योधन का जवाब

यह सुनकर बाप ने फ़ौरन ही, दुर्योधन को बुलवाया।
निहायत प्यार से अपने, जिगर गोशा को समझाया।।

सुनी बातें मुक़द्दस बाप की, उस ने मतानत से।
बहुत पुर दर्द लहजे में कहा, लेकिन समाजत से।।

पिताजी सच है, जो कुछ आप ने इरशाद फ़रमाया।
पता सोज़े-दरूँ का, आप ने लेकिन नहीं पाया।।

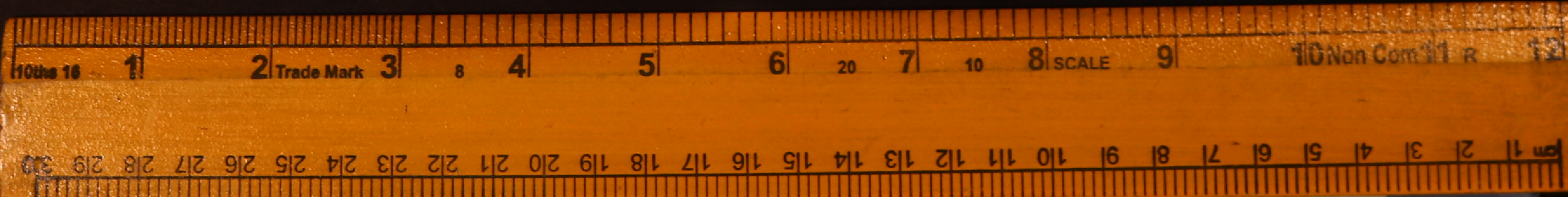
यह सच है मेरी ठोकर में, हुकूमत और दौलत है।
मैं अपने दुश्मनों से दूर हूँ यह भी हक़ीक़त है।।

आसूदा = भरा हुआ
नक़्दे-ऐश = आनंद,
दामन = झोली
क़ल्ब = हृदय
सोज़े-हसद = क्रोध की जलन
गिराँ = भारी
बारे-कद पैहम = हमेशा क्रोध का बोझ
लाग़िर = कमज़ोर
ना तवानी = कमज़ोरी
मुज़तर = बेचैन

जिगर गोशा = दिल का टुकड़ा
मतानत = गंभीरता

सोज़े-दरूँ = छिपी हुई जलन

हक़ीक़त = सत्य



مگر جو ہو چکی ہے راجسوئی یگ میں ذلت
اب اس توہین کے سہنے کی ہے مجھ میں کہاں طاقت

اچانک وہ مرا دھوکے سے گرنا آب کے اندر
اور اسکے بعد پنچالی کا ہنسنا میری دُرگت پر

وہ عالم یاد آتا ہے، تو مجھ کو مارے غیرت کے
پسینے چھوٹ جاتے ہیں خجالت اور ندامت کے

علاوہ اسکے ان کے پاس وہ انبارِ دَولت کا
وہ اشیائے نشاط و کیف اور سامان عشرت کا

نہ جانے کتنے راجے اور مہاراجے یدھشٹر کے
خوشامد میں لگے تھے آج اس فاتح مسخر کے

کہ جس کی یاد سے شعلہ بھڑک اٹھتا ہے سینے میں
بغیرِ مال دنیا میں کہاں ہے لطف جینے میں

کدورت قلب کی معدوم ہوگی صرف یورش سے

یہ باتیں سن کے نابینا پتا بولے محبت سے
کہ تو بھی یگ کر پانڈو کے جیسا شان و شوکت سے

درونہ، کرن، کرپا اور اسوت جیسے شیروں کا
نہیں ہے کوئی بھی مدِ مقابل ان دلیروں کا

انہیں مامور کر تسخیرِ ہفت اقلیم عالم پر
اسی ترکیب سے مالِ غنیمت تو فراہم کر

یہ سُنکر بولا دریودھن کہ سچ ہیں آپ کی باتیں
مگر کس ملک سے لاؤنگا دولت اور سوغاتیں

کہ جب پانڈو نے لے آئی ہے دولت لوٹ کر ساری
بچا ہے کیا جو لے آئینگے اپنے چاروں ہتکاری

بغیرِ مال و زر کیا راجسوئی یگ ہے آساں
نہیں ممکن نہیں اسکے سوا اب جشنِ نورافشاں

मगर जो हो चुकी है राजसूय यज्ञ में ज़िल्लत।
अब इस तौहीन के सहने की है मुझ में कहाँ ताक़त।।

अचानक वह मेरा धोके से गिरना आब के अन्दर।
और इसके बाद पंचाली का हंसना मेरी दुर्गत पर।।

वह आलम याद आता है तो मुझ को मारे ग़ैरत के।
पसीने छूट जाते हैं ख़िजालत और नदामत के।।

अलावा इसके उनके पास वह अंबार दौलत का।
वह अशयाए निशात-ओ-कैफ़ और सामान इशरत का।।

न जाने कितने राजे और महाराजे युधिष्ठिर के।
खुशामद में लगे थे आज इस फ़ातेह मुसख़्ख़िर के।।

कि जिस की याद से, शोला भड़क उठता है सीने में।
बग़ैरे-माल दुनिया में, कहाँ है लुत्फ़ जीने में।।

ख़िजालत = शरमिन्दगी
निशातो-कैफ़ = खुशी की तरंग
इशरत = अनन्द
मुसख़्ख़िर = विज्य करने वाला

कदूरत क़ल्ब की मादूम होगी सिर्फ़ यूरिश से

यह बातें सुन के नाबीना पिता बोले मोहब्बत से।
कि तू भी यज्ञ कर, पांडव के जैसा शानो-शौकत से।।

द्रोणा, कर्ण, कृपा और अश्वत जैसे शेरों का।
नहीं है कोई भी मद्दे-मुक़ाबिल, उन दिलेरों का।।

उन्हें मामूर कर तसख़्ख़ीरे-हफ़्त अक़लीमे-आलम पर।
इसी तरकीब से माले-ग़नीमत तू फ़राहम कर।।

यह सुनकर बोला दुर्योधन कि सच हैं आपकी बातें।
मगर किस मुल्क से, लाऊँगा दौलत और सौग़ातें।।

कि जब पांडव ने ले आई है दौलत लूट कर सारी।
बचा है क्या, जो ले आएंगे अपने चारों हितकारी।।

बग़ैरे-मालोज़र क्या राजसूय यज्ञ है आसाँ।
नहीं, मुम्किन नही, इसके सिवा अब जश्ने-नूरअफ़शाँ।

मद्दे-मुक़ाबिल = आमने-सामने, लडने वाला
सौग़ातें = उपहार, तोहफ़ा
हितकारी = दोस्ती

علاوہ اسکے اک راجہ کے جیتے جی کسی صورت
ہوا ہے اور نہ ہوگا، راجسوئی یگ بابرکت

پتاجی اب سوا اک جنگ کے کوئی نہیں چارا
اہانت کا چلا کرتا ہے سینے پر مرے آرا

نہ ہوگی سرد آتش دشمنی کی رنگ و رامش سے
کدورت قلب کی معدوم ہوگی صرف یورش سے

تہیہ کرلیا ہے پانڈواں کو مَیں نہ چھوڑوں گا
انہیں نیچا دکھا کر ان کی خود بینی کو توڑوں گا

نہ ہوگی فتح جب تک اندرنگری مرے ہاتھوں سے
سکوں مجھ کو نہ آئیگا پتاجی ایسی باتوں سے

شکونی کا مشورۂ قماربازی

شکونی جیسا شاطر بھی وہیں موجود تھا اب تک
مگر اسوقت تک خاموش ہی بیٹھا تھا وہ بیشک

وغا کی اسکی جب باتیں سنی تو اک خیال آیا
نہایت پیار سے پھر اس نے دریودھن کو سمجھایا

کسی بھی حال میں تو فتح ان پر پا نہیں سکتا
وغا میں ہمسری کی تاب ان سے لا نہیں سکتا!

خیالِ خام ہے پانڈو پہ یورش کی تری باتیں
اگر منظور ہو تو مَیں بتاتا ہوں تجھے گھاتیں

عمل میں میری گھاتیں تو اگر لائیگا دریودھن
تو آسانی سے تیرے ہاتھ مارا جائیگا دشمن

بہت آسان ہے ترکیب پانڈو کی تباہی کی
مٹا سکتا ہے ساری شان انکی کجکلاہی کی

اب انکو صرف چوپٹ کھیلنے کی آج دعوت دے
ودرجی کو یدھشٹر کو بلانے کی اجازت دے

انہیں برباد کر دے چھل کپٹ سے جیت کر بازی
نہ کھلنے پائے گا تیرا فریبِ قرعہ اندازی

अलावा इसके इक राजा के, जीते जी किसी सूरत।
हुआ है और ना होगा, राजसूय यज्ञ बा बरकत।।

पिता जी अब सिवा इक जंग के कोई नहीं चारा।
अहानत का चला करता है, सीने पर मेरे आरा।।

न होगी सर्द आतिश दुश्मनी की, रंगो-रामिश से।
कदूरत क़ल्ब की मादूम होगी, सिर्फ़ यूरिश से।।

तहैया कर लिया है, पांडवों को मैं न छोड़ूंगा।
उन्हें नीचा दिखा कर, उन की खुदबीनी को तोड़ूंगा।।

न होगी फ़तह जब तक, इन्द्र नगरी मेरे हाथों से।
सुकूं मुझ को ना आएगा, पिताजी ऐसी बातों से।।

शकुनी का मशविरा-ए-कुमार बाज़ी

शकुनी जैसा शातिर भी, वहीं मौजूद था अब तक।
मगर उसवक़्त तक खा़मोश ही बैठा था वह बेशक।।

वग़ा की उसकी जब बातें सुनी तो इक ख़याल आया।
निहायत प्यार से फिर उस ने, दुर्योधन को समझाया।।

किसी भी हाल में तू फ़तह इन पर पा नहीं सकता।
वग़ा मे हमसरी की ताब, उन से ला नहीं सकता।।

ख़याले-ख़ाम है पांडव पे, यूरिश की तेरी बातें।
अगर मंजूर हो तो, मैं बताता हूँ तुझे घातें।।

अमल में मेरी घातें तू अगर लाएगा दुर्योधन।
तो आसानी से तेरे हाथ, मारा जाएगा दुश्मन।।

बहुत आसान है तरकीब पांडव की तबाही की।
मिटा सकता है सारी शान, उनकी कजकुलाही की ।।

अब उनको सिर्फ़ चौपट खेलने की आज दावत दे ।
विदुर जी को, युधिष्ठिर को बुलाने की इजाज़त दे।।

उन्हे बरबाद कर दे छल कपट से जीत कर बाज़ी ।
न खुलने पाएगा तेरा, फ़रेबे-कुरआ अंदाज़ी ।।

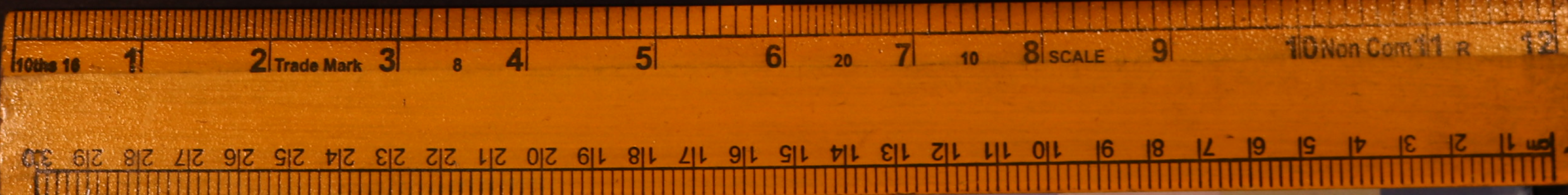
अहानत = अपमान

सर्द = ठंडी
आतिश = आग
रंगो-रामिश = गीत और संगीत
कदूरत = शत्रुता
मादूम = मिट जाएगी
यूरिश = आक्रमण
तहैया = निश्चय
खुदबीनी = घमंड
सुकून = चैन

शातिर = चालाक

फ़तह = विजय
हमसरी = बराबरी
ताब = शक्ति
ख़याले-ख़ाम = ग़लत ख्याल
अमल = कार्य

कुरआ अंदाज़ी = पांसा फेकना।



ناہنجار بیٹے کی ضد

کہا اندھے پِتا نے مشورہ سُنکر شکونی کا — کسی افیونی کا یہ مشورہ ہے یا جنونی کا

کسی صورت عمل پیرا نہ ہونا اس پہ دریودھن — کریگا دھرم کا یہ ناش تیرے دھرم کا دشمن

یہ سُنکر ناخلف کہنے لگا یوں باپ سے اپنے — تماشہ دیکھئے اور دھرم کی باتیں الگ رکھیے

مَیں دشمن کے لیے آخر کروں کیوں دھرم کا پالن — کہ جب دشمن پہ غلبہ مکر سے پانا ہے صد احسن

مجھے اب آپ روکیں گے تو اپنی جان دیدوں گا — کروں گا ہتیا اپنی، قضا کا جام پی لوں گا

جو دیکھا باپ نے اپنے جگر گوشہ کا یہ منظر — کہ ضد اور دشمنی میں رہ گیا ہے عقل ہی کھوکر

تو دیدی باپ نے آخر اجازت اپنے بیٹے کو
مگر دل میں بُرا کہتے رہے قسمت کے ہیٹے کو

دعوتِ قمار بازی کی منظوری

جُوئے کا جشن آخر طے ہُوا دارالحکومت میں — شکونی کامراں تھا واقعی اپنی شرارت میں

وِدُر کو اندر نگری پھر تو دریودھن نے بھجوایا — یدھشٹر کو جُوئے بازی کا جو پیغام دے آیا

ना हन्जार बेटे की ज़िद

कहा अन्धे पिता ने, मशविरा सुनकर शकुनी का।
किसी अफ़यूनी का, यह मशविरा है या जुनूनी का।।

किसी सूरत अमल पैरा न होना इस, पे दुर्योधन।
करेगा धर्म का यह नाश, तेरे धर्म का दुश्मन।।

यह सुनकर ना ख़लफ़ कहने लगा यूँ बाप से अपने।
तमाशा देखिए, और धर्म की बातें अलग रखिए।।

मैं दुश्मन के लिए आख़िर, करूँ क्यों धर्म का पालन।
कि जब दुश्मन पे ग़लबा, मक्र से पाना है सद अहसन।।

मुझे अब आप रोकेंगे, तो अपनी जान देदूँगा।
करूँगा हत्या अपनी, क़ज़ा का जाम पी लूँगा।।

जो देखा बाप ने अपने, जिगर गोशह का यह मंज़र।
कि ज़िद और दुश्मनी में, रह गया है अक़्ल ही खोकर।।

तो देदी बाप ने आख़िर, इजाज़त अपने बेटे को।
मगर दिल में बुरा कहते रहे, क़िस्मत के हेटे को।।

दावते-कुमार बाज़ी की मनज़ूरी

जुए का जश्न आख़िर, तै हुआ दारुल हुकूमत में।
शकुनी कामराँ था, वाक़ई अपनी शरारत में।।

विदुर को इन्द्र नगरी, फिर तो दुर्योधन ने भिजवाया।
युधिष्ठिर को जुए बाज़ी का, जो पैग़ाम दे आया।।

अमल पैरा = कार्य करना
ना ख़लफ़ = कपूत
ग़लबा = छाना
मक्र = छल
सद अहसन = अतिउत्तम
क़ज़ा = मृत्यु
दारुल हुकूमत = राजधानी
कामराँ = सफल
पैग़ाम = संदेश

یدھشٹر کو ملی جس وقت دریودھن کی یہ دعوت
سمجھ میں آگئی اسکے، وہاں کی ساری کیفیت

کہ یہ ظالم شکونی بے حیا خودسر کی سازش ہے
اسی بدبخت ناہنجار کی سب جہد وکاوش ہے

پس پردہ ملوث ہے شکونی اس شرارت میں
نظر آتا ہے اس کا ہاتھ اس کارِ ضلالت میں

وہ چوں کہ کعب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر ہے
جوئے بازی کے فن میں گھاگ ہے ہشیار شاطر ہے

بالآخر چاروں بھائی اور یدھشٹر چل پڑے گھر سے
بلاخوف وخطر نکلے کفن باندھے ہوئے سر سے

ہنگامۂ قمار بازی

کیا پھر بڑھ کے دریودھن نے استقبال پانڈو کا
نہایت مکر سے ہنس ہنس کے پوچھا حال پانڈو کا

پھر اسکے بعد پانڈو کو حسیں ایواں میں ٹھہرایا
تفقد اور رواداری کا منظر خوب دکھلایا

شکونی اور دریودھن تو فرشِ راہ ہوتے تھے
کنیز اور داس بھی ہمراہ خاطر خواہ ہوتے تھے

جوئے بازی کی اسکے بعد اک ہنگامہ آرائی
ہوئی ایسی کہ تختِ بادشاہی تک کی بات آئی

شکونی کعب اپنا پھینکنے میں خوب ماہر تھا
یقیناً جیت جانا ویر دریودھن کا ظاہر تھا

युधिष्ठिर को मिली जिस वक़्त दुर्योधन की यह दावत।
समझ में आगई उसके, वहाँ की सारी कैफ़ियत।।

कि यह ज़ालिम शकुनी, बेहया खुदसर की साज़िश है।
उसी बद-बख़्त ना हंजार की, सब जोहदो-काविश है।।

पसे-परदा मुलव्विस है, शकुनी इस शरारत में।
नज़र आता है उसका हाथ, इस कारे-ज़लालत में।।

वह चूँके कॉब अपना, फैंकने में खूब माहिर है।
जुए बाज़ी के फ़न में घाग है, हुश्यार-ओ-शातिर है।।

बिलआख़िर चारों भाई और युधिष्ठिर चल पड़े घर से।
बिला ख़ौफ़-ओ-ख़तर निकले, कफ़न बाँधे हुए सर से।।

हंगामा-ए-कुमार बाज़ी

किया फिर बढ़के दुर्योधन ने, इस्तक़बाल पान्डव का।
निहायत मक्र से, हँस हँस के पूछा हाल पान्डव का।।

फिर इसके बाद पान्डव को हसीं ऐवाँ में ठहराया।
तफ़क़्कुद और रवादारी का मंज़र खूब दिखलाया।।

शकुनी और दुर्योधन, तो फ़र्शे-राह होते थे।
कनीज़ और दास भी हमराह, ख़ातिर ख़्वाह होते थे।।

जुए बाज़ी की उसके बाद इक हंगामा आराई।
हुई ऐसी, कि तख़्ते-बादशाही तक की बात आई।।

शकुनी कॉब अपना, फैंकने में खूब माहिर था।
यक़ीनन जीत जाना, वीर दुर्योधन का ज़ाहिर था।।

कैफ़ियत = हालत

बेहया = बेशर्म
बदबख़्त = दुर्भाग्य
ना हंजार = बेकार
जोहदो-काविश = परिश्रम
मुलव्विस = शामिल/मिला हुआ
कारे-ज़लालत = पाप के कार्य
कॉब = पांसा

बिला ख़ौफ़ो-ख़तर = बिना किसी भय के

निहायत = अधिक

हसीं ऐवाँ = सुन्दर महल
तफ़क़्कुद = मेहमानदारी
रवादारी = प्रेम और मित्रता
फ़र्शे-राह होना = किसी के स्वागत में ज़मीन तक झुक जाना
कनीज़ = नौकरानी
हमराह = साथ
ख़ातिर ख़्वाह = मनचाहे
हंगामा आराई = शोर चिल्लाहट

جوئے کی دیوی پر تختِ شاہی کے ساتھ
بھائیوں اور بیوی کی بھینٹ

یدھشٹر نے بالآخر یوں تو ہاری سلطنت ساری
مگر پھر بھی رہا مضبوط اور ہمت نہیں ہاری

کیا تاج وحکومت اس نے سب نذرِ قمار اپنا
سوائے سترِ تن کھو بیٹھا ناداں تار تار اپنا

پھر اسکے بعد اس نے جوش میں ایک ایک بھائی کو
لگایا داؤں پر، ہار بیٹھا ہر فدائی کو

جوئے کے دیوتا پر بھینٹ اس کا چڑھ گیا سب کچھ
بچا بنتِ دروپد[۱] کے سوا اسکے نہ پاس اب کچھ

تو دریودھن شکن اپنی جبیں پر ڈال کر بولا
بڑی بے ہودگی سے بھاڑ سا اپنا دہن کھولا

سلامت ہے ابھی جانِ جگر پنچال کی دختر
جوانی کے خزانے کا نہایت قیمتی جوہر

لگادے داؤں پر کیا دیکھتا ہے رُوپ رانی کو
کروں گا جیت کر دو چند اپنی شادمانی کو

یہ سُنتے ہی کرودھت[۲] ہو کے اسکا چڑھ گیا پارا
لگایا داؤں پر اور دخترِ پنچال کو ہارا

حکمِ دریودھن

یہ بازی جیت کر اندازِ شاہانہ سے دریودھن
پرت کامی[۳] سے بولا پانڈوؤں کی جان کا دشمن

۱ یعنی پنچالی۔ ۲ نہایت غصہ۔ ۳ اس نام کا صحیح تلفظ "پرات کامی" ہے۔ شعری ضرورت کے لیے پرت کامی استعمال کیا ہے۔

जुए की देवी पर
तख़्ते-शाही के साथ
भाईयों और बीवी की भेंट

युधिष्ठिर ने बिलआख़िर, यूँ तो हारी सलतनत सारी।
मगर फिर भी रहा मज़बूत, और हिम्मत नहीं हारी।।

किया ताज-ओ-हुकूमत उसने, सब नज़रे-कुमार अपना।
सिवाए सित्र-ए-तन, खो बैठा नादाँ तार तार अपना।।

फिर इसके बाद उसने जोश में एक एक भाई को।
लगाया दावँ पर, और हार बैठा हर फ़िदाई को।।

जुए के देवता पर, भेंट उस का चढ़ गया सब कुछ।
बचा बिन्ते-द्रौपद, के सिवा, उस के न पास अब कुछ।

तो दुर्योधन, शिकन अपनी जबीं पर डाल कर बोला।
बड़ी बेहूदगी से, भाड़सा अपना दहन खोला।।

सलामत है अभी जाने-जिगर, पंचाल की दुख़्तर।
जवानी के ख़ज़ाने का, निहायत क़ीमती जौहर।।

लगादे दावँ पर, क्या देखता है रूप रानी को।
करूंगा जीत कर दो चंद, अपनी शादमानी को।।

यह सुनते ही क्रोधित होके, उसका चढ़ गया पारा।
लगाया दावँ पर, और दुख़्तरे-पंचाल को हारा।।

हुक्मे-दुर्योधन

यह बाज़ी जीत कर, अंदाज़े-शाहाना से दुर्योधन।
[1]परत कामी से बोला, पान्डवों की जान का दुश्मन।।

सलतनत = राज्य

नज़रे-कुमार = जुए की भेंट

सित्र-ए-तन = बदन के कपड़े

बिन्ते-द्रोपद = द्रोपद की पुत्री

शिकन = बल

जबीं = माथे

दोचंद = अधिक से अधिक

शादमानी = प्रसन्नता

१) इस नाम का सही तलफ़्फ़ुज़ 'परात कामी' है। शेरी ज़रूरत के लिए परत कामी इस्तेमाल किया है।

کہ پنچالی کو فوراً جا کے تو لے آ سرِ محفل
بغیر اس ماہ وش کے اب تو جینا ہے مرا مشکل

یہ سُنکر اس نے پنچالی کو فوراً داستاں ساری
سُنا کر التجا کی، اس طرح اس نے بصد زاری

کہ مَیں محکوم ہوں اس میں خطا کچھ بھی نہیں میری
عرق آلودہ ہے خود ہی خجالت سے جبیں میری

شکونی کرن کے ہمراہ دریودھن نے کلتارن[1]
بُلایا ہے تمہیں چلئے میں آیا ہوں اسی کارن

یہ سُنکر پڑ گئی وہ سوچ میں کچھ دیر کی خاطر
کہ مَیں اس آدمی سے کس طرح اور کیا کہوں آخر

دروپدی کے سوال پر پرات کامی کا جواب

خلا میں وہ نظر گاڑے ہوئے پھر اس طرح بولی
کہ جس محفل میں بیٹھی ہو جوئے بازوں کی اک ٹولی

بہو پانڈو کی اور پنچال کے سمراٹ کی دختر
سرِ محفل چلی جائے، وہ آخر بے جھجک کیوں کر

ذرا یہ تو بتا مجھ کو وہاں کتنے مقامر ہیں
درونہ، کور، کرپہ کے علاوہ کون حاضر ہیں

خبر دے مجھ کو کیا پانڈو بھی ہیں اس جشنِ عشرت میں
ودُر کیساتھ کتنے لوگ ہیں انکی معیت میں

کہا اس نے کہ ہاں موجود ہیں اُس جا سبھی سجن
مگر ہیں چترلیکھا کی طرح سب دوست اور دشمن

کسی میں بھی نہیں اب دھرم اور ایمان کی باتیں
لگائے بیٹھے ہیں اک دوسرے کے واسطے گھاتیں

جہاں کا راجہ اندھا اور شکونی منتری[2] ہوگا
علاوہ کرن جیسا ویر یعنی کنتری[3] ہوگا

[1] چراغِ خانداں۔ [2] منتری بمعنی صلاح کار اور ناصح کے لئے گئے ہیں۔ [3] کنتری غلط العام بمعنی ولد الزنا۔

कि पंचाली को फ़ौरन, जाके तू ले आ सरे-महफ़िल।
बग़ैर इस माह वश के, अब तो जीना है मेरा मुश्किल।।

यह सुनकर उस ने पंचाली को फ़ौरन दास्ताँ सारी।
सुना कर इल्तिजा की, इस तरह उस ने बसद ज़ारी।।

कि मैं महकूम हूँ, इस में ख़ता कुछ भी नहीं मेरी।
अर्क़ आलूदा है खुद ही, ख़िजालत से जबीं मेरी।।

शकुनी, कर्ण, के हमराह दुर्योधन ने कुलतारन।
बुलाया है तुम्हें चलिए, मैं आया हूँ इसी कारण।।

यह सुनकर पड़ गई वह सोच में कुछ देर की ख़ातिर।
कि मैं इस आदमी से, किस तरह और क्या कहूँ आख़िर।।

द्रौपदी के सवाल पर परात कामी का जवाब

ख़ला में वह नज़र गाड़े हुए फिर इस तरह बोली ।
कि जिस महफ़िल में बैठी हो, जुए बाज़ों की इक टोली।।

बहु पान्डू की और पंचाल के सम्राट की दुख़्तर।
सरे-महफ़िल चली जाए, वह आख़िर बे झिजक क्योंकर।।

ज़रा यह तो बता मुझ को, वहाँ कितने मुक़ामिर हैं।
द्रोणा, कौर, कृपा, के अलावा कौन हाज़िर हैं।।

ख़बर दे मुझ को क्या, पान्डव भी हैं उस जश्ने-इशरत में।
विदुर के साथ कितने लोग हैं, उनकी मईयत में।।

कहा उस ने कि हाँ, मौजूद हैं उस जा सभी सज्जन।
मगर हैं चित्रलेखा की तरह सब दोस्त और दुश्मन।।

किसी में भी नहीं अब धर्म और ईमान की बातें।
लगाए बैठे हैं, इक दूसरे के वास्ते घातें।।

जहाँ का राजा अंधा, और शकुनी [1]मन्त्री होगा।
अलावा कर्ण जैसा वीर, यानी [2]कन्त्री होगा।।

- सरे-महफ़िल = महफ़िल में
- माह वश = चंद्रमा जैसी
- दास्तां = बातें/ कथा
- इल्तिजा = दुहाई/ फ़रयाद
- बसद ज़ारी = बहुत रो कर
- महकूम = नौकर/ गुलाम
- खता = अपराध
- अर्क़ आलूदा = भिगा हुवा
- ख़िजालत = लाज
- जबीं = माथा
- ख़ला = ऊपर
- मुक़ामिर = जुवारी
- जश्न इशरत = खुशी की महफ़िल
- मईयत = नेतुत्व

१) मन्त्री बमानी सलाह कार और नासेह के लिए गये हैं २) कन्त्री ग़लत-उल्-आम बमानी वल्दुज़्ज़िना।

وہاں اب دھرم اور ایمان کا کیا کام ظاہر ہے　　سوا بے غیرتی کے ہوگا کیا انجام ظاہر ہے

درَوپدی کا دربار میں جانے سے اِنکار

یہ باتیں سُنکے پنچالی یہ بولی خیر کچھ بھی ہو　　مگر میری طرف سے بھیشم سے تم جاکے یہ پوچھو

جہاں موجود ہوں اک بھیشم جیسے مردِ فولادی　　ہوا کردی ہو جس نے خود گرو کی اپنے استادی

اب انکے سامنے کیا لاج اک اَبلا کی جائیگی　　اور اسکے بعد بھی مطلق نہ غیرت ان کو آئیگی

علاوہ اسکے ان سے یہ بھی کہنا نیرِ تاباں　　بجائے شرق نکلے غرب سے باصد جلال و شاں

جو متھیا[1] دھرم سُت بولے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن　　دُھلے "پاتک"[2] نہ گنگا سے تو کہنا یہ بھی ہے ممکن

مگر پنچال کی دختر نہ اس محفل میں جائیگی　　جبیں پر بے حیائی کا نہ ٹیکہ وہ لگائیگی

دریودھن کا پیچ و تاب

یہ سُنکر اس نے دریودھن سے کہدی ساری کیفیت　　کہ جس کو سُنکے اس نے یوں دہن کھولا بایں نخوت

تو اچھا آج وہ بھی ہے شُتر غمزے پہ آمادہ　　کنیزک نے بھی شاید پی لیا ہے کبر کا بادہ

مگر تو پھر سے جا، اس کا ضروری ہے یہاں آنا　　نہ آسانی سے آئے تو، اسے تو کھینچ کر لانا

۱ جھوٹ　۲ گناہ

वहाँ अब धर्म और ईमान का क्या काम ज़ाहिर है।
सिवा बे ग़ैरती के होगा क्या अंजाम ज़ाहिर है।।

द्रौपदी का दरबार में जाने से इन्कार

यह बातें सुनके पंचाली यह बोली, ख़ैर कुछ भी हो।
मगर मेरी तरफ़ से, भीष्म से तुम जाके यह पूछो।।

जहाँ मौजूद हों, इक भीष्म जैसे मर्दे-फ़ौलादी।
हवा कर दी हो जिस ने, खुद गुरू की अपने उस्तादी।।

अब उनके सामने क्या लाज इक अबला की जाएगी।
और इसके बाद भी मुतलक़ न ग़ैरत उनको आएगी।।

अलावा इसके उन से, यह भी कहना नय्यरे-ताबाँ।
बजाए शर्क़, निकले ग़र्ब से, बासद-जलालो-शाँ।।

युधिष्ठिर मिथ्यया बोले, तो कहना यह भी है मुम्किन।
धुले 'पातक' न गंगा से, तो कहना यह भी है मुम्किन।।

मगर पंचाल की दुख़्तर, न उस महफ़िल में जाएगी।
जबीं पर बे हयाई का, न टीका वह लगाएगी।।

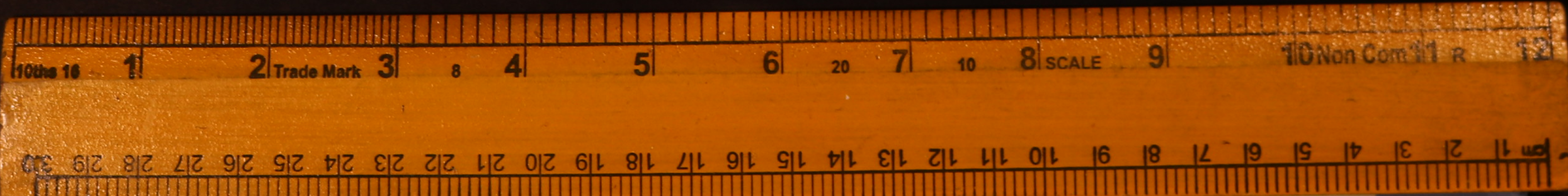
दुर्योधन का पेचो-ताब

यह सुनकर उस ने दुर्योधन से कहदी सारी कैफ़ियत।
कि जिस को सुनके उसने, यूँ दहन खोला बईं निख़्वत।।

तो अच्छा आज वह भी है, शुतुर ग़म्ज़े पे आमादा।
कनीज़क ने भी शायद पी लिया है किब्र का बादा।।

मगर तू फिर से जा, उस का ज़रूरी है यहाँ आना।
न आसानी से आए तो, उसे तू खींच कर लाना।।

ग़ैरत = लाज
नय्यरे-तावां = चमकता सूरज
शर्क़ = पूरब
ग़र्ब = पश्चिम
मिथ्यया = झूट
पातक = गुनाह
बईं निख़्वत = गर्व के साथ
शुतुर ग़म्ज़े = ऊंट के नख़रे
कनीज़क = दासी
बादा = शराब
किब्र = गर्व



کہا اس نے یہ سُنکر آپ جس عورت کے دیور ہوں
پتامہ ہوں خُسر اور پانچوں پانڈو جسکے شوہر ہوں

بتاؤ تو اسے میں کھینچ کر کس دل سے لاؤں گا
بھلا داغِ ملامت کس طرح منہ پر لگاؤں گا

مجھے اب باز رکھیے، باز آیا ایسی خدمت سے
نہ کھیلیں آپ میرے دھرم اور میری شرافت سے

یہ باتیں سُنکے دریودھن ستمگر خوب جھنجلایا
بھری محفل سے اسکو دھکّے دِلوا کر نکلوایا

پھر اپنے بھائی دُشاشن سے بولا خیر! تم جاؤ
وہ جس صورت سے بھی آئے یہاں فوراً اُسے لاؤ

دُشاشن کی چیرہ دستی

یہ سُنتے ہی چلا ابلیس کا ہمساز دُشاشن
کہا اس نے اے داسی منتظر ہے تیرا دریودھن

وہیں تو پوچھ لینا چل کے سب کا دھرم اے داسی
مرے ہمراہ چل مطلق نہ کر اب شرم اے داسی

بس اتنا کہہ کے جھپٹا ماہ وش کی سمت دشاشن
یقیناً چیرہ دستی پر تھا مائل عقل کا دُشمن

یہ حالت دیکھتے ہی خوف سا اک چھا گیا اُسپر
لجاتے خوف کھاتے، بولی پنچالی یہ رک رک کر

نہ چھونا مجھ کو میرے جسم پر ہے صرف اک کپڑا
علاوہ حیض سے ہوں جسم ہے اکڑا ہوا میرا

مگر مردود کیوں اپنے کمینے پن سے باز آتا
رذالت اور سفلہ پن وہ اپنا کیوں نہ دکھلاتا

कहा उसने यह सुनकर, आप जिस औरत के देवर हों।
पितामह हों खुसर, और पाँचों पान्डव जिसके शौहर हों ।।

बताओ तो उसे मैं खींच कर किस दिल से लाऊँगा।
भला दागे़-मलामत, किस तरह मुंह पर लगाऊँगा।।

मुझे अब बाज़ रखिए, बाज़ आया ऐसी ख़िदमत से।
न खेलें आप मेरे धर्म, और मेरी शराफ़त से।।

यह बातें सुनके दुर्योधन सितमगर, खूब झुंजलाया।
भरी महफ़िल से उसको धक्के, दिलवाकर निकलवाया।।

फिर अपने भाई दुश्शाषन से बोला खैर! तुम जाओ।
वह जिस सूरत से भी आए, यहाँ फ़ौरन उसे लाओ।।

दागे़-मलामत = शरमिन्दगी का दाग़

दुश्शाषन की चीरा दस्ती

चीरा दस्ती = आक्रमण

यह सुनते ही चला, इबलीस का हमसाज़ दुश्शाषन।
कहा उस ने ऐ दासी, मुन्तज़िर है तेरा दुर्योधन।।

इबलीस = शैतान
मुन्तज़िर = इच्छुक

वहीं तू पूछ लेना चल के, सब का धर्म ऐ दासी।
मेरे हमराह चल, मुतलक़ न कर, अब शर्म ऐ दासी।।

बस इतना कहके झपटा, माहवश की सम्त दुश्शाषन।
यक़ीनन चीरा दस्ती पर था माईल, अक़्ल का दुश्मन।।

यह हालत देखते ही, ख़ौफ़ सा इक छा गया उसपर।
लजाते, ख़ौफ़ खाते, बोली पंचाली यह रुक रुक कर।।

न छूना मुझ को मेरे जिस्म पर है सिर्फ़ इक कपड़ा।
अलावा हैज़ से हूँ जिस्म है अकड़ा हुआ मेरा।।

हैज़ = माहवारी

मगर मरदूद क्यों अपने कमीने पन से बाज़ आता।
रिज़ालत और सिफ़ला पन, वह अपना क्यों न दिखलाता।।

रिज़ालत = कमीनापन

بالآخر وہ محل کی سمت بھاگی خوف و دہشت سے
اچانک وہ بھی دوڑا اسکے پیچھے فرطِ عجلت سے

فقط دو چار لمحے کی تگ و دو میں اسے پکڑا
اور اپنے آہنی پنجوں میں اس معصوم کو جکڑا

پکڑ کر بال اسکے، کھینچتا ظالم چلا لے کر
گزرتا تھا گماں اس کشمکش سے بس یہی یکسر

کہ عریاں ماہ وش پنچال کی دختر نہ ہو جائے
غبار آلودہ عصمت کا کہیں گوہر نہ ہو جائے

درونہ اور پتامہ کو پسینہ سا نکل آیا

مگر وہ بے زباں صد شکر ہے دربار میں پہنچی
دریدہ ستر، عاجز، مجمعِ اغیار میں پہنچی

اس عالم میں اسے اہلِ طرب نے جب وہاں پایا
درونہ اور پتامہ کو پسینہ سا نکل آیا

انہیں یہ خوف تھا دنیا نہ ہو جائے تہ و بالا
نہ پڑ جائے نظامِ ارض کو تخریب سے پالا

سبھی تھے لرزہ براندام سب پر خوف طاری تھا
مگر ذہنِ پتامہ سوچنے سے آج عاری تھا

دِگر اسکے یہاں موجود تھا اک کرن سا انساں
جو پنچالی کی اس توہین پر تھا شاد اور فرحاں

یہ منظر بھیم نے دیکھا تو جوش آیا، اُبال آیا
اسے بنتِ دروپد کی اہانت پر جلال آیا

مگر سمجھا بجھا کر ویر ارجن نے فراست سے
اسے ٹھنڈا کیا سنجیدگی سے اور متانت سے

बिलआख़िर वह महल की सम्त, भागी ख़ौफ़ो-दहशत से।
अचानक वह भी दौड़ा, उसके पीछे फ़र्ते-उजलत से।।

फ़क़त दोचार लम्हे की तगो-दौ में उसे पकड़ा।
और अपने आहनी पंजों में, उस मासूम को जकड़ा।।

पकड़ कर बाल उसके खींचता, ज़ालिम चला लेकर।
गुज़रता था गुमाँ इस कशमकश से बस यही यकसर।।

कि उरयाँ माह वश पंचाल की दुख़्तर न हो जाए।
गुबार आलूदा, असमत का कहीं गौहर न हो जाए।।

द्रोणा और पितामह को
पसीना सा निकल आया

मगर वह बेज़बाँ सद शुक्र है दरबार में पहुँची।
दरीदा सित्र, आजिज़ मजमए-अग़यार में पहुँची।।

इस आलम में उसे अहले-तरब ने जब वहाँ पाया।
द्रोणा और पितामह को पसीना सा निकल आया।।

उन्हे यह ख़ौफ़ था, दुनिया न हो जाए तहो-बाला।
न पड़ जाए निज़ामे-अर्ज़ को तख़रीब से पाला।।

सभी थे लरज़ा बर अन्दाम, सब पर ख़ौफ़ तारी था।
मगर ज़हने-पितामह, सोचने से आज आरी था।।

दिगर इसके यहाँ मौजूद था, इक कर्ण सा इन्साँ।
जो पंचाली की इस तौहीन पर, था शाद और फ़रहाँ।।

यह मंज़र भीम ने देखा, तो जोश आया, उबाल आया।
उसे बिन्ते-द्रौपद की, अहानत पर जलाल आया।।

मगर समझा बुझा कर, वीर अर्जुन ने फ़िरासत से।
उसे ठंडा किया संजीदगी से, और मतानत से।।

फ़र्ते-उजलत = शीघ्रता से
कशमकश = खींचा तानी
दरीदा सित्र = फटे कपड़े
आजिज़ = मजबूर
मजमए-अगयार = शत्रू दल
तहो-बाला = उलट पुलट
तख़रीब = टूट फूट
लरज़ा बर अन्दाम = कांपते हुए
आरी = ख़ाली
शाद और फ़रहाँ = खुश
मतानत = गंभीरता से



پنچالی کی بے بسی

فضائے جشنِ عشرت سے گھٹن محسوس ہوتی تھی
رذیلوں کی حماقت پر شرافت خون روتی تھی

سراسیمہ تھی پنچالی کمینوں کی شرارت سے
ہراساں تھی چھڑائے کون اسکو اس مصیبت سے

کبھی وہ بےرُخی سے اور کبھی یکلخت گھبرا کر
نظر پانڈو پہ اپنی ڈال دیتی غم سے شہ پاکر

مخاطب جونہی پانڈو سے ہوئی ایکبار پنچالی
یدھشٹر کی حیا سے جھک گئی پھر گردنِ عالی

یہ منظر دیکھتے ہی بولا دشاشن کہ اے ابسن
اُدھر کیا دیکھتی ہے دیکھ ادھر بیٹھا ہے دریودھن

تجھے ہم نے جوئے میں جیت کر لونڈی بنایا ہے
اور اس دربار میں داسی سمجھ کر تجھ کو لایا ہے

بتاؤ تو لگام اس کے دہن میں کون دے آخر

یہ سنتے ہی پتامہ سے کہا اس نے سرِ محفل
تمہارے سامنے داسی یہ کہتا ہے مجھے جاہل

مگر تم ہو کہ چپ سادھے ہوئے بیٹھے ہو محفل میں
نہیں ہے عزت و ناموس کا احساس کیا دل میں

بتاؤ تو لگام اسکے دہن میں کون دے آخر
مری بے عزتی کا انتقام اب کون لے آخر

پتامہ نے کہا اے کنیا اے غم زدہ دختر
تری بے عزتی سے خوف سا چھایا ہے اک دل پر

اہانت سے تری خطرہ ہے دنیا کی تباہی کا
اُلٹ جائے نہ تختہ کُل جہاں کی بادشاہی کا

पंचाली की बेबसी

फ़ज़ाए जश्ने-इशरत से, घुटन मैहसूस होती थी।
रज़ीलों की हिमाक़त पर, शराफ़त खून रोती थी।।

सरा सीमा थी पंचाली, कमीनों की शरारत से।
हिरासाँ थी छुड़ाए कौन, उसको इस मुसीबत से।।

कभी वह बेरुख़ी से और कभी यकलख़्त घबरा कर।
नज़र पान्डव पे अपनी डाल देती, ग़म से शैह पा कर।।

मुख़ातिब जूँ ही पान्डव से हुई इक बार पंचाली।
युधिष्ठिर की हया से झुक गई फिर गर्दने-आली।।

यह मंज़र देखते ही, बोला दुश्शाषन कि ऐ अबसन।
उधर क्या देखती है, देख इधर बैठा है दुर्योधन ।।

तुझे हमने जुए में जीत कर लौन्डी बनाया है।
और इस दरबार में दासी, समझ कर तुझको लाया है।।

बताओ तो लगाम इस के दहन में कौन दे आख़िर

यह सुनते ही पितामह से कहा उस ने सरे-महफ़िल।
तुम्हारे सामने दासी मुझे, कहता है यह जाहिल।।

मगर तुम हो कि चुप साधे, हुए बैठे हो महफ़िल में।
नहीं है इज़्ज़तो-नामूस का, एहसास क्या दिल में ।।

बताओ तो लगाम उस के दहन में कौन दे आख़िर।
मेरी बेइज़्ज़ती का इन्तेक़ाम, अब कौन ले आख़िर।।

पितामह ने कहा ऐ कन्या, ऐ ग़मज़दा दुख़्तर।
तेरी बेइज़्ज़ती से ख़ौफ़ सा छाया है इक दिलपर।।

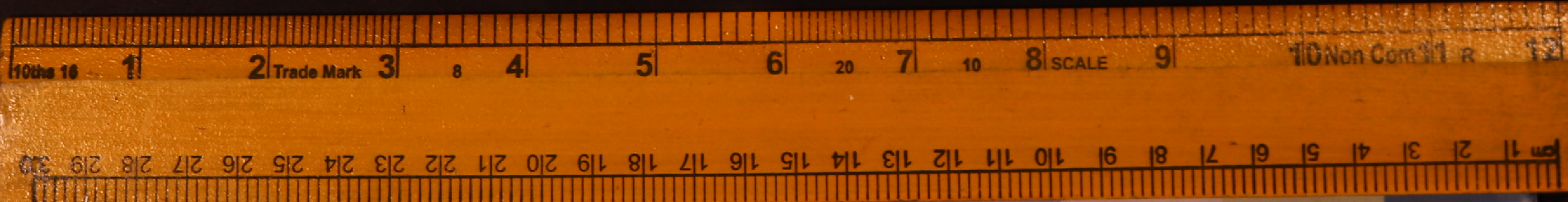
अहानत से तेरी ख़तरा है दुनिया की तबाही का ।
उलट जाए ना तख़्ता कुल जहाँ की बादशाही का।।

फ़ज़ाए जश्ने-इशरत = आनंद और खुशी का माहौल
सरा सीमा = डरी हुई

यक लख़्त = अचानक
शैह = बल

हया = शर्म
आली = उंची

इन्तेक़ाम = बदला
बेइज़्ज़ती = अपमान



یہی ہے وجہ جو آنکھوں کو ہم نے بند رکھا ہے
زباں کو اپنی سی کر اس لیے ہر چند رکھا ہے

نگاہِ دوربینِ عدل دھوکا کھا نہیں سکتی

پھر اسکے بعد دریودھن نے پوچھا سب مقامر سے
کہ پنچالی کو میں نے کیا نہیں جیتا یدھشٹر سے

جو تھے اہلِ طرب خاموش تھے اس بات کو سنکر
بوجہ خوف کوئی بھی نہ اس کو دے سکا اتر

مگر نامِ وکرن اک اس کا بھائی بھی وہیں پر تھا
کہا اس نے سبھا والوں سے اے لوگو یہ ڈر کیسا

کہو تم دھرم اور انصاف کی جو بات ہو کھل کر
کسی کے خوف سے خاموش رہ جانا نہیں بہتر

یدھشٹر نے سرِ دربار پہلے خود کو ہارا ہے
جوئے پر اس نے اپنے بعد پنچالی کو وارا ہے

یہ اک نکتہ ہے قانونی کہ جس پر آپ کو مائل
مجھے کرنا ہے سنئے صاحبانِ زینتِ محفل

حقیقت ہے جوئے میں جس نے پہلے خود کو ہارا ہو
پھر اپنی بھاریہ کو گھاٹ پر جس نے اتارا ہو

اسے کیا حق پہنچتا ہے، کہو قانون کی رُو سے
لگائے داؤں پر اوروں کو جو آئینی پہلو سے

یقیناً اس طرح پنچالی جیتی جا نہیں سکتی
نگاہِ دوربینِ عدل دھوکا کھا نہیں سکتی

यही है वजहा जो आँखों को हमने बंद रखा है।
जुबाँ को अपनी सी कर, इसलिए हरचंद रखा है।।

वजहा = कारण
हरचंद = हर वक़्त

निगाहे-दूरबीने-अद्ल धोका खा नहीं सकती

फिर इसके बाद दुर्योधन ने पूछा सब मुक़ामिर से।
कि पंचाली को मैं ने क्या नहीं जीता युधिष्ठिर से।।

मुक़ामिर = जुवा खेलने वाले

जो थे अहले-तरब, ख़ामूश थे इस बात को सुनकर।
ब वज्हे-ख़ौफ़ कोई भी, न उस को दे सका उत्तर।।

अहले-तरब = सभा का हर व्यक्ति
ब वज्हे-ख़ौफ़ = भय के कारण

मगर नामे 'विकर्ण' इक उस का भाई भी वहीं पर था।
कहा उसने सभा वालों से, ऐ लोगो यह डर कैसा।।

कहो तुम धर्म और इन्साफ़ की, जो बात हो खुल कर।
किसी के ख़ौफ़ से ख़ामूश रह जाना नहीं बेहतर।।

युधिष्ठिर ने सरे दरबार, पहले खुद को हारा है।
जुए पर उसने अपने बाद, पंचाली को वारा है।।

यह इक नुकता है क़ानूनी, कि जिस पर आप को माईल।
मुझे करना है सुनिए, साहेबाने-ज़ीनते-महफ़िल।।

ज़ीनते-महफ़िल = सभा के आदरणीय लोग

हक़ीक़त है जुए में जिस ने पहले खुद को हारा हो।
फिर अपनी भारय को घाट पर जिस ने उतारा हो।।

उसे क्या हक़ पहुँचता है, कहो क़ानून की रूसे।
लगाए दांव पर औरों को, जो आईनी पहलू से।।

रूसे = अनुसार
आईनी = क़ानूनी

यक़ीनन इसतरह पंचाली, जीती जा नहीं सकती।
निगाहे-दूरबीने-अद्ल धोका खा नहीं सकती।।

निगहे-दूरबीने-अद्ल = दूर तक देखने वाली इन्साफ़ की आंख

تعجب ہے مجھے قانون کی اس موشگافی پر

یہ سنکر اک خوشی کی لہر دوڑی بزمِ عشرت میں
صدا تحسین کی گونجی فضائے خوف و دہشت میں

یہ رنگِ بزم، دریودھن نے دیکھا تو کہا جل کر
تعجب ہے مجھے قانون کی اس موشگافی پر

یہ ہے دربار میرا اس جگہ میری حکومت ہے
مرے احکام کا پابند ہر فردِ ریاست ہے

اسی کے تحت سن اے وِکرن اب حکم دیتا ہوں
اور اپنے آہنی دستور سے یوں کام لیتا ہوں

لہٰذا اب اتروا تا ہوں کپڑے انکے جسموں سے
غرور و خودسری سے جنکے سینے آج ہیں اکڑے

دروپد کنیا بھی اس سے مستثنیٰ نہیں ہوگی
انھیں کیساتھ اب یہ بھی برہنہ بالیقیں ہوگی

پکڑ کر اس نے پوشاکِ تنِ گلرو کو پھر کھینچا

یہ حکمِ ناروا سنتے ہی پانڈو نے بصد عجلت
اتاریں اپنی پوشاکیں بغیر حیلہ و حجت

پھر اسکے بعد دشاشن پری تمثال کی جانب
ہدایت کرن کی پاکر ہوا مردود یوں راغب

کہ ڈالا ہاتھ اسکے ستر پر اور اک سرا پکڑا
پکڑ کر اس نے پوشاکِ تنِ گلرو کو پھر کھینچا

तअज्जुब है मुझे क़ानून की इस मूशगाफ़ी पर

यह सुनकर इक खुशी की लहर दौड़ी बज़्मे-इशरत में।
सदा तहसीन की गूंजी, फ़ज़ाए ख़ौफ़-ओ-दहशत में।।

यह रंगे-बज़्म, दुर्योधन ने देखा तो कहा जल कर।
तअज्जुब है मुझे क़ानून की, इस मूशगाफ़ी पर।।

यह है दरबार मेरा इस जगह मेरी हुकूमत है।
मेरे अहकाम का पाबन्द हर फ़र्दे-रियासत है।।

इसी के तहत सुन, ऐ विकर्ण अब हुक्म देता हूँ।
और अपने आहनी दस्तूर से, यूँ काम लेता हूँ।

लेहाज़ा अब उतर वाता हूँ कपड़े उनके जिस्मों से।
गरूर-ओ-खुदसरी से जिनके सीने आज हैं अकड़े।।

द्रौपद कन्या भी इस से मुसतसना नहीं होगी।
उन्ही के साथ अब यह भी बरहना बिल यक़ीं होगी।।

पकड़ कर उस ने पोशाके-तने-गुलरू को फिर खींचा

यह हुक्मे-नारवा सुनते ही पान्डव ने बसद उजलत।
उतारीं अपनी पोशाकें बगैरे-हीला-ओ-हुज्जत।।

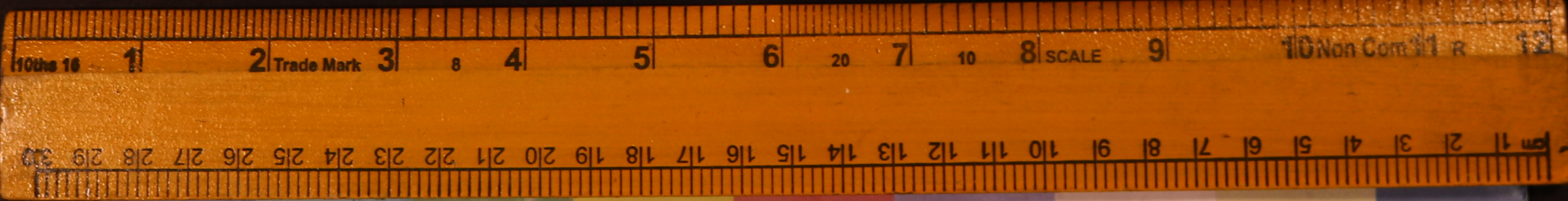
फिर इसके बाद दुश्शाषन परी तमसाल की जानिब।
हिदायत कर्ण की पाकर, हुआ मरदूद यूँ राग़िब।।

कि डाला हाथ उसके सित्र पर और इक सिरा पकड़ा।
पकड़ कर उस ने पोशाके-तने-गुलरू को फिर खींचा।।

बज़्मे-इशरत = खुशी की सभा
सदा = आवाज़
तहसीन = प्रसन्नता
मूशगाफ़ी = बाल की खाल उधेड़ना
अहकाम = आदेश
हर फ़र्दे-रियासत = राज्य का हर व्यक्ति
आहनी दस्तूर = शक्तिशाली क़ानून

मुसतसना = अलग किया गया, वंचित

बसद उजलत = शीघ्रताके साथ
पोशाक = कपड़े
हीला व हुज्जत = बगैर किसी बहाने के
परी तमसाल = परी समान
हिदायत = आदेश
पोशाके-तने-गुलरू = फूल जैसी कन्या के शरीर के कपड़े



یہ حالت دیکھ کر اہلِ طرب نے شرم سے گردن
جھکا کر اپنی آنکھیں بند کر لیں لاج کے کارن

دروپد کنیا کے خرمنِ ہوش و فراست پر
حیا اور ناامیدی کی گری اک برق لہرا کر

غرض ہر سمت سے مایوس ہو کر نازشِ گلشن
بہ چشمِ نم کیا اس نے شری گھنشام کا سمرن

ہُوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا

اثر فریادِ پنچالی نے آخر اپنا دکھلایا
اسے گھنشیام جی نے غائبانہ ستر پہنچایا

وہ جوں جوں کھینچتا تھا ستر جسمِ ناز پرور سے
نکلتے جا رہے تھے ستر، زیرِ ستر اندر سے

وہ اتنی دیر تک کھینچا کیا پوشِ تنِ گل رُو
کہ جس کی وجہ سے شل پڑ گئے مردود کے بازو

یوں ہی جاری رہا یہ سلسلہ ابلیس پُرفن کا
ہوا لیکن نہ کپڑا ختم اس معصوم کے تن کا

یہاں تک لگ گیا اک ڈھیر کپڑوں کا سرِ محفل
پچاسوں رنگ کے نیلے ہرے اور قرمزی مائل

یہ لیلا دیکھ کر اہلِ طرب حُسنِ اطاعت سے
شری گھنشیام جی کا نام لیتے تھے عقیدت سے

यह हालत देख कर अहले-तरब ने, शर्म से गर्दन।
झुका कर अपनी आँखें, बन्द कर लीं लाज के कारण।।

द्रौपद कन्या के ख़िरमने-होश-ओ-फ़िरासत पर।
हया और ना उम्मीदी की गिरी, इक बर्क़ लहराकर।।

ग़रज़ हर सम्त से, मायूस होकर नाज़िशे-गुलशन।
ब चश्मे-नम किया उस ने, श्री घनश्याम का स्मरण।।

हुआ लेकिन न कपड़ा ख़त्म उस मासूम के तन का

असर फ़रयादे-पंचाली ने आख़िर अपना दिखलाया।
उसे घनश्यामजी ने, ग़ायबाना सित्र पहुँचाया।।

वह जूँ जूँ खींचता था सित्र, जिस्मे-नाज़ परवर से।
निकलते जारहे थे सित्र, ज़ेरे-सित्र अन्दर से।।

वह इतनी देर तक खींचा किया, पोशे-तने-गुल रू।
कि जिसकी वजह से, शल पड़गए मरदूद के बाज़ू।।

यूँही जारी रहा यह सिलसिला, इबलीस पुर-फ़न का।
हुआ लेकिन न कपड़ा ख़त्म, उस मासूम के तन का।।

यहाँ तक लग गया इक ढेर, कपड़ों का सरे-महफ़िल।
पचासों रंग के नीले हरे, और क़िरमिज़ी माइल।।

यह लीला देखकर अहले-तरब हुस्ने-अताअत से।
श्री घनश्यामजी का नाम, लेते थे अक़ीदत से।।

अहले-तरब = सभा में उपस्थित लोग
ख़िरमने-होश-ओ-फ़िरासत = बुद्धी का धन
हया = लाज
ना उम्मीदी = निराश
बर्क़ = बिजली
नाजिशे-गुलशन = बाग़ के लिए गर्व का कारण
ग़ायबाना = छुपकर
जूँ जूँ = जैसे जैसे
जिस्मे-नाज़ परवर = नाज के साथ पला हुआ शरीर
सित्र ज़ेरे-सित्र = कपड़े के अन्दर से कपड़ा
पोशे-तने-गुलरू = फूल जैसी कन्या के शरीर के कपड़े
शल = बेजान
क़िरमिज़ी माइल = लाल रंग की तरहा
हुस्ने-अताअत = आदर के साथ
अक़ीदत = श्रद्धा

بھیم کی پرتگیا

بہر صورت نہ عریاں ہو سکی پنچال کی دختر
بھرے دربار میں عزت بچائی شیام نے آکر

لہو کے گھونٹ پی پی کر ابھی تک بھیم بیٹھا تھا
نہ اب تک ایسا منظر اسکی چشمِ سر نے دیکھا تھا

اچانک اٹھ کے آسن سے پکارا اے سبھا والو
نہیں ہے ضبط کا اب مجھ کو یارا اے سبھا والو

سنو پرتگیا میری میں اب اعلان کرتا ہوں
تمہارے سامنے اس بات کا پیمان کرتا ہوں

پیوں گا میں نہ جب تک خون دشاشن کے سینے کا
مٹے گا اس گھڑی تک داغ سینے سے نہ کینے کا

پیا میں نے نہ اس کا تین چلّو خون، اگر لوگو
لگے یہ پاپ کپڑا کھینچنے کا میرے سر، لوگو

تعجّب ہے اندھیرا مخزنِ انوار کہلائے

دروپد کنیا بولی پتی ورتا ہوں میں ساجن
مری توہین کا بدلہ فقط ہے مرگِ دشاشن

یہ سنکر کرن بولا، یہ بھی دعویٰ خوب ہے تیرا
بیانِ پارسائی کا نیا اسلوب ہے تیرا

ہوں جسکے پانچ شوہر وہ پتی ورتا کہی جائے
تعجّب ہے اندھیرا مخزنِ انوار کہلائے

پھر اسکے بعد دریودھن نے اپنی ران دکھلا کر
کہا بنتِ دروپد سے ادھر آ بیٹھ جا اِس پر

भीम की प्रतिज्ञा

बहर सूरत न उरयाँ हो सकी पंचाल की दुख़्तर।
भरे दरबार में इज़्ज़त बचाई श्याम ने आकर।।

लहू के घूँट पी पी कर, अभी तक भीम बैठा था।
न अब तक ऐसा मन्ज़र, उसकी चश्मे-सर ने देखा था।।

अचानक उठ के आसन से पुकारा, ऐ सभा वालो।
नहीं है ज़ब्त का अब मुझ को यारा, ऐ सभा वालो।।

सुनो प्रतिज्ञा मेरी, मैं अब एलान करता हूँ।
तुम्हारे सामने इस बात का, पैमान करता हूँ।।

पिऊँगा मैं न जब तक ख़ून, दुश्शाषन के सीने का।
मिटेगा उस घड़ी तक दाग़, सीने से न कीने का।।

पिया मैं ने, न उस का तीन चुल्लू ख़ून, अगर लोगो।
लगे यह पाप, कपड़ा खींचने का, मेरे सर लोगो।।

बहर सूरत = किसी प्रकार
उरयाँ = नंगी
मन्ज़र = दृश्य
ज़ब्त = धीरज
पैमान = प्रतिज्ञा

तअज्जुब है अन्धेरा मख़ज़ने-अनवार कहलाए

द्रौपद कन्या बोली, पतिवरता हूँ मैं साजन।
मेरी तौहीन का बदला, फ़क़त है मर्गे-दुश्शाषन।।

यह सुनकर कर्ण बोला यह भी दावा ख़ूब है तेरा।
बयाने-पारसायी का नया असलूब है तेरा।।

हों जिसके पाँच शौहर, वह पतिवरता कही जाए।
तअज्जुब है अन्धेरा, मख़ज़ने-अनवार कहलाए।।

फिर इसके बाद दुर्योधन ने अपनी रान दिखलाकर।
कहा बिन्ते-द्रौपद से, इधर आ बैठ जा इस पर।।

तौहीन = अपमान
मर्ग = मृत्यु
बयाने-पारसाई = पारसाई का बयान
असलूब = ढंग
मख़ज़ने-अनवार = प्रकाश का भंडार

یہ سُنکر بھیم بولا تجھ کو ظالم مَیں نہ چھوڑونگا
تِری اس ران ہی کو گُرزِ فولادی سے توڑونگا

علاوہ اسکے مَیں اس بات کا اعلان کرتا ہوں
نہ بخشوں گا گروہِ کَورَ کو پیمان کرتا ہوں

دھرت راشٹر کا وَردان

وِدُر نے بھیم کو ڈوبا ہُوا جب غیظ میں پایا
انھیں فوراً زمانے کی تباہی کا خیال آیا

کہا نابینا راجہ سے کہ رکشا آپ فرمائیں
تسلّی دیں دروپد کنیا کو اور سمجھائیں

کہا راجہ نے بیشک تُو پتی ورتا ہے اے بیٹی
کہ دریودھن نے کی ہے تیری اس دربار میں ہیٹی

مگر تُو نے تحمّل کا نہ چھوڑا ہاتھ سے دامن
لہٰذا تجھ سے خوش ہوں مانگ لے وردان کُلتارن ٥

یہ سُنکر دخترِ پنچال نے خوش ہو کے وَر مانگا
خلاصی شوہروں کی مانگ کر اذنِ سفر مانگا

علاوہ اسکے جو کچھ ضبط ہیں ہتیار اور پوشش
اسی کیساتھ بخشیں ایک رتھ اے صاحبِ دانش

سلیقہ مند راجہ نے کیا وردان کو پورا
بزرگی کا بھرم رکھا، کیا پیمان کو پورا

بہ سرعت قبلِ یورش فاتحِ اقلیم کو روکا

اچانک برسرِ محفل کسی نے طنز کا نشتر
چلایا بے تکلّف پانڈوں کے قلبِ مضطر پر

٥ خاندان کا چراغ۔

यह सुनकर भीम बोला, तुझ को ज़ालिम मैं न छोडूँगा।
तेरी इस रान ही को गुर्ज़े-फ़ौलादी से तोडूँगा।।

अलावा इसके मैं इस बात का एलान करता हूँ।
न बख़्शूँगा गिरोहे-कौर को, पैमान करता हूँ।।

गिरोहे-कौर = कौरों की टोली

धृतराष्ट्र का वरदान

विदुर ने भीम को डूबा हुआ, जब ग़ैज़ में पाया।
उन्हे फ़ौरन ज़माने की तबाही का ख़याल आया।।

गैज़ = क्रोध

कहा नाबीना राजा से कि रक्षा आप फ़रमाएँ।
तसल्ली दें, द्रौपद कन्या को और समझाएँ।।

कहा राजा ने बेशक, तू पतिवरता है ऐ बेटी।
कि दुर्योधन ने की है, तेरी इस दरबार में हेटी।।

मगर तूने तहम्मुल का, न छोड़ा हाथ से दामन।
लेहाज़ा तुझ से खुश हूँ, मॉग ले वरदान कुलतारन।।

तहम्मुल = धिरज
कुलतारण = ख़ानदान का चिराग़

यह सुनकर दुख़्तरे-पंचाल ने खुश हो के वर माँगा।
ख़लासी शौहरों की माँग कर, इज़्ने-सफ़र माँगा।।

अलावा इसके जो कुछ ज़ब्त हैं हत्यार और पोशिश।
इसी के साथ बख़्शें, एक रथ ऐ साहबे-दानिश।।

पोशिश = कपड़े
साहबे-दानिश = बुद्धिमान लोग

सलीक़ा मन्द राजा ने, किया वरदान को पूरा।
बुजुर्गी का भरम रक्खा, किया पैमान को पूरा।।

ब सुरअत क़ब्ले-यूरिश फ़ातेह अक़लीम को रोका

अचानक बरसरे-महफ़िल किसी ने तन्ज़ का नश्तर।
चलाया बे तकल्लुफ़ पान्डवों के क़ल्बे-मुज़तर पर।।

क़ब्ले-यूरिश = आक्रमण से पहले
बरसरे-मैहफ़िल = सभा के अन्दर
नश्तर = चाकू
क़ल्बे-मुज़तर = बेचैन हृदय

که آخر بحرِ غم میں کشتیٔ امن و اماں بنکر — وہی کم زور عورت کام آئی وقت پڑنے پر

سُنی جب بھیم نے یہ بات تو بولا مشیخت سے — کبھی ہم نے سہارا اور مدد چاہی نہ عورت سے

ہمارے بازوؤں میں آج بھی قوت ہے طاقت ہے — فنا کے گھاٹ تم جیسوں کو پہنچانے کی قدرت ہے

یہ کہہ کر بھیم لپکا گُرز لیکر سمت دُریودھن — لرز کر رہ گئے جس سے شکونی کرن دُشاشن

مگر فوراً یدھشٹر نے دلاور بھیم کو روکا
بہ سُرعت قبلِ یورش فاتحِ اقلیم کو روکا

پانڈوؤں کی واپسی

ہُوا خوش کور راجہ آج اِعدامِ یدھشٹر سے — کہ اک فتنہ ابھر کر دب گیا تھا جس مدبر سے

مخاطب ہو کے پانڈو سے کہا اس نے محبت سے — کہ تم کو دُکھ بہت پہنچا ہے دریودھن کی حرکت سے

بھرے دربار میں ناداں نے کم ظرفی دکھائی ہے — معاف اسکی خطا کردو تمہارا یہ بھی بھائی ہے

یہ لو کپڑے تمہارے ان کو پہنو اور گھر جاؤ — سنبھالو اپنا سنگھاسن یہاں سے بے خطر جاؤ

یہ سُنکر چل پڑے عجلت سے پانڈو اور پنچالی
مگر دل میں کدورت لیکے لوٹے اندر کے والی

कि आख़िर बहरे ग़म में, कश्तीए-अम्नो-अमाँ बनकर।
वही कमज़ोर औरत, काम आई वक़्त पड़ने पर।।

सुनी जब भीम ने यह बात, तो बोला मशीख़त से।
कभी हम ने सहारा और मदद चाही न औरत से।।

हमारे बाजुओं में आज भी कुव्वत है ताक़त है।
फ़ना के घाट तुम जैसों को, पहुँचाने की कुदरत है।।

यह कहकर भीम लपका गुर्ज़ लेकर सम्ते-दुर्योधन।
लरज़कर रह गए जिस से, शकुनी, कर्ण, दुश्शाषन।।

मगर फ़ौरन युधिष्ठिर ने, दिलावर भीम को रोका।
ब सुरअत कब्ले-यूरिश फ़ातेह अक़लीम को रोका।।

बहरेग़म = दुःख का तुफ़ान
कश्तीए-अम्नो-अमाँ = शांति की नाव
मशीख़त = घमन्ड
सम्ते-दुर्योधन = दुर्योधन की ओर
फ़ातेह अक़लीम = किसी राज्य के विजयता

पांडवों की वापसी

हुआ खुश कौर राजा आज एदामे-युधिष्ठिर से।
कि इक फ़ितना उभर कर दब गया था जिस मुदब्बिर से।।

मुख़ातिब हो के, पान्डव से कहा उसने मोहब्बत से।
कि तुम को दुख बहुत पहुँचा है, दुर्योधन की हरकत से।।

भरे दरबार में नादाँ ने कम ज़रफ़ी दिखाई है ।
माफ़ उसकी ख़ता करदो, तुम्हारा यह भी भाई है।।

यह लो कपड़े तुम्हारे इनको पहनो और घर जाओ।
संभालो अपना सिंहासन, यहाँ से बे ख़तर जाओ।।

यह सुनकर चल पड़े उजलत से पान्डव और पंचाली।
मगर दिल में कदूरत, लेके लौटे इन्द्र के वाली।।

एदाम = निर्णय
मुदब्बिर = बुद्धिमान
हरकत = कार्य
नादाँ = मुर्ख
कम ज़रफ़ी = मुर्खता
ख़ता = दोश
बेख़तर = निर्भय

قماربازی کے دوبارہ مشورے

ہوئے جس وقت پانڈو کورواں کے شہر سے رخصت
تو دریودھن کے قلبِ بدگماں پر چھا گئی دہشت

کہا اپنے پتا سے پانڈواں سے مجھکو کھٹکا ہے
مجھے انکی روش پر کُل کی بربادی کا خطرہ ہے

وہ اپنے انتقامی جوش سے باز آ نہیں سکتے
دماغ و قلب پر اپنے وہ قابو پا نہیں سکتے

لہٰذا راستے میں ہونگے ان کو آپ رکوا دیں
کسی کو بھیج کر فوراً یہاں پانڈو کو بلوا لیں

کہ انکے ساتھ میں کھیلونگا ایسی آخری بازی
کہ ماضی انکی حالت پر کرے ہر لمحہ غمازی

وہ ایسی شرط ہوگی جو بھی اس بازی کو ہارے گا
وہ بارہ[١٢] سال جیون اپنا جنگل میں گزارے گا

علاوہ اسکے وہ اک سال تک خفیہ طریقے پر
گزارے گا پھر اپنی زندگی گوشہ نشیں ہو کر

نہ چھپ کر رہ سکا اس دور میں وہ بخت کا مارا
تو بارہ[١٢] سال پھر اسکو بتانا ہوگا دوبارہ

آخری بازی

یہ باتیں ہو چکیں تو کرن کو راجہ نے بھجوایا
وہ آدھے راستے سے پانڈوؤں کو جا کے لے آیا

جوئے کا سلسلہ پھر چھڑ گیا دربار کے اندر
شرائط آخری بازی کی آئی سامنے کھل کر

कुमारबाज़ी के दोबारा मशविरे

हुए जिस वक़्त पान्डव कौरवाँ के शहर से रुख़सत।
तो दुर्योधन के क़ल्बे-बदगुमाँ पर छा गयी दहशत।।

कहा अपने पिता से पान्डवाँ से मुझको खटका है।
मुझे उनकी रविश पर, कुल की बरबादी का ख़तरा है।।

वह अपने इन्तक़ामी जोश से, बाज़ आ नहीं सकते।
दिमागो़-क़ल्ब पर अपने, वह क़ाबू पा नहीं सकते।।

लेहाज़ा रास्ते में होंगे, उनको आप रुकवा दें।
किसी को भेज कर फ़ौरन, यहाँ पान्डव को बुलवालें।।

कि उनके साथ मैं खेलूँगा ऐसी आख़री बाजी़।
कि माजी़ उनकी हालत पर, करे हर लम्हा ग़म्माज़ी।।

वह ऐसी शर्त होगी, जो भी इस बाज़ी को हारेगा।
वह बारह[१२] साल जीवन अपना जंगल में गुजा़रेगा।।

अलावा इसके वह इक साल तक ख़ुफ़िया तरीक़े पर।
गुज़ारेगा फिर अपनी ज़िन्दगी गोशा नशीं होकर।।

न छिपकर रह सका इस दौर में वह बख़्त का मार।
तो बारह[१२] साल फिर उसको, बिताना होगा दोबारा।।

आख़री बाज़ी

यह बातें हो चुकीं तो, कर्ण को राजा ने भिजवाया।
वह आधे रास्ते से, पान्डवों को जा के ले आया।।

जुए का सिलसिला फिर छिड़ गया दरबार के अन्दर।
शरायत आख़री बाज़ी की आई, सामने खुल कर।।

रुख़सत = रवाना
क़ल्बे-बदगुमाँ = शत्रुता भरा हुआ दिल
दहशत = भय
रविश = अन्दाज़
इन्तक़ामी जोश = बदले की भावना
दिमागो़-क़ल्ब = हृदय और दिमाग
क़ाबू = निंयत्रण

माज़ी = भूतकाल
हर लम्हा = हर घड़ी
ग़म्माज़ी = किसी चीज़ का प्रकट होना

गोशा नशीं = छिप कर बैठना
बख़्त = भाग्य



یدھشٹر نے کہا میں جیت لوں بازی تو بے عزت
مجھے واپس ملے میری حکومت تاج اور ثروت

دوبارہ میں اگر ہاروں تو پھر سنسان نرجن میں
گزاروں گا فقیروں کی طرح بارہ[۱۲] برس بن میں

غرض منظور کرلیں ساری شرطیں سب نے خوش ہو کر
بہت محتاط ہو کر پھر وہاں کھیلی گئی چوسر

خوشی سے کعب جوں جوں پھینکتے تھے جانبیں اپنا
جگر کو تھام لیتے تھے معزز حاضریں اپنا

یہ بازی جان کی بازی لگا کر کھیلی دونوں نے
بڑی دل بستگی کے ساتھ چوسر کھیلی دونوں نے

مگر تقدیر پانڈو پر نحوست سایہ افگن تھی
گماں ہوتا تھا گویا نرد و بازی انکی دشمن تھی

وہی آخر ہوا تحریر تھا جو انکی قسمت میں
یہ بازی بھی انہوں نے ہار دی جشن مسرت میں

دشاشن کی پیش کش

حکومت کوروں کو سونپ کر پانڈو بصد عجلت
بدل کر بھیس ہونا چاہتے تھے جشن سے رخصت

دروپد کنیا بھی پانڈواں کے ساتھ جانے کو
تھی آمادہ سفر کی ساری تکلیفیں اٹھانے کو

تو فوراً طنزیہ انداز سے مردود دشاشن
مخاطب ہو کے پنچالی سے بولا عقل کا دشمن

ٹھہر اے نازنیں اے ماہ وش اے ناز پروردہ
بہت مشکل ہے اب بھی سوچ لے امروز سے فردا

۱۲ گوٹ کھیلنا

युधिष्ठिर ने कहा मैं जीतलूँ, बाज़ी तो बेहुज्जत ।
मुझे वापस मिले मेरी हुकूमत ताज और सरवत।।

दोबारा मैं अगर हारूँ, तो फिर सुन्सान निर्ज़न में।
गुज़ारूँगा फ़क़ीरों की तरह, बारह[१२] बरस बन में।।

ग़रज़ मंजूर कर लीं, सारी शर्तें सब ने खुश होकर।
बहुत मोहतात होकर, फिर वहाँ खेली गई चौसर।।

खुशी से कॉब जूँ जूँ फैंकते थे जानिबीं अपना।
जिगर को थाम लेते थे, मुअज़्ज़िज़ हाज़रीं अपना।।

यह बाज़ी जान की बाज़ी लगा कर खेली दोनों ने।
बड़ी दिल बस्तगी के साथ चौसर खेली दोनों ने।।

मगर तक़दीरे-पान्डव पर, नहूसत साया अफ़गन थी।
गुमाँ होता था गोया नर्दो-बाज़ी उनकी दुश्मन थी।।

वही आख़िर हुआ तहरीर था, जो उनकी क़िस्मत में।
यह बाज़ी भी उन्होने हारदी जश्ने-मुसर्रत में।।

दुश्शाषन की पेशकश

हुकूमत कौरवाँ को सोंप कर पान्डव बसद उजलत।
बदल कर भेस होना चाहते थे, जश्न से रुख़सत।।

द्रौपद कन्या भी पान्डवाँ के साथ जाने को।
थी आमादा सफ़र की, सारी तकलीफ़ें उठाने को।।

तो फ़ौरन तंज़िया अन्दाज़ से मरदूद दुश्शाषन।
मुख़ातिब होके पंचाली से बोला, अक़्ल का दुश्मन।।

ठहर ऐ नाज़नीं, ऐ माहवश, ऐ नाज़ परवरदा।
बहुत मुश्किल है अब भी सोच ले इमरोज़ से फ़रदा।।

सरवत = दौलत
मोहतात = बहुत संभल कर
कॅाब = पांसा
जानिबीं = दोनों ओर के व्यक्ति
मुअज़्ज़िज़ = आदरणीय हाज़रीं = उपस्थित व्यक्ति दिल बस्तगी = दिल लगा कर
नहूसत साया अफ़गन = दुर्भाग्य का साया
गुमाँ = संदेह
गोया = जैसे
नर्दोबाज़ी = पांसा और जुए का खेल
तहरीर = लिखा हुआ
तंज़िया = हंसी के अन्दाज़ में
मुख़ातिब = किसी की तरफ़ मुहं करके कहना
नाज़ परवरदा= लाड से पली हुई
इमरोज़ = आज
फ़रदा = भविष्य

کہاں تُو اور کہاں یہ بادیہ پیمائی جان من — محل کو چھوڑ کر اب دشت میں پھرنا ہے پاگل پن
اِدھر ہے دیکھ فرشِ راہ چشمِ کوروَاں کب سے — اُدھر ذلت ہے جو بالعکس ہے اس تیرے منصب سے
اِدھر آ، پانڈوؤں کو چھوڑ، ہم پر حکمرانی کر — نہ یوں برباد جانِ کوروَاں، اپنی جوانی کر
تجھے آنکھوں پہ بٹھلائینگے ہم، دل میں جگہ دینگے — چراغِ رُخ سے تیرے اپنی دُنیا جگمگالیں گے
ہے اب بھی وقت آجا تھام لے دامانِ دریودھن — صداعِ[1] بادیہ گردی سے تو اپنا بچا دامن

بشکلِ کوروَاں موجود ہیں اک صد خرِ دانق

یہ سُنکر بھیم بولا تجھ سے دشاشن سمجھ لُونگا — جواب اس کا تجھے چودہ برس کے بعد میں دُونگا
جوابِ بھیم سُنکر یوں کہا اس نے شکونی سے — ذرا اس گائے کو دیکھو، ملو احمق جنونی سے
یہی ہیں بھیم جن کو سو گدھوں کا باپ کہتے ہیں — یہ چنڈو باز ہیں بس اپنی ہی پینک میں رہتے ہیں
یہ سُنتے ہی تمسخر کا اُٹھا طوفان محفل میں — اکٹھا ہو گیا تفریح کا سامان محفل میں
دلاور بھیم، دشاشن کے فقرے کو ذہانت سے — انہی پر چست فوراً کر دیا اپنی ظرافت سے

یقیناً سو گدھوں کے باپ اور سونا خلفِ ناہق[3]
بشکلِ کوروَاں موجود ہیں اک صد خرِ[2] دانق

۱ دردِ سر
۲ گدھا۔ ۳ نادان آدمی۔

कहाँ तू और कहाँ यह बादिया पैमाई, जाने-मन।
महल को छोड़ कर अब, दश्त में फिरना है पागलपन।।

इधर है देख फ़र्शे-राह, चष्मे-कौरवाँ कब से।
उधर ज़िल्लत है, जो बिल्अक्स है इस तेरे मनसब से।।

इधर आ, पान्डवों को छोड़, हम पर हुक्मरानी कर।
न यूँ बरबाद जाने-कौरवाँ, अपनी जवानी कर।।

तुझे आँखों पे बिठलाएँगे हम, दिल में जगह देंगे।
चिराग़े-रुख़ से तेरे, अपनी दुनिया जगमगालेंगे।।

है अब भी वक़्त आजा, थाम ले दामाने-दुर्योधन।
सुदाए-बादिया गरदी से तू अपना बचा दामन।।

बशक्ले-कौरवाँ मौजूद हैं इक सदख़रे-दानिक़

यह सुनकर भीम बोला, तुझ से दुश्शाषन समझ लूँगा।
जवाब इस का तुझे चौदाह बरस के बाद मैं दूँगा।।

जवाबे-भीम सुनकर, यूँ कहा उसने शकुनी से।
ज़रा इस गाए को देखो, मिलो अहमक़ जुनूनी से।।

यही है भीम जिन को, सौ गधों का बाप कहते हैं।
यह चन्डू बाज़ हैं, बस अपनी ही पीनक में रहते हैं।।

यह सुनते ही तमस्ख़ुर का, उठा तूफ़ान महफ़िल में।
इकट्ठा हो गया तफ़रीह का, सामान महफ़िल में।।

दिलावर भीम, दुश्शाषन के फ़िक़रे को ज़हानत से।
उन्ही पर चुस्त फ़ौरन कर दिया, अपनी ज़राफ़त से।।

यक़ीनन सौ गधों के बाप और सौ नाख़लफ़ नाहिक़।
बशक्ले-कौरवाँ मौजूद हैं इक सद ख़रे-दानिक़।।

बादिया-पैमाई = जंगल जंगल फिरना
दश्त = जंगल/मैदान
फ़र्शे-राह = जमीन पर बिछा हुआ
बिल् अक्स = विरोध/उलट
चिराग़े-रुख = तेरे मुख के दीप
सुदाअ = दर्दे सर
तमस्खुर = हंसी/ठठोल
दिलावर = वीर
फ़िक़रे = जुम्ले बातें
ज़राफ़त = व्यंग
नाहिक़ = गधा/नादान आदमी

پانڈوؤں کا عزم صحرانوردی

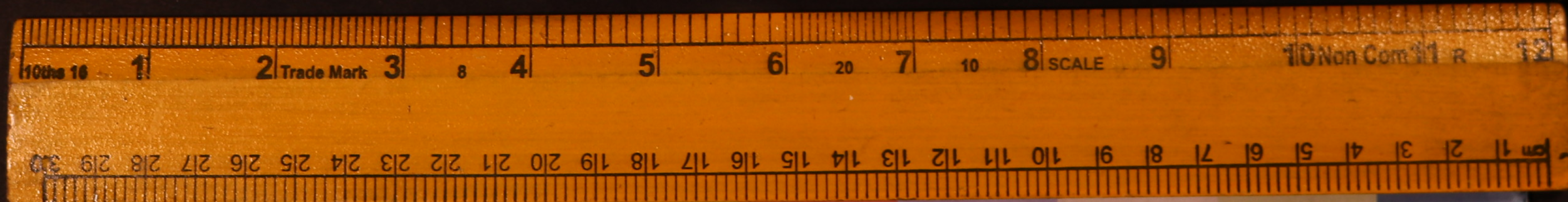
اور

فسانہائے نل دمینتی

पांडवों का अज़्म सहरा-नवरदी

और

फ़साना हाए नल दमयंती



سِلسلۂ فسانہائے نل اور دمینتی

تخیلی پرتگیا

یہ کہکر بھیم اور پانڈو ہوئے رخصت بہ کرّوفر
پئے صحرا نوردی چل پڑے سب جوش میں آکر

کوئی کہتا چلا باہر نہیں ہے میرے قابو سے
کرونگا ناش میں کوروں کو اپنے زورِ بازو سے

کسی نے خاک اڑائی راہ کی اک مشت یہ کہکر
اسی انداز سے میں تیر برساؤں گا کوروں پر

کہا سہدیو نے من میں شکونی کو میں ماروں گا
غرور و سرکشی کا اس کی سب نشہ اُتارونگا

دروپد کنیا بھی بال کھولے اشک برساتی
چلی ہمراہِ پانڈو ہر قدم پر ٹھوکریں کھاتی

وہ من میں سوچتی تھی کاش اے پربھو وہ دن آئیں
کہ مجھ سی ٹھوکریں بھی بیگماتِ کوروں کھائیں

सिलसिलाए-फ़साना हाए नल और दमयंती

तख़य्युली प्रतिज्ञा

यह कहकर भीम और पान्डव हुए रुख़सत ब करो फ़र।
पए सहरा-नवरदी चल पड़े सब जोश में आकर।।

कोई कहता चला, बाहर नहीं है मेरे क़ाबू से।
करूँगा नाश मैं कौरों को, अपने ज़ोरे बाजू से।।

किसी ने ख़ाक उड़ाई राह की, इक मुश्त यह कहकर।
इसी अंदाज़ से मैं तीर बरसाऊँगा कौरों पर।।

कहा सहदेव ने मन में, शकुनी को मैं मारूँगा।
गरुर-ओ-सरकशी का उस की, सब नशा उतारूँगा।।

द्रौपद कन्या भी बाल खोले अश्क बरसाती।
चली हमराहे-पान्डव हर क़दम पर ठोकरें खाती।।

वह मन में सोचती थी, काश ऐ प्रभू वह दिन आएँ।
कि मुझसी, ठोकरें भी, बेगमाते-कौरवाँ ख़ाएँ।।

रुख़सत = रवाना
करोफ़र = शान के साथ
पए सहरा-नवरदी = जंगल और मैदान की यात्रा के लिए

ख़ाक = मिट्टी
एक मुश्त = एक मुट्ठी भर

गरुरो-सरकशी = हट और घंमण्ड

अश्क = आंसू
हमराह = साथ-साथ
क़दम = पग-पग

बेगमाते-कौरवाँ = कौरवों की स्त्रीयाँ

رشی ورہ دش کا درشن

چلے اُتّر کی جانب ہستنا کو چھوڑ کر پانڈو
نہ دیکھا شہر کی جانب رُخ اپنا موڑ کر پانڈو

پریشاں حال بن میں پھر رہے تھے ٹھوکریں کھاتے
نئی اُفتاد منہ کھولے کھڑی رہتی جدھر جاتے

اچانک آن پہنچے پھر ورہ دیش ایک دن بن میں
یُدھشٹر نے انہیں دیکھا تو بے حد خوش ہوا من میں

کھڑے ہوکر کیا آداب اور آسن پہ بٹھلایا
صعوبت دشت گردی کی زباں پر اسطرح لایا

رشی مہراج مجھ جیسا دکھی راجہ زمانے میں
نہ ہوگا بالیقیں بارِ الم مجھ سا اٹھانے میں

ہے عبرت کیلئے کافی یہ میری خانہ ویرانی
میرے حالِ پریشاں پر ہے سرگرداں پریشانی

مجھے برباد کر ڈالا ہے دریودھن ستمگر نے
متاعِ زندگانی لوٹ لی مغرور خودسر نے

جوئے میں مکر سے جیتی ہے اس ظالم نے سب بازی
شکونی کو ملا کر خوب کی ہے فتنہ پردازی

ہماری بھاریہ کو ستر سے بے گانہ دُشاشن
بھری محفل میں کرنا چاہتا تھا عقل کا دشمن

بہت مظلوم ہوں مجھ پر مُنی جی رحم فرمائیں
بہ ازراہِ محبت میری حالت پر ترس کھائیں

ऋषि वृहदश्व का दर्शन

चले उत्तर की जानिब, हस्तिना को छोड़ कर पांडव।
न देखा शहर की जानिब, रुख़ अपना मोड़ कर पांडव।।

परेशाँ हाल बन में, फिर रहे थे ठोकरें खाते।
नई उफ़ताद मुहँ खोले, खड़ी रहती जिधर जाते।।

अचानक आन पहुँचे, फिर विरह दश एक दिन बन में।
युधिष्ठिर ने उन्हें देखा तो बेहद खुश हुआ मन में।।

खड़े होकर किया आदाब, और आसन पे बिठलाया।
सऊबत दश्त-गरदी की ज़बा पर इस तरह लाया।।

ऋषि महराज मुझ जैसा, दुखी राजा ज़माने में।
न होगा बिलयक़ीं, बारेअलम मुझ सा उठाने में।।

है इबरत के लिए काफ़ी यह मेरी ख़ाना वीरानी।
मेरे हाले-परेशाँ पर है, सर गरदाँ परेशानी।।

मुझे बरबाद कर डाला है दुर्योधन सितमगर ने।
मताए ज़िन्दगानी लूट ली, मग़रूर खुदसर ने।।

जुए में मक्र से जीती है, उस ज़ालिम ने सब बाज़ी।
शकुनी को मिलाकर, खूब की है फ़ितना परदाज़ी।।

हमारी भारिया को, सित्र से, बेगाना दुश्शाषन।
भरी महफ़िल में करना चाहता था अक़ल का दुश्मन।।

बहुत मज़लूम हूँ मुझ पर मुनि जी रहम फ़रमाएँ।
ब अज़राहे-मुहब्बत मेरी हालत पर तरस खाएँ।।

रुख़ = मुँह

उफ़ताद = संकट,

सऊबत = मुश्किल

इबरत = देखने के योग
ख़ाना वीरानी = घर की बरबादी
सर गरदां = परेशान
मताए-ज़िन्दगानी = ज़िन्दगी की पूंजी
मक्र = धोका चालाकी

सित्र = कपड़े

ब अज़राहे-मुहब्बत = मुहब्बत से

برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثلِ پروانہ

سنا ڈالی یُدھشٹر نے جب اپنی داستاں ساری
وِرِہ دَش کی زباں سے پھر ہوئے الفاظ یوں جاری

کہ تیری بات کو راجہ یدھشٹر مانتا ہوں میں
بہت اچھی طرح بپتا کو تیری جانتا ہوں میں

مگر اس پرتھوی پر ایک راجہ ایسا گزرا ہے
کھرا آلام کے تنوّر میں جو تَپ کے اترا ہے

الم جھیلے ہیں تجھ سے بھی زیادہ اک سے اک بڑھ کر
جِلا پائی ہے جس نے زندگی کی سان پر چڑھ کر

اِدھر آ میں سناؤں مختصر اب اس کا افسانہ
برہ کی آگ میں جلتا رہا جو مثل پروانہ

مگر اُلفت کے چکّر نے اسے ایسا سنوارا ہے
کہ دنیا میں وہ نل کے نام سے اب آشکارا ہے

فسانہ ہائے نل اور دمینتی

دِمنتی[۱] نام کی اک شہرۂ آفاق شہزادی
کہ جسکے حسن کی تھی مدح خواں دنیا کی آبادی

نہایت نیک سیرت تھی وہ راجہ بھیم[۲] کی دختر
سلیقہ مند خوش اطوار تھی وہ لطف کی پیکر

۱ے صحیح تلفظ دمینتی ہے لیکن پئے ضرورت شعری دِمنتی استعمال کیا گیا،
۲ے یہ وہ بھیم نہیں جو مہابھارت میں پانڈو کا برادر تھا۔

बिराह की आग में जलता रहा जो मिस्ले-परवाना

सुना डाली युधिष्ठिर ने, जब अपनी दास्ताँ सारी।
वृहदश्व की ज़बाँ से फिर हुए अलफ़ाज़ यूँ जारी।।

कि तेरी बात को राजा युधिष्ठिर मानता हूँ मैं।
बहुत अच्छी तरह, बिपता को तेरी जानता हूँ मैं।।

मगर इस पृथ्वी पर, एक राजा ऐसा गुज़रा है।
खरा, आलाम के तन्नूर में जो तप के ऊतरा है।।

अलम झेले हैं तुझ से भी, ज़्यादा इक से इक बढ़कर।
जिला पाई है जिसने ज़िन्दगी की सान पर चढ़कर।।

इधर आ मैं सुनाऊँ मुख़्तसर अब उस का अफ़साना।
बिराह की आग में जलता रहा जो मिस्ले-परवाना।।

मगर उलफ़त के चक्कर ने, उसे ऐसा संवारा है।
कि दुनिया में वह नल के नाम से, अब आशकारा है।।

फ़साना हाए नल और दमयंती

[१]दिमंती नाम की इक शोहरए-आफ़ाक़ शहज़ादी।
कि जिसके हुस्न की थी मदह ख़्वाँ, दुनिया की आबादी।।

निहायत नेक सीरत थी, वह राजा [२]भीम की दुख़्तर।
सलीक़ा मन्द खुश-अतवार थी, वह लुत्फ़ की पैकर।।

दास्ताँ = कथा
आलाम = कष्ट/मुसीबत
तन्नूर = भट्ठी
अलम = दुःख
शोहरए-आफ़ाक़ = दुनिया में मशहूर
मदह ख़्वाँ = तारीफ़ करने वाली
नेक सीरत = अच्छे चाल-चलन
सलिक़ा मन्द = हर काम ठीक तरहा करने वाली
खुश अतवार = अच्छे तरीके वाली
लुत्फ़ की पैकर = अच्छाई की मूर्ति

१) सही तलफ़्फ़ुज़ दमयंती है लेकिन पए ज़ुरुरते-शेरी 'दिमंती' इस्तमाल किया गया।
२) यह वह भीम नहीं जो महाभारत में पांडव का बिरादर था।

نہ تھا مہ وش حسینہ کا کوئی ثانی زمانے میں   نہ تھا اس جوڑ کا موتی کسی کے بھی خزانے میں
اگر فطرت کے اس شہکار کو بہزاد اور مانی   یقیناً دیکھ لیتے تو انہیں ہوتی پشیمانی

غرض اس مہوش و مجموعۂ حُسن و جوانی پر   ہزاروں جان سے نل شیفتہ تھا روپ رانی پر
دِمنتی بھی شکارِ تیر چشم ناز تھی اس کی   بہ فیضِ عشق خود بھی ہمدم و دم ساز تھی اسکی

سوئمبر میں جب اس نے نل کو پہنائی تھی ورمالا   بہ حسرت تک رہا تھا، اسکو ہر اک چاہنے والا
سوئمبر ہو چکا تو نیک و فرخ فال موقع پر   رچایا بیاہ راجہ بھیم نے بیٹی کا خوش ہو کر

جہیز اور دان تحفہ دیکے بیٹی کو کیا رخصت   چلی سسرال میکے سے، دلہن بنکر حسیں صورت
کیا آباد راجہ نل نے اپنا حجلۂ عشرت   مثالِ اندر وہ برسوں رہا آسودۂ شہوت

گذاری عیش سے دونوں نے اپنی زندگی برسوں   نشاط و کیف کی حاصل رہی اک سرخوشی برسوں
مگر بھائی نہ ان کی سرخوشی کجرو زمانے کو
ادھر تھا چرخ بھی در پے انہیں یکسر مٹانے کو

کلی یگ کی دشمنی

غرض شیطان کا ساتھی کلی یگ نام کا دشمن   دِمنتی اور نل کی فارغ البالی کا اک رہزن

न था महवश हसीना का कोई सानी ज़माने में।
न था इस जोड़ का मोती किसी के भी ख़ज़ाने में।।

अगर फ़ितरत के इस शहकार को, बहज़ाद और मानी।
यक़ीनन देख लेते तो, उन्हें होती पशेमानी।।

ग़रज़ इस महवश-ओ-मजमूअ-ए-हुस्नो-जवानी पर।
हज़ारों जान से नल शेफ़्ता था रूप रानी पर।।

दिमंती भी, शिकारे-तीरे-चष्मे-नाज़ थी उसकी।
बफ़ैज़े-इश्क़ खुद भी, हमदम-ओ-दमसाज़ थी उसकी।।

स्वयम्बर में जब उस ने, नल को पहनाई थी वरमाला।
ब हसरत तक रहा था, उस को हर इक चाहने वाला।।

स्वयंम्बर हो चुका तो, नेक-ओ फ़ररुख़ फ़ाल मौक़े पर।
रचाया ब्याह राजा भीम ने बेटी का खुश होकर।।

जहेज़ और दान तोहफ़ा देके, बेटी को क़िया रुख़सत ।
चली ससुराल मैके से, दुल्हन बनकर हसीं सूरत ।।

किया आबाद राजा नल ने अपना हुजलए-इशरत।
मिसाले-इन्द्र वह बरसों रहा, आसूदए-शहवत।।

गुज़ारी ऐश से दोनों ने अपनी ज़िन्दगी बरसों।
निशात-ओ-कैफ़ की हासिल रही, इक सर खुशी बरसों।।

मगर भायी न उन की सरखुशी कज-रौ ज़माने को।
इधर था चर्ख़ भी दर-पै, उन्हें यकसर मिटाने को।।

कलीयुग की दुश्मनी

ग़रज़ शैतान का साथी कलीयुग नाम का दुश्मन।
दिमंती और नल की फ़ारिग़-उल-बाली का इक रहज़न।।

शहकार = किसी कला कार की बेहतरीन कला
बहज़ाद मानी = प्राचीन इरान के दो मशहुर चित्रकार
पशेमानी = शर्मिन्दगी
मजमूअ-ए-हुस्नो-जवानी = सुन्दर और जवानी की मूरत

नेक व फ़ररुख़ फ़ाल = उत्तम और शुभ

हुजलए-इशरत = दुल्हा और दुल्हन के रहने का फूलों से सजा हुवा कमरा
आसूदए शहवत = अपनी पत्नी से जवानी का मजा लेना
निशात-ओ-कैफ़ = खुशी और नशा
कज-रौ = तेढी चाल
चर्ख़ = आकाश

फ़ारिग़-उल-बाली = खुश हाली/ अच्छी ज़िन्दगी

دِمنتی پر تھا وہ بھی شیفتہ لیکن مقدر نے
رقیبِ نَل بنا ڈالا اسے الفت کے چکر نے

اِسی اک وجہ سے دشمن بنا گم کردۂ منزل
دِمنتی اور نَل کے درمیاں پھر ہو گیا حائل

جوئے میں جسنے نَل کی زیست کو برباد کر ڈالا
نِکالا مکر و عیاری سے جسنے اس کا دیوالہ

بیابانوں کی راجہ نَل سے جس نے خاک چھنوادی
جلالِ خسروی کو راہ بربادی کی دِکھلادی

جوئے میں اسکا سب کچھ لُٹ چکا تو نَل نے گھر چھوڑا
رخ اپنا شہر کیجانب سے جنگل کی طرف موڑا

حکومت دولت و ثروت وہاں سے ہار کر نِکلا
جوئے کے دیوتا پر آج سب کچھ وار کر نکلا

فقط اک سترِ بوسیدہ بچا تھا اسکی قسمت سے
لَپیٹا تھا دِمنتی نے بدن پر جسکو غیرت سے

سُوالِ من و تو باقی رہا میرا نہ اور تیرا

تھکے ہارے وہ ہفتوں کے، کسی شاداب خطے میں
پہنچ کر دم لیا، دھرتی کے اک پُر آب خطے میں

وہیں بوسیدہ سا خالی مکاں ان کو نظر آیا
دِمنتی اور نَل نے اس مکاں میں خود کو پہنچایا

سفر کی اس صعوبت اور تھکن سے چور تھے دونوں
قدم آگے بڑھانے سے وہ اب معذور تھے دونوں

الم خوردہ تھے آخر ڈالا فرشِ خاک پر ڈیرا
سُوالِ من و تو باقی رہا میرا نہ اور تیرا

दिमंती पर था वह भी शेफ़्ता लेकिन मुक़द्दर ने।
रक़ीबे-नल बना डाला उसे उलफ़त के चक्कर ने।।

इसी इक वजह से दुशमन बना, गुमकरदए-मन्ज़िल।
दिमंती और नल के दरमियाँ फिर होगया हाइल।।

जुए में जिसने नल की ज़ीस्त को, बरबाद करडाला।
निकाला मक्र-ओ-अय्यारी से जिसने उस का दीवाला।।

बयाबानों की राजा नल से, जिसने ख़ाक छनवादी।
जलाले-खुसरवी को राह बरबादी की दिखलादी।।

जुए में उसका सब कुछ लुट चुका तो नल ने घर छोड़ा।
रुख़ अपना शहर की जानिब से, जंगल की तरफ़ मोड़ा।।

हुकूमत दौलत-ओ-सरवत, वहाँ से हार कर निकला।
जुए के देवता पर आज सब कुछ वार कर निकला।।

फ़क़त इक सित्र बोसीदा, बचा था उसकी क़िस्मत से।
लपेटा था दिमंती ने बदन पर जिसको ग़ैरत से।।

सुवाले-मन व तू बाक़ी रहा मेरा न और तेरा

थके हारे वह हफ़्तों के, किसी शादाब ख़ित्ते में।
पहुँच कर दम लिया, धरती के इक पुरआब ख़ित्ते में।।

वहीं बोसीदा सा ख़ाली मकाँ, उन को नज़र आया।
दिमंती और नल ने उस मकाँ में खुदको पहुँचाया।।

सफ़र की इस सऊबत और थकन से चूर थे दोनों।
क़दम आगे बढाने से, वह अब माजूर थे दोनों।।

अलम ख़ुर्दा थे आख़िर ड़ाला फ़र्शे-ख़ाक पर डेरा।
सुवाले-मन-ओ-तू बाक़ी रहा, मेरा न और तेरा।।

शेफ़्ता = प्रेमी
रक़ीब = शत्रु

गुम करदए-मन्ज़िल = जिसे अपने मार्ग का पता ना हो
दरमियाँ = बीच
ज़ीस्त = जीवन

जलाले-खुसरवी = बादशाही थाट

सरवत = दौलत

सित्र बोसीदा = पुराना लिबास

शादाब = हरे भरे
खित्ता = इलाके/क्षेत्र

माजूर = मजबूर
अलम खूर्दा = दुःख झेले हुए
सुवाले-मन-ओ-तू = मैं और तू का सवाल.



زمیں پر پڑ گئے دونوں کہاں کا تکیہ و بستر ۔۔۔ یہ تھا احساس ہی کب چبھ رہے ہیں جسم میں پتھر
زمیں پر لیٹتے ہی نیند سے آنکھیں ہوئیں بوجھل ۔۔۔ مزے سے سو گئے رانی دِمنتی اور راجہ نَل

مگر وائے مقدر عقلِ نَل پر پڑ گیا پردہ

اچانک نیم شب میں خواب سے آنکھیں کھُلیں نَل کی ۔۔۔ گرانی نیند اُچٹنے سے بڑھی کچھ اور بے کَل کی
کیا تھا مضمحل اسکو پراگندہ خیالوں نے ۔۔۔ ہلا ڈالی تھیں چولیں فہم و دانش کی کسالوں نے
مزاجی کیفیت اس وقت کافی نل کی برہم تھی ۔۔۔ سمجھ میں کچھ نہ آتا تھا کلاہِ فہم بھی خم تھی
اچانک ذہن میں اک بات آئی اور اٹھ بیٹھا ۔۔۔ بڑی حسرت سے خوابیدہ دِمنتی کی طرف دیکھا
فقط اک سِتر میں لپٹی پڑی تھی نازپروردہ ۔۔۔ مگر وائے مقدر عقلِ نَل پر پڑ گیا پردہ
خیال آیا کہ اسکے تیاگنے ہی میں بھلائی ہے ۔۔۔ دِمنتی کے ہمیشہ ساتھ رہنے میں برائی ہے
اِسی صورت میں پائینگے دکھوں سے دونوں چھٹکارا ۔۔۔ دِمنتی بھی پہنچ جائیگی اپنے میکے دوبارہ
مگر اس تیاگ کے مانع رہی خود اسکی عریانی ۔۔۔ سِوا اسکے نظر آئی نہ کوئی صورتِ ثانی
کہ آدھا سِتر رانی کے حسیں و مرمریں تن سے ۔۔۔ کروں اب قطع، عریاں جا نہیں سکتا میں اس بن سے
پھر اُسنے نصف کپڑا قطع کر کے نازپرور کا ۔۔۔ چھُپایا اس سے آدھا جسم، چھوڑا ساتھ دلبر کا

ज़मीं पर पड़ गए दोनों, कहाँ का तकिया-ओ-बिस्तर।
यह था एहसास ही कब, चुभ रहे हैं जिस्म में पत्थर।।

ज़मीं पर लेटते ही, नींद से आँखें हुईं बोझल।
मज़े से सो गए, रानी दिमंती और राजा नल।।

मगर वाए मुक़द्दर अक़्ले नल पर पड़ गया परदा

अचानक नीम शब में, ख़्वाब से आँखें खुलीं नल की।
गिरानी नींद ऊचटने से बढ़ी, कुछ और बेकल की।।

किया था मुज़म्हिल उस को परागंदा ख़यालों ने।
हिला डाली थीं चूलें फ़हमो-दानिश की कसालों ने।।

मिज़ाजी कैफ़ियत उस वक़्त, काफ़ी नल की बरहम थी।
समझ में कुछ न आता था, कुलाहे-फ़हम भी ख़म थी।।

अचानक ज़हन में, इक बात आई, और उठ बैठा।
बड़ी हसरत से ख़्वाबीदा दिमंती की तरफ़ देखा।।

फ़क़त इक सित्र में लिपटी पड़ी थी नाज़ परवरदा।
मगर वाए मुक़द्दर, अक़्ले-नल पर पड़ गया परदा।।

ख़्याल आया कि इस के त्यागने ही में भलाई है।
दिमंती के हमेशा साथ रहने में बुराई है।।

इसी सूरत में पाएंगे दु:खों से दोनों छुटकारा।
दिमंती भी पहुँच जाएगी, अपने मैके दोबारा।।

मगर इस त्याग के मानअ, रही खुद उसकी उरयानी।
सिवा इस के नज़र आई, न कोई सूरते-सानी।।

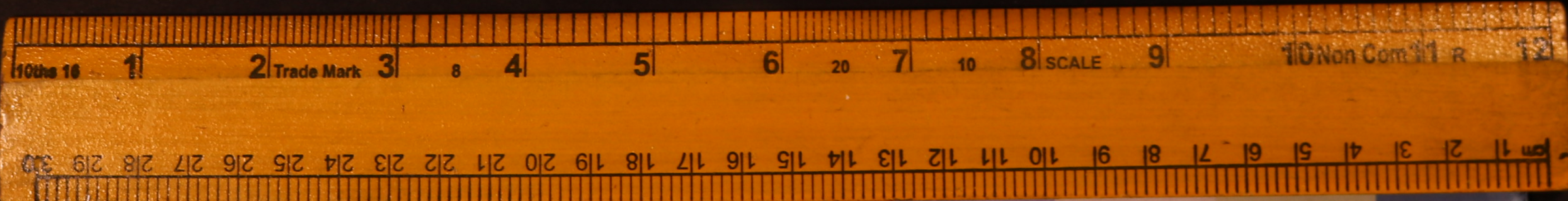
कि आधा सित्र रानी के हसीं और मरमरीं तन से।
करूं अब क़ता, उरयाँ जा नहीं सकता मैं इस बन से।।

फिर उसने निस्फ़ कपड़ा, क़ता करके नाज़ परवर का।
छिपाया उस से आधा जिस्म, छोड़ा साथ दिलबर का।।

नीमशब = आधी रात

मुज़म्हिल = कमज़ोर
परागंदा = बिखरे हुए
फ़हमो-दानिश = अक़्ल और बुद्धि
मिज़ाजी कैफ़ियत = दिमाग की दशा
बरहम = बिगड़ी हुई
कुलाहे-फ़हम भी ख़म थी = अकल भी काम करने से अपंग हो चुकी थी
ख़्वाबीदा = सोई हुई
नाज़ परवरदा = लाड़ में पली हुई

मानअ = रुकावट
सूरते-सानी = कोई दूसरा रास्ता
हंसी मरमरीतन = सुंदर सफ़ीद शरीर
कता = काटना
उरयाँ = नंगा
निस्फ़ = आधा



دِمنتی کو مقدر کے حوالے چھوڑ کر بن میں
چلا نَل تیاگ کر، رانی کو اک ویران نِرجن میں

بوقتِ گفتگو جسکے دہن سے پھول جھڑتے تھے

دہن کھولے کھڑی تھیں مثلِ گلخن ہجر کی گھڑیاں
لگی تھی چشمِ نَل سے آنسوؤں کی خونفشاں جھڑیاں

مچی تھی دل میں اک ہلچل نمایاں تھی پریشانی
رخِ نَل سے غمِ دوری کی ظاہر تھی فراوانی

کبھی رُکتا کبھی بڑھتا کبھی پیچھے پلٹ آتا
کبھی خوابیدہ رانی کی بلائیں لیکے ہٹ جاتا

کبھی لب کپکپا اٹھتے کبھی وہ سسکیاں بھرتا
کبھی حالات کی نیرنگیوں پر بین یوں کرتا

سزائیں مل رہی ہیں میرے مولا کن گناہوں کی
یہی ہوتی ہے دُرگت کیا جہاں میں بادشاہوں کی

یہی رانی جو کل تک سیج پر پھولوں کے سوتی تھی
نمایاں مہوشوں کے زمرۂ رنگیں میں ہوتی تھی

گلِ صد برگ پر جسکے ہمیشہ پاؤں پڑتے تھے
بوقتِ گفتگو جسکے دہن سے پھول جھڑتے تھے

وہی ہے آج محوِ خواب خاک آلودہ بستر پر
خموشی مرگ کی چھائی ہے جسکے روئے انور پر

نہیں ہے جسکو کچھ احساس مٹی کی کثافت کا
تنِ نازک پہ ناہموار دھرتی کی اذیت کا

خداوندا یہ کیا نیرنگیاں ہیں بزمِ عالم کی
جو تھی کل عیش کی محفل وہی ہے آج ماتم کی

दिमंती को मुक़द्दर के हवाले छोड़ कर बन में ।
चला नल त्याग कर, रानी को इक वीरान निर्जन में ।।

बवक़्ते-गुफ़्तगू जिसके दहन से फूल झड़ते थे

दहन खोले खड़ी थीं मिस्ले-गुलख़न हिज्र की घडियाँ।
लगी थी चश्मे-नल. से, आँसुओं की खुंफ़िशाँ झड़ियाँ।।

मची थी दिल में इक हलचल, नुमायाँ थी परेशानी।
रुख़े नल से ग़मे-दूरी की ज़ाहिर थी फ़रावानी।।

कभी रुकता, कभी बढ़ता, कभी पीछे पलट आता।
कभी ख़्वाबिदा रानी की बलाएँ लेके हट जाता।।

कभी लब कपकपा उठते, कभी वह सिस्कियाँ भरता।
कभी हालात की नैरंगियों पर बैन यूँ करता।।

सज़ाएँ मिल रही हैं मेरे मौला किन गुनाहों की।
यही होती है दुर्गत क्या जहाँ में बादशाहों की।।

यही रानी जो कल तक, सेज पर फूलों के सोती थी।
नुमायाँ महवशों के जुम्रए-रगीं में होती थी।।

गुले-सद बर्ग पर जिस के हमेशा पांव पड़ते थे।
बवक़्ते-गुफ़्तगू जिसके, दहन से फूल झड़ते थे।।

वही है आज मैहवे-ख़्वाब, ख़ाक आलुदह बिस्तर पर।
ख़मोशी मर्ग की छाई है जिस के रूए अनवर पर।।

नहीं है जिस को कुछ अहसास मिट्टी की कसाफ़त का।
तने-नाजुक पे ना हमवार धरती की अज़ियत का।।

खुदावंदा यह क्या नैरंगियाँ हैं बज़्मे-आलम की।
जो थी कल ऐश की महफ़िल वही है आज मातम की।।

गुलख़न = भट्टी
हिज्र = बिछड़ना
खुंफ़िशाँ = खुन बरसाती हुई
नुमायाँ = ज़ाहिर

गुले सद बर्ग = वह फुल जिस की सौ पंखड़ियाँ हो

मैहवे-ख़्वाब = नींद में डूबी हुई
ख़ाक आलुदा बिस्तर = मिट्टी से अटा हुवा बिस्तर
कसाफ़त = भारी पन
अज़ियत =तकलीफ़/कष्ठ
नैरंगियाँ = ज़माने का बदलना



دمینتی کو
نَل کا تیاگنا

پریشانی کے ہر احساس سے آزردہ دل ہوکر
چلا راجہ وہاں سے کوہِ غم رکھ کر کلیجے پر

پلٹ کر پھر نہ دیکھا راجہ نَل نے اپنی رانی کو
فلک تکتا رہا حیرت سے جس کی سخت جانی کو

جدا ہوکر پری چہرہ دمنتی سے رہا گریاں
پھرا صحرا بہ صحرا ٹھوکریں کھاتا ہوا ناداں

بالآخر مات کھائی بخت کی مکروہ گھاتوں سے
مصیبت کو فزوں نَل نے کیا خود اپنے ہاتھوں سے

یہ سچ ہے بحرِ غم میں کم نہ تھی پہلے سے طغیانی
دِمنتی کو جدا کر کے بڑھالی اور پریشانی

وہ برسوں جنگلوں میں ٹھوکریں کھاتا رہا ناداں
دِمنتی بھی عذابِ ہجر کی گنتی رہی گھڑیاں

۱؎ یہ صحیح تلفظ "دمینتی" ہے لیکن ضرورتِ شعری کے لیے "دِمنتی" استعمال کیا گیا ہے

दमयंती को नल का त्यागना

परेशानी के हर एहसास से, आजुर्दा दिल होकर।
चला राजा वहाँ से, कोहे-ग़म, रख कर कलेजे पर।।

पलट कर फिर न देखा, राजा नल ने अपनी रानी को।
फ़लक तकता रहा हैरत से, जिस की सख़्त जानी को।।

जुदा होकर परी चेहरा [१]'दिमंती' से रहा गिरयाँ।
फिरा सहरा ब सहरा, ठोकरें खाता हुआ नादाँ।।

बिलआख़िर मात खाई बख़्त की मकरूह घातों से।
मुसीबत को फुज़ूँ नल ने किया, खुद अपने हाथों से।।

यह सच है बहरेग़म में, कम न थी, पहले से तुग़यानी।
दिमंती को जुदा करके, बढ़ाली और परेशानी।।

वह बरसों जंगलों में ठोकरें खाता रहा नादाँ।
दिमंती भी अज़ाबे-हिज्र की, गिनती रही घड़ियाँ।।

आजुर्दा दिल = दुःखी हृदय
कोहे-गम = दुःख का पहाड़
फ़लक = आकाश

गिरयाँ = रोता हुवा
बख़्त = भाग्य
फुज़ूँ = अधिक

बहरे-ग़म = दुःख का समुद्र
तुग़यानी = तूफ़ान

अज़ाबे-हिज्र = जुदाई का कष्ठ

१) सही तलफ़्फ़ुज़ दमयंती है लेकिन ज़रूरते-शेरी के लिए 'दिमंती' इसतेमाल किया गया है।

دمینتی کی آہ وزاری

پری چہرہ دمینتی کی کھلی آنکھیں تو گھبرائی — نہ شوہر کو وہاں پایا تو غم سے آنکھ بھر آئی
تڑپ کر اٹھ گئی فوراً ہی خاک آلودہ بستر سے — بڑی تیزی سے باہر آ گئی بوسیدہ چھپر سے
نظر دوڑائی چاروں سمت سوامی کو نہ جب پایا — اک ہلکا سا دھندلکا ماہوش کے ذہن پر چھایا
یکایک پاؤں اکھڑے گر پڑی معصوم غش کھا کر — رہی کچھ دیر تک بے ہوش ناہموار دھرتی پر
جب آیا ہوش تو کرنے لگی وہ گریہ وزاری — لب معصوم پر یوں بین کے الفاظ تھے جاری
خطا کیا ہے مری سوامی، جو تم نے یوں مجھے چھوڑا — بتاؤ بے رخی سے شیشۂ دل کیوں مرا توڑا
ترستی ہیں نگاہیں اپنا چہرہ مجھکو دکھلاؤ — مری بے چارگی پر رحم کھاؤ سامنے آؤ
ہنسی آپس میں دم بھر کی سزاوار معافی ہے — چلو منظور یہ بھی، دلگی اتنی ہی کافی ہے
میں باز آئی اب ایسی دلگی سے سامنے آؤ — ہنسی کی آڑ لیکر ناتھ اب مجھکو نہ ترساؤ
غرض روتی رہی رانی دمینتی بین کر کر کے — امید وبیم میں جیتی رہی گویا وہ مر مر کے

نل اور دمینتی کی صحرا نوردی

غرض دونوں بچھڑ کر ٹھوکریں کھاتے رہے بن میں — کبھی پربت کبھی صحرا کبھی ویران نرجن میں

दमयंती की आह-ओ-ज़ारी

परी चेहरा दिमंती की खुली आँखें तो घबराई।
न शौहर को वहाँ पाया, तो ग़म से आँख भर आई।।

तड़प कर उठ गई फ़ौरन ही, ख़ाक आलूदा बिस्तर से।
बड़ी तेज़ी से बाहर आगई, बोसीदा छप्पर से।।

नज़र दौड़ाई चारों सम्त, स्वामी को न जब पाया।
इक हलका सा धुदंलका, माहवश के ज़ह्न पर छाया।।

यकायक पॉव उखड़े, गिर पड़ी मासूम ग़श खाकर।
रही कुछ देर तक बेहोश, ना हमवार धरती पर।।

जब आया होश तो करने लगी, वह गिरया-ओ-ज़ारी।
लबे-मासूम पर यूँ, बैन के अलफ़ाज़ थे जारी।।

ख़ता क्या है मे्री स्वामी, जो तुम ने यूँ मुझे छोड़ा।
बताओ बेरुखी से, शीशएदिल क्यों मेरा तोड़ा।।

तरसती हैं निगाहें, अपना चेहरा, मुझ को दिखलाओ।
मेरी बेचारगी पर, रहम खाओ, सामने आओ।।

हँसी आपस में दमभर की, सज़ावारे-मुआफ़ी है।
चलो मन्जूर यह भी, दिल्लगी इतनी ही काफ़ी है।।

मैं बाज़ आई, अब ऐसी, दिल्लगी से, सामने आओ।
हँसी की आड़ लेकर नाथ, अब मुझ को न तरसाओ।।

ग़रज़ रोती रही रानी दिमंती बैन करकर के।
उम्मीद-ओ-बीम में जीती रही, गोया वह मर-मर के।।

नल और दमयंती की सहरा-नवरदी

ग़रज़ दोनों बिछड़ कर, ठोकरें खाते रहे बन में।
कभी पर्वत, कभी सहरा, कभी वीरान निर्जन में।।

बैन = किसी मुसीबत के समय औरत का बयान कर कर के रोना
गिरया-ओ-ज़ारी = रोना, चिल्लाना
शिशए-दिल = दिल का दर्पण

उम्मीद-ओ-बीम = आशा और निराशा

निर्जन = एकांत

کبھی جنگل میں پکڑا اژدھے نے پاؤں رانی کا
ہوا اک تلخ جسکو تجربہ اپنی جوانی کا

کبھی وہ ماہوش پہنچی رشی منیوں کے منڈل میں
کبھی بد قسمتی سے آ پھنسی فیلوں کے جنگل میں

پھر اسکے بعد چیدی راج کی نگری میں وہ آئی
جہاں تقدیر اسکو نیم عریاں کھینچ کر لائی

محل سے راج ماتا نے اسے آتے ہوئے دیکھا
بیاکُل نتر سے جب نیر برساتے ہوئے دیکھا

تو فوراً اسکو اپنے پاس ماتا جی نے بلوایا
محل میں اپنی بیٹی کی طرح پھر اسکو ٹھہرایا

رہی کچھ دن سوباہو دیش میں مہمان وہ بن کر
پھر اسکے بعد پہنچی اپنے میکے بھیم کی دختر

مارِ گرزہ کی مدد سے راجہ رُوتو کے محل تک

ادھر نل کا غم و آلام سے معمور تھا سینہ
لگاتا کون آخر اسکے درد و غم کا تخمینہ

کسی دن نل نے اک شعلہ اگلتی آگ کو دیکھا
اور اُسمیں ایک "کنڈلاکار" کالے ناگ کو دیکھا

مدد کی نل نے انفی کی، نکالا اسکو آتش سے
خلاصی ملگئی جب ناگ کو نل کی نوازش سے

تو پہلے اپنے ہی محسن کو ہے ہے ڈس لیا اس نے
اک اچھائی کا بدلہ یوں برائی سے دیا اس نے

بظاہر سانپ کے ڈسنے سے اسکی شکل اور صورت
بدل کر رہ گئی، اور جِلد کی کالی ہوئی رنگت

कभी जंगल में पकड़ा अज़दहे ने पाँव रानी का
हुआ इक तल्ख़ जिसको तजरुबा अपनी जवानी का।।

कभी वह माहवश पहुँची, ऋषि मुनियों के मन्डल में।
कभी बद क़िस्मती से आ फँसी, फ़ीलों के जंगल में।।

फिर उसके बाद चेदी राज की नगरी में वह आयी।
जहाँ तक़दीर उसको नीम उरियाँ खींच कर लायी।।

महल से राज माता ने उसे आते हुए देखा।
व्याकुल नेत्र से जब, नीर बरसाते हुए देखा।।

तो फ़ौरन उस को अपने पास, माता जी ने बुलवाया।
महल में अपनी बेटी की तरह, फिर उसको ठहराया।।

रही कुछ दिन सुबाहू देश में मेहमान वह बनकर।
फिर उसके बाद पहुँची अपने मैके भीम की दुख़्तर।।

मारे-गुर्ज़ा की मदद से राजा रूतू के महल तक

इधर नल का ग़मो-आलाम से मामूर था सीना।
लगाता कौन आख़िर, उस के दर्द-ओ-ग़म का तख़्मीना।।

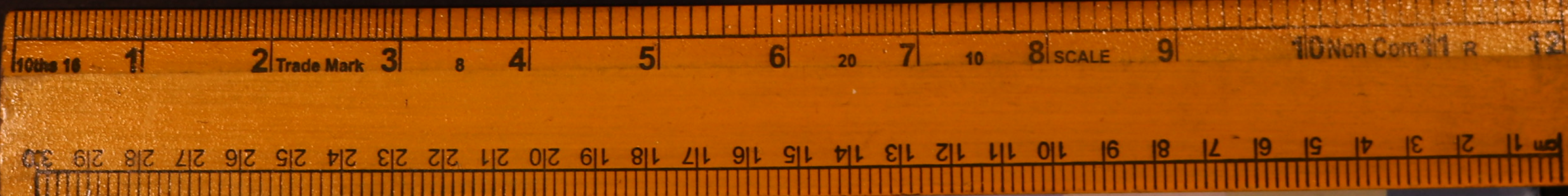
किसी दिन नल ने इक शो़ला उग़लती आग को देखा।
और उस में एक "कुडंलाकार" काले नाग को देखा।।

मदद की नल ने अफ़ई की, निकाला उस को आतिश से।
खुलासी मिल गई जब नाग को नल की नवाज़िश से।।

तो पहले अपने ही मोहसिन को, है है डस लिया उसने।
इक अच्छाई का बदला, यूँ बुराई से दिया उसने।।

बज़ाहिर सांप के डसने से उसकी शक्ल और सूरत।
बदल कर रह गई, और जिल्द की काली हुई रंगत।।

तल्ख़ = कड़वा
फ़िलों = हाथियों
ग़मोआलाम = दुःख और कष्ठ
मामूर = भरा हुआ
तख़्मीना = अंदाजा
खुलासी = मुक्ति
मोहसिन = एहसान करने वाला



کہا پھر ناگ نے نل سے ایودھیا دیش میں جا کر — وہاں کے راجہ رُوتُو سے ترا ملنا ہے اب بہتر

وہیں سے درحقیقت نل ترا کلیان اب ہوگا — دِمنتی سے بھی ملنے کا وہیں سامان اب ہوگا

یہ سن کر وہ خوشی سے راجہ رُوتو کے نگر پہنچا — شب دیجُور میں اک لیکے امیدِ سحر پہنچا

رہا کافی دنوں تک خوشنما نگری میں راجہ نل
ہمہ عالم مگر رہتا فراقِ یار میں بیکل

نئی راہیں ملیں اور حسرتِ دیرینہ برآئی

دِمنتی بھی فراقِ یار کی گنتی رہی گھڑیاں — لگی تھیں دکھ بھری آنکھوں سے ساون کیطرح جھڑیاں

بِرہ اور کامنا کی آگ میں جلتی رہی رانی — منورتھ کے مہاساگر میں روز اٹھتی تھی طغیانی

ہزاروں یوں تو آسائش کے ساماں بھی میسّر تھے — کنیز اور داس کتنے اسکی خدمت پر مقرر تھے

وصالِ یار کی تدبیریں کتنی ذہن میں آئیں — مگر قسمت نے مایوسی کی راہیں اسکو دکھلائیں

یونہی ہوتی رہی کاوش وصالِ جانِ جاناں کی — سبیل آخر نکل آئی علاجِ دردِ پنہاں کی

ہوا اعلان دوبارہ دِمنتی کے سوئمبر کا — ملن ہوگا اسی ترکیب سے دو رشکِ نیّر کا

دِمنتی کی ذہانت اور تدبّر نے لی انگڑائی — نئی راہیں ملیں اور حسرتِ دیرینہ بر آئی

कहा फिर नाग ने नल से, अयोध्या देश में जाकर।
वहाँ के राजा रूतू से, तेरा मिलना है अब बेहतर।।

वहीं से दर हक़ीक़त नल, तेरा कल्याण अब होगा।
दिमंती से भी मिलने का वहीं सामान अब होगा।।

यह सुन कर वह खुशी से राजा रूतू के नगर पहुँचा।
शबे-दीजूर में इक, लेके, उम्मीदे-सहर पहुँचा।।

रहा काफ़ी दिनों तक खुशनुमा नगरी में राजा नल।
हमा आलम मगर रहता, फ़िराक़े-यार में बेकल।।

शबे-दीजूर = काली रात
उम्मीदे-सहर = सुबह की आशा
हमा आलम = हर समय
बेकल = बेचैन

नई राहें मिलीं और हसरते-देरीना बरआयी

दिमंती भी फ़िराक़े-यार, की गिनती रही घड़ियाँ।
लगी थीं दुःखभरी आँखों से, सावन की तरहा झड़ियाँ।।

बिरहा और कामना की आग में जलती रही रानी।
मनोरथ के महासागर में रोज़ उठती थी तुग़यानी।।

हज़ारों यूँ तो आसाईश, के सामाँ भी मयस्सर थे।
कनीज़ और दास कितने, उसकी ख़िदमत पर मुक़र्रर थे।।

आसाईश = आनंद, आराम

विसाले-यार की तदबीरें, कितनी ज़ह्न में आयी।
मगर क़िस्मत ने मायूसी की राहें, उस को दिखलायी।।

यूँही होती रही काविश विसाले-जाने-जाना की।
सबील आख़िर निकल आई, इलाजे-दर्दे-पिन्हाँ की।।

काविश = प्रयत्न
सबील = रास्ता

हुआ एलान दोबारा दिमंती के स्वयं वर का।
मिलन होगा इसी तरकीब से, दो रश्के-नय्यर का।।

रश्के-नय्यर = इतने सुन्दर के उनके सामने सूरज झेप जाए

दिमंती की ज़हानत और तदब्बुर ने ली अंगड़ाई।
नई राहें मिलीं, और हसरते-देरीना बर आयी।।

तदब्बुर = तदबीर
हसरते-देरिना बर आई = पुरानी कामना पूरी होना

بدل ڈالا بالآخر اس نے ہجرِ یار کا نقشہ
تصور میں کھنچ آیا وصلتِ دلدار کا نقشہ

سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر

سوئمبر کی خبر اڑتی ہوئی جبدم ملی نل کو
بڑھیں بے چینیاں دل کی سکوں پایا نہ اک پل کو

یقین و شبہ کی اک کشمکش پیہم رہی جاری
حواسِ نل پہ تھی اک اضطرابی کیفیت طاری

کبھی وہ سوچتا کیا بے وفا ہے، واقعی رانی
جو یوں سوچا ہے اس نے انتخابِ شوہرِ ثانی

اُسے آخر ضرورت کیوں ہے دوبارہ سوئمبر کی
وہ کنیا تو نہیں جس کو ضرورت ہو کسی ور کی

نئی آغوش کی آخر تلاش اور جستجو کیوں ہے
سُہاگن یا پتی ورتا کو ور کی آرزو کیوں ہے

نہ جانے آج آمادہ ہے کیوں وہ بے وفائی پر
سیاہی پھیرنا کیوں چاہتی ہے پارسائی پر

وفا کی ذہن کے پردے پہ تصویریں اُبھر آئیں

مگر اک دوسرا رخ ذہن پر نل کے ابھر آیا
خیالِ بے وفائی تھا جو اب تک ذہن پر چھایا

बदल ड़ाला बिलआख़िर उसने हिज्रे-यार का नक़्शा।
तसव्वुर में खिंच आया, वुसलते-दिलदार का नक़्शा।।

स्याही फेरना क्यों चाहती है पारसाई पर

स्वयं वर की ख़बर उड़ती हुई जिस दम मिली नल को।
बढ़ीं बेचैनियाँ दिल की, सुकूँ पाया न इक पल को।।

यक़ीन-ओ-शुबह की इक कशमकश, पैहम रही जारी।
हवासे-नल पे थी, इक इज़्तेराबी कैफ़ियत तारी।।

कभी वह सोचता क्या बेवफ़ा है, वाक़ई रानी।
जो यूँ सोचा है उसने, इन्तख़ाबे-शौहरे-सानी।।

उसे आख़िर ज़रूरत क्यों है दोबारा स्वंय वर की।
वह कन्या तो नहीं, जिस को ज़रूरत हो किसी वर की।।

नई आग़ोश की आख़िर तलाशो-जुस्तजू क्यों है।
सुहागन या पती व्रता को, वर की आरज़ू क्यों है।।

नजाने आज आमादा है क्यों वह बे वफ़ाई पर।
स्याही फेरना क्यूँ चाहती है पारसाई पर।।

वफ़ा की ज़ह्न के परदे पे तस्वीरें उभर आयी

मगर इक दूसरा रुख़, ज़ह्न पर नल के उभर आया।
ख़्याले-बेवफ़ाई था जो अबतक ज़ह्न पर छाया।।

हिज्रे-यार = मित्र से जुदाई
तस्व्वुर = ध्यान, ख़्याल
वुसलते-दिलदार का नक़्शा = प्रेमी से मिलन का ख़्याल

यक़ीन व शुब्ह = विश्वास और संदेह
कशमकश = खींचा तानी
हवास = सोचने समझने की शक्ति

शौहरे-सानी = दूसरा पति

ज़हन = दिमाग

وہاں مجبوریاں رانی دِمنتی کی نظر آئیں
وفائی ذہن کے پردے پر تصویریں ابھر آئیں

یقیناً نقشِ ثانی نقشِ اوّل سے حسیں نکلا
گماں کے بحر سے نل لیکے اک دُرِّ یقیں نکلا

اسے اِس ضمن میں اپنی ہی کوتاہی نظر آئی
متانت سے کیا جب غور تو اپنی خطا پائی

کہ میں نے خود ستم توڑا ہے اس معصوم رانی پر
ترس مطلق نہ کھایا اسکی پاکیزہ جوانی پر

اسے جنگل میں خوابیدہ اکیلا چھوڑ کر آیا
مقدر کے حوالے کر دیا، منھ موڑ کر آیا

کھلی ہوگی جب اسکی آنکھ تو وہ رو پڑی ہوگی
سمجھ کر مجھکو نِرموہی ہراساں ہوگئی ہوگی

حیات و موت کی اس کشمکش سے پار اترنا ہے

یہ سچ ہے واقعی اس ضمن میں سب ہے خطا میری
پریشانی کا باعث ہے حقیقت میں جفا میری

سوئمبر بھی مگر اک آنکھ اب بھاتا نہیں مجھ کو
یہی اعلان بے ہودہ تو راس آتا نہیں مجھ کو

مری لغزش کے ساتھ اس بے وفا محبوب کی باتیں
کھٹک جاتی ہیں مثلِ خار آنکھوں میں یہی گھاتیں

دِگر اسکے ہو شاید ماہوش کی اس میں کچھ حکمت
وگرنہ میں سمجھ لوں اسکو اپنی شومیٔ قسمت

لہٰذا اب وہیں جا کر مجھے معلوم کرنا ہے
حیات و موت کی اس کشمکش سے پار اترنا ہے

वहाँ मजबुरियाँ रानी दिमंती की नज़र आयीं।
वफ़ा की, ज़ह्न के परदे पर तस्वीरें उभर आयीं।।

यक़ीनन नक़्शे-सानी नक़्शे-अव्वल से हँसीं निकला।
गुमाँ के बहर से नल लेके, इक दुर्रे-यक़ीं निकला।।

उसे इस ज़िम्न में, अपनी ही कोताही नज़र आयी।
मतानत से किया जब ग़ौर, तो अपनी ख़ता पायी।।

कि मैंने खुद सितम तोड़ा है, उस मासूम रानी पर।
तरस मुतलक़ न खाया, उसकी पाकीज़ा जवानी पर।।

उसे जंगल में ख़्वाबीदा अकेला छोड़ कर आया।
मुक़द्दर के हवाले कर दिया, मुँह मोड़ कर आया।।

खुली होगी जब उसकी आँख तो वह रो पड़ी होगी।
समझ कर मुझ को निर्मोही, हिरासाँ हो गई होगी।।

नक़्शे-सानी = दूसरा चित्र
नक़्शे-अव्वल = पहला चित्र
गुमां के बहर से = शक के समुद्र से
दुर्रे-यक़ीं = विश्वास का मोती
ज़िम्न = विषय
ख़्वाबीदा = सोई हुई

हयात-ओ-मौत की इस कश्मकश से पार उतरना है

यह सच है वाक़ई इस ज़िम्न में सब है ख़ता मेरी।
परेशानी का बाइस है, हक़ीक़त में जफ़ा मेरी।।

स्वयंवर भी मगर इक आँख, अब भाता नहीं मुझ को।
यही एलान बेहूदा, तो रास आता नहीं मुझ को।।

मेरी लग़ज़िश के साथ, उस बेवफ़ा महबूब की बातें।
खटक जाती हैं मिस्ले-ख़ार आँखों में यही घातें।।

दिगर इसके, हो शायद, माहवश की, इस में कुछ हिकमत।
वगरना मैं समझ लूँ इस को अपनी, शूमिए-क़िस्मत।।

लिहाज़ा अब वहीं जाकर, मुझे मालूम करना है।
हयात-ओ-मौत की इस कश्मकश से पार उतरना है।।

बाइस = वजह कारण

लग़ज़िश = ग़लती
मिस्ले ख़ार = कांटे की तरह
हिकमत = अच्छाई का कोई पहलू

گلِ صدبرگ کے جیسے چمن میں کھل گئے دونوں

پھر اسکے بعد راجہ بھیم کی نگری میں پہنچا نَل — سوئمبر کی خبر سے اک مچی تھی قلب میں ہلچل

دمنتی کی فراست کا یہ ادنیٰ سا کرشمہ تھا — جو نَل کو بھیم کی نگری میں آخر کھینچ لایا تھا

وہاں پہنچا تو پہلے جانچ کی اُسنے سوئمبر کی — وہ اک اڑتی ہوئی افواہ تھی لاریب بے پَر کی

تھا کافی ہاتھ اس افواہ میں رانی دمینتی کا — اسی کی حکمت و دانش نے باندھا تھا یہ منصوبہ

یقیناً کامراں تھی آج وہ اپنی سیاست میں — تصور میں تھی اسکے، منزلِ وصلت حقیقت میں

خدنگِ حکمتِ ناز آفریں بیٹھا نشانے پر — جبیں کے بَل، کھینچ آیا نَل، خود اسکے آستانے پر

سوئمبر کے بہانے قلبِ مضطر مل گئے دونوں
گلِ صدبرگ کی مانند گویا کھل گئے دونوں

مہامنی ویاس کا درشن

پھر اسکے بعد اک دن ویاس جی نے درشن دکھلایا — یدھشٹر نے بڑی تکریم سے پھر ان کو بٹھلایا

مہرشی نے پھر ازراہِ تلطف خیریت پوچھی — سفر کا حال پوچھا اور مزاجی کیفیت پوچھی

गुले-सद बर्ग के जैसे चमन में खिल गए दोनों

फिर इसके बाद, राजा भीम की, नगरी में पहुँचा नल।
स्वयंवर की ख़बर से, इक मची थी, क़ल्ब में हलचल।।

दिमंती की फ़िरासत का यह अदना सा करिश्मा था।
जो नल को, भीम की नगरी में, आख़िर खींच लाया था।।

वहाँ पहुँचा तो पहले, जाँच की उसने स्वयंवर की।
वह इक उड़ती हुई अफ़वाह थी, लारैब बेपर की।।

था काफ़ी हाथ इस अफ़वाह में, रानी दिमंती का।
उसी की हिकमत-ओ-दानिश ने, बाँधा था यह मनसूबा।।

यक़ीनन कामराँ थी आज, वह अपनी सियासत में।
तसव्वुर में थी उसके, मन्ज़िले-वुसलत हक़ीक़त में।।

खुदंगे-हिक़मते-नाज़ आफ़रीं बैठा निशाने पर।
जबीं के बल, ख़िंच आया नल, खुद उस के आस्ताने पर।।

स्वयंवर के बहाने, क़ल्बे-मुज़तर मिल गए दोनों।
गुले-सद बर्ग की मानिंद गोया खिल गए दोनों।।

फ़िरासत = बुद्धि
अदना = छोटासा

लारैब = निस्संदेह

हिकमतो-दानिश = बुद्धि और अक्ल
कामराँ = सफल
तस्वुर = ध्यान
मन्ज़िले-वुसलत = मिलाप की मन्ज़िल
खुदंगे-हिकमते नाज़ आफरीं = बुद्धि और नाज़ के साथ चलाया गया तीर
जबीं = माथा

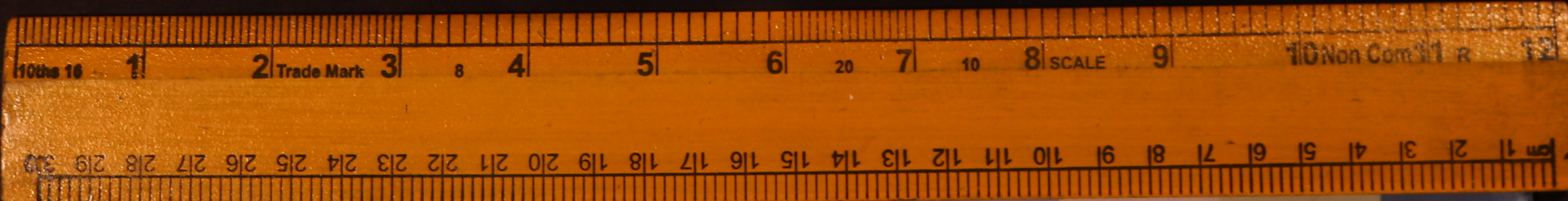
गुले-सदबर्ग = गुलाब का फूल

महामुनि व्यास का दर्शन

फिर इसके बाद, एक दिन व्यासजी ने, दर्श दिखलाया।
युधिष्ठिर ने, बड़ी तकरीम से, फिर उन को बिठलाया।।

महर्षि ने ब अज़राहे, तलत्तुफ़, ख़ैरियत पूछी।
सफ़र का हाल पूछा, और मिज़ाजी कैफ़ियत पूछी।।

तकरीम = इज्ज़त अजराहे
तलत्तुफ़ = मोहब्बत की राह से या मोहब्बत से, मिजाजी
कैफ़ियत = तबियत का हाल



یُدھشٹر نے کہا کیا پوچھتے ہیں خیریت میری ! مقدر میں صعوبت ہے، نہ پوچھیں عافیت میری

نہ ہوگا کوئی بھی مجھ سا دکھی راجہ زمانے میں!! نہ پائیں گے کوئی باب ایسا ماضی کے فسانے میں

رشی جی نے یُدھشٹر کی سنی باتیں متانت سے تسلی اور دلاسا دے کے سمجھایا محبت سے

نہ ہو مایوس راجہ اسقدر اپنی تباہی پر رہا ہے تمکنت سے کون دائم تختِ شاہی پر

علاوہ اسکے تجھ سے بھی زیادہ درد کے مارے اسی دھرتی پہ زیرِ آسماں گذرے ہیں بیچارے

ہے ان میں اک ہری چند نام کے راجہ کا افسانہ ہے جسکی زندگی کا درد سے لبریز پیمانہ

رشی جی ویاس نے پھر داستاں اسکی سنا ڈالی مسرت عیش و خرسندی سے تھی جو مطلقاً خالی

یُدھشٹر بھول بیٹھا اپنا غم، اپنی مصیبت کو
دل اسکا درد سے بھر آیا سنکر اس حکایت کو

مارکنڈے جی کا درشن

کئی دن بعد اس بن میں یُدھشٹر کو بایں فرحت دیا درشن منی جی مارکنڈے نے بایں خُلت

یُدھشٹر نے انہیں دیکھا تو فوراً باادب ہوکر کیا آداب اور انکو بٹھایا ایک آسن پر

بڑے عجز و ارادت سے کہا اے رہبرِ کامل بجا ہے! آپ پر روشن ہے ماضی اور مستقبل

युधिष्ठिर ने कहा क्या पूछते हैं ख़ैरियत मेरी।
मुक़द्दर में सऊबत है, न पूछें आफ़ियत मेरी।।

न होगा कोई भी मुझ सा, दुःखी राजा ज़माने में।
न पाएंगे, कोई बाब ऐसा, माज़ी के फ़साने में।।

ऋषिजी ने युधिष्ठिर की सुनी बातें मतानत से।
तसल्ली और दिलासा देके, समझाया मुहब्बत से।।

न हो मायूस राजा, इस क़दर अपनी तबाही पर।
रहा है तमकनत से कौन, दाइम तख़्ते-शाही पर।।

अलावा इस के, तुझ से भी ज़्यादा दर्द के मारे।
इसी धरती पे ज़ेरे-आसमाँ, गुज़रे हैं बेचारे।।

है उन में इक हरी चंद नाम के राजा का अफ़साना।
है जिसकी ज़िन्दगी का, दर्द से लबरेज़ पैमाना ।।

ऋषिजी व्यास ने फिर दास्ताँ उस की सुना डाली।
मुसर्रत ऐशो-खुरसंदी से थी, जो मुतलक़न ख़ाली।।

युधिष्ठिर भूल बैठा अपना ग़म, अपनी मुसीबत को।
दिल उस का दर्द से भर आया, सुन कर इस हिकायत को।।

माज़ी के फ़साने = प्राचीन कथांए
मतानत = गंभीरता

मायूस = निराश
तमकनत = गौरव
दाइम = हमेशा

लबरेज़ पैमाना = भरा हुवा बर्तन

मुसर्रत ऐशो खुरसंदी = प्रसन्नता और आनंद
मुतलक़न = बिल्कुल
हिकायत = कहानी

मारकन्डे जी का दर्शन

कई दिन बाद इस बन में, युधिष्ठिर को बई फ़रहत ।
दिया दर्शन मुनिजी, मारकन्डे ने, बई खुल्लत।।

युधिष्ठिर ने उन्हें देखा, तो फ़ौरन बा अदब होकर।
किया आदाब, और उनको, बिठाया एक आसन पर।।

बड़े इज़्ज़ो-इरादत से कहा, ऐ रहबरे-कामिल।
बजा है ! आप पर रौशन है, माज़ी और मुस्तक़बिल।।

बई फ़रहत = खुशी के साथ
बई खुल्लत = दोस्ती के साथ

इज़्ज़ो-इरादत = आदरता
माज़ी और मुस्तक़बिल = भूतकाल और भविष्यकाल

مگر بتلائیں "پرلے"[1] مجھ کو کس پرکار اب ہو گی
قیامت کسطرح برپا مرے سرکار اب ہو گی

علاوہ اسکے میرے دکھ کے لمحے کم نہیں ہوتے
گزر جائے گی میری زندگی کیا روتے ہی روتے

مہرشی مارکنڈے نے یہ باتیں سن کے فرمایا
تسلی دیکے "پرلے" کا نظارہ اس کو دکھلایا

یدھشٹر سے کہا ویاکل نہ ہو رکھ دھیرتا من میں
بنا جیمار[2] کے کیوں ہو منش جیمان[3] جیون میں

یہی سدھانت ہے سنسار میں جیون بتانے کا
یہی ہے راستہ بیکنٹھ اور مکتی کے پانے کا

دگر اسکے منی جی مارکنڈے نے بصد رقت
یدھشٹر کو سنایا رام جی کا قصۂ کلفت

جسے سنکر یدھشٹر بھول بیٹھا اپنا غم سارا
ملا احساسِ غم سے اسکے دل کو آج چھٹکارا

صحرانوردی کے بارہ سال

اسی انداز سے بارہ برس تک درد کے مارے
پریشاں حال پھرتے ہی رہے صحرا میں بیچارے

کبھی ڈالا کسی پربت پہ ڈیرا غم کے ماروں نے
کبھی جمنا کے تٹ کو جا بسایا بے سہاروں نے

کبھی پہنچے کسی کے آشرم میں شان و شوکت سے
رشی منیوں کے درشن کو کبھی نکلے عقیدت سے

[1] پرلے، قیامت [2] جیمار، نفس کشی [3] جیمان فاتح ناصر

मगर बतलाएँ 'प्रलय', मुझ को, किस प्रकार अब होगी।
क़यामत किस तरह बरपा, मेरे सरकार अब होगी।।

अलावा इस के, मेरे दुःख के लमहे कम नहीं होते।
गुज़र जाएगी मेरी ज़िंदगी, क्या रोते ही रोते।।

महर्षि मारकन्डे ने यह बातें सुन के फ़रमाया।
तसल्ली देके "प्रलय" का, नज़ारा उस को दिखलाया।

युधिष्ठिर से कहा, व्याकुल न हो, रख धीरता मन में।
बिना "जीमार" के क्यों हो मनुष्य, "जीमान" जीवन में।।

यही सिद्धांत है संसार में, जीवन बिताने का।
यही है रास्ता बैकुन्ठ और मुक्ति के पाने का।।

दिगर इस के मुनिजी मारकन्डे ने, बसद रिक़्क़त।
युधिष्ठिर को सुनाया राम जी का, क़िस्साए-कुलफ़त।।

जिसे सुन कर युधिष्ठिर, भूल बैठा अपना ग़म सारा।
मिला एहसासे-ग़म से, उस के दिल को आज छुटकारा।।

सहरा-नवरदी के बारह साल

इसी अन्दाज़ से बारह बरस तक दर्द के मारे।
परेशाँ हाल फिरते ही रहे सहरा में बेचारे।।

कभी डाला किसी पर्बत पे डेरा, ग़म के मारों ने।
कभी जमना के तट को, जा बसाया बे सहारों ने।।

कभी पहुँचे किसी के आश्रम में, शान-ओ-शौकत से।
ऋषि मुनियों के दर्शन को कभी निकले अक़ीदत से।।

प्रलय = क़यामत
बरपा = उत्पन्न

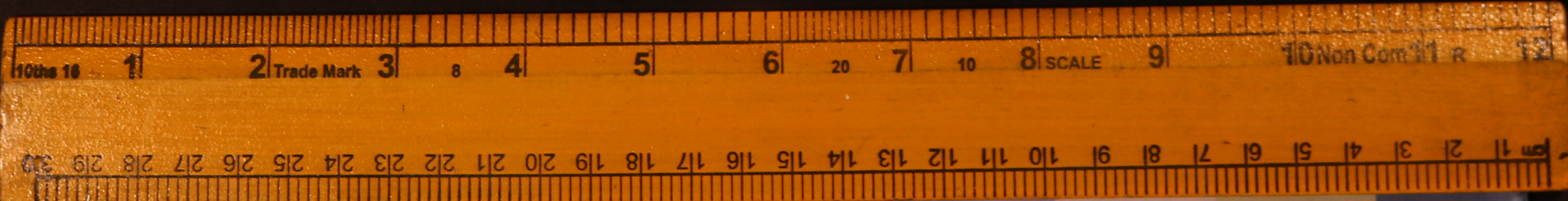
लम्हे = क्षण

नज़ारा = दृश्य

जीमार = नफ़्स मारना
जीमान = फ़ातेह

बसद रिक़्क़त = बहुत रोते हुए
क़िस्साए-कुलफ़त = दर्द नाक कहानी

अक़ीदत = श्रद्धा



کبھی پربت کی چوٹی پر بھبھوتی مل کے جا بیٹھے
لنگوٹی باندھکر تپ کیلیئے آسن لگا بیٹھے

کبھی دیتا تھا کوئی دیوتا وردان خوش ہوکر
تو کوئی بخش دیتا جنگ کا سامان خوش ہوکر

کبھی لڑنے کو کوئی راکشش میدان میں آتا
گدا اور ملّھ یدھ کا فن جہاں والوں کو دکھلاتا

کبھی سیکھی یدھشٹر نے جوئے کی ودّیا ساری
اور اس فن پر مہارت اسنے حاصل کی بہ دشواری

کبھی بس دیدیا بجرنگ جی نے بھیم کو درشن
دعائے خیر دیکر بھر دیا اُمّید کا دامن

دِگر اسکے انہوں نے بھیم سے حد درجہ خوش ہوکر
ہم آہنگی کا بخشا نعرہ ہائے بھیم کو اک ور

غرض بارہ برس تک ٹھوکریں کھاتے رہے یونہی
پریشاں کن زمانے سامنے آتے رہے یونہی

رولپوشی کا آخری سال

بتا کر زندگی کے تلخ بارہ سال پانڈو نے
دکھادی شان پامردی و استقلال پانڈو نے

بچا تھا اک برس جسکو انہیں چھپ کر بتانا تھا
شرائط کے مطابق خود کو کوروں سے چھپانا تھا

اسی مقصد کو لیکر وہ کہاں تھے اور کہاں پہنچے
جہاں ویراٹ جیسا حکمراں تھا وہ وہاں پہنچے

ملازم رکھ لیا راجہ نے آخر غم کے ماروں کو
سہارا دیدیا وقتِ صعوبت بے سہاروں کو

कभी पर्बत की चोटी पर, भभूती मल के जा बैठे।
लंगोटी बांध कर, तप के लिये, आसन लगा बैठे।।

कभी देता था, कोई देवता, वरदान खुश होकर।
तो कोई बख़्श देता, जंग का सामान खुश होकर।।

कभी लड़ने को कोई राक्षश मैदान में आता।
गदा और मल्लयुध्द का फ़न जहाँ वालों को दिखलाता।।

कभी सीखी युधिष्ठिर ने जुए की विद्या सारी।
और इस फ़न में महारत, उसने हासिल की ब दुशवारी।।

कभी बस देदिया बजरंग जी ने, भीम को दर्शन।
दुआ-ए-ख़ैर देकर, भरदिया उम्मीद का दामन।।

दिगर इसके उन्होंने भीम से हद-दर्जे खुश होकर।
हम-आहंगी का बख़्शा 'नारा-हाए' भीम को इक वर।।

ग़रज़ बारह बरस तक, ठोकरें खाते रहे यूँही।
परेशाँ-कुन ज़माने, सामने आते रहे यूँही।।

हम आहंगी = आवाज़ मिलाकर और आपस में मेल जोल
परेशाँ-कुन = परेशान करने वाले

रूपोशी का आख़री साल

बिता कर ज़िन्दगी के तल्ख़ बारह साल पांडव ने।
दिखादी शाने-पा-मर्दी-ओ-इसतक़लाल पांडव ने।।

बचा था इक बरस जिस को, उन्हे छिप कर बिताना था।
शराएत के मुताबिक़ खुद को कौरों से छिपाना था।।

इसी मक़सद को लेकर, वह कहाँ थे और कहाँ पहुँचे।
जहाँ वीराट जैसा हुक्मराँ था, वह वहाँ पहुँचे।।

मुलाज़िम रख लिया राजा ने आख़िर ग़म के मारों को।
सहारा दे दिया वक़्ते-सऊबत, बे सहारों को।।

पा-मर्दी-ओ-इसतक़लाल = मुसीबत के मुक़ाबिल डटे रहना

वक़्ते-सऊबत = कष्ठ के समय

یُدھشٹر ہوگیا مامور چوپٹ کے سکھانے پر　　دلاور بھیم کو رکھا گیا کھانا پکانے پر

معلم موسیقی و رقص و نغمہ کا بنا ارجن　　سکھائے جس نے اسکی کنیا کو ناچنے کے گن

نکل سہدیو نے بھی لے لیا کچھ بار اپنے سر　　انہیں اک سال چھپنے کا یہاں موقع ملا بہتر

درو پد کنیا داسی بنی ویراٹ رانی کی

پرکشا جس جگہ دینی پڑی اس کو جوانی کی

دلِ معصوم میں اک انتقامی برق لہرائی

وہیں بستی میں کیچک نام کا راجہ کا سالا تھا　　سپہ سالار اعلیٰ تھا جفاکش تھا جیالا تھا

نظر آئی اچانک ایک دن کیچک کو پنچالی　　ہوا ظالم کا مغزِ پُر تعفن عقل سے خالی

بالآخر چھیڑ بیٹھا دخترِ پنچال کو ظالم　　بنانا چاہا صیدِ نفس نیک افعال کو ظالم

یہ عالم اس پہ کیا بیتا کہ غیرت جوش میں آئی　　دلِ معصوم میں اک انتقامی برق لہرائی

شکایت بھیم سے کی اور دلایا جوش غیرت کو　　اُبھارہ واسطہ ناموس کا دے کر حمیت کو

بھیم کا جوش اور حکمتِ عملی

شکایت بھیم نے جونہی سنی فوراً بھڑک اٹھا　　کمانیں کھنچ گئیں ابرو کی اور بازو پھڑک اٹھا

युधिष्ठिर हो गया मामूर, चौपट के सिखाने पर।
दिलावर भीम को रक्खा गया खाना पकाने पर।।

मुअल्लिम, मौसिकी-ओ-रकसो-नग़मे का बना अर्जुन।
सिखाए जिस ने उस की, कन्या को नाचने के गुन।।

नकुल सहदेव ने भी ले लिया कुछ बार अपने सर।
इन्हें इक साल छिपने का यहाँ मौक़ा मिला बेहतर।।

द्रौपद कन्या दासी बनी वीराट रानी की।
परिक्षा जिस जगह देनी पड़ी उस को जवानी की।।

दिले-मासूम में इक इन्तेक़ामी बर्क़ लहराई

वहीं बस्ती में केचक नाम का, राजा का साला था।
सिपह सालारे-आला था, जफ़ाकश था, जियाला था।।

नज़र आई अचानक एक दिन, केचक को पंचाली।
हुआ ज़ालिम का मग़ज़े-पुर-तअफ़्फुन, अक़्ल से ख़ाली।।

बिलआख़िर छेड़ बैठा दुख़्तरे-पंचाल को ज़ालिम।
बनाना चाहा, सएदे-नफ़्स नेक अफ़आल को ज़ालिम।।

यह आलम उस पे क्या बीता, कि ग़ैरत जोश में आई।
दिले-मासूम में इक, इन्तेक़ामी बर्क़ लहराई।।

शिकायत भीम से की, और दिलाया जोश ग़ैरत को।
उभारा वास्ता नामूस का देकर, हमैयत को।।

भीम का जोश और हिकमते-अमली

शिकायत भीम ने जूँही सुनी फ़ौरन भड़क उठ्ठा।
कमानें ख़िच गईं अबरू की और बाज़ू फड़क उठ्ठा ।।

मामूर = काम पर रखना

मुअल्लिम = गुरू
रक्स = नृत्य
नग्मा = गीत
बार = बोझ/काम

सिपासालारे आला = सेनापति
जफ़ाकश = मेहनती
जियाला = ताकत वर
मग्ज़ेपुर-तअफ़्फुन = बदबूदार दिमाग
सएदे-नफ़्स = अपनी इच्छा का शिकार
नेक अफ़आल = अच्छे काम
इन्तेकामी बर्क़ = बदले की आग

अबरू = भवें

مگر اس انتقامی جوش پر غالب فراست تھی
کسی اور دوسرے موقع کی طالب جارحیت تھی

بنا کر ایک منصوبہ اچھوتا سا متانت سے
ہوا جس پر عمل پیرا خموشی اور حکمت سے

عروسِ ناز کی مانند اس نے روپ اک دھارا
نہ تھا اسکے سوا، اب بھیم ہیکل کے لئے چارا

کیا سازش میں پہلے دخترِ پنچال کو شامل
وساطت سے اسی کی حل ہوئی پھر بھیم کی مشکل

معین وقت پر ایما سے پنچالی کے، پھر کیچک
وصالِ یار کا ارماں لئے پہنچا کسی حد تک

معاً انگڑائی لیکر جاگ اٹھا نفسِ امّارہ

پہنچکر جائے معہودہ پہ کیچک خوب فرحاں تھا
جہاں شانِ عروسی سے کوئی نزہت بداماں تھا

ہوا دامن تحمّل کا نظر پڑتے ہی صد پارہ
معاً انگڑائی لیکر جاگ اٹھا نفس امّارہ

بڑھا بے تاب ہو کر وہ عروسِ ناز کی جانب
بظاہر جانبِ شہناز صورت باز کی جانب

لرزتے ہاتھ کو کیچک نے رکھا اس کے گھونگھٹ پر
کہ شہوت کے نشے میں چور اور بدمست تھا خودسر

بدلکر پینترا فولاد سے ٹکرا گیا کیچک

اک ایسی ہی گھڑی کا منتظر تھا بھیم شیر افگن
بدلکر بھیس بیٹھا تھا دلہن بنکر اسی کارن

۱؎ دلہن

मगर इस इन्तेक़ामी जोश पर ग़ालिब फ़िरासत थी।
किसी और दूसरे, मौक़े की, तालिब, जारेहैयत थी।।

बना कर एक मन्सूबा, अछूता सा मतानत से।
हुआ जिस पर अमल पैरा ख़मुशी और हिकमत से।।

उरूसे-नाज़ की मानिंद उसने रूप इक धारा।
न था इसके सिवा, अब भीम हेकल के लिए चारा।।

किया साज़िश में पहले दुख़्तरे-पंचाल को शामिल।
विसातत से इसी की, हल हुई फिर, भीम की मुश्किल।।

मोअइयन वक़्त पर इमा से, पंचाली के, फिर केचक।
विसाले-यार का अरमाँ लिए पहुँचा किसी हद तक।।

मअन अंगड़ाई लेकर जाग उठ्ठा नफ़्से-अम्मारा

पहुँचकर जाए माहूदा पे, केचक ख़ूब फ़रहाँ था।
जहाँ शाने-उरूसी से, कोई नुज़हत बदामाँ था।।

हुआ दामन तहम्मुल का, नज़र पड़ते की सद पारा।
मअन अंगड़ाई लेकर जाग उठ्ठा नफ़्से-अम्मारा।।

बढ़ा बेताब होकर वह उरूसे-नाज़ की जानिब ।
बज़ाहिर जानिबे-शहनाज़, सूरत बाज़ की जानिब।।

लरज़ते हाथ को केचक ने रक्खा, उस के घूँघट पर।
कि शहवत के नशे में चूर, और बदमस्त था खुदसर।।

बदल कर पैंतरा फ़ौलाद से टकरा गया केचक

इक ऐसी ही घड़ी का मुन्तज़िर था भीम शेर अफ़गन।
बदल कर भेस बैठा था, दुल्हन बन कर इसी कारण।।

तालिब = इच्छुक
जारेहैयत = आक्रमण

उरूसे-नाज़ = दुल्हन

विसातत = ज़रिया

मोअइयन वक़्त = निर्धारित समय

जाए माहूदा = निर्धारित जगह
शाने-उरूसी = दुल्हन की यज वज
नुज़हत बदामाँ = पवित्र लिवास पहने
तहम्मुल = धीरज
सद पारा = सौ टुकड़े
शहनाज़ = दुलहन
सूरत बाज़ = बहरूपिया

शेर अफ़गन = शेर को पछाड़ने वाला

جونہی کیچک نے گھونگھٹ کو اٹھایا جانِ من کہہ کر — پڑا بھرپور گھونسہ بھیم کا کیچک کے جبڑے پر

اچانک وار پر ششدر ہوا اور بوکھلا اٹھا — بھبھوکا بن گیا غصّے سے، چہرہ تمتما اٹھا

مقابل بھیم کے خم ٹھونک کر پھر آگیا کیچک — بدل کر پینترا فولاد سے ٹکرا گیا کیچک

ملا کر ہاتھ فوراً تھاپ دی گردن پہ خوش فن نے — تڑپ کر مارا اک ٹنگا وہیں سے شیر افگن نے

جواباً داؤں کیچک نے پھر ایسا تول کر مارا — رہا اپنی حفاظت کا نہ مطلق بھیم کو یارا

قلابازی وہ کھا کر جا پڑا شہتیر کی مانند
رہا کچھ دیر تک ساکت وہ اک تصویر کی مانند

کیچک کیفرِ کردار تک

ہوئی پھر چند لمحے بعد اسکے جسم میں حرکت — اٹھا وہ لڑکھڑاتا اک نحیف و زار کی صورت

بتدریج آگئی پھر بھیم کے تن میں توانائی — بڑھا محتاط ہو کر وہ برائے جنگ آرائی

خیالِ غیرت ناموس دل میں آگیا یک لخت — وہ نقشِ عہدِ ماضی بھیم کو تڑپا گیا یک لخت

اچانک بھیم نے کیچک پہ گازُر[1] داؤ یوں مارا — گرا اک لاٹ کی مانند پھر سفاک ناکارا

[1] دھوبی پچھاڑ (کشتی کا ایک داؤں)

ज्योंही केचक ने घूँघट को उठाया जाने मन कहकर।
पड़ा भर पूर घूँसा भीम का, केचक के जबड़े पर।।

अचानक वार पर शशदर हुआ और बौखला उठ्ठा।
भभूका बन गया गुस्से से, चेहरा तमतमा उठ्ठा।।

मुक़ाबिल भीम के, खम ठोंक कर, फिर आगया केचक ।
बदल कर पैंतरा फ़ौलाद से टकरा गया केचक।।

मिला कर हाथ फ़ौरन थाप दी गर्दन पे खुश-फ़न ने।
तिरप कर मारा इक टंगा वहीं से शेर अफ़गन ने।।

जवाबन दावं केचक ने फिर ऐसा तोल कर मारा।
रहा अपनी हिफ़ाज़त का न मुतलक़ भीम को यारा।।

क़ला बाज़ी वह खाकर जा पड़ा शैहतीर की मानिंद।
रहा कुछ देर तक साकित, वह इक तस्वीर की मानिंद।।

शशदर = आश्चर्य

हिफ़ाज़त = रक्षा
मुतलक़ = बिलकुल
यारा = होश
शैहतीर की मानिंद = लकड़ी के खंबे जैसा
साकित = ठहरा हुआ

केचक
कैफ़रे-किरदार तक

हुई फिर चंद लम्हा बाद उसके जिस्म में हरकत ।
उठा वह लड़ खड़ाता इक, नहीफ़-ओ-ज़ार की सूरत।।

बतदरीज आगई फिर भीम के तन में तवानाई।
बढ़ा मोहतात हो कर वह बराए जंग आराई।।

ख़्याले-ग़ैरते-नामूस दिल में आगया यकलख़्त।
वह नक़्शे-अहदे-माज़ी भीम को तड़पा गया यकलख़्त।।

अचानक भीम ने केचक पे [1]गाजुर दार यूँ मारा।
गिरा इक लाट की मानिंद फिर सफ़्फ़ाक नाकारा।।

चंदलम्हा = कुछ क्षण
नहीफ़ो-ज़ार = दुबला और कमज़ोर
बतदरीज = धीरे धीरे
मोहतात = चौकस
ख़्याले ग़ैरते नामूस = इज़्ज़त और ग़ैरत का ख़्याल
यकलख़्त = अचानक
नक़्शे अहदे माज़ी = पुराने ज़माने की

[1] धोबी पछाड़ (कुशती का एक दाँव)



ابھی پلکیں نہ جھپکی تھیں کہ اک بجلی سی لہرائی
زمیں پر لاش کیچک کی تڑپتی سی نظر آئی

نہ جانے بھیم نے کیسا کیا تھا داؤں کیچک پر
گیا اک وار ہی میں اپنی جاں سے آہنی پیکر

غرض کیچک کا اس نے آج قصہ پاک کر ڈالا
مرا بے موت دستِ بھیم سے ویراٹ کا سالا

دریودھن کا فتنہ

خبر کیچک کے مرنے کی ہوئی جب مُشتہر ہر سو
تو دریودھن نہ مطلق دل پہ اپنے رکھ سکا قابو

معاً ویراٹ کی نگری میں پہنچا ویر دریودھن
معیت میں تھے جسکے کرن، کرپہ اور دشاشن

اسے پورا یقیں تھا آج اس سنسار کے اندر
فقط اک بھیم سا مردِ جری ہے ایسا زور آور

جو کیچک جیسے رستم کی کلائی موڑ سکتا ہے
گدا کی ضرب سے ہاتھی کی گردن توڑ سکتا ہے

اسی کارن یہاں آکر ہوا تھا شر پہ آمادہ
وہ چونکہ پی کے آیا تھا فسادِ فسق کا بادہ

لہٰذا اس کے دل میں یوں اٹھا طوفاں شرارت کا
شرارت سے زیادہ جس میں عنصر تھا حماقت کا

تھی جتنی عقل دریودھن میں بس اسکے مطابق ہی
ہنکا کر لے چلا بقراتؔ[1] آخر تھا تو ناہقؔ[2] ہی

چلا وہ ہانکتا اس وجہ سے ویراٹ کی گائیں
کہ مجھکو روکنے جو سورما ہوں سامنے آئیں

[1] گائے بیل [2] گدھا

अभी पलकें न झपकी थीं, कि इक बिजली सी लहराई।
ज़मीं पर लाश केचक की, तड़पती सी नज़र आई।।

न जाने भीम ने कैसा किया था दाँव केचक पर।
गया इक वार ही में अपनी जाँ से आहनी पैकर।।

ग़रज़ केचक का उसने, आज क़िस्सा पाक कर डाला।
मरा बे मौत दस्ते-भीम से वीराट का साला।।

दस्ते-भीम = भीम के हाथों से

दुर्योधन का फ़ितना

ख़बर केचक के मरने की हुई जब मुशतहिर हरसू।
तो दुर्योधन, न मुतलक़ दिल पे अपने रख सका क़ाबू।।

मअन वीराट की नगरी में पहुँचा वीर दुर्योधन।
मईयत में थे जिस के कर्ण, कृपा, और दुश्शाशन।।

उसे पूरा यक़ीं था आज इस संसार के अन्दर।
फ़क़त इक भीम सा मर्दे-जरी है, ऐसा ज़ोर आवर।।

जो केचक जैसे रुस्तम की कलाई मोड़ सकता है।
गदा की ज़र्ब से हाथी की गर्दन तोड़ सकता है।।

इसी कारण यहाँ आकर हुआ था शर पे आमादा।
वह चूँकि पी के आया था, फ़सादो-फ़िस्क़ का बादा।।

लिहाज़ा उस के दिल में यूँ उठा तूफ़ाँ शरारत का।
शरारत से ज़्यादा जिस में उन्सुर था हिमाक़त का।।

थी जितनी अक़्ल दुर्योधन में, बस उस के मुताबिक़ ही।
हँका कर ले चला बक़रात, आख़िर था तो नाहिक़ ही।।

चला वह हाँकता इस वजह से वीराट की गायें।
कि मुझको रोकने जो सूरमा हों सामने आयें।।

मुशतहिर = मशहूर
मुतलक़ = बिलकुल
मईयत = नेतृत्व में
मर्दे-जरी = बहादुर मर्द
ज़ोर आवर = शक्तिशाली
शर = बुराई
आमादा = तैयार
फ़सादो-फ़िस्क़ = दंगा और पाप
बादा = शराब
उन्सुर = मूल, तत्व
मुताबिक़ = अनुसार
बक़रात = गाय बैल
नाहिक़ = गधा

ارجن کے مقابلے پر کوروں کی شکست

پسر ویراٹ کا آخر پھر اس کو روکنے آیا — مگر ان دیوزادوں کو وہاں دیکھا تو گھبرایا

وہاں ارجن جو نرتک بن کے تھا راجہ کی نگری میں — ابھی تک زندگی گذری تھی جسکی افراتفری میں

اسے سہما ہوا دیکھا تو خود تیر و کماں لے کر — تنِ تنہا گرا اک برق کی مانند کوروں پر

پڑا گھمسان کا رن تیر دونوں سمت سے چھوٹے — اکیلی جاں پہ دھاوا بول کر سب سورما ٹوٹے

مگر ارجن اکیلا آج سب کوروں پہ بھاری تھا — وہی غالب وہی حاوی اسی کا رعب طاری تھا

نبرد آرا وہ اس انداز سے تھا شورہ پشتوں سے — زمیں کو پاٹنا ہو، جیسے لاشوں اور کشتوں سے

یقیناً کوروان مغلوب اور ارجن ہی غالب تھا — مگر تحسینِ جانبازی کا وہ مطلق نہ طالب تھا

جدھر بھی ٹوٹتا تھا لوگ کائی جیسے پھٹتے تھے — خدنگِ آہنی سے زخم کھا کر پیچھے ہٹتے تھے

قدم آخر اکھڑ کر رہ گئے کوروں کے میداں سے — دکھا کر پشت بھاگے سورما رفتارِ طوفاں سے

وراٹ کی دختر سے ابھیمنو کا بیاہ

فرارِ کوروان کے بعد ہی راجہ وراٹ آیا — اُسے حیرت ہوئی ارجن کو جب اُسنے وہاں پایا

अर्जुन के मुक़ाबले पर कौरों की शिकस्त

पिसर वीराट का आख़िर फिर उसको रोकने आया।
मगर उन देवज़ादों को वहाँ देखा तो घबराया।।

वहाँ अर्जुन जो नर्तक बन के था राजा की नगरी में।
अभी तक ज़िन्दगी गुज़री थी, ज़िसकी अफ़रा-तफ़री में।।

उसे सहमा हुआ देखा, तो खुद तीरो-कमाँ लेकर।
तने-तनहा गिरा इक बर्क़ की मानिंद कौरों पर।।

पड़ा घमसान का रण, तीर दोनों सम्त से छूटे।
अकेली जाँ पे धावा बोल कर, सब सूरमा टूटे।।

मगर अर्जुन अकेला, आज सब कौरों पे भारी था।
वही ग़ालिब, वही हावी, उसी का रोब तारी था।।

नबर्द-आरा वह इस अन्दाज़ से था, शोरा-पुश्तों से।
ज़मीं को पाटना हो, जैसे लाशों और कुश्तों से।।

यक़ीनन कौरवाँ मग़लूब और अर्जुन ही ग़ालिब था।
मगर तहसीने-जाँबाज़ी का, वह मुतलक़ न तालिब था।।

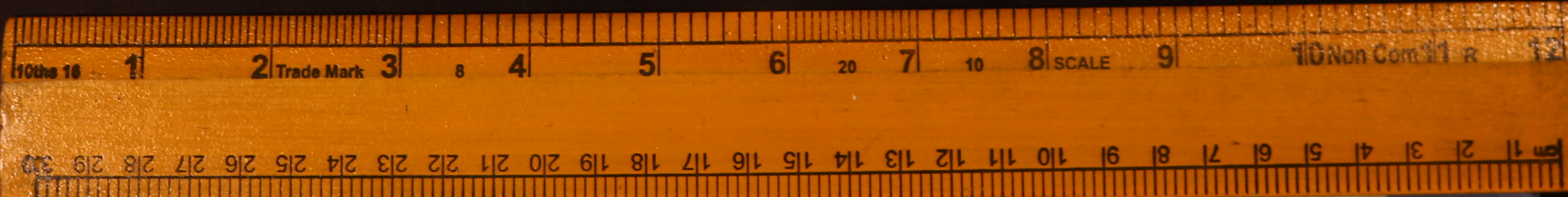
जिधर भी टूटता था, लोग काई जैसे फटते थे।
ख़दंगे-आहनी से ज़ख़्म खाकर पीछे हटते थे।।

क़दम आख़िर, उखड़ कर रह गए, कौरों के मैदाँ से।
दिखा कर पुश्त भागे, सूरमा रफ़तारे-तूफ़ाँ से।।

पिसर = बेटा
अफ़रातफ़री = भाग दौड़
सहमा = डरा
सम्त = ओर / तरफ़
हावी = छाया हुवा
रोब = भय
नबर्द आरा = लड़ने वाला
मग़लूब = पराजित
जांबाज़ी = बहादुरी
ख़दंगे-आहनी = लोहे के तीर

विराट की दुख़्तर से अभिमन्यु का ब्याह

फ़रारे कौरवां के बाद ही, राजा विराट आया।
उसे हैरत हुई अर्जुन को जब उसने वहाँ पाया।।



پسر سے اپنے پوچھا کون ہے یہ نوجواں آخر — جو نرتک تھا ترے ہمراہ اب ہے وہ کہاں آخر

کہا اسنے یہی وہ نوجواں ہے جسنے نرتک کا — لیا تھا بھیس باپو! کیجئے وشواس اب میرا

یہی ہے وہ جواں ارجن، جو پانڈو کا برادر ہے — یہ اپنے فن کا ماہر ہے دلاور ہے غضنفر ہے

خوشی سے جھوم اٹھا راجہ وراٹ اس بات کو سن کر — محبت کی نظر ڈالی بہ رغبت اسنے پانڈو پر

ہوئی پھر پیشکش ارجن کو فرزندی میں لینے کی — حسیں دختر کو اپنی صف شکن سے بیاہ دینے کی

مگر ارجن نے اسکی پیشکش پر معذرت چاہی — مگر بیٹے کی خاطر مانگ لی مابعد فرزندی

ہوا پھر متفق راجہ وراٹ اس بات کو سُنکر — ابھیمنو سے اسنے شبھ گھڑی میں بیاہ دی دختر

حیات افروز انکے سامنے تھا انکا مستقبل

بتادی پانڈوں نے مدتِ معہودہ جب اپنی — تو یاد آئی انہیں ماضی کی دنیائے طرب اپنی

تصرف میں کبھی ان کے بھی اقلیمی خزانہ تھا — انہیں کا دور دورہ تھا انہیں کا کل زمانہ تھا

یہی تھے تختِ شاہی اور دہلی[۱] شہر کے والی — کہ جنکی مملکت میں چار سو تھی فارغ البالی

مگر تقدیر کے ہاتھوں اجڑ کر رہ گیا گلشن — مشیّت تھی بنیں پانڈو شکارِ جورِ دریودھن

بالآخر عزم و پامردی سے پانڈو نے بصد عزت — گزاری عالمِ غربت میں تیرہ سال کی مدت

غرض غم کا سفینہ آن پہنچا اب لبِ ساحل — حیات افروز ان کے سامنے تھا انکا مستقبل

۱ پرانا نام اندرپرستھ

पिसर से अपने पूछा, कौन है यह नौजवाँ आख़िर।
जो नर्तक था, तेरे हमराह, अब वह है कहाँ आख़िर।।

कहा उसने यही वह नौजवाँ है जिसने नर्तक का।
लिया था भेस बापू ! कीजिए विश्वास अब मेरा।।

यही है वह जवाँ अर्जुन, जो पांडव का बिरादर है।
यह अपने फ़न का माहिर है, दिलावर है, ग़ज़नफ़र है।।

खुशी से झूम उठा, राजा विराट इस बात को सुनकर।
मुहब्बत की नज़र डाली, ब रग़बत उसने पांडव पर।।

हुई फिर पेशकश अर्जुन को, फ़र्ज़न्दी में लेने की।
हसीं दुख़्तर को अपनी, सफ़-शिकन से ब्याह देने की।।

मगर अर्जुन ने उसकी, पेशकश पर, माज़ेरत चाही।
मगर बेटे की ख़ातिर, मांग ली माबाद फ़र्ज़न्दी।।

हुआ फिर मुत्तफ़िक़ राजा विराट इस बात को सुनकर।
अभिमन्यु से उसने, शुभ घड़ी में ब्याह दी दुख़्तर।।

हयात अफ़रोज़ उन के सामने था उन का मुस्तक़्बिल

बिता दी पान्डवों ने मुद्दते-माहूदा जब अपनी।
तो याद आयी उन्हे, माज़ी की दुनियाए-तरब अपनी।।

तर्सरूफ़ में कभी उनके भी अक़लीमी ख़ज़ाना था।
उन्ही का दौर-दौरा था, उन्ही का कुल ज़माना था।।

यही थे तख़्ते-शाही और [1]देहली शहर, के वाली।
कि जिनकी मुमलकत में चार-सू थी फ़ारिग-उल-बाली।।

मगर तक़दीर के हाथों, उजड़ कर रह गया गुलशन।
मशियत थी, बनें पान्डव, शिकारे-जोरे-दुर्योधन।।

बिलआख़िर, अज़्मो-पामर्दी से, पांडव ने बसद इज़्ज़त।
गुज़ारी आलमे-गुर्बत में, तेरह साल की मुद्दत ।।

ग़रज़ ग़म का सफ़ीना आन पहुँचा अब लबे-साहिल।
हयात अफ़रोज़, उन के सामने था, उन का मुस्तक़्बिल।।

माज़ेरत = मॉफी

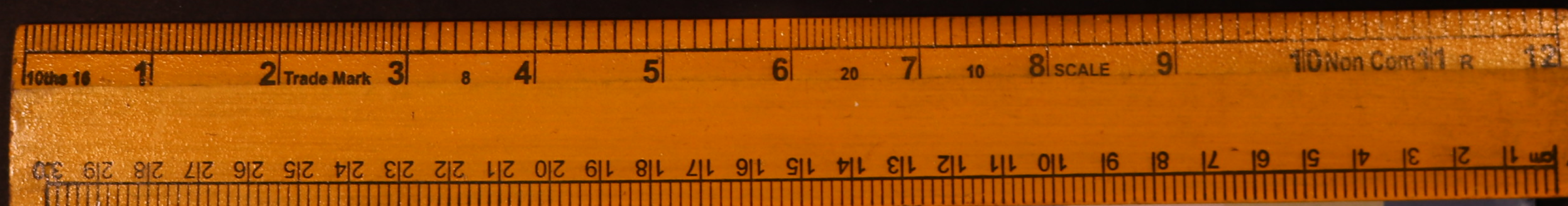
मुत्तफिक = सहमत

मुद्दते-माहूदा = मुक़रर हुई मुद्दत

१) पुराना नाम इन्द्रप्रस्त

جنگ مہابھارت
کا
طویل سلسلہ

जंग-ए
महाभारत का
तवील
सिलसिला



تخت و تاج کی واپسی
سے دریودھن کا انکار

پھر اسکے بعد دریودھن کی نگری میں یدھشٹر نے
شری کیشو کو یہ کہکر معًا بھیجا مفکرّ نے

کہو ان سے کہ واپس دیں وہ سب جیتی ہوئی دولت
مطابق شرط کے ایفا کریں وعدہ بصد عجلت

شری گھنشام فوراً چل پڑے پیغام کو لیکر
سنایا متن، "دریودھن کو اس پیغام کا فر فر

یہ سنتے ہی سبک سر کے دہن سے کف ہوا جاری
کرودہت ہوکے بولا شیام سے، اے شیام بنواری

یدھشٹر سے کہو اب بھول جائے تاج و سلطانی
سرابِ ریگ ہے اسکی تمنائے جہانبانی

اگر بھکشا میں وہ مانگے حکومت سر جھکا کر بھی
تو میں ہرگز نہ دوں سوفارِ سوزن کے برابر بھی

جوابِ جاہلانہ سنکے، فوراً شیام مرلی دھر
ہوئے واپس وہاں سے اور یدھشٹر سے کہا آکر

نہ رکھ امید تو ان سے وہ سب ذلّت اٹھائینگے
زمیں سوئی کے ناکے کے برابر بھی نہ اب دینگے

دریودھن کی وعدہ خلافی پر جنگ و جدل کی تیاریاں

سنی گھنشام سے کوروں کی جب وعدہ شکن باتیں
تو پانڈو نے سنائی غائبانہ خوب صلواتیں

۱ سوئی کے ناکے برابر

तख़्तो-ताज की वापसी
से दुर्योधन का इन्कार

फिर इस के बाद दुर्योधन की नगरी में युधिष्ठिर ने।
श्री केशव को यह कह कर, मअन भेजा मुफ़क्किर ने।।

कहो उन से कि वापस दें, वह सब जीती हुई दौलत।
मुताबिक़ शर्त के ईफ़ा करें, वादा बसद उजलत।।

श्री घनश्याम फ़ौरन चल पड़े पैग़ाम को लेकर।
सुनाया मत्न, दुर्योधन को, इस पैग़ाम का फ़र-फ़र।।

यह सुनते ही सुबुक सर के दहन से कफ़ हुआ जारी।
क्रोधित होके बोला श्याम से, ऐ श्याम बनवारी।।

युधिष्ठिर से कहो, अब भूल जाए ताज-ओ-सुलतानी।
सराबे-रेग है उसकी, तमन्नाए जहाँ-बानी।।

अगर भिक्षा में वह माँगे हुकूमत सर झुकाकर भी।
तो मैं हरगिज़ न दूँ सूफ़ारे-सूज़न के बराबर भी।।

जवाबे-जाहिलाना सुन के, फ़ौरन श्याम मुरलीधर।
हुए वापस वहाँ से और युधिष्ठिर से कहा आकर।।

न रख उम्मीद तू उन से, वह सब ज़िल्लत उठालेंगे।
ज़मीं, सुई के नाके के, बराबर भी न अब देंगे।।

दुर्योधन की वादा ख़िलाफ़ी पर जंगो-जदल की तैयारियाँ

सुनी घनश्याम से कौरों की जब वादा शिकन बातें।
तो पांडव ने सुनाई ग़ाएबाना ख़ूब सलवातें।।

ईफ़ा = वादा पूरा करना

सुबुकसर = निकम्मा

सराबे-रेग = ख़ाम -ख़्याली

जहाँबानी = हुकूमत

सूफ़ारे-सूज़न = सुई के सुराख़ के बराबर

वादा शिकन = वादा तोड़ने वाली

نتیجہ فطرتاً جو بیوفائی کا نکلنا تھا وہی نکلا یقیناً ہو بہو جیسا نکلنا تھا

گریزِ عہد نے اکسایا سوئے چپقلش ان کو کبھی بننا تھا مستقبل میں گیتی کا قرش انکو

اور اسکے بعد دونوں سمت رزم و جنگ کی باتیں تھیں موضوعِ سخن کے ساتھ ہی پیکار کی گھاتیں

ہوئے مصروف وہ اجماعِ حربہ فوج و لشکر میں سمایا تھا نبرد و جنگ کا سودا سا اک سر میں

پڑوسی ملک سے بھی لشکرِ جرّار آ آ کر نہایت کرّ و فر سے خیمہ زن تھے رن کی دھرتی پر

وہ "تھانیسر" جہاں تھا کورچھتر اک نام کا میداں جہاں تھیں دوبدو پینتیس لکھ افواجِ بے پایاں

محاذِ جنگ میں آراستہ ہونے لگیں فوجیں
سرِ ساحل سے ٹکرانے کو سر تیار تھیں موجیں

ارجن میدانِ جنگ میں

مسلح فوجیں استادہ تھیں لشکر گاہ میں دونوں مگر سرشار تھیں وہ جذبۂ دوتاہ میں دونوں

محاذِ جنگ پر ارجن مسلح ہو کے جب پہنچا اچٹتا سا وہاں افواجِ دریودھن کو بھی دیکھا

یکایک اک جگہ ارجن کی نظریں رک گئیں اٹھ کر عجب منظر نظر آیا گری بجلی سی اک دل پر

مقابل فوج میں بھائی بھتیجے اور چچا دیکھے گرو دیکھے پِتا دیکھے عزیز و اقربا دیکھے

یہ منظر دیکھکر ارجن بصد رنج و الم بولا لڑوں کس سے یہاں تو کوئی بھی دشمن نہیں میرا

नतीजा फ़ितरतन जो बेवफ़ाई का निकलना था।
वही निकला, यक़ीनन हूबहू, जैसा निकलना था।।

गुरेज़-ए-अहद ने उकसाया सूए-चपक़लश उन को।
कभी बनना था मुस्तक़्बिल में गेती का क़रश उनको।।

और इसके बाद दोनों सम्त, रज़्मो-जंग की बातें।
थी मौजू-ए-सुख़न के साथ ही, पैकार की घातें।।

लगे फिर वह हुसूले-हरबा-हाए फ़ौज़ो-लश्कर में।
समाया था नबर्दो-जंग का, सौदा सा इक सर में।।

पडो़सी मुल्क से भी लश्करे-जर्रार आ आ कर।
निहायत कर्रो-फ़र से ख़ेमा-ज़न थे रण की धरती पर।।

वह "थानेसर" जहाँ था [1]कौर-क्षेत्र इक नाम का मैदाँ।
जहाँ थीं दूबदू पैंतीस (३५०००००) लख, अफ़वाज बे-पायाँ।।

महाज़े-जंग पर आरास्ता होने लगीं फ़ौजें ।
सरे-साहिल से टकराने को सर, तैयार थीं मौजें।।

गुरेज़-ए-अहद = वादे से हटना
सूए-चपक़लश = खींचा तानी की तरफ़
गेती करश = एक दरयाई जानवर
मौजूए-सुख़न = बातचीत का विषय
पैकार = लड़ाई
नबर्दो-जंग का सौदा = लड़ाई का जुनून
लश्करे-जर्रार = बहुत बड़ी फ़ौज
ख़ेमा-ज़न = पड़ाव

अर्जुन मैदाने-जंग में

मुसल्लह फ़ौजें इसतादा थीं लश्कर गाह में दोनों।
मगर सरशार थीं, वह, जज़्बाए-दोताह में दोनों।।

महाज़े-जंग पर अर्जुन, मुसल्लह हो के जब पहुँचा।
उचटता सा वहां अफ़वाजे-दुर्योधन को भी देखा।।

यकायक इक जगह अर्जुन की नज़रें रुकगईं आकर।
अजब मन्ज़र नज़र आया, गिरी बिजली सी इक दिल पर।।

मुक़ाबिल फ़ौज में, भाई, भतीजे और चाचा देखे।
गुरू देखे, पिता देखे, अज़ीज़ो-अक़रबा देखे।।

यह मन्ज़र देखकर अर्जुन, बसद रंजो-अलम बोला।
लड़ूँ किस से, यहाँ तो कोई भी, दुश्मन नहीं मेरा।।

सरशार = डूबी हुई
जज़्बाए-दोताह = डबल जज़्बे में

१. जरुरते-शेरी के पेशे-नज़र 'कुरुक्षेत्र' के बजाय कौर-क्षेत्र इस्तेमाल किया गया है।

سبھی تو اس جگہ اپنے ہیں، اے قسمت کہاں لائی
یہ نوبت جسکے کارن پہنچی ہے وہ بھی تو ہے بھائی

یہ کہہ کر اسنے گرز و تیغ و خنجر تیر اور کمٹھا
اتارا جسم سے ایک ایک کر کے خاک پہ پھینکا

کیشن مہراج نے ارجن کا جب دیکھا ہے یہ منظر
کہ سب ہتھیار ہیں بکھرے پڑے بے وقت دھرتی پر

پریشاں تھے کیشن ارجن کو اب کسطرح سمجھائیں
کریں آمادہ کیسے، اسکو کیسے راہ پر لائیں

سپہ سالار جب ہتھیار اپنا ڈال دے خود ہی
تو پھر رن ویر سینا کس طرح جوہر دکھائیگی

شری کرشن جی کا اپدیش

نئے انداز سے ارجن کو پھر ہر بات سمجھائی
کہا! یہ ہے لڑائی حق و باطل کی مرے بھائی

بتائیں سیکڑوں گھنشام نے عرفان کی باتیں
سکھائیں شرح کر کے وید کی اور گیان کی باتیں

ستھاپت ستوگن پر پھر دیا گھنشام نے بھاشن
کیا اتپات اور ویراگ کا اچھی طرح ورنن

وہ بولے، یہ تو چلتی پھرتی لاشیں ہیں، ترے آگے
مقدر بن چکی ہے موت انکی موت سے پہلے

کہاں ہے تجھ میں یہ قوت کہ دریودھن کو تو مارے
یہ پاپی آپ اپنی موت ہی مر جائینگے سارے

منش کا اتنا ہی کرتوے ہے کہ دل و جاں سے
کئے جائے بس اتنا کام پورے عزم و ایقاں سے

نہ رکھے پھل کی وہ امید اپنے من میں ذرہ بھر
یہ سارا مسئلہ بس چھوڑ دے بھگوان کے اوپر

ودھاتا کو ترے ہاتھوں سے اتنا کام لینا ہے
کہ تیری آڑ سے اس کام کو انجام دینا ہے

सभी तो इस जगह अपने हैं, ऐ क़िस्मत कहाँ लाई।
यह नौबत जिस के कारण पहुँची है, वह भी तो है भाई।।

यह कहकर उसने गुर्ज़ो-तेगो-ख़ंजर, तीर और कमठा।
उतारा जिस्म से, एक-एक कर के, ख़ाक पर फेंका।।

किशन महराज ने अर्जुन का जब देखा है यह मन्ज़र।
कि सब हथियार हैं बिखरे पड़े, बे वक़्त धरती पर।।

परेशाँ थे किशन, अर्जुन को अब किस तरह समझाएँ।
करें आमादा कैसे, और कैसे राह पर लाएँ।।

सिपह सालार जब हथियार, अपना डाल दे खुद ही।
तो फिर रण वीर सेना, किस तरह जौहर दिखाएगी।।

गुर्ज़ो-तेगो-ख़ंजर = गुर्ज़ तलवार और कटार
ख़ाक = मिट्टी

बिखरे = फैले हुए

श्री कृष्णजी का उपदेश

नये अन्दाज़ से अर्जुन को फिर हर बात समझाई।
कहा ! यह है लड़ाई, हक़-ओ-बातिल की मेरे भाई।।

बताईं सैंकड़ों, घनश्याम ने इर्फ़ान की बातें।
सिखाईं शरह करके, वेद की और ज्ञान की बातें।।

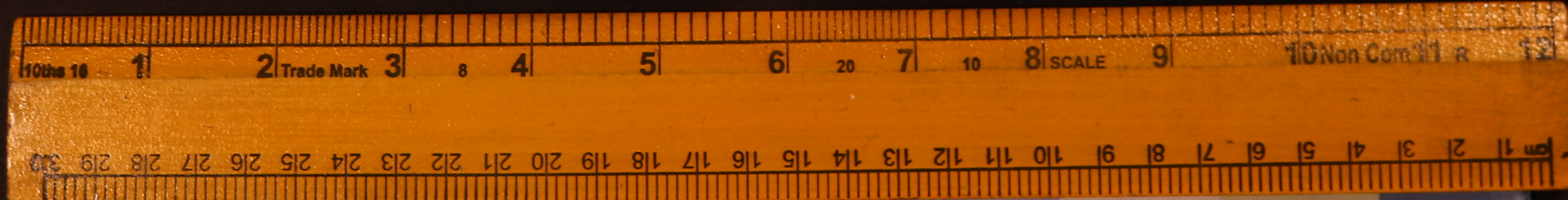
स्थापित, स्तोगुन, पर फिर दिया घनश्याम ने भाषण।
किया उतपात, और वैराग का अच्छी तरह वर्णन।।

वह बोले, यह तो चलती फिरती लाशें हैं तेरे आगे।
मुक़द्दर बन चुकी है, मौत, इन की मौत से पहले।।

कहाँ है तुझ में यह कुव्वत, कि दुर्योधन को तू मारे।
यह पापी आप, अपनी मौत ही, मर जाएंगे सारे।।

विधाता को तेरे हाथों से इतना काम लेना है।
कि तेरी आड़ से इस काम को अंजाम देना है।।

हक़ -बातिल = सच व छुट
इर्फ़ान = ज्ञान



یہ اتنا کام تو ہو کر رہیگا ہر طرح پورا
تو چاہے جنگ کر یا جنگ سے دامن بچا اپنا

دگر اسکے تری عزت پہ جسنے ہاتھ ڈالا تھا
ترے ناموس کو دربار میں جسنے اچھالا تھا

اسی پاپی سے ہے انکار تجھکو آج لڑنے سے
نہوگا فائدہ کچھ بھی ترا اسوقت اڑنے سے

اِدھر آ دیکھ یہ لاشیں پڑی ہیں آج میداں میں
ہزاروں رینگتے ہیں کیڑے جنکے جسم بے جاں میں

پڑے ہیں دیکھ وہ مر کر درونہ بھیشم دُشاشن
کہیں ہے جیدرات اور کرن کر پہ اور دریودھن

علاوہ اسکے لاکھوں لوگ اِس میدان کے اندر
پڑے ہیں نیم عریاں دیکھ ارجن آج جو مر کر

یہ سب کے سب مرے ہی ہاتھ سے پرلوک پہنچے ہیں
انہیں بھیجا ہے میں نے اسلیئے بےٹوک پہنچے ہیں

شری کرشن جی کا الکھ روپ

پھر اسکے بعد اصلی روپ بنواری نے دکھلایا
حقیقت میں وہ کیا ہیں کون ہیں ارجن کو سمجھایا

جسے دیکھا نگاہِ ویر ارجن نے بصد حیرت
بتِ خاموش کی مانند اسکی ہو گئی حالت

پھٹی آنکھوں سے ارجن چہرۂ کیشو کو تکتا تھا
ہر اک لمحہ گذرتا تھا تحیّر اور حیرت کا

دہن کھولے کھڑے تھے سامنے ہی شیام بنواری
کہ جنکے مہنہ میں تینوں لوک کے تھے سارے سنساری

यह इतना काम तो, होकर रहेगा, हर तरह पूरा।
तू चाहे जंग कर, या जंग से, दामन बचा अपना।।

दिगर इसके, तेरी इज़्ज़त पे जिसने हाथ डाला था।
तेरे नामूस को दरबार में, जिसने उछाला था।।

नामूस = लाज, प्रतिष्ठा

उसी पापी से है इन्कार तुझको आज लड़ने से।
न होगा फ़ायदा कुछ भी, तेरा इस वक़्त अड़ने से।।

इधर आ देख, यह लाशें पड़ी हैं आज मैदाँ में।
हज़ारों रेंगते हैं कीड़े, जिन के जिस्मे-बेजाँ में।।

पड़े हैं देख वह मरकर, द्रोंणा, भीष्म, दुश्शाषन।
कहीं है जयद्रथ, जालिम शकुनी, कर्ण, दुर्योधन।।

अलावा इस के लाखों लोग, इस मैदान के अन्दर।
पड़े हैं नीम-उरयाँ देख अर्जुन आज जो मरकर।।

नीम उरयाँ = अधनंगे

यह सब के सब मेरे ही हाथ से परलोक पहुँचे है।
इन्हें भेजा है मैंने इस लिए बे टोक पहुँचे हैं।।

श्री कृष्ण जी का अल्ख रूप

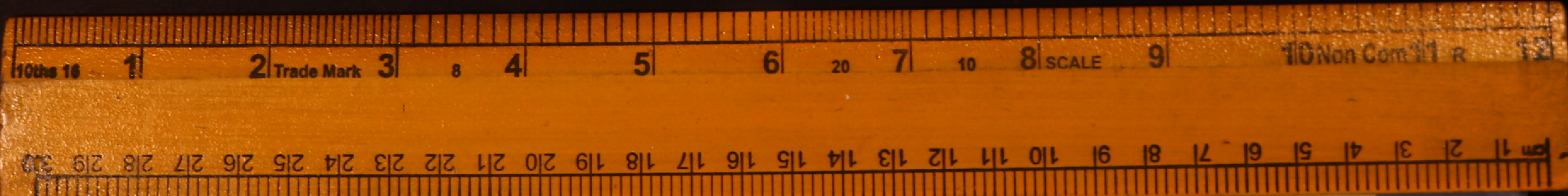
फिर इस के बाद असली रूप बनवारी ने दिखलाया।
हकीक़त में वह क्या हैं, कौन हैं अर्जुन को समझाया।।

जिसे देखा निगाहे-वीर अर्जुन, ने बसद हैरत।
बुते-ख़ामोश की मानिन्द उस की होगई हालत।।

बुते-ख़ामोश = पत्थर की मूरत की तरह चुप

फटी आंखों से अर्जुन, चेहरए-केशव को तकता था।
हर इक लम्हा, गुज़रता था, तहय्युर और हैरत का।।

दहन खोले खड़े थे, सामने ही श्याम बन वारी।
कि जिन के मुहँ में, तीनों लोक के थे सारे संसारी।।



نظر آتا تھا منظر تربھون کا انکے سینے میں
نرکھ بیکنٹھ اور پرلوک تھے دل کے نگینے میں

اسی میں لکشمن آستؔ پاراشر تھے اور وشنو
گنیش وسوریہ اور اندر کے ہمراہ تھے رُو تو

غرض ہر ایک شئے کونین اور پاتال کی من میں
سمائی تھی شری گھنشام جی کے پرضیا تن میں

یہ عالم دیکھ کر گھنشام کا ارجن عقیدت سے
گرا بھگوان کے چرنوں پہ اک حسنِ اطاعت سے

اٹھایا سیس چرنوں سے تو دل پر خوف طاری تھا
نمشکارم، نمشکارم کا لب پر وِرد جاری تھا

تمہاری لیلا کو پرنام لاکھوں بار اے پربھو
تمہاری ہر ادا پر میری جاں بلہار اے پربھو

ارجن آمادۂ جنگ

کرشنا جی نے جب ماحول کو بدلا ہوا پایا
مخاطب ہو کے ارجن سے متانت سے یہ فرمایا

بالآخر بول کس منزل میں اب انکار ہے تیرا
کدھر ہے دھیان، کس عالم میں حالِ زار ہے تیرا

تری فکر و نظر کی آج بھی ہے کیا وہی حالت
وہی انکار کی باقی ہے کیا پہلی سی کیفیت

ہوئی ہو گی یقیناً کچھ تو تبدیلی خیالوں میں
تمیز اب ہو گئی ہو گی اندھیروں اور اجالوں میں

دھنی قسمت کا ہے اس ضمن میں تو بخت آور ہے
زمانے بھر میں تیرا کوئی ثانی ہے نہ ہمسر ہے

नज़र आता था मंज़र, तिर-भवन का उन के सीने में।
नरक, बैकुंठ और परलोक थे, दिल के नगीने में।।

इसी में लक्ष्मण आसित्ते, पाराशर थे, और विष्णु।
गणेशो, सूर्य और इन्द्र, के हमराह थे रूतू।।

ग़रज़ हर एक शए कौनैन और पाताल की मन में।
समाई थी, श्री घनश्याम जी के पुर-ज़िया तन में।।

यह आलम देख कर, घनश्याम का अर्जुन अक़ीदत से।
गिरा भगवान के चरणों पे, इक हुस्ने-इताअत से।।

उठाया सीस चरणों से, तो दिल पर ख़ौफ़ तारी था।
नमश्कारम नमश्कारम का लब पर विर्द जारी था।।

तुम्हारी लीला को प्रणाम लाखों बार ऐ प्रभु।
तुम्हारी हर अदा पर, मेरी जाँ, बलिहार ऐ प्रभु।।

कौनैन = इहलोक और परलोक
पुर-जिया = सूर्य का प्रकाश
इताअत = आज्ञा-पालन
विर्द = जाप

अर्जुन
आमादा-ए-जंग

कृष्णाजी ने जब माहोल को बदला हुआ पाया।
मुख़ातिब हो के अर्जुन से, मतानत से यह फ़रमाया।।

बिलआख़िर बोल, किस मन्ज़िल में, अब इन्कार है तेरा।
किधर है ध्यान, किस आलम में, हाले ज़ार है तेरा।।

तेरी फ़िक्रो-नज़र की, आज भी है क्या वही हालत।
वही इन्कार की बाक़ी है, क्या पहली सी कैफ़ियत।।

हुई होगी यक़ीनन कुछ तो तबदीली ख़्यालों में।
तमीज़ अब हो गई होगी, अन्धेरों और उजालों में।।

धनी क़िस्मत का है इस ज़िम्न में, तू बख़्त आवर है।
ज़माने भर में तेरा, कोई सानी है, न हमसर है।।

ज़िम्न = बारे में विषय
बख़्त आवर = भाग्यवान

سوا تیرے کسی نے بھی نہ دیکھا روپ یہ میرا
اسی اک وجہ سے اعلیٰ ہے سب سے مرتبہ تیرا

کھڑا کیا ہے نہ دل میں دے جگہ خدشات کو ارجن
نہ کھو باتوں میں تو ان قیمتی لمحات کو ارجن

اٹھا تیر و کماں، تیغ و سپر کو زیب تن کر لے
نہیں آئے گا موقع ایسا ارجن لوٹ کر پھر سے

اور اسکے بعد ارجن نے اٹھایا تیر اور کمٹھا
کیا پھر زیب تن اسنے زِرہ شمشیر اور تیغا

کرشنا جی نے جب دیکھا کہ اب ارجن ہے آمادہ
تو فوراً شنکھ کو منہ سے لگا کر زور سے پھونکا

صدائے بوق[1] سنتے ہی معاً چیخ اٹھے نقارے
اور اسکے ساتھ ہی لگنے لگے ہر سمت جے کارے

بھیشم پتامہ سیناپتی روپ میں

محاذِ جنگ پر دونوں طرف فوجیں تھیں استادہ
محارب برسرِ پیکار ہونے پر تھے آمادہ

وہاں موجود تھے اک رتھ پہ استادہ پتامہ بھی
معمّر تھے جہاندیدہ تھے دنیا خوب دیکھی تھی

کیا تھا بخت نے کوروں سے انکو آج وابستہ
مگر طرفین کا ہر فرد بیشک سبط[2] تھا ان کا

وہ کتنے تابع فرماں تھے ہے اسبات سے ظاہر
نہ کی تا زندگی شادی انھوں نے باپ کی خاطر

اب آخر عمر میں گھنگھور بادل جنگ کے چھائے
بہ مجبوری وہ لڑنے کیلئے میدان میں آئے

[1] سنکھ [2] پوتے اور نواسے

सिवा तेरे किसी ने भी, न देखा रूप यह मेरा।
इसी इक वजह से, आला है, सब से मरतबा तेरा।।

खड़ा क्या है, न दिल में दे जगह, ख़दशात को अर्जुन ।
न खो, बातों में तू इन क़ीमती लमहात को अर्जुन।।

उठा तीरो-कमाँ, तेगो़-सिपर को ज़ेब-तन करले।
नहीं आएगा मौक़ा ऐसा, अर्जुन लौट कर फिरसे।।

और इसके बाद अर्जुन ने उठाया तीर और कमठा।
किया फिर ज़ेब-तन उसने, ज़िरह शमशीर और तेग़ा।।

कृष्णाजी ने जब देखा कि अब अर्जुन है आमादा।
तो फ़ौरन शंख को मुँह से लगा कर ज़ोर से फूँका।।

सदा-ए-बूक़ सुनते ही मअन चींख़ उठ्ठे नक़्क़ारे।
और इस के साथ ही, लगने लगे हर सम्त जय कारे।।

भीष्म पितामह
सेनापति के रूप में

महाज़े-जंग पर दोनों तरफ़ फ़ौजें थीं इस्तादा।
मुहारिब बर सरे पैकार होने पर थे आमादा।।

वहाँ मौजूद थे, इक रथ पे, इस्तादा पितामह भी।
मोअम्मर थे, जहाँदीदा थे, दुनिया खूब देखी थी।।

किया था बख़्त ने कौरों से उनको आज वाबस्ता।
मगर तरफ़ैन का हर फ़र्द, बेशक सिब्त था उन का।।

वह कितने ताबअ-फ़र्मा थे, है इसबात से ज़ाहिर।
न की, ता ज़िन्दगी शादी, उन्होंने, बाप की ख़ातिर।।

अब आख़िर उम्र में घनघोर बादल जंग के छाए।
ब-मजबूरी वह लड़ने के लिए मैदान में आए।।

आला = उंचा बड़ा

सदा-ए-बूक़ = शंख वाणी

मुहारिब = लड़ने वाले

मोअम्मर = उम्र रसीदा
जहाँदीदा = दुनिया देखे हुए
सिब्त = पोता

ताबअ-फ़रमा = फ़रमा बरदार



یہی پہلے سپہ سالارِ دریودھن بنے آ کر — انھیں کے ماتحت پھر لڑنے والوں کے کھلے جوہر
ضعیف العمر تھے لیکن جوانوں پہ وہ سربر تھے — فنونِ جنگ کے ماہر تھے اور مردِ دلاور تھے

بزرگی نے انھیں سیناپتی کے پد پہ پہنچایا — انھیں حالات نے آخر سرِ جنگاہ لے آیا
وہ جب رنچھیتر میں پہنچے وہاں طرفین کی فوجیں — تلاطم میں بہم تھیں محو، جیسے بحر کی موجیں

سپاہی سارے بکتر پوش تھے فولاد پیکر تھے — نڈر تھے ویر تھے پُرجوش تھے مردِ دلاور تھے
جھلم لوہے کی خود آہن کے اور بکتر تھے لوہے کے — جو ساماں انکے تن پر تھے، وہ سرتاسر تھے لوہے کے

گلے اور سینے انکے آہنی جیبہ میں جکڑے تھے
تھیں مثلِ فیل موٹی گردنیں اور جسم اکڑے تھے

سورماؤں کی نوک جھونک

جونہی آواز گونجی شنکھ کی سنگرام کے اندر — جیالوں کی نہ تیغیں رہ سکیں پھر نیام کے اندر
دیا پھر حکم بڑھنے کا پتامہ نے رسالوں کو — بڑھے تھامے ہوئے سب ویر تیغوں اور بھالوں کو

یکایک میرِ لشکر نے پھر اپنی فوج کو روکا — تلاطم خیز بحرِ بیکراں کی موج کو روکا
رکی طرفین کی افواج ۲ دو فرلانگ پر آ کر — بہادر سورما سینا سے نکلے اپنی بل کھا کر

यही पहले, सिपह सालारे दुर्योधन बने आकर।
उन्ही के मातेहत, फिर लड़ने वालों के खुले जौहर।।

ज़ईफुल-उम्र थे लेकिन जवानों पे वह सरबर थे।
फुनूने-जंग के माहिर थे, और मर्दे-दिलावर थे।।

ज़ईफ़उल-उम्र = बूढ़ा

बुजुर्गी ने उन्हें सेनापति के पद पे पहुँचाया।
उन्हें, हालात ने आख़िर, सरे जंगाह ले आया।।

वह जब रणक्षेत्र में पहुँचे, वहाँ तरफ़ैन की फ़ौजें।
तलातुम में बहम थीं मैहव, जैसे बहर की मौजें

सिपाही सारे बक्तर पोश थे, फ़ौलाद पैकर थे ।
निडर थे, वीर थे, पुर जोश थे, मर्दे-दिलावर थे।।

झिलम लोहे की, ख़ोद आहन के, और बक्तर थे लोहे के।
जो सामाँ उन के तन पर थे, वह सर-ता-सर थे लोहे के।।

गले और सीने उन के, आहनी जीबे में जकड़े थे।
थीं मिस्ले-फ़ील मोटी गरदनें, और जिस्म अकड़े थे।।

मिस्ले-फ़ील = हाथी जैसे

सूरमाओं की नोक-झोंक

ज्योंही आवाज़ गूँजी शंख की संग्राम के अन्दर।
जियालों की न तेगें रह सकी फिर मयान के अन्दर।।

दिया फिर हुक्म बढ़ने का पितामह ने रिसालों को।
बढ़े थामे हुए सब बीर, तेगों और भालों को।।

यकायक मीरे-लष्कर ने फिर अपनी फ़ौज को रोका।
तलातुम-ख़ैज़ बेहरे-बेकराँ की, मौज को रोका।।

मिरे-लष्कर = सेनापति
तलातुम ख़ैज़ = उठती हुई मौजें
बहरे-बेकराँ = बड़ा समुद्र

रुकी तरफ़ैन की अफ़वाज, दो फ़रलांग पर आकर।
बहादुर सूरमा सेना से निकले अपनी बल खाकर।।



لگاکر ایڑ گھوڑے کو کوئی للکارتا پہنچا
کوئی تانے ہوئے نیزے کو نعرہ مارتا پہنچا

مقابل ہوگیا ایک ایک ویر اپنے مقابل سے
تھا جب تک دم میں دم لڑتا رہا مجروح قاتل سے

نبرد آرا ہتھوٹی سے برابر وار کرتے تھے
مقابل کو وہ ہر ہر وار پر ہشیار کرتے تھے

کوئی پیچھے ہٹا تو طعنہ دے دیکر اُسے ٹوکا
کوئی بھاگا تو کاوا کاٹ کر للکار کر روکا

نبرد آرائیاں آخر بہادر پہلوانوں کی
رکیں، لیکن نہ جانے بھینٹ لیکر کتنی جانوں کی

ہنگامۂ جنگ کا ایک عام منظر

بالآخر جب ہوئے واپس بہادر پہلواں سارے
لگائے بہرِ استقبال پھر فوجوں نے جے کارے

دیا سیناپتی نے حکم پھر سینا کو بڑھنے کا
دگر معنوں میں یدھ کے دیوتا پر بھینٹ چڑھنے کا

چڑھائی قوس کی تانتیں صفِ اوّل کے ویروں نے
کمانوں کو کیا سیدھا معاً جانباز شیروں نے

پھر اسکے بعد پہلی باڑھ ماری جوش میں بھر کر
مراکب سے گرے رکّاب چکر کھا کے دھرتی پر

وِرودھی دل نے بھی پھر ایسی ماری باڑھ تیروں کی
ہوئی زیر و زبر صف پہلے ہی حملے میں ویروں کی

بڑھے ہاتھی سوار اک دوسری جانب سے پھر رن میں
کماں تھی ہاتھ میں جنکے جو تھے ملبوس آہن میں

लगा कर एड़ घोड़े को, कोई ललकारता पहुँचा।
कोई ताने हुए नेज़े को, नारा मारता पहुँचा।।

मुक़ाबिल होगया. एक-एक वीर, अपने मुक़ाबिल से।
था जब तक दम में दम, लड़ता रहा मजरूह क़ातिल से।।

नबर्द-आरा हतोटी से बराबर वार करते थे।
मुक़ाबिल को वह हर-हर वार पर हुशियार करते थे।।

कोई पीछे हटा तो ताना देदे कर उसे टोका।
कोई भागा तो कावा काट कर ललकार कर रोका।।

नबर्द आरईयाँ आख़िर बहादुर पहलवानो की।
रुकीं, लेकिन न जाने, भेंट लेकर कितनी जानों की।।

हंगामा-ए-जंग का एक आम मन्ज़र

बिलआख़िर जब हुए वापस बहादुर पहेलवाँ सारे।
लगाए बहरे इस्तक़बाल फिर फ़ौजों ने जय कारे ।।

दिया सेनापति ने हुक्म, फिर सेना को बढ़ने का।
दिगर मानों में युद्ध के, देवता पर भेंट चढ़ने का।।

चढ़ाई क़ौस की तांतें, सफ़े अव्वल के वीरों ने।
कमानों को किया सीधा मअन जांबाज़ शेरों ने।।

फिर इस के बाद पहली बाढ़ मारी जोश में भर कर।
मराकिब से गिरे रिक्काब, चक्कर खा के धरती पर।।

विरोधी दल ने भी फिर ऐसी मारी बाढ़ तीरों की।
हुई ज़ेरो-ज़बर सफ़, पहले ही हल्ले में वीरों की।।

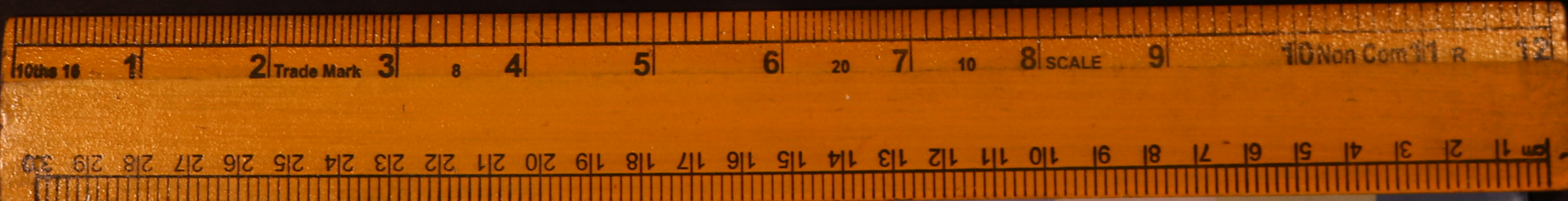
बढ़े हाथी सवार इक दूसरी जानिब से फिर रण में।
कमां थी हाथ में, जिन के, जो थे मलबूस आहन में ।।

मजरूह = ज़ख़मी

बहरे-इस्तक़बाल = स्वागत के लिये

मराकिब = घोडे
रिक्काब = सवार

मलब



رتھوں کو بھی بڑھایا اپنے رتھ بالوں نے جرأت سے
صفِ دشمن کی جانب چاک گھومے فرطِ عجلت سے

بڑی ڈھالوں میں چھپ چھپ کر بڑھا پھر جنگجو لشکر
یونہی ہوتا گیا پھر رفتہ رفتہ دوبدو لشکر

ملی اک بارگی فوجِ پتامہ یوں مقابل سے
کہ جیسے موجِ قلزم آ کے سر ٹکرائے ساحل سے

لگے کٹ کٹ کے سر گرنے دھڑا دھڑ، دھڑ لگے گرنے
پڑا گھمسان کا رن کائروں کے منہ لگے پھرنے

کسی کا نیزہ بکتر اور سینہ توڑ کر نکلا
کسی کا نیزہ اپنے ساتھ ہی لیکر جگر نکلا

کسی نے ایسا مارا ہاتھ اک شمشیرِ آہن کا
کہ کڑیاں کٹ کے شانے کی گریں اور بند جوشن کا

کسی نے ڈھال میں سر کو چھپا کر وار کو روکا
کسی نے آہنی تلوار پر تلوار کو روکا

کسی نے گرز کا بھرپور مارا ہاتھ دشمن پر
سپر ٹکڑے ہوئی اور درمیاں سے پھٹ گیا مغفر

غرض میداں میں اک اک ویر تھا بیشک نبرد آرا
بنی تھی سرخ دھرتی اڑ رہا تھا خوں کا فوارا

اسی انداز سے پھر شام تک طرفین کا لشکر
قتال و جنگ میں مشغول تھا سنگرام کے اندر

ثباتِ کرشن میں تزلزل

یونہی نو روز تک لڑتا رہا طرفین کا لشکر
پتامہ بھیم اور ارجن بھی اترے رزمِ آہن میں

रथों को भी बढ़ाया अपने, रथ बानों ने जुरअत से।
सफ़े-दुश्मन की जानिब, चाक घूमे फ़र्ते-उजलत से।।

बड़ी ढालों में छुप छुप कर, बढ़ा फिर जंगजू लश्कर।
यूंही होता गया फिर रफ़्ता रफ़्ता दूबदू लश्कर।।

मिली इक बारगी फ़ौजे-पितामह, यूँ मुक़ाबिल से।
कि जैसे मौजे-कुलजुम, आके सर टकराए साहिल से।।

लगे कट कट के सर गिरने, धड़ा-धड़, धड़ लगे गिरने।
पड़ा घमसान का रण, कायरों के मुँह लगे फिरने।।

किसी का नेज़ा, बक्तर और सीना तोड़ कर निकला।
किसी का नेज़ा, अपने साथ ही, लेकर जिगर निकला।।

किसी ने ऐसा मारा हाथ, इक शमशीरे-आहन का।
कि कड़ियाँ कट के शाने की, गिरीं, और बन्द-जोशन का।।

किसी ने ढ़ाल में सर को, छिपा कर वार को रोका।
किसी ने आहनी तलवार पर, तलवार को रोका।।

किसी ने गुर्ज़ का भरपूर मारा हाथ दुश्मन पर।
सिपर टुकड़े हुई और दरमियाँ से फट गया मिग़फ़र।।

ग़रज़ मैदाँ में इक इक वीर था, बेशक नबर्द आरा।
बनी थी सुर्ख़ धरती, उड़ रहा था ख़ूँ का फ़व्वारा।।

इसी अन्दाज़ से फिर शाम तक तरफ़ैन का लश्कर।
क़तालो-जंग में मशग़ूल था, संग्राम के अन्दर।।

सबाते-कृष्ण में तज़लज़ुल

यूँही नौ रोज तक लड़ता रहा, तरफ़ैन का लश्कर।
पितामह, भीम और अर्जुन, भी उतरे रण की धरती पर।।

फ़र्ते-उजलत = बहुत जल्दी से

दूबदू = आमने सामने

मौजे-कुलजुम = समुद्र की मौज

तरफ़ैन = दोनों तरफ़ के

کسی کو بھی خبر اسکی نہ تھی انجام کیا ہوگا ‏ — ‏ نبرد آرائی میں طرفین کی کس کا بھلا ہوگا

اِدھر ہنگامۂ جنگ و جدل بڑھتا ہی جاتا تھا ‏ — ‏ رتھوں کی گڑگڑاہٹ سے کلیجہ مُنہ کو آتا تھا

گداؤں کے دھماکے سے لرزتی تھی زمیں رن کی ‏ — ‏ فضا میں گونج تھی تیروں کے چلنے سے سناسن کی

پتامہ اور ارجن تھے رتھوں پر اپنے اِستادہ ‏ — ‏ نظر آتے تھے دونوں سورما لڑنے پہ آمادہ

کشن یہ جانتے تھے یوں تو ارجن بھی دلاور ہے ‏ — ‏ مگر ان کے مقابل وہ ابھی کمسن ہے کمتر ہے

انھیں حالات پر اچھی طرح وہ غور فرما کر ‏ — ‏ پتامہ کے مقابل آپ خود ہی ڈٹ گئے جاکر

بڑے ہی جوش میں تھے آج کیشو مورتی رن میں ‏ — ‏ جو یکتائے زمانہ تھے نبرد آرائی کے فن میں

سودرشن چکر لے کر آپ استادہ نظر آئے ‏ — ‏ پتامہ جی سے ٹکرانے پہ آمادہ نظر آئے

پتامہ نے یہ دیکھا تو کہا اے شیام بنواری ‏ — ‏ تمنا ہے تمہارے ہاتھ سے مر جاؤں گردھاری

مگر ارجن نے کیشو مورتی کو آ کے سمجھایا

دلایا یاد وعدہ اور انکو رتھ پہ لے آیا

یدھشٹر اور شری کرشن بھیشم پتامہ کے حضور میں

مگر جب فیصلہ ہوتا نظر آیا نہ کچھ رن میں ‏ — ‏ یدھشٹر کے اچھوتا سا خیال اک آگیا من میں

किसी को भी ख़बर इसकी न थी, अंजाम क्या होगा।
नबर्द-आराई में तरफ़ैन की, किस का भला होगा।।

इधर हंगामा-ए-जंग-ओ-जदल, बढ़ता ही जाता था।
रथों की गड़ गड़ाहट से, कलेजा मुहँ को आता था।।

गदाओं के धमाके से, लरज़ती थी ज़मीं रण की।
फ़ज़ा में गूंज थी, तीरों के चलने से, सनासन की।।

पितामह और अर्जुन थे, रथों पर अपने इसतादा।
नज़र आते थे, दोनों सूरमा, लड़ने पे आमादा।।

किशन यह जानते थे, यूँ तो अर्जुन भी दिलावर है।
मगर उन के मुक़ाबिल, वह अभी कमसिन है, कमतर है।।

इन्हीं हालात पर अच्छी तरह वह ग़ौर फ़रमाकर।
पितामह के मुक़ाबिल, आप खुद ही डट गए जाकर।।

बड़े ही जोश में थे, आज केशव मूर्ति रण में।
जो यकता-ए-ज़माना थे, नबर्द आराई के फ़न में।।

सुदर्शन चक्र लेकर, आप इसतादा नज़र आए।
पितामह जी से टकराने पे, आमादा नज़र आए।।

पितामह ने यह देखा तो कहा, ऐ श्याम बनवारी।
तमन्ना है तुम्हारे हाथ से मर जाऊँ गिरधारी।।

मगर अर्जुन ने केशव मूर्ति को आके समझाया।
दिलाया याद वादा, और उन को रथ पे ले आया।।

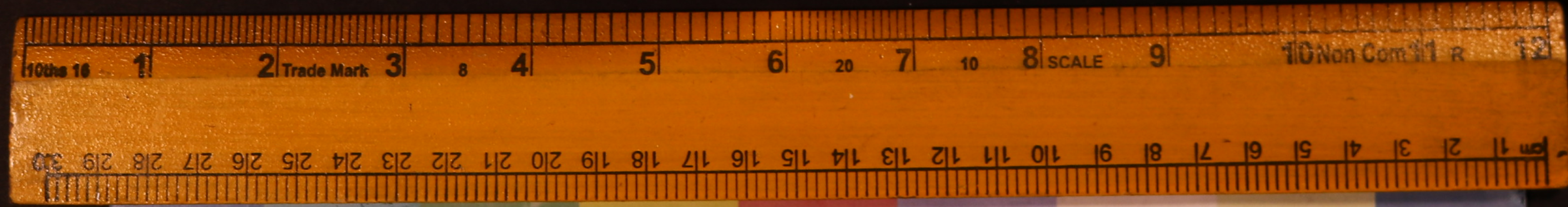
युधिष्ठिर और श्री कृष्ण भीष्म पितामह के हुज़ूर में

मगर जब फ़ैसला होता नज़र आया न कुछ रण में ।
युधिष्ठिर के, अछूता सा ख़्याल, इक आगया मन में।।

लरज़ती = कापंती

इसतादा = खड़े हुए

कमसिन = कम उम्र



یدھشٹر اور کشن پھر بھیشم کے استھان پر پہنچے
یہ دونوں، شان والے کے یہاں، باکروفر پہنچے

پتامہ نے انھیں خاطر سے اپنے پاس بٹھلایا
سبب آنے کا اتنی رات میں دریافت فرمایا

یدھشٹر احتراماً چپ رہا اور کچھ نہیں بولا
مگر مابعد خم ہو کر ادب سے یوں دہن کھولا

کہ دادا جان سچ ہے آپ جیسا ویر اس جگ میں
نہیں ہے، اور نہ ہوگا آپکا ثانی کوئی یگ میں

ذرا اس مسئلہ پر ٹھنڈے دل سے سوچئے دادا
ہمارا اب وسیلہ کون ہے جُز آپ کے دادا

مگر اب آپ ہی خود ہیں ہماری جان کے دشمن
ہمیں بھی آپ ویسا جانئے جیسا ہے دریودھن

نہیں تو آپ کہئے ہم بیاباں میں نکل جائیں
بچا کر جنگ سے دامن کہیں ہم اور ٹل جائیں

اگر یہ بھی نہیں منظور تو، وہ گُر ہی بتلائیں
کہ جسکی وجہ سے ہم فتح کل میدان میں پائیں

پتامہ نے کہا سچ ہے، کہ تم سب ہو مرے پوتے
جگر گوشہ ہو تم تو وہ بھی نور العین ہیں میرے

حقیقت ہے کہ میرے ہاتھ میں ہتھیار ہے جبتک
لڑائی جیتنے کی ہر جہد بے کار ہے جب تک

اگر اس جنگ میں اب کامرانی چاہتے ہو تم
حکومت سلطنت اور راجدھانی چاہتے ہو تم

تو کل رن میں شکھنڈی کو بنا کر فوج کا افسر
وغا کا بوجھ سارا ڈال دینا اسکے کاندھوں پر

युधिष्ठिर और किशन फिर भीष्म के स्थान पर पहुँचे।
यह दोनों, शान वाले के यहाँ बा-कर्रोफ़र पहुँचे।।

पितामह ने उन्हें ख़ातिर से अपने पास बिठलाया।
सबब आने का इतनी रात में, दर्याफ़्त फ़रमाया।।

युधिष्ठिर एहतेरामन चुप रहा और कुछ नहीं बोला।
मगर माबॉद ख़म होकर, अदब से यूँ दहन खोला।।

एहतेरामन = अदब से
ख़म हो कर = झुक कर

कि दादा जान, सच है आप जैसा वीर इस जुग में।
नहीं है, और न होगा, आपका सानी कोई युग में।।

जुग = ज़माना, दौर

ज़रा इस मसअले पर ठंडे दिल से सोचिए दादा।
हमारा अब वसीला कौन है, जुज़ आप के दादा।।

मसअला = समस्या
जुज़ = सिवा

मगर अब आप ही खुद हैं, हमारी जान के दुश्मन।
हमें भी आप वैसा जानिए, जैसा है दुर्योधन।।

नहीं तो आप कहिए हम ब्याबाँ में निकल जाएँ।
बचा कर जंग से दामन, कहीं हम और टल जाएँ।।

अगर यह भी नहीं मन्जूर तो, वह गुर ही बतलाएँ।
कि जिसकी वजह से, हम फ़तह कल मैदान में पाएँ।।

पितामह ने कहा सच है, कि तुम सब हो मेरे पोते।
जिगर गोशा हो तुम तो, वह भी नुरूल-ऐन हैं मेरे।।

हक़ीक़त है कि मेरे हाथ में हथियार है जब तक।
लड़ाई जीतने की, हर जहद बेकार है तब तक।।

जहद = कोशिश

अगर इस जंग में अब, कामरानी चाहते हो तुम।
हुकूमत, सलतनत और राजधानी चाहते हो तुम।।

तो कल रण में, शिखण्डि को बना कर, फ़ौज का अफ़सर।
वग़ा का बोझ सारा, डाल देना उसके कांधों पर।।

वगा = लड़ाई जंग

شکھنڈی میدانِ جنگ میں

لڑائی کا جو دسواں روز نکلا قہر ساماں تھا
تباہی اور بربادی کا چاروں سمت طوفاں تھا

ہزاروں گر رہے تھے نوجواں مَر مَر کے کٹ کٹ کے
مسلسل وار کرتے تھے کبھی بڑھ بڑھ کے ہٹ ہٹ کے

کہیں تیروں کی بارش ہو رہی تھی لڑنے والوں پر
کہیں تھا مرفعہ[1] ویروں کا اپنے صرف بھالوں پر

کوئی تلوار لے کر پل پڑا تھا اپنے دشمن پر
کوئی دم توڑتا تھا زخم کھا کر سینہ و تن پر

اچانک پھر پتامہ سے شکھنڈی بھڑ گیا آکر
تصنع سے جواں مردوں کے جیسی شان دکھلا کر

شکھنڈی کچھ بھی تھا لیکن وہ ارجن کا فدائی تھا
دروپد کا ہی فرزند ہمہ سنچالی کا بھائی تھا

پتامہ نے جب اک نامرد کو پایا مقابل میں
ہوئی رخصت دلیری پڑ گئے بیچارے مشکل میں

وہ کیسے وار کرتے ایک زنخے اور نکمے[2] پر
جہاں تک اٹھ چکا تھا ہاتھ انکا رہ گیا اٹھ کر

ارجن کا تیر بھیشم پتامہ کی پشت میں

اسی اک لمحہ کے تو منتظر تھے شیام بنواری
پتامہ پر چلا دے تیر ارجن، بولے گردھاری

[1] تکیہ یا بھروسہ [2] پھر اسکے بعد پتامہ شکھنڈی کی طرف پشت کرکے کھڑے ہو جاتے ہیں

शिखण्डि मैदाने-जंग में

लड़ाई का जो दसवाँ रोज़ निकला, क़हर सामाँ था।
तबाही और बरबादी का चारों सम्त तूफाँ था।।

हज़ारों गिर रहे थे नौजवाँ, मरमर के कट कट के।
मुसलसल वार करते थे, कभी बढ़ बढ़ के हट हट के।।

कहीं तीरों की बारिश हो रही थी लड़ने वालों पर।
कहीं था मिरफ़का वीरों का अपने सिर्फ़ भालों पर।।

कोई तलवार ले कर, पिल पड़ा था, अपने दुश्मन पर।
कोई दम तोड़ता था, ज़ख़्म खाकर सीना-ओ-तन पर।।

अचानक फिर पितामह से, शिखण्डि भिड़ गया आकर।
तसन्नो से, जवाँ मर्दों के जैसी, शान दिखलाकर।।

शिखण्डि कुछ भी था लेकिन, वह अर्जुन का फ़िदाई था।
द्रोपद का यही फ़र्ज़न्द, पंचाली का भाई था।।

पितामह ने, जब इक नामर्द को पाया मुकाबिल में।
हुई रुख़सत दिलेरी, पड़गए बेचारे मुश्किल में।।

वह कैसे वार करते एक ज़नख़े और निकम्मे पर।
जहाँ तक उठ चुका था हाथ, उन का रह गया उठ कर।।

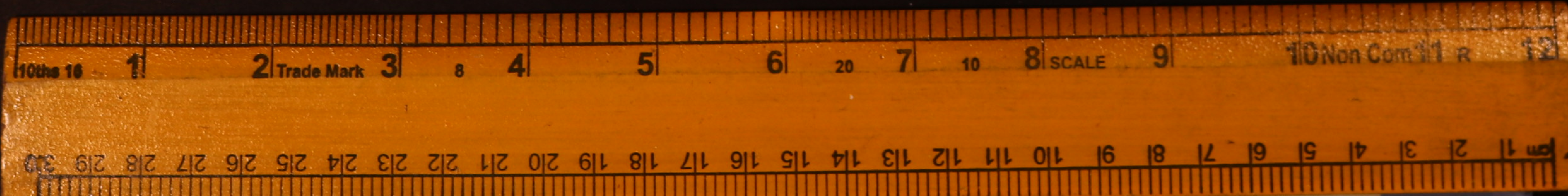
अर्जुन का तीर भीष्म पितामह की पुश्त में

इसी इक लम्हा के तो, मुन्तज़िर थे श्याम बनवारी।
पितामह पर चलादे तीर अर्जुन, बोले गिरधारी।।

मिरफ़का = भरोसा

तसन्नो = बनावट

फ़िदाई = प्राण अर्पण करने वाला



مگر ارجن شجاعت کا دھنی تھا اور دلاور تھا
شجاعِ وقت تھا رن ویر تھا فولاد پیکر تھا

بھلا پشتِ شکھنڈی سے وہ چھپکر وار کیوں کرتا
وہ اپنے نام کا ارجن تھا یہ ویوہار کیوں کرتا

بالآخر کر دیا انکار اس نے وار کرنے سے
ہوئی چنتا کشن کو اسکے اِس انکار کرنے سے

کشن آخر کشن تھے جانتے تھے خوب ارجن کو
بہت پہنچانتے تھے اسکے وہ ذہنی تلوّن کو

کشن جیسے سیاست داں سے جب اسکو پڑا پالا
تو بھولا چوکڑی پھر ہاتھ اپنا بان پر ڈالا

شکھنڈی کے ہوا وہ عقب میں تیر و کماں لے کر
وہیں سے شست باندھی اسنے اسکو درمیاں لیکر

کماں کو کھینچکر ارجن نے چھوڑا پوری قوت سے
چلا سمتِ پتامہ سنسناتا تیر سُرعت سے

نشانہ تھا وہ ارجن کا بھلا کیسے خطا ہوتا
اگر ہوتا خطا تو جَو سے گندم بھی اگا ہوتا

غرض ارجن کا تیر اپنی کماں کو چھوڑ کر نکلا
تو انکی پیٹھ میں گھسکر کوَچ کو توڑ کر نکلا

بھیشم پتامہ تیروں کی سیج پر

پھر اسکے بعد چاروں سمت سے تیروں کی باڑھ آئی
پتامہ کے بدن کی ناپ لی تیروں نے گہرائی

ہزاروں تیر انکے جسم خاکی میں ہوئے پیوست
ہوئے وجہِ شکھنڈی سے پتامہ آج یوں بے دست

मगर, अर्जुन शुजाअत का, धनी था, और दिलावर था।
शुजाए- वक़्त था, रणवीर था, फ़ौलाद पैकर था।।

भला पुश्ते-शिखण्डि से वह छुप कर वार क्यों करता।
वह अपने नाम का अर्जुन था, यह व्यवहार क्यों करता।।

बिलआख़िर कर दिया इन्कार, उसने वार करने से।
हुई चिन्ता किशन को, उसके इस इन्कार करने से।।

किशन आख़िर किशन थे, जानते थे, खूब अर्जुन को।
बहुत पहचानते थे, उसके वह ज़हनी तलव्वून को।।

किशन जैसे सियासतदाँ, से जब उसको पड़ा पाला।
तो भूला चौकड़ी, फिर हाथ अपना बान पर डाला।।

शिखण्डि के, हुआ वह अक़्ब में तीरो-कमाँ लेकर।
वहीं से शिस्त बांधी उसने, उस को दरमियाँ लेकर।।

कमाँ को खींचकर अर्जुन ने, छोड़ा पूरी कुव्वत से।
चला सम्ते-पितामह सनसनाता तीर सुरअ्त से।।

निशाना था, वह अर्जुन का, भला कैसे ख़ता होता।
अगर होता ख़ता तो, जौ से गनदुम भी उगा होता।।

ग़रज़ अर्जुन का तीर, अपनी कमाँ को छोड़ कर निकला।
तो उन की, पीठ में घुसकर, कवच को तोड़ कर निकला।।

शुजाअत = बहादुरी
शुजाए-वक़्त = अपने वक़्त का बहादुर
अक़्ब = पीछे
सुरअत = तेज़ी
गनदुम = गेहूँ

भीष्म पितामह
तीरों की सेज पर

फिर उस के बाद, चारों सम्त से तीरों की बाढ़ आई।
पितामह के बदन की नाप ली, तीरों ने गहराई ।।

हज़ारों तीर उन के, जिस्मे-ख़ाकी में हुए पैवस्त।
हुए वजहे-शिखण्डि से, पितामह आज यूँ बेदस्त।।

بالآخر رفتہ رفتہ ضعف طاری ہو گیا ان پر
غشی کی کیفیت چھاتے ہی فوراً آگیا چکر

اور اسکے بعد گرنا چاہتے تھے وہ بایں عجلت
کہ تیروں نے سنبھالا جو تھے اسکے جسم میں پیوست

پتامہ کیلئے اب بن گئی تھی سیج تیروں کی
زمانے تو نے دیکھی تھی کبھی شان ایسے ویروں کی

پتامہ کی یہ حالت دیکھکر پھر لڑنے والوں نے
لڑائی بند کردی سورماؤں اور جیالوں نے

تکئے کی ضرورت

یدھشٹر بھیم ارجن پھر پتامہ کے قریب آئے
نکُل اور کرن و دریودھن بھی دادا کے قریب آئے

پتامہ کا سرِ جنگاہ اب تیروں کا بستر تھا
بدن تیروں پہ تھا انکا مگر لٹکا ہوا سر تھا

پتامہ نے کہا اب چاہئے مجھکو ذرا تکیہ
تو دریودھن نے لایا، ریشم و کمخواب کا تکیہ

یہ تکیہ دیکھ کر بولے پتامہ اس طرح ہنسکر
اسی کی شان کا تکیہ ہو جیسا ہے مرا بستر

نہیں ہے ایسے تکئے کی ضرورت جاؤ لے جاؤ
مرے بستر کے جیسا کوئی تکیہ ہو تو لے آؤ

बिलआख़िर रफ़ता-रफ़ता ज़ोफ़ तारी हो गया उन पर।
ग़शी की कैफ़ियत छाते ही, फ़ौरन आगया चक्कर।।

और इस के बाद गिरना चाहते थे वह बई-उजलत।
कि तीरों ने संभाला, जो थे उनके जिस्म में पैवस्त।।

पितामह के लिए अब बन गई थी सेज तीरों की।
ज़माने, तूने देखी थी, कभी शान ऐसे वीरों की।।

पितामह की यह हालत देख कर, फिर लड़ने वालों ने।
लड़ाई बन्द करदी, सूरमाओं और जियालों ने।।

तकिये की ज़रूरत

युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, फिर पितामह के क़रीब आए।
नकुल, और कर्ण-औ-दुर्योधन भी, दादा के क़रीब आए।।

पितामह का सरे-जंगाह, अब तीरों का बिस्तर था।
बंदन तीरों पे था, उन का, मगर लटका हुआ सर था।।

पितामह ने कहा, अब चाहिए, मुझ को ज़रा तकिया।
तो दुर्योधन ने लाया, रेशमो-कमख़्वाब का तकिया।।

यह तकिया देख कर बोले पितामह, इस तरह हंसकर।
इसी की शान का तकिया हो, जैसा है मेरा बिस्तर।।

नहीं है ऐसे तकिये कि ज़रूरत, जाओ ले जाओ।
मेरे बिस्तर के जैसा, कोई तकिया हो तो ले आओ।।

ज़ोफ़ = कमज़ोर
ग़शी = बेहोशि

बई-उजलत = बहुत जल्दी

सरे-जंगाह = रणभूमि



تیروں کا تکیہ

پتامہ کے اِس اندازِ سخن پر لوگ حیراں تھے　　فقط اک ویر ارجن کے علاوہ سب پریشاں تھے

لہٰذا آگیا تھا ذہن میں مطلب پتامہ کا　　کہ تکیہ کیسا ہونا چاہئے تھا اب پتامہ کا

نکالا تیر فوراً اور کماں میں تیر کو جوڑا　　پتامہ کے سرہانے پھر کماں کو کھینچکر چھوڑا

اچانک قوس سے دو تیر اک طوفان سے نکلے
زمیں پر گڑ کے تکیہ بن گئے اس شان سے نکلے

ابل اٹھا زمیں سے گنگا جل کا ایک فوّارہ

پتامہ تشنگی سے ہو گئے پھر اس قدر بیکل　　نظامِ زندگی میں پڑ گئی تھی ان کے اک ہلچل

زباں کو خشک لب پر پھیر کر ارشاد فرمایا　　تقدس بخش، اپنی گنگا ماں کو یاد فرمایا

یہ سنکر تیسرا دھرتی پہ تیر ارجن نے پھر مارا　　اُبل اُٹھا زمیں سے گنگا جل کا ایک فوارہ

زمیں سے نکلا پھر اس شان سے فوارۂ مضطر
پتامہ کے دہن تک دھار پہنچی اسکی بل کھا کر

तीरों का तकिया

पितामह के, इस अन्दाज़े-सुख़न पर, लोग हैराँ थे।
फ़क़त इक वीर अर्जुन के, अलावा सब परेशाँ थे।।

लिहाज़ा आ गया था, ज़हन में मतलब, पितामह का।
कि तकिया, कैसा होना चाहिए था, अब पितामह का।।

निकाला तीर फ़ौरन, और कमाँ में तीर को जोड़ा।
पितामह के सिरहाने फिर, कमाँ को खींच कर छोड़ा।।

अचानक क़ौस से दो तीर, इक तूफ़ान से निकले।
ज़मीं पर गड़ के तकिया बन गए, इस शान से निकले।।

अन्दाज़े-सुख़न = बात करने का ढंग

क़ौस = कमान

उबल उठ्ठा ज़मीं से गंगा जल का एक फ़व्वारा

पितामह तिशनगी से हो गए, फिर इस क़दर बेकल।
निज़ामे-ज़िन्दगी में, पड़ गई थी, उन के इक हलचल।।

ज़बाँ को ख़ुश्क लब पर, फेर कर इरशाद फ़रमाया।
तक़द्दुस बख़्श, अपनी, गंगा माँ को, याद फ़रमाया।।

यह सुनकर तीसरा, धरती पे तीर अर्जुन ने फिर मारा।
उबल उठ्ठा ज़मीं से गंगा जल का एक फ़व्वारा।।

ज़मीं से निकला फिर, इस शान से, फ़व्वारए-मुज़तर।
पितामह के दहन तक, धार पहुँची उसकी बल खाकर।।

तिशनगी = प्यास

तक़द्दुस बख़्श = पवित्रता देने वाली



مہابھارت

کا

دوسرا کمانڈر انچیف

درونہ چاریہ

میدانِ عمل میں

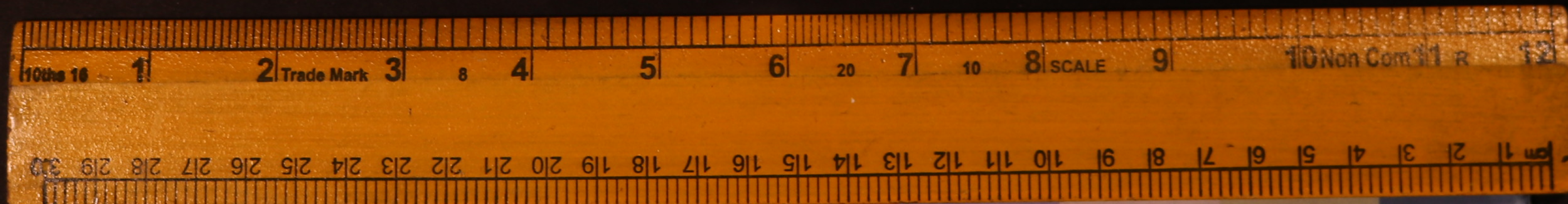
महाभारत

का दूसरा

कमान्डर-इनचीफ़

द्रोणाचार्य

मैदाने-अमल में



درونہ چاریہ میدانِ جنگ میں

اُدھر رن میں پتامہ سوئے تھے تیروں کے بستر پر
اِدھر آئے درونہ چاریہ سیناپتی بن کر

درونہ چاریہ کے زیرِ سایہ فوجِ دریودھن
تھی جرأت آزما پانڈو کے لشکر سے بہ حُسنِ فن

سرِ میداں، یہ سالاری کا ان کا روزِ اوّل تھا
کہ جن پر کوروَاں کو فخر تھا پورا معوّل[1] تھا

یہی وہ صاحبِ سیف و قلم استاذِ دوراں تھے
یہ سچ ہے پانڈواں بھی جنکی شاگردی پہ نازاں تھے

حقیقت میں دروپد سے درونہ کو کدورت تھی
پرانی دشمنی تھی، بیر تھا، کہنہ عداوت تھی

یہی تھی وجہ جو پنچال کے رن ویر شیروں کو
درونہ چاریہ نے مارا چُن چُن کر دلیروں کو

ہزاروں سورما مارے گئے پنچال راجہ کے
مرے سیناپتی اور ویر بد افعال راجہ کے

اسی دن بھیم و ارجن نے دلیری خوب دکھلائی
فنا کے گھاٹ پہنچے کورواں کے بیسیوں بھائی

ادھر بھی کرن کے بانوں کو ویر ارجن نے سب کاٹا[2]
بدن چھلنی کیے لاشوں سے میدانِ وغا پاٹا

غرض لڑتا رہا رن چھتر میں ہر ویر ہر افسر
غروبِ مہر پر واپس ہوا طرفین کا لشکر

۱ معوّل = اعتماد

۲ بانوں کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے علاوہ اسکے بانوں سے صرف جسم ہی نہیں چھدتے تھے بلکہ گردنیں بھی کٹ کے گر پڑتی تھیں، چونکہ ان کے پھل "دھرسا" اور تیشہ کے مانند ہوتے تھے۔

द्रोणाचार्य मैदाने-जंग में

उधर रण में पितामह सोए थे, तीरों के बिस्तर पर।
इधर आए द्रोणाचार्य, सेनापति बन कर।।

द्रोणाचार्य के ज़ेरे-साया, फ़ौजे-दुर्योधन।
थी जुरअत आज़मा, पांडव के लश्कर से बहुस्ने-फ़न।।

सरे-मैदाँ, यह सालारी का उन की, रोज़े-अव्वल था।
कि जिन पर कौरवाँ को फ़ख़्र था पूरा मऊव्वल था।।

यही वह साहेबे-सैफ़-ओ-क़लम उसताज़े-दौराँ थे।
यह सच है पांडवाँ भी जिन की शामिर्दी पे नाज़ाँ थे।।

हक़ीक़त में द्रोपद से द्रोणा को कदूरत थी।
पुरानी दुशमनी थी, बैर था, कोहना अदावत थी।।

यही थी वजह जो पंचाल के रणवीर शेरों को।
द्रोणाचार्य ने मारा चुन-चुन कर दिलेरों को।।

हज़ारों सूरमा मारे गए पंचाल राजा के।
मरे सेनापति और वीर, बद-अफ़आल राजा के।।

इसी दिन भीम-ओ-अर्जुन ने दिलेरी खूब दिखलाई।
फ़ना के घाट पहुँचे कौरवाँ के बीसियों भाई।।

इधर भी कर्ण के बाणों को, वीर अर्जुन ने सब [1]काटा।
बदन छलनी किए, लाशों से मैदाने-वग़ा पाटा।।

ग़रज़ लड़ता रहा रणक्षेत्र में, हर वीर हर अफ़सर।
गुरूबे-महेर पर वापस हुआ, तरफ़ैन का लश्कर।।

ज़ेरे-साया = मातेहत

रोज़े-अव्वल = पहला दिन

मऊव्वल = भरोसा

साहेबे-सैफ़ व क़लम = तलवार और क़लम का धनी

कोहना = पुरानी

बद-अफ़आल = वादा तोड़ने वाला

गुरूबे-महेर = सूरज के डूबने पर

तरफ़ैन = दोनों तरफ़

१) बानों को काटना उस ज़मानेका महाविरा है अलावा इसके बानों से सिर्फ़ जिस्म ही नहीं छिदते थे बल्कि गर्दनें भी कट के गिर पड़ती थीं, चुंकि उनके फल व फरसा और तीशा के मानिन्द होते थे।

یدھشٹر کی گرفتاری کا منصوبہ

اسی شب میں درونہ اور دریودھن نے اک ایسا
بنایا مل کے منصوبہ یدھشٹر کو پکڑنے کا

شریکِ مشورہ تھے اُن میں کچھ ابلیس کے چیلے
فساد و فسق کے پیکر شکونی جیدرتھ جیسے

علاوہ اسکے ارجن کے لئے سوچی گئیں گھاتیں
محاذِ جنگ سے اسکو ہٹانے کی ہوئیں باتیں

اسی میں چکرویو کا مسئلہ بھی سامنے آیا
درونہ نے بڑی تفصیل سے اس فن کو سمجھایا

یہ اک منصوبہ سازش تھا جسکا مقصد و حاصل
فقط یہ تھا نہ پانڈو رہ سکیں اب جنگ کے قابل

یدھشٹر چونکہ اپنے بھائیوں میں سب سے سربر ہے
متانت اور ذہانت میں بھی افضل اور برتر ہے

اسی اک وجہ سے ہے پانڈوؤں میں جوش اور ہمت
یہ ان کا عزم و پامردی یہ استقلال یہ جرأت

یدھشٹر کی گرفتاری سے جرأت آزمائی کا
اتر جائیگا نشہ پانڈوؤں کی خودستائی کا

یہ ایسی ضرب ہوگی تاب جسکی لا نہیں سکتے
وجے پانڈو ہمارے سامنے پھر پا نہیں سکتے

بالآخر مشورہ کے بعد کوروں سو گئے جاکر
عمل پیرا انہیں ہونا تھا کل میداں میں سازش پر

युधिष्ठिर की
गिरफ़तारी का मनसूबा

इसी शब में द्रोणा, और दुर्योधन ने इक ऐसा।
बनाया मिल के मनसूबा, युधिष्ठिर को पकड़ने का।।

शरीके-मशवरा थे, उन में कुछ इबलीस के चेले।
फ़सादो-फ़िस्क़ के पैकर, शकुनी, जयद्रथ, जैसे।।

अलावा इस के अर्जुन के लिए सोची गई घातें।
महाज़े-जंग से उसको, हटाने की हुई बातें।।

इसी में चक्रव्यूह का मसअला भी सामने आया।
द्रोणाने बड़ी तफ़सील से इस फ़न को समझाया।।

यह एक मन्सुबए-साज़िश था जिसका मक़सदो-हासिल।
फ़क़त यह था, न पांडव रह सकें, अब जंग के क़ाबिल।

युधिष्ठिर चूंकि अपने भाईयों में सब से सर-बर है।
मतानत और ज़हानत में भी अफ़ज़ल और बरतर है।।

इसी इक वजह से है, पान्डवों में जोश और हिम्मत।
यह उनका अज़्मो-पामरदी, यह इस्तिक़लाल, यह जुरअत।।

युधिष्ठिर की गिरफ़तारी से, जुरअत आज़माई का।
उतर जाएगा नशशा, पान्डवों की खुदसिताई का।।

यह ऐसी ज़र्ब होगी, ताब जिस की ला नहीं सकते।
विजय, पान्डव हमारे सामने, फिर पा नहीं सकते।।

बिलआख़िर मशविरे के बाद कौरों सो गए जाकर।
अमल पैरा इन्हें होना था, कल मैदाँ में साज़िश पर।।

इबलीस = शैतान
फ़साद व फ़िस्क़ = लड़ाई, झगड़ा

महाज़े-जंग = जंग का मोर्चा

अज़्मो पामरदी व इस्तिक़लाल = इरादे की मज़बूती
खुदसिताई = अपनी बड़ाई

ज़र्ब = मार/चोट



میدانِ کارزار کا ایک عام منظر

طلوعِ مہر نے اک آگ بھردی سینہ وتن میں
ہوا آغاز شورِ طبل سے پھر جنگ کا رَن میں

کہیں تو شنکھ پھونکے جارہے تھے رن کی دھرتی پہ
کہیں سے شور وغل اٹھتا تھا نقاروں کا رہ رہ کر

رتھوں کی گھڑگھڑاہٹ قوس کی تانتوں کی ٹنکاریں
سبھی تھے مرتعش سن سن کے ہتھیاروں کی جھنکاریں

بڑھیں سیلاب کی مانند فوجیں دونوں جانب سے
گلے مِل جائے جیسے دوڑ کر مطلوب طالب سے

سپاہی گھس گئے اک دوسرے کی صف میں بے کھٹکے
پڑا گھمسان کا رن بھڑ گئے شیرانِ دل ڈٹ کے

فنونِ جنگ سے واقف تھے سب ہی آزمودہ تھے
ہنر میں اپنے یکتا، تجربہ کاری میں پختہ تھے

کسی نے تیغ مِغفر پر چلاتے ہی ہٹا پیچھے
کسی نے کاسۂ سر کو چھپایا ڈھال کے نیچے

سُبک ہو کر کسی نے ہاتھ کھینچا اپنا الجھن سے
جھکاؤ دے کے پھرتی سے بچایا خود کو دشمن سے

کوئی پیچھے ہٹا مہمیز دے کر پھر بڑھا آگے
کبھی کاوا دیا اور پُشت پر جا پہنچا دشمن کے

لگا کر جست فوراً لے لیا نیزے پہ دشمن کو
کبھی چرکا لگا کر لوٹ آئی تیغ گردن کو

مخالف سمت سے بھی تیغِ جوہر دار لہرائی
گری سر پر تو کلغی اور مغفر کاٹ کر آئی

کبھی تلوار نے کاٹی سپر اور جوشن و مغفر
تو فوراً ہی مقابل نے جواب اس کا دیا بڑھ کر

मैदाने-कारज़ार का एक आम मन्ज़र

तुलूए-महर ने, इक आग भरदी, सीना-ओ-तन में।
हुआ आग़ाज़ शोरे-तब्ल से, फिर जंग का रन्न में।।

कहीं तो, शंख फूंके जारहे थे, रण की धरती पर।
कहीं से शोरो-गुल उठता था, नक़्क़ारों का रह रह कर।।

रथों की गड़ गड़ाहट, कौ़स के तांतों की टंकारें।
सभी थे मुर्तइश सुन सुन के हथियारों की झंकारें।।

बढ़ीं सैलाब की मानिन्द, फ़ौजें दोनों जानिब से।
गले मिल जाए जैसे दौड़ कर मतलूब तालिब से।।

सिपाही घुस गए इक दूसरे की सफ़ में बे खटके।
पड़ा घमसान का रण, भिड़ गए शेराने-दिल डटके।।

फुनूने-जंग से वाकि़फ़ थे सब ही आज़मूदा थे।
हुनर में अपने यकता, तजरूबा कारी में पुख़्ता थे।।

किसी ने तेग़ मिग़फ़र पर, चलाते ही हटा पीछे।
किसी ने कासा-ए-सर को छिपाया ढाल के नीचे।।

सुबुक होकर किसी ने हाथ खींचा अपना उलझन से।
झुकाव देके फुरती से बचाया, खुद को दुश्मन से।।

कोई पीछे हटा महमीज़ देकर फिर बढ़ा आगे।
कभी कावा दिया, और पुश्त पर जा पहुँचा दुश्मन के।।

लगा कर जस्त फ़ौरन, ले लिया नेज़े पे दुश्मन को।
कभी चर्का लगा कर, लौट आई तेग़ गर्दन को।।

मुख़ालिफ़ सम्त से भी तेगे-जौहर दार लहराई।
गिरी सर पर तो किलग़ी, और मिग़फ़र काटकर आई।।

कभी तलवार ने काटी सिपर और जोशन-ओ-मिग़फ़र ।
तो फ़ौरन ही मुक़ाबिल ने, जवाब उस का दिया बढ़कर।।

तुलूए-महर = सूरज का निकलना

मुर्तइश = कांपते हुए

आज़मूदा = तजरूबाकार

कासा-ए-सर= इन्सानी सर एक कटोरी के समान होता है , मतलब सर

किलगी = लोहे की टोपी पर लगे परिन्दों के पर, चोटी.

بدل کر پینترے اک دوسرے پر وار کرتے تھے
قضا سر پر کھڑی تھی موت سے لیکن نہ ڈرتے تھے

پھڑک اٹھتی تھی مچھلی بازوئے شہزور کی اکثر
ابھر آتی تھیں ماتھے کی رگیں ایک ایک حملے پر

دلاور اور نامی پہلواں مرتے تھے کٹتے تھے
ہزاروں زخم کھاتے تھے مگر پھر بھی نہ ہٹتے تھے

یدھشٹر کو پکڑنے کی ناکام کوشش

یدھشٹر کو پکڑنے میں درون، کرن، دشاشن
نہ اب تک ہو سکے تھے کامراں پانڈو کے یہ دشمن

تقاضائے اسیری دم بدم بڑھتا ہی جاتا تھا
مگر راجہ یدھشٹر ان کے قبضے میں نہ آتا تھا

یدھشٹر کو پکڑنے کی تھی کوشش چار سو جاری
نہ بر آئی مگر ان کی تمنائے گرفتاری

ہوا ناکام جب کوروں کا یہ منصوبۂ سازش
تو انکے طائفے میں سر سے پا تک لگ گئی آتش

دریودھن محاذِ جنگ سے ارجن کو ہٹا دینے میں کامیاب

علاوہ اسکے ارجن کے لئے بھی جال پھیلے تھے
کدورت سے قلوبِ کوراں حد درجہ میلے تھے

جو تھے مامور اس سازش پہ انکے عزمِ محکم سے
نتیجہ کوروں کے حق میں نکلا سعئ پیہم سے

غرض ارجن کو میداں سے ہٹا دینے میں دریودھن
ہوا تھا کامیاب و کامراں پوری طرح پُرفن

बदल कर पैंतरे, इक दूसरे पर वार करते थे।
क़ज़ा सर पर खड़ी थी, मौत से लेकिन न डरते थे।।

फड़क उठती थी मछली, बाजुए-शहज़ोर की अकसर।
उभर आती थीं, माथे की रगें, एक-एक हमले पर।।

दिलावर और नामी पहेलवाँ, मरते थे कटते थे।
हज़ारों ज़ख़्म खाते थे, मगर फिर भी न हटते थे।।

युधिष्ठिर को पकड़ने की नाकाम कोशिश

युधिष्ठिर को पकड़ने में द्रोणा, कर्ण, दुश्शाषन।
न अब तक हो सके थे कामराँ, पान्डव के यह दुश्मन।।

तक़ाज़ा-ए-असिरी दम ब दम बढ़ता ही जाता था।
मगर राजा युधिष्ठिर उनके, क़बज़े में न आता था।।

युधिष्ठिर को पकड़ने की, थी कोशिश चार सू जारी।
न बर आई, मगर उन की, तमन्ना-ए-गिरिफ़तारी।।

हुआ नाकाम जब कौरों का यह मनसूबा-ए-साज़िश।
तो उन के ताएफ़े में, सर से पा तक, लग गई आतिश।।

दुर्योधन महाज़े-जंग से अर्जुन को हटा देने में कामयाब

अलावा इस के अर्जुन के लिये भी जाल फैले थे।
कुदूरत से कुलूबे-कौरवाँ हद-दर्जा मैले थे।।

जो थे मामूर इस साज़िश में उन के अज़्मो-मोहकम से।
नतीजा कौरवों के हक़ में निकला सइ-ए-पैहम से।।

ग़रज़ अर्जुन को मैदाँ से हटा देने में दुर्योधन।
हुआ था कामयाबो-कामराँ पूरी तरह पुर-फ़न।।

बाजुए-शहज़ोर = ताक़तवर हाथ

तक़ाज़ा-ए-असिरी = क़ैद करने की आरज़ू

आतिश = आग

कुलूबे-कौरवाँ = कौरवों के दिल

सइ-ए-पैहम = बार बार कोशिश

نہ ہٹتا ویر ارجن چھوڑ کر یہ مورچہ اپنا
تو ہوتا چکرویو کا یوں نہ منصوبہ کبھی پورا

پھر اس نے چکرویو کے واسطے ویروں کو بُلوایا
اور ان کو چکر کے اس کام پر مامور فرمایا

ایک جنگی منصوبہ یعنی چکرویو کا مورچہ

اِدھر ارجن اک ایسے مورچے پر تھا نبرد آرا
جہاں سے واپسی کا شام سے پہلے نہ تھا یارا

درونہ جیدرت اور کرن نے کوروں کے منڈل میں
بنایا چکرویو کا ایک جنگی مورچہ دل میں

کماں اس مورچے کی جیدرت نے خود سنبھالی تھی
اسی کے مشورے نے چکر کی بنیاد ڈالی تھی؛

یہ اک منصوبہ جنگی درونہ چاریہ کا تھا
بہادر سورماؤں کے لئے چیلنج ایسا تھا

کہ اس سے موڑنا رخ بزدلی کی اک علامت تھی
مگر اس چکرویو کا توڑ دینا ہی شجاعت تھی

شکست چکرویو اس ضمن میں اک مستقل فن تھا
فقط اک ویر ارجن تھا جو اس فن سے مزین تھا

مگر شہ زور ارجن کو نہ تھی مطلق خبر اس کی؛
جہاں وہ تھا اُسی اک مورچہ پر تھی نظر اس کی

اسی کارن درونہ جی نے یہ منصوبہ باندھا تھا
کہ ارجن دوسری جانب سے اُلجھا آ نہ سکتا تھا

اگر اب چکرویو کا دائرہ پانڈو نہیں توڑے
تو ہوگی اک شکستِ فاش مُنہ اس سے اگر موڑے

न हटता वीर अर्जुन छोड़ कर यह मोर्चा अपना।
तो होता चक्रव्यूह का यूँ, न मनसूबा कभी पूरा।।

फिर उसने चक्रव्यूह के वास्ते, वीरों को बुलवाया।
और उन को चक्र के इस काम पर, मामूर फ़रमाया।।

मामूर = नियुक्त

एक जंगी मनसूबा
याने चक्रव्यूह का मोर्चा

इधर अर्जुन इक ऐसे मोर्चे पर था नबर्द-आरा।
जहाँ से वापसी का शाम से पहले न था यारा।।

द्रोणा, जयद्रथ और कर्ण, ने कौरवँ के मन्डल में।
बनाया चक्रव्यूह का एक जंगी मोर्चा दल में।।

कमाँ इस मोर्चे की जयद्रथ ने खुद संभाली थी।
इसी के मश्वरे ने, चक्र की बुनियाद डाली थी।।

यह इक मनसूबा-ए-जंगी, द्रोणाचार्या का था।
बहादुर सूरमाओं के लिये, चॅलेन्ज ऐसा था।।

मानसूबा-ए-जंगी = जंग की योजना

कि इस से मोड़ना रुख़ बुज़दिली की इक अॅलामत थी।
मगर इस चक्रव्यूह का, तोड़ देना ही शुजाअत थी।।

शिकस्ते-चक्रव्यूह इस ज़िम्न में, इक मुसतक़िल फ़न था।
फ़क़त इक वीर अर्जुन था, जो इस फ़न से मुज़य्यन था।।

मगर शहज़ोर अर्जुन को, न थी मुतलक़ ख़बर इस की।
जहाँ वह था, उसी इक मोर्चे पर थी, नज़र उस की।।

इसी कारण द्रोणा जी ने यह मनसूबा बांधा था।
कि अर्जुन दूसरी जानिब है उलझा, आ न सकता था।।

अगर अब चक्रव्यूह का दायरा, पान्डव नहीं तोड़े।
तो होगी इक शिकस्ते-फ़ाश, मुँह इस से अगर मोड़े।।

शिकस्ते-फ़ाश = खुली हार



چکرویو کے اعلان سے پانڈوں کی پریشانی

خبر اس چکرویو کی آئی جب پانڈو کے منڈل میں
یدھشٹر دم بخود سا رہ گیا میدانِ مقتل میں

سرِ میداں جو لاحق تھی یدھشٹر کو پریشانی
وہ تھی اک بے محل سی چکرویو کی فتنہ سامانی

نہ تھا موجود ارجن اس سمے رن چھیتر کے اندر
نہ جانے کس طرف تھا وہ نبرد آرا بہ کرّ و فر

اسی اک وجہ سے پانڈو سرِ میداں پریشاں تھے
جواب اس چکرویو کا کیسے دیں ہم کافی ہراساں تھے

اگر ارجن یہاں ہوتا تو پھر ہوتی نہ دشواری
نہ ہوتا چکرویو کا خوف ہم پر اس قدر طاری

سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ اب انجام کیا ہوگا
ہمارا دوسرا اس ضمن میں اقدام کیا ہوگا

ابھیمنو نے جب دیکھی یدھشٹر کی پریشانی
ادب سے عرض کی قدموں پہ ان کے رکھ کے پیشانی

نہ گھبرائیں کہ میں اس چکرویو کو توڑ سکتا ہوں
درونا کرن کے بانوں کے رخ کو موڑ سکتا ہوں

اجازت دیجیے تایا جان مجھ پر لطف فرمائیں
تمنائے نبرد و جنگ میری آپ بر لائیں

تعجب آپ کو ہوگا یہ میری داستاں سن کر

یہ سن کر پانڈواں بولے ابھیمنو یہ بتلانا
کہاں سے چکرویو کو توڑنا سیکھا ہے سمجھانا

चक्रव्यूह के एलान से पान्डवों की परेशानी

ख़बर इस चक्रव्यूह की आई जब पान्डव के मन्डल में।
युधिष्ठिर दम-बखुद सा रह गया, मैदाने-मक़तल में।।

सरे-मैदाँ जो लाहक़ थी, युधिष्ठिर को परेशानी।
वह थी इक बे महल सी, चक्रव्यूह की फ़ितना सामानी।।

न था मौजूद अर्जुन, उस समय रण क्षेत्र के अन्दर।
न जाने किस तरफ़ था, वह नबर्द-आरा ब-कर्रोफ़र।।

इसी इक वजह से पान्डव सरे-मैदाँ परेशाँ थे।
जवाब इस चक्रव्यूह का कैसे दें, काफ़ी हिरासाँ थे।।

अगर अर्जुन यहाँ होता, तो फिर होती न दुशवारी।
न होता चक्रव्यूह का ख़ौफ़, हम पर इस क़दर तारी।।

समझ में कुछ नहीं आता, कि अब अन्जाम क्या होगा।
हमारा दूसरा इस ज़िम्न में, इक़दाम क्या होगा।।

अभिमन्यु ने जब देखी युधिष्ठिर की परेशानी।
अदब से अर्ज की क़दमो पे उनके, रख के पेशानी।।

न घबराएँ कि मैं, इस चक्रव्यूह को तोड़ सकता हूँ।
द्रोणा, कर्ण, के बाणों के रुख़ को मोड़ सकता हूँ।।

इजाज़त देके ताया जान, मुझ पर लुत्फ़ फ़रमाएँ।
तमन्नाए-नबर्दो-जंग, मेरी आप बर लाएँ।।

तआज्जुब आप को होगा यह मेरी दास्ताँ सुन कर

यह सुन कर पान्डवां बोले अभिमन्यु यह बतलाना।
कहाँ से चक्रव्यूह को तोड़ना सीखा है समझाना।।

दम-बखुद = भौचक्का

कर्रोफ़र = शान से

ताया जान = बाप का बड़ा भाई



ابھیمنو یہ بولا کیجئے وشواس اب مجھ پر
تعجب آپ کو ہوگا یہ میری داستاں سُنکر

مگر جو بات ہے اسکو بیاں کرتا ہوں میں تم سے
یقیناً جس کو سُنکر تم بھی رہ جاؤ گے گم سم سے

کہ جب میں گربھ میں تھا بیکس و مجبور بے یارا
مرے ماتا پِتا لیٹے تھے اور سویا تھا جگ سارا

اسی عالم میں دورانِ تکلّم میں بصد احسن
اچانک درمیاں میں چھڑ گیا تھا چکرویو کا فن

پِتا نے چکرویو کے فن پہ کافی روشنی ڈالی
کوئی مُہرہ دفاع و جارحیت سے نہ تھا خالی

بتائیں ساری چالیں اور مُہرے اُس لڑائی کے
طریقے بھی بتاتے جاتے تھے زور آزمائی کے

نہایت غور سے ماتا جی سب سُنتی رہیں باتیں
وغا میں سرفروشی اور ریا و مکر کی گھاتیں

یہ ساری باتیں میں بھی سن رہا تھا پیٹ کے اندر
اچانک میری ماتا جی کو گھیرا نیند نے آکر

پِتا جی صرف آدھا ذکر کر پائے تھے اس فن کا
کہ ماں کو نیند آنے سے ادھوری رہ گئی وِدیا

یدھشٹر نے دیا اذنِ وغا اپنے بھتیجے کو

اسی کی وجہ سے مجھکو ادھورا یاد ہے یہ فن
ادھورا فن بنا ہے آرزوؤں کا مِری دشمن

فقط اِس دائرے میں مجھکو دَر آنا تو آتا ہے
و لیکن واپسی کی فکر سے دل کانپ جاتا ہے

مجھے معلوم ہے انجام اب اپنی جسارت کا
نتیجہ موت کی صورت میں نکلے گا عزیمت کا

अभिमन्यु यह बोला कीजिए विश्वास अब मुझ पर।
तआज्जुब आप को होगा, यह मेरी दास्ताँ सुनकर।।

मगर जो बात है उसको, बयाँ करता हूँ मैं तुम से।
यक़ीनन जिस को सुनकर तुम भी, रह जाओगे गुमसुम से।।

कि जब मैं गर्भ में था बेकस-ओ-मजबूर बेचारा।
मेरे माता पिता लेटे थे, और सोया था जग सारा।।

इसी आलम में दौराने-तक़ल्लुम में बसद अहसन।
अचानक दरमियाँ में छिड़ गया था चक्रव्यूह का फ़न।।

पिता ने चक्रव्यूह के फ़न पे काफ़ी रौशनी डाली।
कोई मोहरा दिफ़ा-ओ-जारेहय्यत से न था ख़ाली।।

बताई सारी चालें और मोहरे उस लड़ाई के।
तरीक़े भी बताते जाते थे, ज़ोर आज़माई के।।

निहायत ग़ौर से माता जी सब सुनती रहीं बातें।
वग़ा में सरफ़रोशी और रिया-ओ-मक्र की घातें।।

यह सारी बातें मैं भी सुन रहा था पेट के अन्दर।
अचानक मेरी माताजी को घेरा नींद ने आकर।।

पिताजी सिर्फ़ आधा ज़िक्र कर पाए थे इस फ़नका।
कि माँ को नींद आने से, अधूरी रह गयी विद्या।।

युधिष्ठिरने दिया
इज़्ने-वग़ा अपने भतीजे को

इसीकी वजह से मुझको अधूरा याद है यह फ़न।
अधूरा फ़न बना है आरज़ूओं का मेरी दुश्मन।।

फ़क़त इस दायरे में मुझ को, दर-आना तो आता है।
व लेकिन वापसी की फ़िक्र, से दिल काँप जाता है।।

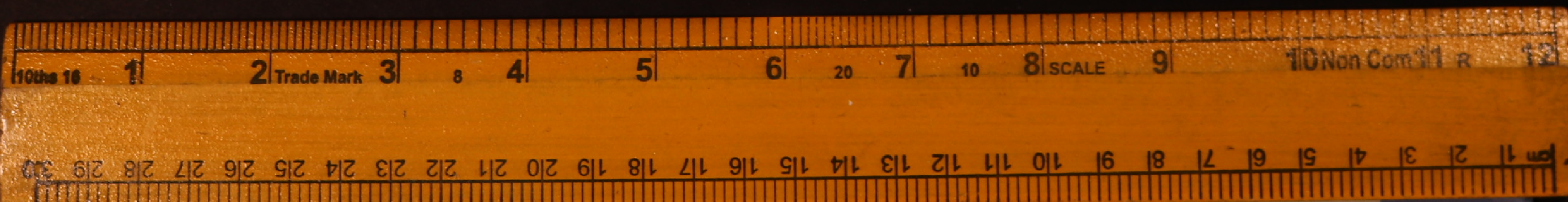
मुझे मालूम है अंजाम अब अपनी जसारत का।
नतीजा मौत की सूरत में निकलेगा अज़ीमत का।।

दौराने तक़ल्लुम = बातों के बीच
दरमियाँ =

रिया-ओ-मक्र = छलकपट

दर-आना = अन्दर जाना

जसारत = दिलेरी
अज़ीमत = बहादुरी



بَلا سے کچھ بھی ہو لیکن اجازت چاہتا ہوں مَیں — عطا اب کیجئے اذنِ شہادت چاہتا ہوں مَیں

یدھشٹر نے سُنا جس دم ابھیمنو کا یہ بھاشن — اجازت دیکے بولے جاؤ توڑو کبرِ دریودھن

مدد کرنے تمہاری پشت پر ہم ہونگے میداں میں — لگاؤ جست بیخوف و خطر تیروں کے طوفاں میں

لڑو اس شان سے کہ بھول جائیں لوگ ارجن کو — زمانہ یاد رکھے حشر تک کارِ تشیّن[1] کو

ابھیمنو یدھشٹر سے اجازت پا چکا جس دم — گیا گھر اپنی بیوی سے ملا ہو کر خوش و خرّم

پھر اپنے نین کی جیوتی سے بار آور کیا اُسکو — وفا و مہر کا انمول گوہر دے دیا اُسکو

پھر اسکے بعد وہ لوٹا محاذِ جنگ کی جانب — جہاں تھا چکرویو کا دیو اُسکی بھینٹ کا طالب

اُٹھائی کوروَاں نے چکرویو کی پہلی پسپائی

ابھیمنو مسلّح ہو کے سینہ تان کر نکلا — گلے ملنے قضا سے جی میں اپنے ٹھان کر نکلا

بڑھا عزم و یقیں کے ساتھ میدانِ شجاعت میں — نہ تھا کم ہمتی کا کوئی عنصر اُس کی فطرت میں

کماں تھی ہاتھ میں ترکش کا بنڈل پُشت پر ڈالے — زرہ تھی زیبِ تن لٹکے ہوئے تھے تیغ اور بھالے

کُھبا جاتا تھا دل میں ہر روش پر بانکپن اُس کا — قدم کو چومنے خود بڑھ رہا ہو جیسے رن اس کا

درونا جیدرتھ اور کرن پہلے سامنے آئے — ابھیمنو پہ بارش آتشیں تیروں کی برسائے

[1] شاندار ہونا

बला से कुछ भी हो लेकिन इजाज़त चाहता हूँ मैं।
अता अब कीजिए, इज़्ने-शहादत चाहता हूँ मैं।।

युधिष्ठिर ने सुना जिस दम, अभिमन्यु का यह भाषण।
इजाज़त देके बोले जाओ, तोड़ो किब्रे-दुर्योधन।।

मदद करने तुम्हारी पुश्त पर, हम होंगे मैदाँ में।
लगाओ जस्त बेख़ौफ़ो-ख़तर, तीरों के तूफ़ाँ में।।

लड़ो इस शान से कि, भूल जाएँ लोग अर्जुन को।
ज़माना याद रखे हश्र तक कारे तशय्युन को।।

अभिमन्यु युधिष्ठिर से इजाज़त पा चुका जिस दम।
गया घर, अपनी बीवी से मिला, होकर खुश-ओ-खुर्रम।।

फिर अपने नैन की ज्योती से बार आवर किया उसको।
वफ़ा-ओ-महर का अनमोल गौहर दे दिया उसको।।

फिर इसके बाद वह लौटा महाज़े-जंग की जानिब।
जहाँ था चक्रव्यूह का देव, उसकी भेंट का तालिब।।

उठाई कौरवाँ ने चक्रव्यूह की पहली पस्पाई

अभिमन्यु मुसल्लाह होके सीना तान कर निकला।
गले मिलने क़ज़ा से, जी में अपने ठान कर निकला।।

बढ़ा अज़्मो-यक़ीं के साथ, मैदाने-शुजाअत में।
न था कम हिम्मती का कोई उनसुर, उसकी फ़ितरत में।।

कमाँ थी हाथ में, तरकश का बंडल पुश्त पर डाले।
ज़िरह थी ज़ेबे-तन, लटके हुए थे तेग़ और भाले।।

खुबा जाता था दिल में, हर रविश पर बाँकपन उसका।
क़दम को चूमने खुद बढ़ रहा हो, जैसे रन उस का।।

द्रोणा, जयद्रथ और कर्ण, पहले सामने आए।
अभिमन्यु पे बारिश, आतशीं तीरों की बरसाए।।

इज़्ने शहादत = युद्ध में मरने की आज्ञा
किब्र = गुरूर
जस्त = छलांग
तशय्युन = शानदार
तालिब = इच्छुक
क़ज़ा = मौत



یہ سب وہ سُور تھے جنکا نہ تھا جنگ میں کوئی ثانی
کہ کترا کر نکل جاتی تھی جن سے موجِ طوفانی

ابھی تک معرکہ آرائی تھی محدود خطّے میں!
لڑائی ہو رہی تھی چکرویو کے خاص حصّے میں

ڈٹا تھا چکرویو کی راہ روکے جیدرت ابتک!
نہ حاصل کر سکا تھا کوئی جنگی مُنفعت ابتک

مگر کوشش ابھیمنو کی آخر راس ہی آئی!!
اُٹھائی کوروَاں نے چکرویو کی پہلی پسپائی

درونہ جیدرت اور کرن اسوت بھاگے میداں سے
دلیرانِ وغا مجبور تھے تیروں کے طوفاں سے

دریودھن کا بیٹا لکشمن، ابھیمنو کے مقابلے میں

ابھیمنو کو موقع مل گیا کوروں کے ہٹنے سے
گھُسا وہ چکرویو میں مجمعٔ اغیار چھٹنے سے

لڑائی چھڑ گئی تھی چکرویو کی چکر کے اندر
ابھیمنو، یہاں بھی سارے لڑویوں پہ تھا سربر

کبھی بڑھ کر صفوفِ کوروَاں کو وہ پلٹ دیتا
کبھی تیغِ دودم کی باڑھ پر دشمن کو رکھ لیتا

جدھر بھی ٹوٹتا تھا کائی جیسے لوگ پھٹتے تھے
دلیرانِ وغا منہ پھیرتے تھے پیچھے ہٹتے تھے

اچانک سامنے دیکھا تو دریودھن کا اک بیٹا
کھڑا تھا اپنا سینہ تان کر تقدیر کا ہیٹا

ابھیمنو نے جب اُس نوجواں کو سامنے پایا
بڑے چبھتے ہوئے انداز میں پھر اسکو سمجھایا

محبّی! پرورش تیری ہوئی ہے کس محبّت سے
ترے ماں باپ نے پالا ہے کتنے ناز و نعمت سے

यह सब, वह सूर थे जिनका न था जग में कोई सानी।
कि कतरा कर निकल जाती थी जिन से मौजे-तूफ़ानी।।

अभी तक मअरका-आराई थी, मैहदूद ख़ित्ते में।
लड़ाई हो रही थी, चक्रव्यूह के ख़ास हिस्से में।।

डटा था चक्रव्यूह की राह रोके जयद्रथ अबतक!।
न हासिल कर सका था, कोई जंगी, मुनफ़अत अबतक।।

मगर कोशिश अभिमन्यु की आख़िर रास ही आयी !!।
उठाई कौरवाँ ने, चक्रव्यूह की पहली पस्पाई।।

द्रोणा, जयद्रथ और कर्ण, अश्वत भागे मैदाँ से।
दिलेराने-वग़ा मजबूर थे, तीरों के तूफ़ाँ से।।

दुर्योधन का बेटा लक्ष्मण अभिमन्यु के मुक़ाबले में

अभिमन्यु को मौक़ा मिल गया, कौरों के हटने से।
घुसा वह चक्रव्यूह में मजमाए-अग़यार छटने से।।

लड़ाई छिड़गयी थी, चक्रव्यूह की चक्र के अंदर।
अभिमन्यु यहाँ भी, सारे लड़वइयों पे था सरबर।।

कभी बढ़ कर सुफ़ूफ़े-कौरवाँ को, वह पलट देता।
कभी तेग़े-दो दम की बाढ़ पर, दुश्मन को रख लेता।।

जिधर भी टूटता था, काई जैसे लोग फटते थे।
दिलेराने-वग़ा मुँह फेरते थे, पीछे हटते थे।।

अचानक सामने देखा, तो दुर्योधन का इक बेटा।
खड़ा था अपना सीना तान कर तक़दीर का हेटा।।

अभिमन्यु ने जब उस नवजवाँ को सामने पाया।
बड़े चुभते हुए अंदाज़ में फिर उसको समझाया।।

मुहिब्बी ! परवरिश तेरी हुई है किस मोहब्बत से।
तेरे माँ बाप ने पाला है, कितने नाज़ो-नेमत से।।

मअरका-आराई = लड़ाई

मुनफ़अत = फायदामन्द

पस्पाई = पिछे हटना, हार

मजमए-अग़यार = दुश्मनो की भीड़

मुहिब्बी = प्रिये

تعجب ہے مجھے اس کمسنی میں تیری ہمت پر
ترے شوقِ وغا اور تیری اِس جسارت پر

محارب بن کے تو آیا ہے اس سن میں سرِ میداں
لڑکپن میں یہ کھیل اچھا کہاں ہوتا ہے اے ناداں

ہے اب بھی وقت، بس تو لوٹ جا ایوانِ شاہی میں
نہ ڈال اپنے کو ناحق اس ہلاکت اور تباہی میں

ابھی ہے عمر کیا تیری، ترس کھا اپنی حالت پر
اس اپنے جسمِ شیشہ تاب اور معصوم صورت پر

یہ تیرا پھول سا نازک بدن یہ عمر یہ ارماں
قدم رکھا ہے تو نے سبزۂ آغاز میں ناداں

علاوہ اسکے کیا دیکھا ہے تو نے زندگانی میں
نہ دے دعوت تو اپنی موت کو اُٹھتی جوانی میں

لکشمن موت کی آغوش میں

سُنی جب لکشمن نے اسکی باتیں جوش میں آیا
بدن میں خون کھولا سانپ کی مانند بل کھایا

کہا اُس نے ابھیمنیو، نہ جتلا فوقیت اپنی
نہ میری فکر کر تو سوچ پہلے عافیت اپنی

میں چھتری ہوں مجھے آتا ہے ٹکرانا چٹانوں سے
خراجِ راشقی آتا ہے لینا پہلوانوں سے

نہ دے طعنہ مجھے تو کمسنی کا تو بھی کمسن ہے
فقط دو چار دن کا عمر میں ہو فرق، ممکن ہے

وہ کوئی اور ہوگا جو تری دھمکی میں آئیگا
دکھا کر پشت میدانِ وغا سے بھاگ جائیگا

مجھے کائر سمجھ کر ٹالنا تیری حماقت ہے
حقیقت میں یہی تو بے وقوفی کی علامت ہے

तआज्जुब है मुझे इस कमसिनी में, तेरी हिम्मत पर।
तेरे शौक़े-वग़ा पर, और तेरी इस जसारत पर।।

मुहारिब बनके तू आया है, इस सिन में सरे-मैदाँ।
लड़कपन में यह खेल अच्छा, कहाँ होता है ऐ नादाँ।।

है अब भी वक़्त, बस तू लौट जा ऐवाने-शाही में।
न डाल अपने को नाहक़, इस हलाकत और तबाही में।।

अभी है उम्र क्या तेरी तरस खा अपनी हालत पर।
इस अपने जिस्म-ए-शीशा-ताब, और मासूम सूरत पर।।

यह तेरा फूल सा नाजुक बदन यह उम्र यह अरमाँ।
क़दम रखा है तूने सब्ज़ा-ए-आग़ाज़ में नादाँ।।

अलावा इसके क्या देखा है, तूने ज़िन्दगानी में।
न दे दावत तू अपनी मौत को, उठती जवानी में।।

लक्ष्मण मौत की आग़ोश में

सुनी जब लक्ष्मण ने इसकी बातें, जोश में आया।
बदन में खून खौला, साँप की मानिन्द बल खाया।।

कहा उस ने अभिमन्यु, न जतला फ़ौक़ियत अपनी।
न मेरी फ़िक्र कर, तू सोच पहले, आफ़ियत अपनी।।

मैं क्षत्री हूँ, मुझे आता है टकराना चटानों से।
ख़िराजे-राश्क़ी, आता है लेना पहेलवानों से।।

न दे ताना, मुझे तू कमसिनी का, तू भी कमसिन है।
फ़क़त दो चार दिन का, उम्र में हो फ़र्क़, मुम्किन है।।

वह कोई और होगा, जो तेरी धमकी में आएगा।
दिखा कर पुश्त, मैदाने-वग़ा से भाग जाएगा।।

मुझे कायर समझ कर टालना, तेरी हिमाक़त है।
हक़ीक़त में यही तो बेवक़ूफ़ी की अलामत है।।

मुहारिब = लड़ने वाला
ऐवाने-शाही = राजमहल
फ़ौक़ियत = बड़ाई
कमसिन = कम उमर

یہ سنتے ہی ابھیمنو کے فوراً چڑھ گئے تیور — چڑھایا قوس کا چلہ پھر اس نے غیظ میں آ کر

اور اسکے بعد ترکش سے نکالا تیر بے کھٹکے — وہیں سے شست باندھی اس نے فوراً دو قدم ہٹکے

کماں کو اپنی کھینچا زور دیکر پوری قوت سے — ملے دونوں سرے قوس اجل کے فرط عجلت سے

قضا کا تیر تھا فوراً کماں کو چھوڑ کر نکلا — گھسا جوشن میں پشت لکشمن کو توڑ کر نکلا

ابھیمنو کے طرز جنگ پر کوروں کو پریشانی

ابھیمنو کے طرز جنگ سے سب ویر حیراں تھے — درونہ چاریہ بھی اس گھڑی بیحد پریشاں تھے

مثال ارجن کے تھی اس نوجواں کی رزم آرائی — وہی چھب ڈھب وہی تیور وہی لڑنے میں چترائی

جو اسکے سامنے آتا وہ اپنی جان سے جاتا — قضا کا دوت پیغام اجل پرلوک سے لاتا

انھیں ضرب ابھیمنو سے لاحق تھا یہ اندیشہ — نہ کر دے ختم اک اک ویر کو اب یہ ستم پیشہ

وہاں فوراً انھوں نے سارے سرداروں کو بلوا کر — کیا اک مشورہ سنجیدگی سے غور فرما کر

کہ اس حالت میں لڑنا تو یقیناً اک حماقت ہے — اکیلا ہر بشر کے جنگ کرنے میں ہلاکت ہے

مرا تو مشورہ یہ ہے کہ ہم سب متحد ہو کر — کریں بھرپور یورش چاروں جانب سے اگر اس پر

تو ممکن ہے اسے پرلوک کی ہم راہ دکھلا دیں — اجل کی گود میں سب ویر ملکر اسکو پہنچا دیں

यह सुनते ही अभिमन्यु के फ़ौरन चढ़ गये तेवर।
चढ़ाया क़ौस का चिल्ला, फिर उस ने ग़ैज़ में आकर।।

और इसके बाद तरकश से निकाला तीर बे खटके।
वहीं से शिस्त बाँधी उसने, फ़ौरन दो क़दम हटके।।

कमाँ को अपनी खींचा, ज़ोर देकर पूरी कुव्वत से।
मिले दोनों सिरे क़ौसे-अजल के, फ़र्ते-उजलत से।।

क़ज़ा का तीर था, फ़ौरन कमाँ को छोड़ कर निकला।
घुसा जोषन में, पुश्ते-लक्ष्मण को तोड़ कर निकला।।

अभिमन्यु के तर्ज़े-जंग पर कौरवों को परेशानी

अभिमन्यु के तर्ज़े-जंग से सब वीर हैराँ थे।
द्रोणाचार्य भी उस घड़ी, बेहद परेशाँ थे।।

मिसाल अर्जुन के थी उस नवजवाँ की रज़्म आराई।
वही छब-ढब, वही तेवर, वही लड़ने में चतुराई।।

जो उसके सामने आता वह अपनी जान से जाता।
क़ज़ा का दूत, पैग़ामे-अजल परलोक से लाता।।

उन्हें ज़र्बे-अभिमन्यु से, लाहक़ था यह अन्देशा।
न कर दे ख़त्म, इक इक वीर को, अब यह सितम पेशा।।

वहाँ फ़ौरन उन्होंने सारे सरदारों को बुलवाकर।
किया इक मशविरा, संजीदगी से ग़ौर फ़रमाकर।।

कि इस हालत में लड़ना तो यक़ीनन इक हिमाक़त है।
अकेला हर बशर के जंग करने में हिलाकत है।।

मेरा तो मशविरा यह है, कि हम सब मुत्तहिद होकर।
करें भरपूर यूरिश, चारों जानिब से अगर उसपर।।

तो मुमकिन है उसे, परलोक की हम राह दिखलादें।
अजल की गोद में, सब वीर मिलकर उसको पहुँचादें।।

- तरकाश = तीर रखने का थैला
- जोषन = कवच
- तर्ज़े-जंग = जंग करने का ढंग
- मुत्तहिद = मिलकर
- अजल = मौत



ہوئے اس مشورے پر متفق جنگ آزما سارے — کئے اس ضمن میں مامور فوراً سات ہتیارے

درخشاں ہو گئے جن کی ضیا پاشی سے نظارے

یہ ساتوں نامور رن ویر یکتائے زمانہ تھے — نہ تھا انکا کوئی ثانی وہ ہر فن میں یگانہ تھے

بڑھے ہر سمت سے چرخِ وغا کے سبع سیارے — درخشاں ہو گئے جنکی ضیا پاشی سے نظارے

اکیلی جاں پر دھاوا سبعہ شیرانِ وغا کا تھا — خدنگ و قوس کی یورش کا وہ منظر بلا کا تھا

کسی جانب سے کرپا اور کسی جانب سے دریودھن — بڑھے سمتِ ابھمنیو، درونا کرن و دشاشن

لڑائی چھڑ گئی پھر چکرویوہ میں پوری شدت سے — خدنگِ آتشیں چلنے لگے ہر سمت سرعت سے

ابھیمنو کے رتھ کو کاٹ[1] ڈالا سورماؤں نے — سرِ میداں اکیلی جاں کو گھیرا تھا بلاؤں نے

غرض کوروں کے نرغے میں ابھمنیو تھا استادہ — کہ جیسے شیر پر ہوں بھیڑیے یورش پہ آمادہ

نہ جانے تن پر اپنے کھا چکا تھا زخم وہ کتنے — بہ ہر لمحہ قریب آتے رہے شیطان کے فتنے

اچانک اسکے سینہ پر لگی دوبارہ ضرب ایسی — کہ غش کھا کر ابھمنیو گرا، اور کانپ اٹھی دھرتی

مبارک باد ایسی موت پر اور ایسے جینے پر

جو مر جائے وغا میں زخم کھا کر اپنے سینے پر

[1] رتھ کو کاٹنا اس زمانے کا محاورہ ہے۔ علاوہ اس کے اس زمانے میں تیروں کے پھل تیشہ و پھرسا کے مانند بھی ہوتے تھے جن سے تلوار کی طرح سر کٹ کر گر جاتے تھے۔

हुए इस मशविरे पर मुत्तफ़िक़ जंग आज़मा सारे।
किये इस ज़िम्न में मामूर फ़ौरन, सात हत्यारे।।

दरख़्शाँ होगए जिनकी ज़िया पाशी से नज़्ज़ारे

यह सातों नामवर रणवीर यकताए-ज़माना थे।
न था उनका कोई सानी, वह हर फ़न में यगाना थे।।

बढ़े हर सम्त से चर्खे-वग़ा के सबा-सय्यारे ।
दरख़्शाँ हो गए जिनकी ज़िया पाशी से नज़्ज़ारे।।

अकेली जाँ पर धावा सबा-शेराने-वग़ा का था।
खदंगो-क़ौस की यूरिश का वह मंज़र बला का था।।

किसी जानिब से कृपा और किसी जानिब से दुर्योधन।
बढ़े सम्ते-अभिमन्यु द्रोणा, कर्ण-ओ-दुश्शाषन।।

लड़ाई छिड़ गई फिर चक्रव्यूह में पूरी शिद्दत से।
ख़दंगे-आतिशीं चलने लगे हर सम्त सुरअत से।।

अभिमन्यु के रथ को [1]काट डाला सूरमाओं ने।
सरे-मैदाँ, अकेली जाँ को घेरा था, बलाओं ने।।

ग़रज़ कौरों के नरग़े में, अभिमन्यु था इस्तादा।
कि जैसे शेर पर हों, भेड़िये यूरिश पे आमादा।।

न जाने तन पर अपने खा चुका था ज़ख्म वह कितने।
ब हर लम्हा क़रीब आते रहे शैतान के फ़ितने।।

अचानक उसके सीने पर लगी दोबारा ज़रब ऐसी।
कि ग़श खा कर अभिमन्यु गिरा, और काँप उठी धरती।।

मुबारक बाद ऐसी मौत पर और ऐसे जीने पर।
जो मर जाए वग़ा में ज़ख़्म खाकर अपने सीने पर।।

मुत्तफ़िक़ = सहमत

चर्खे-वग़ा = युद्ध में लड़ने वाले
सबा सय्यारे = सात सितारे
दरख़्शाँ = रोशन
जिया पाशी = चमक
ख़दंगो-कौस = तीर और कमान

ख़ंदगे-आतिशीं = अग्नि के बाण

नरग़ा = घेरा

१) रथ को काटना उस जमाने का महावरा है, अलावा इस के उस ज़माने में तीरों के फल तैशा व फरसाके मानिन्द भी होते थे । जिनसे तलवार की तरह, सर कटकर गिर जाते थे।

اچانک آگیا ارجن کہیں سے اپنے منڈل میں

ابھمنو کے مرجانے سے چھایا سوگ کا عالم
اچانک بچھ گئی پانڈو کے منڈل میں صفِ ماتم

سبھدرا اشک ریزی کر رہی تھی سسکیاں بھر کے
یدھشٹر اور پانڈو رو رہے تھے بین کر کر کے

یہ کیا معلوم تھا بیٹا تو رن میں مارا جائے گا
محاذِ جنگ پر کوروں کے ہاتھوں زک اٹھائیگا

اکیلا ہم تجھے جانے نہیں دیتے سرِ میداں
نہ مطلق چھوڑتے تنہا تجھے یوں بے سر و ساماں

کہیں گے اس سے آخر کیا جو ارجن ہم سے پوچھے گا
یہی ہے فکر اب کیسے مٹے گا اضطراب اُس کا

یونہی تھے محوِ گریہ پانڈواں میدانِ مقتل میں
اچانک آگیا ارجن کہیں سے اپنے منڈل میں

وہاں چاروں طرف اک سوگ کا عالم نظر آیا
اُسے اس ماتمی ماحول نے صدمہ سا پہنچایا

یدھشٹر سے مخاطب ہو کے پوچھا ماجرا کیا ہے
سبھی آزردہ ہیں آخر بتاؤ تو ہوا کیا ہے

یہاں سب ہیں ابھمنو نظر آتا نہیں مجھکو
کہاں ہے وہ بتاؤ لے چلو اسکے قریں مجھکو

یدھشٹر نے سُنائی چکرویو کی اُسکو سب باتیں
بتائیں ویر ارجن کو، نبرد و جنگ کی گھاتیں

دِگر اسکے بتائی جیدرت کی فتنہ سامانی
بیاں کی ہر قدم پر اسکی تحریکاتِ شیطانی

अचानक आ गया अर्जुन कहीं से अपने मंडल में

अभिमन्यु के मरजाने से, छाया सोग का आलम।
अचानक बिछ गई पान्डव के मंडल में सफ़े-मातम।।

सुभद्रा अश्क रेज़ी कर रही थी सिसकियाँ भर के।
युधिष्ठिर और पान्डव रो रहे थे बैन कर करके।।

यह क्या मालूम था बेटा, तू रण में मारा जाएगा।
महाज़े-जंग पर कौरों के हाथों ज़क उठाएगा।।

अकेला हम तुझे जाने नहीं देते सरे-मैदाँ।
न मुतलक़ छोड़ते तन्हा, तुझे यूँ बे-सरो-सामाँ।।

कहेंगे उस से आख़िर क्या, जो अर्जुन हम से पूछेगा।
यही है फ़िक्र, अब कैसे, मिटेगा इज़तेराब उसका।।

यूँही थे महवे-गिरयाँ, पान्डवाँ मैदाने-मक़तल में।
अचानक आगया अर्जुन कहीं से अपने मंडल में।।

वहाँ चारों तरफ़ इक सोग का आलम नज़र आया।
उसे इस मातमी माहौल ने, सदमा सा पहुँचाया।।

युधिष्ठिर से मुख़ातिब हो के पूछा माजरा क्या है।
सभी आजुर्दा हैं, आख़िर बताओ तो हुआ क्या है।।

यहाँ सब हैं अभिमन्यु नज़र आता नहीं मुझको।
कहाँ है वह बताओ, ले चलो, उसके क़रीं मुझको।।

युधिष्ठिर ने सुनाई चक्रव्यूह की उसको सब बातें।
बताईं वीर अर्जुन को नबर्दो-जंग की घातें।।

दिगर इसके बताई· जयद्रथ की फ़ितना सामानी।
बयाँ की हर क़दम पर उसकी, तहरीकाते-शैतानी।।

अशक-रेज़ी = आँसू बहाना

इज़तेराब = बेचैनी

महवे-गिरयाँ = रोने में मशग़ूल

आजुर्दा = दुखी

क़रीं = पास



ارجن کی پرتگیا

سنی ارجن نے یوں تو ضبط سے یہ داستاں ساری — مگر پیشِ نظر جب جیدرت کی آئی ہشاری
ہوا یکلخت برہم جیدرت کی اس رکاوٹ پر — کہ پانڈو کو نہ جو گھسنے دیا تھا چکر کے اندر
فقط اس جبر پر ارجن نے کافی مشتعل ہو کر — یہ کی پرتگیا کل ہی اسے سنگرام کے اندر
غروبِ مہر سے پہلے میں اس ظالم کو ماروں گا — وغا میں جیدرت کو کل فنا کے گھاٹ اتاروں گا
غروبِ مہر سے پہلے اگر اس بانیٔ شر کو — محاذِ جنگ پر میں نے نہ کل مارا ستمگر کو
تو میں لاریب اسکے بعد اپنی جان دیدوں گا — چتا میں بیٹھ کر خود اپنے تن کو بھسم کر لوں گا
ہوئی پرتگیا ارجن کی فوراً مشتہر ہر سو! — فضا میں پرفشاں ہو جائے جیسے مشک کی خوشبو

اسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جانے پر

وہی تھا دوسرے دن بھی محاذِ جنگ کا عالم — وہی تھا ولولہ دل میں وہی تھا عزم مستحکم
تلاشِ جیدرت میں صبح سے ارجن پریشاں تھا — مگر ارجن کا اس کو ڈھونڈنا کب کارِ آساں تھا
وہ چونکہ آج تھا رن میں درونہ کی حفاظت میں — ہزاروں ویر حفظِ ماتقدم تھے معیت میں

अर्जुन की प्रतिज्ञा

सुनी अर्जुन ने यूँ तो, ज़ब्त से यह दास्ताँ सारी।
मगर पेशे-नज़र जब जयद्रथ की आई हुशयारी।।

हुआ यकलख़्त बरहम जयद्रथ की उस रुकावट पर।
कि पान्डव को न जो घुसने दिया था चक्र के अंदर ।।

फ़क़त इस जब्र पर अर्जुन ने काफ़ी मुशतइल होकर।
यह की प्रतिज्ञा, कल ही उसे संग्राम के अन्दर।।

गुरूबे-महर से पहले मैं उस ज़ालिम को मारूँगा।
वग़ा में जयद्रथ को कल, फ़ना के घाट उतारूँगा।।

गुरूबे-महर से पहले अगर इस बानी-ए-शर को।
महाज़े-जंग पर मैं ने, न कल मारा सितमगर को।।

तो मैं लारैब, उसके बाद अपनी जान दे दूँग़ा।
चिता में बैठ कर, खुद अपने तन को भस्म करलूँगा।।

हुई प्रतिज्ञा अर्जुन की फ़ौरन मुश्तहर हर सू !।
फ़ज़ा में परफ़िशाँ हो जाए जैसे मुश्क की खुश्बू।।

उसे हैरत हुई सूरज के फ़ौरन डूब जाने पर

वही था दूसरे दिन भी महाज़े-जंग का आलम।
वही था वलवला दिल में, वही था अज़्मे-मुस्तहकम।।

तलाशे-जयद्रथ में, सुबह से अर्जुन परेशाँ था।
मगर अर्जुन का उस को ढूँडना, कब कारे-आसाँ था।।

वह चूंकि आज था रण में द्रोणा की हिफ़ाज़त में।
हज़ारों वीर, हिफ़ज़े-मा-तक़द्दुम थे मईयत में।।

ज़ब्त = धैर्य

गुरूबे-महर = सूरज डूबना

लारैब = बेशक

कारे-आसाँ = आसान काम

हिफ़ज़ेमा तक़द्दुम = पहले से एहतियात करना

मईयत = साथ



نہ پایا صبح از تا شام ارجن نے سراغ اُسکا
اُسی اک وجہ سے تھا مشتعل دل اور دماغ اُسکا

نہایت بے جگر ہو کر جھپٹتا تھا وہ دشمن پر
جو آتا سامنے باقی نہ رہتا اُسکا سر، تن پر

کبھی اگنی کی بارش اپنے بانوں سے وہ برساتا
کبھی آندھی کبھی طوفان کا نظارہ دکھلاتا

اِسی انداز سے لڑتا رہا دن بھر وہ دشمن سے
مگر حسرت جو تھی لپٹی رہی ارجن کے دامن سے

اِسی اُمید میں آخر قریبِ وقتِ شام آیا
نہ ابتک جیدرت کو وہ ٹھکانے سے لگا پایا

یکایک دیکھتا کیا ہے اندھیرا ہو گیا ہر سُو
غروبِ مہر پر ارجن نہ دل پر رکھ سکا قابو

اسے حیرت ہوئی سورج کے فوراً ڈوب جانے پر
کرے تنقید کیا کوئی خدا کے کارخانے پر

ارجن چِتا کی سمت

غروبِ مہر پر، پرتگیا کے پورا کرنے کا
تقاضہ سب کا ارجن سے ہوا پھر جل کے مرنے کا

مطابق شرط کے ارجن نظر آتا تھا آمادہ
بہ مجبوری چِتا میں بھسم ہونے پر تھا اِستادہ

یہ منظر دیکھنے کو جمع تھے سب دوست اور دشمن
درونہ، جیدرتھ، کرپا، شری گھنشیام، دُشاشن

علاوہ ان کے حاضر تھے وہاں کافی تماشائی
چِتا کو دیکھنے ہر سمت سے خلقت اُمنڈ آئی

پھر اُسکے بعد ارجن نے شری گھنشیام کو دیکھا
نظر بھر کر بہ حسرت پیکرِ کرام کو دیکھا

न पाया सुबह अज़-ता शाम अर्जुन ने सुराग़ उसका।
उसी इक वजह से था मुश्तईल दिल और दिमाग़ उसका।।

निहायत बे जिगर होकर झपटता था वह दुश्मन पर।
जो आता सामने बाक़ी न रहता उसका सर, तन पर।।

कभी अग्नि की बारिश अपने बाणों से वह बरसाता।
कभी आँधी कभी तूफ़ान का नज़्ज़ारा दिखलाता।।

इसी अन्दाज़ से लड़ता रहा दिन भर वह दुश्मन से।
मगर हसरत जो थी लिपटी रही अर्जुन के दामन से।।

इसी उम्मीद में आख़िर क़रीबे-वक़्ते-शाम आया।
न अबतक जयद्रथ को वह ठिकानेसे लगा पाया।।

यकायक देखता क्या है अंधेरा हो गया हर सू।
गुरूबे-महर पर अर्जुन, न दिल पर रख सका क़ाबू।।

उसे हैरत हुई सूरज के फ़ौरन डूब जाने पर।
करे तनक़ीद क्या कोई खुदा के कारख़ाने पर।।

अर्जुन चिता की सम्त

गुरूबे-महर पर प्रतिज्ञा के पूरा करने का।
तक़ाज़ा सब का अर्जुन से हुआ, फिर जल के मरने का।।

मुताबिक़ शर्त के अर्जुन नज़र आता था आमादा।
ब मजबूरी चिता में, भस्म होने पर था इस्तादा।।

यह मंज़र देखने को जमा थे, सब दोस्त और दुश्मन।
द्रोणा, जयद्रथ, कृपा, श्री घनश्याम, दुश्शाषन।।

अलावा उन के हाज़िर थे वहाँ काफ़ी तमाशाई।
चिता को देखने हर सम्त से ख़िलक़त उमड़ आई।।

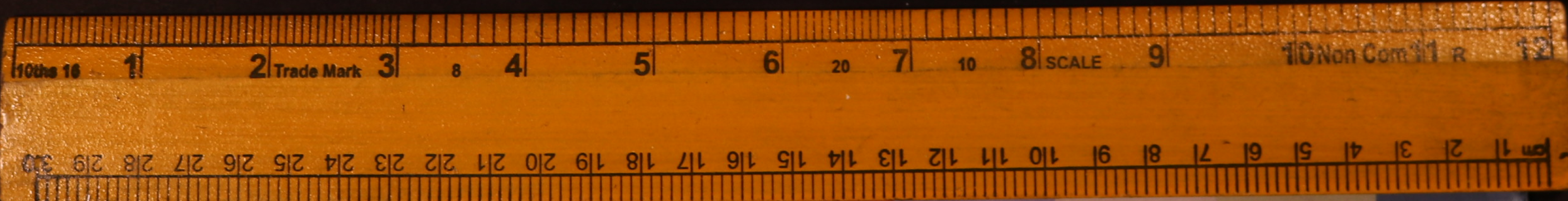
फिर उसके बाद अर्जुन ने श्री घनश्याम को देखा।
नज़र भर कर ब हसरत, पैकरे-कर्राम को देखा।।

मुश्तईल = बिफरा हुवा

तनक़ीद = आलोचना

ख़िलकत = जनता

पैकर-कर्राम = बड़ा दयालू



اور اپنا تیر کمٹھا رکھ دیا حسرت سے دھرتی پر — کہ پالن کر سکے پرتگیا کا وہ چتا لے کر

مگر ارجن کو فوراً بڑھ کے مرلی شیام نے روکا — کمان اور بان کو یوں چھوڑ دینے پر اسے ٹوکا

کہ جو رن ویر ہوتا ہے سلاح و حربہ اور سب استر[1] — بوقت مرگ رکھتا ہے وہ اپنے ساتھ اپنا شستر[2]

بتا اب کس لئے تیر و کماں کو چھوڑتا ہے تو — قضا کے روبرو ہتھیار سے منہ موڑتا ہے تو

اٹھا لے تیر اور کمٹھا چتا میں جل کے تو مر جا — ادائے شرط کی خاطر یہ اتنا کام بھی کر جا

شری کرشن کا کرشمہ اور جیدرت کا حشر

سنا ارشاد ارجن نے شری گھنشیام کا جس دم — اٹھایا تیر کمٹھا دوڑ کر اور ہو گیا خرم

نظر آئی اسے اسمیں بھی حکمت اپنے محسن کی — کہ خالی مصلحت سے تھی نہ مطلق گفتگو جن کی

اسی انداز کی خوش فہمیوں میں مبتلا ہو کر — چتا کی سمت پھر آگے بڑھا ارجن بہ کر و فر!

جونہی پہنچا چتا کے سامنے وہ جل کے مرنے کو — شری گھنشیام نے فوراً کہا اسکو ٹھہرنے کو

نہ کر عجلت، ٹھہر ارجن کہاں ڈوبا بھلا سورج — سودرشن چکر کے سائے کے پیچھے ہے چھپا سورج

یہ سنتے ہی فضا میں چھا گیا عالم تحیر کا — سمجھ پایا نہ منشا کوئی بھی اس کے تدبر کا

شری گھنشیام نے کایا سے اپنی چکر سرکا کر — کہا یہ ویر ارجن سے کرشمہ اپنا دکھلا کر

[1] استر، وہ ہتھیار جو دشمن پر دور سے چلایا جیسے تیر وغیرہ۔ [2] شستر، یہ وہ ہتھیار جس سے قریب سے وار کیا جائے جیسے تلوار خنجر وغیرہ

और अपना तीर कम्ठा, रख दिया हसरत से धरती पर।
कि पालन कर सके प्रतिज्ञा का, वह चिता लेकर !।।

मगर अर्जुन को फ़ौरन, बढ़ के मुरली श्याम ने रोका।
कमान और बाण को यूँ, छोड़ देने पर उसे टोका।।

कि जो रणवीर होता है, सलाह-ओ-हरबा और सब [1]अस्त्र।
ब वक़्ते-मर्ग रखता है, वह अपने साथ अपना [2]शस्त्र।।

बता अब किस लिए, तीरो-कमाँ को छोड़ता है तू।
क़ज़ा के रूबरू, हथियार से मुँह मोड़ता है तू।।

उठा ले तीर और कम्ठा चिता में जल के तू मरजा।
अदाए-शर्त की ख़ातिर, यह इतना काम भी कर जा।।

बवक़्ते मृग = मृत्यु का समय

श्री कृष्ण का करिश्मा
और जयद्रथ का हश्र

सुना इरशाद अर्जुन ने, श्री घनश्याम का जिस दम ।
उठाया तीर कम्ठा दौड़ कर और हो गया खुर्रम।।

इरशाद = कोई बात कहना
खुर्रम = खुश

नज़र आई उसे, इस में भी हिकमत, अपने मोहसिन की।
कि ख़ाली मसलेहत से थी, न मुतलक़ गुफ़्तगू जिन की।।

इसी अंदाज़ की खुश-फ़हमियों में मुबतेला होकर।
चिता की सम्त फिर आगे बढ़ा अर्जुन ब कर्रोफ़र।।

जूँही पहुँचा चिता के सामने, वह जल के मरने को।
श्री घनश्याम ने फ़ौरन कहा, उसको ठहरने को।।

न कर उजलत, ठहर अर्जुन कहाँ डूबा भला सूरज।
सुदर्शन चक्र के साए के पीछे है छिपा सूरज।।

यह सुनते ही फ़ज़ा में छा गया आलम तहय्युर का।
समझ पाया न मंशा कोई भी उसके तदब्बुर का।।

तहय्युर = हैरत
तदब्बुर = अक़्लमंदी

श्री घनश्याम ने काया से अपनी चक्र सरकाकर।
कहा यह वीर अर्जुन से करिश्मा अपना दिखलाकर।।

१) अस्त्र वह हथियार, जो दुश्मन पर दुर से चलाया जाता है, जैसे तीर वगैरा।
२) शस्त्र वह हथियार, जिस से करीब से वार किया जाए, जैसे तलवार ख़ंजर वगैरा।

کہ ارجن دیکھ سورج ہے اُدھر آکاش پر روشن
ادھر یہ جیدرتھ ہے سامنے جو ہے ترا دشمن

اٹھا تیر و کماں کیا دیکھتا ہے سر قلم کر دے
تنِ ناپاک سے مغرور سر کا بار کم کر دے

یہ سنتے ہی اچانک کھنچ گیا چِلّہ کمانی کا
ہوا پھر جوش زن رگ رگ میں خوں اسکی جوانی کا

خدنگِ آہنی فوراً کماں سے جوڑ کر اُس نے
نشانہ لیکے دیکھا شیام کو رُخ موڑ کر اُس نے

اشارہ پاتے ہی کھینچا کماں کو پوری قوت سے
قضا کا تیر جھپٹا جیدرتھ کی سمت سُرعت سے

خدنگِ آہنی[1] نے اسکے تن سے یوں اُڑایا سر
گِرا سر اس کا اپنے باپ کی آغوش میں جاکر

درونہ چاریہ پر بے لاگ تبصرہ

درونہ چاریہ اُس دور میں اک مردِ عاقل تھے
معلّم تھے، مدبّر تھے، بڑے زیرک تھے قابل تھے

فنونِ جنگ کے ماہر تھے اور استاد تھے سب کے
فنِ جنگ و جدل سیکھا تھا جن سے کوروں پانڈوں نے

علاوہ اِسکے اُن سے دوسرے بھی فیض پاتے تھے
پئے تعظیم خدمت میں ادب سے سر جھکاتے تھے

مگر یہ بھی عجب ہے خاصہ انساں کی فطرت کا
کہ انساں کتنا ہی مالک ہو عزت اور بصیرت کا

عمل کا اسکے کوئی سُست پہلو ایسا ہوتا ہے
کہ جس سے آدمیت کا وقار افسردہ ہوتا ہے

درونہ چاریہ بھی ایک انساں تھے بہرصورت
نظر انداز کی جا سکتی ہے اِس شکل میں تہمت

[1] اُس زمانے میں تیروں کے پھل تیشہ کے مانند بھی ہوتے تھے۔

कि अर्जुन देख सूरज है, उधर आकाश पर रौशन।
इधर यह जयद्रथ है सामने, जो है तेरा दुश्मन।।

उठा तीरो-कमाँ क्या देखता है, सर क़लम कर दे।
तने-नापाक से, मग़रूर सर का, बार कम कर दे।।

यह सुनते ही अचानक, खिंच गया चिल्ला कमानी का।
हुआ फिर जोश-ज़न, रग रग में खूँ, उसकी जवानी का।।

ख़दंगे-आहनी फ़ौरन, कमाँ से जोड़ कर उसने।
निशाना लेके देखा, श्याम को रुख़ मोड़ कर उसने।।

इशारा पाते ही खींचा, कमाँ को पूरी कुव्वत से।
क़ज़ा का तीर झपटा, जयद्रथ की सम्त सुरअत से।।

ख़दंगे-आहनी ने, उसके तन से यूँ उड़ाया सर।
गिरा सर उसका, अपने बाप की आग़ोश में जाकर।।

बार = बोझ

ख़दंगे-आहनी = फ़ौलादी तीर

द्रोणाचार्य पर बे लाग तबसेरा

द्रोणाचार्य उस दौर में, इक मर्दे-आक़िल थे।
मुअल्लिम थे, मुदब्बिर थे, बड़े ज़ीरक थे, क़ाबिल थे।।

फ़नूने-जंग के माहिर थे, और उस्ताद थे सब के।
फ़ने-जंग-ओ-जदल, सीखा था जिन से, कौरों पांडव ने।।

अलावा इसके उन से दूसरे भी फ़ैज़ पाते थे।
पै-ताज़ीम ख़िदमत में, अदब से सर झुकाते थे।।

मगर यह भी अजब है ख़ास्सा इन्साँ की फ़ितरत का।
कि इन्साँ कितना ही मालिक हो, इज़्ज़त और बसीरत का।।

अमल का उसके कोई सुस्त पहलू ऐसा होता है।
कि जिस से आदमियत का विक़ार अफ़सुर्दा होता है।।

द्रोणाचार्य भी एक इन्साँ थे बहर-सूरत ।
नज़र-अंदाज़ की जा सकती है, इस शक्ल में तोहमत।।

आकिल = बुद्धिमान
मुअल्लिम = गुरू
मुदब्बिर = तदबीर-करने वाला

फ़ैज़ = लाभ

विकार = विभूति, स्थिरता

१) उस ज़माने में तीरों के फल तेशा के मानिन्द भी होते थे।

حقیقت پوچھئے تو ان کو حق کا ساتھ دینا تھا — یہی انصاف تھا باطل سے رُخ کو موڑ لینا تھا
مگر ان پر اثر کافی تھا کوروں کی حکومت کا — اسی اک وجہ سے بھرتے تھے دم انکی حمایت کا
اِدھر پانڈو کی قسمت میں لکھی تھی خواری و ذلّت — درونہ کی نظر میں اسلئے انکی نہ تھی وقعت
اگر پانڈو جوئے میں سلطنت اپنی نہیں کھوتے — درونہ بھی انھیں کے حاشیہ داروں میں پھر ہوتے
یہی چھوٹی سی لغزش یوں نہ گیرائی کے قابل ہے — مگر تاریخ سازوں کے لئے یہ سمِّ قاتل ہے
علاوہ اسکے ہے دستورِ قدرت محکم و اظہر — ہمیشہ حق رہا کرتا ہے غالب اہلِ باطل پر
اِسی قانونِ قدرت کے مطابق فیصلہ رَن میں — درونہ چاریہ کا ہو گیا تھا روزِ روشن میں

درونہ کا ہر اک حربہ جگر کے پار ہوتا تھا

محاذِ جنگ میں تھا فیصلہ جس دن درونہ کا — بہت ہی شدّ و مد سے جنگ کا طوفان برپا تھا
درونہ چاریہ تھے اک عظیم المرتبت انساں — خبر تھی انکو، دشمن میں ہے کتنا عزم اور ایقاں
یہ سب شاگرد تھے جو رزم آرائی پہ مائل تھے — سکھایا تھا جنھیں لڑنا وہ آج انکے مقابل تھے
مگر استاد پھر استاد ہی ہوتا ہے کیا کہیئے — گرو کے آگے کیا چیلوں کی وقعت ہے بھلا کہیئے
عجب تیور عجب انداز سے ہر وار ہوتا تھا — درونہ کا ہر اک حربہ جگر کے پار ہوتا تھا

؏ زہر

हकीक़त पूछिए तो उनको, हक़ का साथ देना था।
यही इन्साफ़ था, बातिल से रुख़ को मोड़ लेना था।।

मगर उन पर असर काफ़ी था, कौरों की हुकूमत का।
इसी इक वजह से भरते थे दम, उनकी हिमायत का।।

इधर पान्डव की क़िस्मत में, लिखी थी ख़्वारी-ओ-ज़िल्लत।
द्रोणा की नज़र में इसलिए उनकी न थी वक़अत।।

अगर पान्डव जुए में सलतनत अपनी नहीं खोते।
द्रोणा भी उन्हीं के, हाशिया-दारों में फिर होते।।

यही छोटी सी लग़ज़िश, यूँ न गीराई के क़ाबिल है।
मगर तारीख़ साज़ों के लिए, यह सम्मे-क़ातिल है।।

अलावा इसके है दस्तूरे-कुदरत, मुहकमो-अज़हर।
हमेशा हक़ रहा करता है ग़ालिब, अहले-बातिल पर।।

इसी क़ानूने-कुदरत के मुताबिक़, फ़ैसला रण में।
द्रोणाचार्य का हो गया था, रोज़े-रौशन में।।

ख़्वारी व ज़िल्लत = अपमान

लग़ज़िश = ग़लती
सम = ज़हर

मुहकमो-अज़हर = शक्तिशाली और खुला हुआ

द्रोणा का हर इक हरबा जिगर के पार होता था

महाज़े-जंग में था फ़ैसला, जिस दिन द्रोणा का।
बहुत ही शद्दोमद से, जंग का तूफ़ान बरपा था।।

द्रोणाचार्य थे इक, अज़ीम-उल-मरतबत इन्साँ।
ख़बर थी उनको, दुश्मन में है कितना, अज़्म और ईक़ाँ।

यह सब शागिर्द थे, जो रज़्मे-आराई पे माइल थे।
सिखाया था जिन्हे लड़ना, वह आज उनके मुक़ाबिल थे।।

मगर उस्ताद फिर उस्ताद ही होता है क्या कहिये।
गुरू के आगे क्या चेलों की, वक़अत है भला कहिये।।

अजब तेवर, अजब अंदाज़ से हर वार होता था।
द्रोणा का हर इक हरबा, जिगर के पार होता था।।

ईक़ाँ = यक़ीन
अज़ीम-उल-मरतबत = बड़े रुतबे वाला

بڑی خود اعتمادی سے نبرد آرا تھے میداں میں
نمایاں شخصیت تھی ان کی آتش خیز طوفاں میں

صفوں پر صف اُلٹتے جارہے تھے آپ بڑھ بڑھکر
لگا تھا ہر طرف کُشتوں کا اک انبار دھرتی پر

کماں جس سمت بھی اُٹھتی اُدھر کہرام مچ جاتا
محاذِ جنگ اک محشر کی صورت میں نظر آتا

غرض دادِ شجاعت دے رہے تھے آج بڑھ بڑھکر
بلا کا خوف طاری ہو چکا تھا فوجِ پانڈو پر

غمِ فرزند سے دل پر نہ اپنے رکھ سکے قابو

کرشنا جی نے جب دیکھے درونہ کے یہ نظارے
انہیں بھی روزِ روشن میں نظر آنے لگے تارے

بہت فکر و تردد میں پڑے تھے شیام بنواری
اِدھر فوجِ یدھشٹر پر تھا انکا خوف اک طاری!!

اچانک اُن کو اشوتؔ بن درونہ کا خیال آیا
تو فوراً چھل کپٹ کا اک نرالا جال پھیلایا

وہاں موجود تھا اُس نام کا اک فیلِ زنگی بھی
مُرتب کی بسُرعت پھر وہیں تجویز اک ایسی

کہ پہلے گھیر کر ہاتھی کو تنہائی میں لے آئیں
پھر اسکے بعد گرز و تیر ہر جانب سے برسائیں

مریگا فیل، لیکن شور اشوتؔ کا مچائیں گے
کہ اشوت کی خبر سُنکر درونہ دھوکا کھائیں گے

یہ منصوبہ پھر اس کے بعد عملی شکل میں آیا
درونہ نے فریب آخر اسُی اک وجہ سے کھایا

لگائی مرگِ اشوت کی خبر نے ضرب اک کاری
یکایک ایک سکتہ سا درونہ پر ہُوا طاری

ا؎ اشوت تھامہ ابن درونہ چاریہ

बड़ी खुद एतमादी से नबर्द-आरा थे मैदाँ में।
नुमायाँ शख़्सियत थी, उनकी, आतिश खेज़ तूफ़ाँ में।।

सफ़ों पर सफ़ उलटते जारहे थे आप बढ़-बढ़कर।
लगा था हर तरफ़, कश्तों का इक, अंबार धरती पर।।

कमाँ जिस सम्त भी उठती, उधर कोहराम मच जाता।
महाज़े-जंग इक महशर की सूरत में नज़र आता।।

ग़रज़ दादे-शुजाअत दे रहे थे आज बढ़-बढ़कर।
बला का ख़ौफ़ तारी हो चुका था फ़ौजे-पांडव पर।।

ग़मे-फ़रज़न्द से दिल पर न अपने रख सके क़ाबू

कृष्णा जी ने जब देखे, द्रोणा के यह नज़्ज़ारे।
उन्हें भी रोज़े-रौशन में, नज़र आने लगे तारे।।

बहुत फ़िक्रो-तरद्दुद में, पड़े थे श्याम बनवारी।
इधर फ़ौजे-युधिष्ठिर पर, था उनका ख़ौफ़ इक तारी।।

अचानक उन को, [1]अश्वत बिन द्रोणा का ख़याल आया।
तो फ़ौरन छल कपट का, इक निराला जाल फैलाया।।

वहाँ मौजूद था उस नाम का इक, फ़ीले-ज़ंगी भी।
मुरत्तब की ब सुरअत, फिर वहीं तजवीज़ इक ऐसी।।

कि पहले घेर कर हाथी को, तनहाई में ले आएँ।
फिर इसके बाद गुर्ज़ो-तीर, हर जानिब से बरसाएँ।।

मरेगा फ़ील, लेकिन शोर, अश्वत का मचायेंगे।
कि अश्वत की ख़बर सुनकर, द्रोणा धोका खायेंगे।।

यह मनसूबा फिर इसके बाद, ऐनी शक्ल में आया।
द्रोणा ने फ़रेब आख़िर, इसी इक वजह से खाया।।

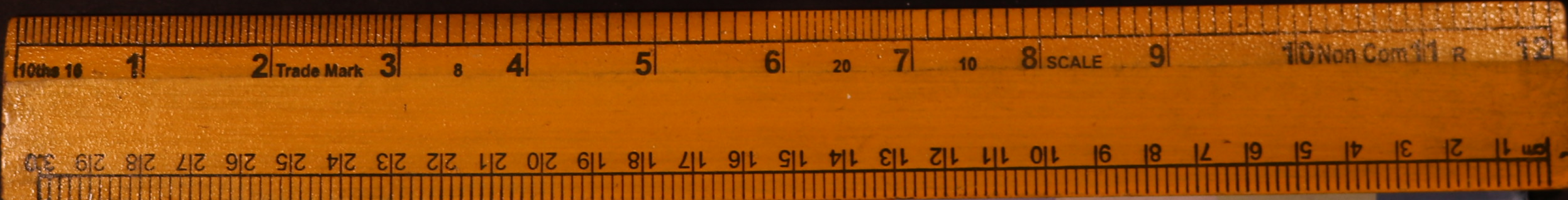
लगाई मृर्गे-अश्वत की ख़बर ने, ज़र्ब इक कारी।
यकायक एक सकता सा, द्रोणा पर हुआ तारी।।

कश्तों = लाशों

फ़ीले-ज़ंगी = काला हाथी

मृग = मौत

१) अश्वत्थामा इब्न द्रोणाचार्य



جونہی سکتہ ہوا طاری اچانک رُک گئے بازو
غمِ فرزند سے دل پر نہ اپنے رکھ سکے قابو

مگر ان کو یقیں آتا نہ تھا بیٹے کے مرنے کا
گماں باقی رہا اشوت کے دُنیا سے گزرنے کا

یدھشٹر کی دروغ گوئی

اسی کارن درونہ نے یدھشٹر کو طلب کر کے
خبر بیٹے کی جب پوچھی تو دل بھر آیا رِقّت سے

یدھشٹر سچ بتا متھیا سے تو، تو دور رہتا ہے
جو سچی بات ہوتی ہے وہی بر وقت کہتا ہے

بتا مجھ کو مرا فرزند کیا مارا گیا رَن میں
مرے نورِ نظر کی روح کیا باقی نہیں تن میں

یدھشٹر گومگو میں پڑ گیا اس بات کو سُنکر
کہ آخر دے درونہ چاریہ کو کون سا اُتر

ضمیر اس بات پر راضی نہ تھا کہ جھوٹ وہ بولے
خود اپنے ہاتھ زہرِ کذب جامِ زیست میں گھولے

مگر حالاتِ گردوپیش سے مجبور سا ہو کر
جواب آخر دیا مبہم سا پتھر رکھ کے سینے پر

کہ معنی جسکے اشوت ہی کے مرنے کے نکلتے تھے
یقیناً دارِ فانی سے گذرنے کے نکلتے تھے

نہایت سنگ دل بیگانۂ دردِ محبّت ہیں

درونہ کو ہوا بیٹے کے مرنے کا یقیں جس دم
مزاجی کیفیّت غیظ و غضب سے ہو گئی برہم

जुँही सकता हुआ तारी, अचानक रुक गए बाज़ू।
ग़मे-फ़रज़न्द से दिल पर, न अपने रख सके क़ाबू।।

मगर उन को यक़ीं आता न था बेटे के मरने का।
गुमॉं बाक़ी रहा अश्वत के, दुनिया से गुज़रने का।।

युधिष्ठिर की दरोग़ गोई

इसी कारण द्रोणा ने, युधिष्ठिर को तलब करके।
ख़बर बेटे की जब पूछी, तो दिल भर आया रिक़्क़त से।।

युधिष्ठिर सच बता मिथ्या से तू तो दूर रहता है।
जो सच्ची बात होती है, वही बर वक़्त कहता है।।

बता मुझ को मेरा फ़रज़न्द क्या मारा गया रण में।
मेरे नूरे-नज़र की रूह, क्या बाक़ी नहीं तन में।।

युधिष्ठिर गोमगो में पड़ गया, इस बात को सुनकर।
कि आख़िर दे द्रोणाचार्य को, कौन सा उत्तर।।

ज़मीर इसबात पर राज़ी न था, कि झूट वह बोले।
खुद अपने हाथ, ज़हरे-किज़्ब, जामे-ज़ीस्त में घोले।।

मगर हालाते-गिर्दो-पेश, से मजबूर सा होकर।
जवाब आख़िर दिया मुबहम सा, पत्थर रख के सीने पर।।

कि माना जिसके, अश्वत ही के, मरने के निकलते थे।
यक़ीनन दारे-फ़ानी से गुज़रने के निकलते थे।।

निहायत संग दिल बेगाना-ए-दर्दे-मुहब्बत हैं

द्रोणा को हुआ बेटे के मरने का यक़ीं जिस दम ।
मिज़ाजी कैफ़ियत, ग़ैज़ो-ग़ज़ब से, हो गई बरहम।।

दरोग़ गोई = झूट बोलना

रिक़्क़त = सदमे

मिथ्या = झूट

गोमगो = कहूं या ना कहूं

ज़मीर = आत्मा

ज़हरे-किज़्ब = झूट का ज़हर

जामे-ज़ीस्त = जीवन का प्याला

मुबहम = साफ़ बात न कहना

दारेफ़ानी = ख़त्म हो जाने वाली दुनिया

نہایت جوش میں وہ پل پڑے تیر و کماں لیکر — قیامت بن کے ٹوٹے ناگہاں پانڈو کے لشکر پر

جدھر بڑھتے اُدھر لاشوں کا اک انبار لگ جاتا — وغا کی سرزمیں پر حشر کا نقشہ نظر آتا

درونہ چاریہ کا بھیم نے دیکھا جو یہ عالم — پکارا اے گرو، اے کارزارِ جنگ کے ضیغم

جہاں میں مرگِ نور العین کے غم سے کہیں بڑھکر — بتاؤ اور ہے غم، عالمِ ناسوت کے اندر؟

مگر اک آپ ہیں جو بے نیازِ مرگِ اشوت ہیں — نہایت سنگ دل بیگانۂ دردِ محبت ہیں

برہمن ہیں مگر انداز ہیں پیکار کے ایسے — کہ بن میں راکشش اک برسرِ پیکار ہو جیسے

مثالِ ضیغمِ خونخوار ہے بس آپ کی حالت — اسی اک وجہ سے ہم بھیجتے ہیں آپ پر لعنت

درونہ چاریہ کا یوگ آسن اور سفرِ آخرت

درونہ چاریہ نے بھیم کی باتیں سُنیں جس دم — بدل کر رہ گیا غیظ و غضب اور جوش کا عالم

بالآخر صاحبِ سیف و قلم نے ہاتھ کو روکا — نبرد و جنگ کی تحریک کی ہر بات کو روکا

اُتارا پھر سلاحِ جنگ اپنے آہنی تن سے — ہوا خالی بدن اُن کا جھلم سے اور جوشن سے

پڑے تھے تیر و ترکش اور کماں سب رن کی دھرتی پر — کہیں تیغ و سپر بھالے کہیں جوشن کہیں مغفر

وہ خود کو تیاگ دینے کے لئے فوراً سرِ میداں — لگا بیٹھے سمادھی پرتھوی پر صاحبِ فرزاں

निहायत जोश में वह पिल पड़े तीरो-कमाँ लेकर।
क़यामत बनके टूटे ना-गहाँ पान्डव के लष्कर पर।।

जिधर बढ़ते उधर लाशों का इक अंबार लग जाता।
वग़ा की सर ज़मी पर हश्र का नक़्शा नज़र आता।।

द्रोणाचार्य का भीम ने देखा, जो यह आलम।
पुकारा ऐ गुरू, ऐ कारज़ारे-जंग के जैग़म।।

जहाँ में मृगे-नूरूल-अैन के ग़म से कहीं बढ़कर।
बताओ और है ग़म, आलमे-नासूत के अंदर ? ।।

मगर इक आप हैं जो बे नियाज़े-मृगे-अश्वत हैं।
निहायत संग दिल, बेगाना-ए-दर्दे-मुहब्बत हैं।।

ब्राह्मण हैं मगर अंदाज़ हैं, पैकार के ऐसे।
कि बन में राक्षश, इक बरसरे-पैकार हो जैसे।।

मिसाले-ज़ैग़मे-खूँख़्वार है, बस आप की हालत।
इसी इक वजह से, हम भेजते हैं आप पर लानत।।

द्रोणाचार्य का योग आसन और सफ़रे-आख़िरत

द्रोणाचार्य ने भीम की बातें सुनी जिस दम।
बदल कर रह गया ग़ैज़ो-ग़ज़ब और जोश का आलम।।

बिलआख़िर साहबे-सैफ़ो-क़लम ने हाथ, को रोका।
नबर्दो-जंग की तहरीक की, हर बात को रोका।।

उतारा फिर सलाहे-जंग अपने आहनी तन से।
हुआ ख़ाली बदन उन का झिलम से और जोषन से।।

पड़े थे तीर-ओ-तरकश और कमाँ सब रण की धरती पर।
कहीं तेग़ो-सिपर भाले, कहीं जोषण कहीं मिग़फ़र।।

वह खुद को त्याग देने के लिए फ़ौरन सरे-मैदाँ।
लगा बैठे समाधी, पृथ्वी पर साहबे-फ़रजाँ।।

ना-गहाँ = अचानक

कारज़ारे-जंग के जैगम = रणक्षेत्र के सबसे बड़े शेर
नूरूल-अैन = आंखों की रौशनी यानी पुत्र
आलमे-नासूत = दुनिया के अंदर

साहबे-सैफ़ो-क़लम = क़लम और तलवार का धनी

मिग़फ़र = लोहे की टोपी
जोषन = जिरह, लोहे का लिबास

جھکا کر سیس آنکھیں بند کرلیں، ہاتھ کو جوڑا
لگا کر یوگ آسن، مُنہ کو فانی لوک سے موڑا

درونہ کا یہ عالم دیکھ کر پنچال کا بیٹا
بڑھا تلوار لیکر ہاتھ میں، تقدیر کا ہیٹا

گرو سے دو قدم کے فاصلے پر رُک گیا جا کر
کیا سیفِ قضا کو تول کر، اک وار پھر اُن پر

فقط اک وار میں سر اُڑ گیا استادِ دوراں کا
مہیا ہو گیا ساماں علاجِ دردِ پنہاں کا

درونہ چاریہ کے فرزند اشوت تھاما کی سخت کلامی

خبر مرگِ درونہ کی سُنی جس وقت اشوت نے
لیا اک موڑ سینے میں بطرزِ نو شجاعت نے

کہا اُس نے یہ پانڈو سے کہ تم سب ہو بڑے کمتر
درونہ کو ہے مارا میرے مرنے کی خبر دیکر

اب اُنکے بعد جینا میرا مرنے کے برابر ہے
یہ ہتیا اک قیامت کے گزرنے کے برابر ہے

مگر اک بات تو مجھ کو بتا اے دھرم کے رکشک
یہی ست[1] ہے تو بولیں کسکو متھیا[2] اور کسے پاتک[3]

دکھایا خوب سچائی کا منظر کم نظر تُو نے
دیا اچھا صلہ اپنے گرو کو مار کر تو نے

بتا اے لالچی، ہے کتنے دن کا راج اور شاسن؟
بتا اے دھرم کے بیٹے یہی ہے دھرم کا پالن؟

حیا کا نام لے کر بے حیائی تُو نے دکھلائی
گرو سے چھل، ارے ظالم، تجھے غیرت نہیں آئی

ترے اس پاپ سے اے دھرم ست[4] اے بیحیا خود سر
لگی ہے دیکھ کالک چھتریوں کے آج چہروں پر

[1] سچائی [2] جھوٹ [3] گناہ، عصیاں۔ [4] دھرم کے بیٹے

झुका कर शीश , आँखें बंद करलीं, हाथ को जोड़ा।
लगा कर योग आसन, मुँह को फ़ानी लोक से मोड़ा।।

द्रोणा का यह आलम देख कर, पंचाल का बेटा।
बढ़ा तलवार लेकर हाथ में, तक़दीर का हेटा।।

गुरू से दो क़दम के फ़ासले पर, रुक गया जा कर।
किया सैफ़े-क़ज़ा को तोल कर, इक वार फिर उनपर।।

फ़क़त इक वार में सर उड़ गया, उस्तादे-दौराँ का।
मुहैया हो गया सामाँ, इलाजे-दर्दे-पिन्हाँ का।।

सैफ़े-क़ज़ा = मौत की तलवार
दर्दे-पिन्हाँ = छिपा हुआ दर्द

द्रोणाचार्य के फ़रज़न्द
अश्वत्थामा की सख़्त कलामी

ख़बर मृगे-द्रोणा की सुनी, जिस वक़्त अश्वत ने।
लिया इक मोड़ सीने में, बतर्ज़े-नौ शुजाअत ने।

बतर्ज़े-नौ = नए अन्दाज़ से

कहा उसने यह पांडव से , कि तुम सब हो बड़े कमतर।
द्रोणा को है मारा, मेरे मरने की ख़बर देकर।।

अब उनके बाद जीना मेरा, मरने के बराबर है।
यह हत्या इक क़यामत के गुज़रने के बराबर है।।

मगर इक बात तू मुझ को बता, ऐ धर्म के रक्षक।
यही सत्य है, तो बोले किस को मिथ्या और किसे पातक।।

सत्य = सच्चाई
मिथ्या = झुट
पातक = गुनाह

दिखाया खूब सच्चाई का मंज़र, कम नज़र तूने।
दिया अच्छा सिला, अपने गुरू को मर कर तूने।।

बता ऐ लालची, है कितने दिन का राज और शासन ? ।
बता ऐ धर्म के बेटे, यही है धर्म का पालन ?।।

हया का नाम लेकर बे हयाई तूने दिखलाई।
गुरू से छल, अरे ज़ालिम, तुझे ग़ैरत नहीं आई।।

तेरे इस पाप से ऐ 'धर्म सत्य' ऐ बे हया खुद सर।
लगी है देख कालक क्षत्रियों के आज चेहरों पर।।

धर्म सत्य = धर्म के बेटे

گر اس متھیا سے اب بھروسہ اٹھ گیا تیرا
ابھی تک چھتریوں کی ذات پر وشواس تھا میرا

یہ باتیں سُن کے اشوت کی یدھشٹر اب پریشاں تھا
خمیدہ سر تھا، نادم تھا بڑی حد تک پشیماں تھا

اشوت تھاما کا برھما استر

بسانِ ضیغمِ خونخوار، گرجا، رن میں جب اشوت
گرج سُن کر جنودِ پانڈواں پر چھا گئی دہشت

کچھ ایسا شور و ہنگامہ مچا سنگرام کے اندر
کہ بھاگے خوف سے رن ویر سر پر پاؤں کو رکھ کر

پھر اشوت نے کمانی میں برھماستر کو جوڑا
نشانہ باندھ کر پانڈو کے لشکر کی طرف چھوڑا

جونہی چھوٹا برھماستر[1] اشوت کی کمانی سے
مکاں والے مکیں لاکھوں ملے جا لامکانی سے

زمیں پر بے گماں ہر ایک شے شعلہ بداماں تھی
برھماستر کے شعلوں میں گویا موت پنہاں تھی

یہ عالم دیکھ کر اشوت کی جانب جوش میں آکر
کیا دھاوا گدا لے کر دلاور بھیم نے اُس پر

مگر شعلوں نے اسکو ایسا گھیرا چاروں جانب سے
یقیں تھا روح گھبرا کر نکل آئے گی قالب سے

یہ منظر دیکھتے ہی ویر ارجن کو جلال آیا
دیا تھا جو ورن استر اندر نے اسکا خیال آیا

بعجلت قوس کا چلہ چڑھایا غیظ میں آکر
چلایا پھر خدنگِ آب، شعلہ بارِ آتش پر

مگر ارجن کے بانوں سے نہ ٹھنڈی ہو سکی آتش
بڑی شدت سے کی پھر اُس نے آبی تیر کی بارش

اِدھر اشوت کا تھا رن چھتر میں کچھ اور منصوبہ
اُدھر پانڈو بھی اب تک لڑ رہے تھے جنگِ مغلوبہ

غرض لڑتے رہے دونوں غروبِ مہر تک رن میں
ہوئے واپس نبردِ جنگ کا ارماں لئے من میں

[1] یہ لفظ استر ہے جسکے معنی ہیں وہ ہتھیار جو دور سے دشمن پر چلایا جائے۔ اس لفظ کا "الف" شعری ضرورت کے لیے حذف کر دیا گیا ہے۔

मगर इस मिथ्या से अब भरोसा उठ गया तेरा।
अभी तक क्षत्रियों की ज़ात पर, विश्वास था मेरा।।

यह बातें सुनके अश्वत की, युधिष्ठिर अब परेशाँ था।
ख़मीदा सर था, नादिम था, बड़ी हद तक पशेमाँ था ।।

ख़मीदा सर = सर झुका हुआ

अश्वत्थामा का ब्रह्माअस्त्र

बसाने-ज़ैग़मे-ख़ूँख़्वार, गरजा रण में जब अश्वत।
गरज सुनकर जुनूदे-पान्डवाँ पर, छा गई दहशत।।

कुछ ऐसा शोर-ओ-हंगामा मचा संग्राम के अन्दर।
कि भागे खौफ़ से रण वीर, सर पर पाँव को रखकर।।

फिर अश्वत ने कमानी में [1]ब्रह्मास्त्र को जोड़ा।
निशाना बाँध कर पान्डव के लष्कर की तरफ़ छोड़ा।!

जूँही छूटा ब्रह्मास्त्र अश्वत की कमानी से ।
मकाँ वाले मकीं लाखों, मिले जा, ला मकानी से।।

ज़मीं पर बेगुमाँ हर एक शै, शोला बदामाँ थी।
ब्रह्मास्त्र के शोलों में गोया, मौत पिन्हाँ थी।।

शोला बदामाँ = आग में लपटा हुआ

यह आलम देख कर, अश्वत की जानिब जोश में आकर।
किया धावा गदा लेकर, दिलावर भीम ने उसपर।।

मगर शोलों ने उसको, ऐसा घेरा चारों जानिब से।
यक़ी था रूह घबरा कर, निकल आएगी क़ालिब से।।

यह मंज़र देखते ही वीर अर्जुन को जलाल आया।
दिया था जो वरण अस्त्र इन्द्र ने, उसका ख़याल आया।।

जलाल = गुस्सा
अस्त्र = त्र

बउजलत कौ़स का चिल्ला चढ़ाया ग़ैज़ में आकर।
चलाया फिर खदंगे-आब, शोला बार आतिश पर।।

मगर अर्जुन के बानो से, न ठंडी हो सकी आतिश।
बड़ी शिद्दत से की फिर उसने आबी तीर की बारिश।।

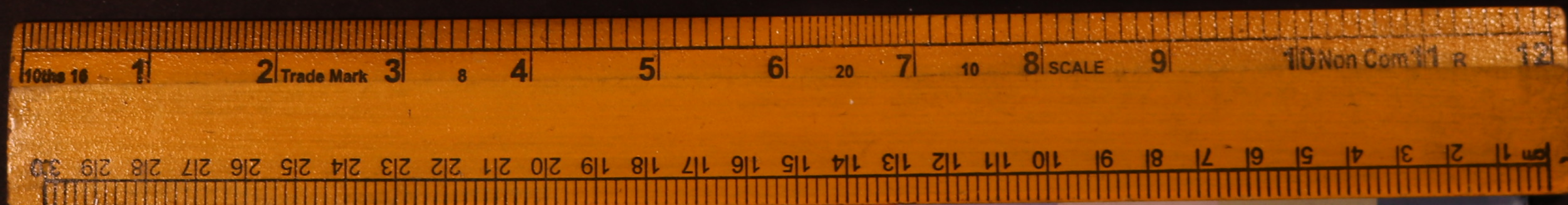
उधर अश्वत का था, रण क्षेत्र में कुछ और मंसूबा।
इधर पान्डव भी अबतक लड़रहे थे जंगे-मग़लूबा।।

ग़रज़ लड़ते रहे दोनों गुरूबे-महर तक रण में।
हुए वापस नबरदो-जंग का अरमाँ लिए मन में।।

१) यह शब्द अस्त्र है जिसके मानी है वह हथियार जो दूर से दुश्मन पर चलाया जाए।
इस शब्द का ''अल्फ़'' शेरी ज़रूरत के लिए निकाल दिया गया हैं।

مہابھارت
کا
تیسرا کمانڈر انچیف
دلاور کرن

महाभारत
का तीसरा
कमान्डर-इनचीफ़
दिलावर कर्ण
मैदाने-अमल में



کرن سیناپتی کے روپ میں

درونہ چاریہ جب دارِ فانی سے ہوئے رخصت
جنودِ کوروَاں کی پست ہو کر رہ گئی ہمت

کمر رن ویر دریودھن کی بیٹھی ان کے مرنے سے
بباطن کوروَاں بیزار تھے اب جنگ کرنے سے

نئی فکریں تھیں دامن گیر اب کیا ہوگا میداں میں
بنے گا کون کل سیناپتی میدانِ برکاں[1] میں

پھر اس کے بعد دریودھن نے کافی غور فرما کر
کیا اک فیصلہ جو واقعی تھا ہر طرح بہتر

بنایا کرن کو سیناپتی کل کیلیے اُس نے
اسی میں اپنی سمجھی منفعت اور بہتری اُس نے

جلیل القدر منصب فوج کا جب کرن نے پایا
شجاعت کا سرِ مغرور میں نشہ سا لہرایا

کہا اس نے کہ میں ارجن سے ہوں ہر بات میں آگے
فنِ جنگ وجدل کی ساری تحریکات میں آگے

مگر ارجن ہے مجھ سے اب فقط اک بات میں بھاری
کہ اس کے سارتھی ہیں نند لالہ شیام بنواری

اگر تو شل راجہ کو سرِ جنگاہ دریودھن
بنادے سارتھی میرا تو بن سندیہہ اے راجن

تو پھر دعوے سے کہتا ہوں کہ میں ارجن کو مارونگا
سرِ میداں اُسے میں کل فنا کے گھاٹ اتارونگا

۱ بمعنی آتش فشاں، جوالا مکھی

कर्ण सेनापति के रूप में

द्रोणाचार्य जब दारे-फ़ानी से हुए रुख़सत।
जुनूदे-कौरवाँ की, पस्त होकर रह गई हिम्मत।।

कमर रण वीर दुर्योधन की बैठी उन के मरने से।
बबातिन कौरवाँ बेज़ार थे, अब जंग करने से।।

नई फ़िक्रें थीं दामन गीर, अब क्या होगा मैदाँ में।
बनेगा कौन कल सेनापति मैदाने-'बरकाँ में।।

फिर इसके बाद दुर्योधन ने काफी ग़ौर फ़रमा कर।
किया इक फ़ैसला जो वाक़ई था हर तरह बेहतर।।

बनाया कर्ण को सेनापति कल के लिए उसने।
उसी में अपनी समझी मुनफ़अत और बेहतरी उसने।।

जलीलुलक़द्र मनसब, फ़ौज़ का जब कर्ण ने पाया।
शुजाअत का सरे-मग़रूर में नश्शा सा लहराया।।

कहा उसने कि मैं अर्जुन से हूँ हर बात में आगे।
फ़ने-जंग-ओ-जदल की सारी तहरीकात में आगे।।

मगर अर्जुन है मुझ से, अब फ़क़त इक बात में भारी।
कि उसके सारथी हैं, नन्द लाला श्याम बनवारी।।

अगर तू शल्ल राजा को सरे-जंगाह दुर्योधन।
बनादे सारथी मेरा तो, बिन संदेह ऐ राजन।।

तो फिर दावे से कहता हूँ कि मैं अर्जुन को मारूँगा।
सरे -मैदाँ उसे मैं कल, फ़ना के घाट उतारूंगा।।

जुनूदे-कौरवाँ = कौरवों का लश्कर

मुनफ़अत = लाभदायक

जलीलुलक़द्र मनसब = महान स्थान बहुत बड़ा ओहदा

तहरीकात = कोशिशें

१) बमानी आतिश फिशाँ 'ज्वाला मुखी'

اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ منصب اکبر

یہ سن کر شلؔ کی نگری میں پہنچا راجہ دریودھن
متانت سے بتایا اپنے آنے کا اسے کارن

کہ میں آیا ہوں تیرے پاس اک درخواست یہ لیکر
کہ تو کل سارتھی بن کرن کا سنگرام کے اندر

یہ باتیں سن کے دریودھن کی راجہ شلؔ یوں بولا
نہایت ترش روئی سے دہن کم بخت نے کھولا

مجھے ولدالزنا[1] کا سارتھی بننے کو کہتے ہو
ذرا یہ تو کہو تم کون سی دنیا میں رہتے ہو

تمہیں اس بات کو کہتے ہوئے غیرت نہیں آئی
مرے منصب کی تم نے خوب کی ہے قدر افزائی

خبر تم کو نہیں کیا؟ تربھون کا میں مسخر ہوں
مرے احکام چلتے ہیں ہر اک جا میں مؤمّر[2] ہوں

ہٹو جاؤ یہاں سے ذہن اپنا صاف کر آؤ
یہ بیہودہ سی باتیں اور کسی کے پاس لے جاؤ

سُنیں یہ ساری باتیں شلؔ کی اس نے متانت سے
تکلم کا نیا اسلوب بدلا جلد حکمت سے

کہ پہلے مسکراہٹ لب پہ لے آئی مدبر سی
بنا کر شکل اس کے بعد اپنی اک مفکر سی

ہوا گویا، کہ اے ناداں وہی منشا تو میرا ہے
مگر شمع ذکا[3] پر تیری ہلکا سا اندھیرا ہے

کہ جو سب سے بڑا بلوان ہو سنسار کے اندر
اسی کو زیب دیتا ہے فقط یہ منصب اکبر

برہما جیسے ہیں "رودھیر" کے اور اگن کے وایو
شری گھنشام، کنتی پتر کے ہیں قوتِ بازو

۱ حرامی ۲ حکم دینے والا ۳ عقل کی روشنی

उसी को ज़ेब देता है फ़क़त यह मनसबे-अकबर

यह सुनकर शल्ल की नगरी में पहुँचा राजा दुर्योधन।
मतानत से बताया अपने आने का उसे कारण।।

कि मैं आया हूँ तेरे पास, इक दरख़्वास्त यह लेकर।
कि तू कल सारथी बन कर्ण का, संग्राम के अंदर।।

यह बातें सुन के दुर्योधन की राजा शल्ल यूँ बोला।
निहायत तुर्श-रूई से दहन कमबख़्त ने खोला।।

मुझे वल्दुज़्ज़िना का सारथी बनने को कहते हो।
ज़रा यह तो कहो, तुम कौन सी दुनिया में रहते हो।।

तुम्हें इस बात को कहते हुए ग़ैरत नहीं आयी।
मेरे मनसब की तुम ने ख़ूब की है क़द्र अफ़ज़ायी।।

ख़बर तुम को नही क्या? त्रिभवन का मैं मुसख़्ख़िर हूँ।
मेरे अहकाम चलते हैं हर इक जा में मुअम्मिर हूँ।।

हटो जाओ यहाँ से ज़हन अपना साफ़ कर आओ।
यह बेहूदा सी बातें और किसी के पास ले जाओ।।

सुनीं यह सारी बातें शल्ल की, उस ने मतानत से।
तकल्लुम का नया असलूब बदला जल्द हिक़मत से।।

कि पहले मुसकुराहट लब पे ले आयी मुदब्बिर सी।
बनाकर शक्ल उस के बाद, अपनी इक मुफ़क्किर सी।।

हुआ गोया, कि ऐ नादाँ वही मनशा तो मेरा है।
मगर शम्मे-ज़का[1] पर तेरी हलका सा अंधेरा है।।

कि जो सब से बड़ा बलवान हो संसार के अन्दर।
उसी को ज़ेब देता है फ़क़त यह मनसबे-अकबर।।

ब्रह्मा जैसे हैं 'रूधीर' के, और अग्न के वायू।
श्री घनश्याम कुन्ती पुत्र के हैं कुव्वते-बाज़ू।।

मतानत = गंभीरता
तुर्श-रूई = रूखा पन
दहन = मुंह
वल्दुज़्ज़िना = हरामी
ग़ैरत = शर्म
मनसब = ओहदा
मुसख़्ख़िर = विजयता
मुअम्मिर = हुक्म देने वाला
तकल्लुम = बात
असलूब = तरीका
शमे-ज़का = अक़्ल की रौशनी

१) ज़का शोरा, उल्मा, ऐसे जितने भी अलफ़ाज़ हैं अंजुमन तरक़्क़ी उर्द की सिफ़ारिशात के तहत उनकी हमज़ा को ग़ैर ज़रूरी क़रार दिया गया है।

یہ سب بلوان سر چشمہ ہیں شکتی اور طاقت کے
یہی پیکر ہیں قوت کے یہی مخزن شجاعت کے

یہ سارے لوگ جن کو فخر ہے رتھ بان بننے پر
مگر اک تُو جو بزدل بن گیا ہے شیرِ نر ہو کر

یہ باتیں سن کے درلیودھن کی راضی ہو گیا آخر
مگر جو بیر تھا دل میں نہ اس کو کر سکا ظاہر

ابھی سے لاف کرنے میں ہے کیا حاصل بُتِ خودسر

بنا جب شلؔ اس کا سارتھی تو کرن خوش ہو کر
بھجا[۳۳] پھیلائے چھاتی تان کر فوراً چڑھا رتھ پر

اسے رتھ پر چڑھا دیکھا تو کوروگن کے ہتیارے
لگائے بہرِ استقبال سب نے خوب جے کارے

یہ عالم کرن نے دیکھا تو بولا کبر و نخوت سے
بدلنی ہے یہ ضرب المثل مجھکو اپنی طاقت سے

کہ جس جا شیام ہوتے ہیں وہیں ہوتی ہے بس نُصرت
یہی تو دیکھنا ہے ساتھ کس کا دیتی ہے قسمت

محاذِ جنگ پر تم دیکھنا ارجن کو ماروں گا
میں اس مغرور کا ، ناپاک تن سے ، سر اتاروں گا

جیسے دیوراج راجہ اندر دیکھیں تو تڑپ جائیں
غم فرزند سے آنکھوں میں ان کی اشک بھر آئیں

یہ ضرب المثل کہنہ ، ہو چکی ہے میں بدل دوں گا
سیاہی چہرۂ پانڈو پہ ناکامی کی مل دوں گا

۳۳ بازو ۳۵ مُؤمُر ۳۶ اِمام ، ہِرُ = حکم دینے والا ۳۷ ذکاء ، شُعراء ، علماء = ایسے جتنے بھی الفاظ ہیں انجمن ترقی اردو کی سفارشات کے تحت ان کی ہمزہ کو غیر ضروری قرار دیا گیا ہے

यह सब बलवान सर चष्मा हैं शक्ति और ताक़त के।
यही पैकर हैं कुव्वत के, यही मख़ज़न शुजाअत के।।

यह सारे लोग जिन को फ़ख़्र है रथ बान बनने पर।
मगर इक तू, जो बुज़दिल बन गया है शेरे-नर होकर।।

यह बाते सुन के दुर्योधन की राज़ी हो गया आख़िर।
मगर जो बैर था दिल में, न उस को कर सका ज़ाहिर।।

अभी से लाफ़ करने में है क्या हासिल बुते-खुदसर

बना जब शल्ल उस का सारथी तो कर्ण खुश होकर।
भुजा फैलाए छाती तान कर, फ़ौरन चढ़ा रथ पर।।

उसे रथ पर चढ़ा देखा तो कौरव गण के हत्यारे।
लगाए बहरे-इस्तक़बाल, सब ने ख़ूब जय कारे।।

यह आलम कर्ण ने, देखा, तो बोला किब्रो-निख़वत से।
बदलनी है यह ज़र्ब-उल-मस्ल मुझ को अपनी ताक़त से।।

कि जिस जा श्याम होते हैं वहीं होती है बस नुसरत।
यही तो देखना है, साथ किस का देती है क़िस्मत।।

महाज़े-जंग पर तुम देखना, अर्जुन को मारूँगा।
मैं उस मग़रूर का, नापाक तन से, सर उतारूँगा।।

जिसे देवराज राजा इन्द्र देखें तो तड़प जाएँ।
ग़मे-फ़रज़ंद से आँखों में उन की, अश्क भर आएँ।।

यह ज़र्ब-उल-मस्ल कुहना हो चुकी है मैं बदल दूँगा।
सियाही चेहरा-ए-पांडव पे, नाकामी की मल दूँगा।।

सर चश्मा = झरना
पैकर = पुतले
मख़ज़न = ख़ज़ाना

बहरे-इस्तक़बाल = स्वागत के लिए
किब्रो-निख़वत = घमन्ड
ज़र्ब-उल-मस्ल = कहावत
नुसरत = विजय, जीत

سنی جب کرن کی باتیں کہا یوں شلّ نے ہنس کر — ابھی سے لاف کرنے میں ہے کیا حاصل بتِ خودسر

یہ شیخی جنگ کے میداں میں تیری ہم بھی دیکھیں گے — تری فنّی صلاحیّت کا وہ عالم بھی دیکھیں گے

نہ کر بکواس جب ارجن سے تیرا سامنا ہوگا
کلیجہ دونوں ہاتھوں سے تجھے پھر تھامنا ہوگا

بھیم کی شُجاعت

بڑی شدّت سے میدانِ وغا میں جنگ جاری تھی — جُنودِ کوروَاں پوری طرح پانڈو پہ بھاری تھی

یدھشٹر کو پسینہ آرہا تھا خوف و دہشت سے — اتر آیا تھا رتھ سے آج وہ بانوں کی شدّت سے

یہ منظر بھیم نے دیکھا تعجب سے یدھشٹر کا — کہ چہرہ خوف سے اترا ہوا ہے اب مفکّر کا

یہ عالم دیکھتے ہی انتہائی جوش میں آکر — گدا لیکر وہ جھپٹا باز کی مانند کوروؤں پر

جدھر بڑھتا ادھر ہنگامۂ محشر نظر آتا — جہاں پڑتے قدم اس کے وہاں بھونچال آجاتا

بہادر کور اس کے سامنے آنے سے گھبراتے — بچا کر آنکھ اپنی دوسری جانب نکل جاتے

مگر وہ دندناتا پھر رہا تھا فیل کی مانند — وغا کے بحر میں بے خوف موجِ نیل کی مانند

جو آتا راہ میں اس کی فنا کے گھاٹ اتر جاتا — عدم کی راہ لیتا، دارِ فانی سے گزر جاتا

सुनी जब कर्ण की बातें, कहा यूँ शल्ल ने हंस कर।
अभी से लाफ़ करने में, है क्या हासिल बुते-खुदसर।।

यह शेख़ी जंग के मैदाँ में तेरी, हम भी देखेंगे।
तेरी फ़न्नी सलाहियत, का वह आलम भी देखेंगे।।

न कर बकवास जब अर्जुन से तेरा सामना होगा।
कलेजा दोनों हाथों से तुझे, फिर थामना होगा।।

भीम की शुजाअत

बड़ी शिद्दत से मैदाने-वग़ा में जंग जारी थी।
जुनूदे-कौरवाँ पूरी तरह, पांडव पे भारी थी।।

जुनूदे-कौरवाँ = कौरवों की फ़ौज

युधिष्ठिर को पसीना आरहा था, ख़ौफ़ो-दहशत से।
उतर आया था रथ से आज, वह बाणों की शिद्दत से।।

यह मंज़र भीम ने देखा, तआज्जुब से युधिष्ठिर का।
कि चेहरा ख़ौफ़ से उतरा हुआ है अब मुफ़क्किर का।।

यह आलम देखते ही, इन्तहाई जोश में आकर।
गदा लेकर वह झपटा, बाज़ की मानिन्द कौरों पर।।

जिधर बढ़ता उधर हंगामा-ए-महशर नज़र आता।
जहाँ पड़ते क़दम उसके, वहाँ भौंचाल आजाता।।

बहादुर कौर उस के सामने आने से घबराते।
बचा कर आँख अपनी, दूसरी जानिब निकल जाते।।

मगर वह दनदनाता फिर रहा था फ़ील की मानिन्द।
वग़ा के बहर में बे ख़ौफ़, मौजे-नील की मानिन्द।।

जो आता राह में उसे की, फ़ना के घाट उतर जाता।
अदम की राह लेता, दारे-फ़ानी से गुज़र जाता।।

फ़ना = मौत

تڑپتے تھے کہیں زخموں سے رن میں راکبِ و مرکب
کہیں لتھڑے ہوئے تھے خاک و خوں میں صاحبِ منصب

کہیں تھے نند اور اُپ نند، پاسی اور سن سنگی
پڑی تھیں لاشیں میداں میں سوپروا اور کوچی کی

ہزاروں آج شیرانِ وغا مارے گئے رن میں
جو حفظِ ماتقدم غرق تھے فولاد و آہن میں

علاوہ اس کے بارہ بھائی دریودھن بداختر کے
پڑے تھے نیم عریاں بدعمل سنگرام میں مر کے

دُشاشن کیفرِ کردار تک

نہایت آج ہیبت ناک منظر تھا لڑائی کا
نرالا ڈھنگ تھا افواج کی زور آزمائی کا

اچانک بھیم کے مدِ مقابل آیا دشاشن
مرصع رتھ پہ استادہ تھا عقل و ہوش کا دشمن

کھڑا تھا سامنے ہی آج ظالم تان کر سینہ
کیا دھاوا لگا کر بھیم نے پھر ایک تخمینہ

مگر فوراً ہی دشاشن اچھل کر آ گیا نیچے
بچائی جان اپنی، کاٹ کر کاوا ہوا پیچھے

مگر گرزِ گراں کی ضرب سے رتھ اس طرح ٹوٹا
کہ رتھ کے ساتھ رتھ والا غمِ آفاق سے چھوٹا

یہ دہشت ناک منظر دیکھتے ہی بھاگا دشاشن
لپک کر اس کو پکڑا بھیم نے یہ کہہ کے اے راون[1]

کہاں جائے گا میرے ہاتھ سے بدبخت تو بچ کر
نہ چھوڑوں گا کسی بھی حال میں زندہ تجھے خودسر

[1] اصطلاحاً، ظالم اور شقی القلب استعمال کیا گیا ہے

तड़पते थे कहीं ज़ख़्मों से रण में राकिबो-मरकब।
कहीं लथड़े हुए थे ख़ाको-ख़ूँ में साहबे-मनसब।।

कहीं थे नन्द और उप नन्द, पासी और सन-संगी।
पड़ी थीं लाशें मैदाँ में, 'सुपरवा और 'कोंची की।।

हज़ारों आज शेराने-वग़ा मारे गए रण में।
जो हिफ़्ज़े-मा-तक़द्दुम ग़र्क़ थे, फ़ौलादो-आहन में।।

अलावा इसके बारह भाई, दुर्योधन बद अख़्तर के।
पड़े थे नीम उरयाँ, बद अमल संग्राम में मरके।।

राकिबो-मरकब = घोड़ा और सवार
ख़ाक = मिट्टी
हिफ़्ज़े-मा-तक़द्दुम = पहले से एहतियात
बद अख़्तर = बद क़िस्मत

दुश्शाषन
कैफ़रे-किरदार तक

निहायत आज हैबतनाक मंज़र था लड़ाई का।
निराला ढंग था अफ़वाज की, ज़ोर आज़माई का।।

अचानक भीम के मद्दे-मुक़ाबिल आया दुश्शाषन।
मुरस्सा रथ पे इस्तादा था, अक़्ल-ओ-होश का दुश्मन।।

खड़ा था सामने ही, आज ज़ालिम तान कर सीना।
किया धावा लगाकर भीम ने, फिर एक तख़मीना।।

मगर फ़ौरन ही दुश्शाषन, उछल कर आगया नीचे।
बचाई जान अपनी, काट कर कावा हुआ पीछे।।

मग़र गुर्ज़े-गिराँ की ज़र्ब से, रथ इस तरह टूटा।
कि रथ के साथ रथ वाला, ग़मे-आफ़ाक़ से छूटा।।

यह दहशत नाक मंज़र, देखते ही भागा दुश्शाषन।
लपक कर उस को पकड़ा भीम ने, यह कह के ऐ [1]रावण।।

कहाँ जाएगा मेरे हाथ से, बद बख़्त तू बचकर।
न छोड़ूँगा किसी भी हाल में, ज़िन्दा तुझे खुदसर।।

मुरस्सा = जड़ाऊ

[1]) इस्तिलाहन, ज़ुल्म और शकिउलक़ल्ब इस्तेमाल किया गया है।

یہ کہہ کر اُس کو اُس نے پرتھوی پر اسطرح پٹخا
کہ بیٹھا ریڑھ کی ہڈی میں اس کی زور کا جھٹکا

پھر اس کے بعد ہیکل بھیم فوراً چھا گیا اُس پر
اور اپنی انگلیاں پیوست کر دیں پیٹ کے اندر

لگا کر پوری قوت چیر ڈالا سینۂ دشمن
تڑپ لینے کی مہلت پا سکا مطلق نہ دشاشن

اور اس کے بعد رکھا ایک گٹھنا نافِ دشمن پر
کیا سینے میں اپنا ہاتھ داخل بے جگر ہو کر

ٹٹولا چاروں جانب ہاتھ سے اور نرخرا پکڑا
کیا مضبوط اپنا پنجہ اور اچھی طرح جکڑا

جکڑ کر دوسرا اک ہاتھ رکھ کر اس کی گردن پر
بڑی قوت سے کھینچا اپنی جانب سنگدل بنکر

تو فوراً پھیپھڑا، دل اور جگر باہر نکل آیا
دیا پھر اس کو جھٹکا قطع کر کے لطف سا پایا

بُریدہ عضو منجملہ جو تھے اک ہاتھ میں اب تک
انہیں پھینکا بھلا رکھتا وہ اپنے ہاتھ میں کب تک

بھیم کا خونِ دشاشن پینے کی پرتگیا کی تکمیل

کیا اس نے مخاطب اپنی جانب لڑنے والوں کو
پکارا چھتریوں کو سورماؤں اور جیالوں کو

کہا تم کو تو باتیں یاد ہوں گی آج بھی ساری
کہ تیرا سال پہلے اس نے جو کی تھی دل آزاری

اسی نے چیر پنچالی کی کھینچی تھی سرِ محفل
برہنہ اس کو کر دینے کی، کی تھی سعیٔ لاحاصل

यह कहकर उस को उस ने, पृथ्वी पर इस तरह पटका।
कि बैठा, रीढ़ की हड्डी में उस की, जो़र का झटका।।

फिर उस के बाद हैकल भीम फ़ौरन, छा गया उस पर।
और अपनी· उगंलियाँ, पेवस्त करदीं पेट के अन्दर।।

पेवस्त करदी = घुसादी

लगाकर पूरी कुव्वत, चीर डाला सीना-ए-दुश्मन ।
तड़प लेने की मोहलत, पा सका मुतलक़ न दुश्शाषन।।

और इसके बाद रखा, एक गुठना नाफ़े-दुश्मन पर।
किया सीने में अपना हाथ दाख़िल बे जिगर होकर।।

नाफ़ = पेट

टटोला चारों जानिब हाथ से, और नरख़रा पकड़ा।
किया मज़बूत,´ अपना पंजा, और अच्छी तरह जकड़ा।।

जकड़ कर दूसरा इक हाथ रखकर उस की गर्दन पर।
बड़ी कुव्वत से खींचा, अपनी जानिब संगदिल बनकर।।

तो फ़ौरन फेफड़ा, और दिल, जिगर, बाहर निकल आया।
दिया फिर उस को झटका, कता करके, लुत्फ़ सा पाया।।

बुरीदा-अज़्व मिनजुमला, जो थे इक हाथ में अब तक।
उन्हे फेंका, भला रखता, वह अपने हाथ में कब तक।।

बुरीदा अज़्व = कटे हुए शरीर के टुकड़े

भीम का, खूने-दुश्शाषन पीने की प्रतिज्ञा की तकमील

किया उसने मुख़ातिब, अपनी जानिब लड़ने वालों को।
पुकारा क्षत्रियों को, सूरमाओं और जियालों को।।

कहा तुम को तो बातें याद होंगी आज भी सारी।
कि तेरह साल पहले, इस ने जो की थी दिल आज़ारी।।

दिल आज़ारी = दिल दुखाना

इसी ने चीर पंचाली की, खींची थी सरे-महफ़िल।
बरहना उस को कर देने की, की थी सई-ए-लाहासिल।।



سنو اب اپنی میں پرتگیّا کو پوری کرتا ہوں — درِ مقصود سے دامن تمنّاؤں کا بھرتا ہوں

یہ کہہ کر تین انجُل خوں نکالا اس کے سینے کا — عجب منظر تھا ہیبت ناک اس کے خون پینے کا

کدورت کی تپش کم ہو گئی کچھ خون پینے سے — لگا کر قہقہہ پھر بھیم اترا اس کے سینے سے

لبوں پر خون ایسا جم گیا تھا جیسے انگارا — اور اس پر پھیرتا تھا وہ زباں لے لیکے چٹخارا

پھر اس کی سرخ آنکھیں دیکھتے ہی لوگ ڈرتے تھے
کئی غش کھا کے گرتے تھے کئی دہشت سے مرتے تھے

عبث ہے سامنے اک شیر کے روباہ کا اڑنا

اُدھر مر کر پڑا تھا خاک پر مغرور دشاشن — اِدھر تھا کرن کے فرزند کا چکّر میں اب اڑگن[1]

خدنگِ مرگ سے ارجن نے اسکے دست و پا کاٹے — علاوہ اس کے لاشوں سے پھر اُس نے رن کے رن پاٹے

یہ عالم کرن نے ارجن کا جب دیکھا تو جھنجھلایا — دھنواں نتھنوں سے نکلا سانپ کی مانند بل کھایا

کہا پھر شلّ سے ارجن کی جانب موڑ دے رتھ کو — تجھے ہے خوف تو نیچے اتر جا، چھوڑ دے رتھ کو

یہ باتیں کرن کی سُنکر کہا یوں شلّ نے ہنس کر — یقیناً پیرِ نابالغ ہے تو بھی اے بتِ خود سر

اُدھر بجرنگ جی ہیں اور شری گھنشام بنواری — اِدھر ہے تو اکیلا، کون ہے اب تیرا ہتکاری

[1] ستارا

सुनो अब अपनी मैं प्रतिज्ञा को पूरी करता हूँ।
दुरे-मक़सूद से दामन, तमन्नाओं का भरता हूँ।।

यह कहकर तीन अंजुल खूँ, निकाला उसके सीने का।
अजब मंज़र था हैबत नाक, उस के खून पीने का।।

कदूरत की तपिश कम हो गई कुछ, खून पीने से।
लगा कर क़हक़हा फिर भीम उतरा उसके सीने से।।

लबों पर खून ऐसा जम गया था, जैसे अंगारा।
और उस पर फेरता था वह ज़बाँ, ले लेके चटख़ारा।।

फिर उसकी सुर्ख़ आँखें, देखते ही लोग डरते थे।
कई ग़श खा के गिरते थे, कई दहशत से मरते थे।।

कदूरत = दुशमनी
तपिश = आंच

अबस है सामने इक शेर के रूबाह का अड़ना

उधर मर कर पड़ा था, ख़ाक पर मग़रूर दुश्शाषन।
इधर था, कर्ण के फ़रज़न्द का, चक्कर में अब अड़गन।।

खदंगे-मृग से अर्जुन ने उसके दस्तो-पा काटे।
अलावा उस के लाशों से, फिर उस ने रण के रण पाटे।।

यह आलम कर्ण ने, अर्जुन का जब देखा, तो झुंझलाया।
धुवाँ नथनों से निकला, साँप की मानिन्द बल खाया।।

कहा फिर शल्ल से, अर्जुन की जानिब, मोड़ दे रथ को।
तुझे है खौफ़ तो नीचे उतर जा, छोड़ दे रथ को।।

यह बातें कर्ण की सुनकर, कहा यूँ शल्ल ने हंस कर।
यक़ीनन पीरे-ना-बालिग़ है तू भी, ऐ बुते-खुद सर।।

उधर बजरंग जी हैं और श्री घनश्याम बनवारी।
इधर है तू अकेला, कौन है अब तेरा हितकारी।।

अड़गन = सितारा
खदंगे-मृग = मौत के तीर
दस्ते-पा = हाथ पैर
पीरे-ना-बालिग़ = बूढ़ा मगर कम अक़ल
हितकारी = दोस्त

پلٹ جا، وقت ہے، بیکار ہے ارجن سے اب لڑنا
عبث ہے سامنے اک شیر کے، روباہ کا اڑنا

کسی حالت میں ارجن پر وجے تو پا نہیں سکتا
یہ لوہے کا چنا، تجھ سے چبایا جا نہیں سکتا

مگر زعمِ شجاعت میں خرد سے تھا وہ بیگانہ
وہ بیٹا سوریہ کا تھا، عبث تھا اس کو سمجھانا

دھنش اور بان لیکے آگیا وہ سامنے تن کر
غرض آمادۂ پیکار تھا با حسن کرّ و فر

ارجن کا رتھ تین قدم پیچھے

ادھر ارجن بھی استادہ ہی تھا گانڈیو دھنش لیکر
اور اس کے رتھ پہ تھے بجرنگ جی اور شیام مرلی دھر

کیا ٹنکار چلّہ کھینچ کر پھر دونوں شیروں نے
نکالے اپنے اپنے بان ترکش سے دلیروں نے

خدنگ آہنی جوڑے گئے قوسِ ہلالی سے
نظر آتے تھے دونوں بے جگر اور لاابالی سے

انہیں پروا نہیں تھی اپنے مرنے اور جینے کی
نہ تھی بحرِ وغا میں فکر جیون کے سفینے کی

اچانک کھنچ گئیں دونوں کمانیں دو بدو ہو کر
نشانہ لیکے باندھی شِست دونوں نے بہ کرّ و فر

پڑی ڈھیلی یکایک چٹکیوں کی ان کی گیرائی
فضا میں دونوں جانب ایک برقی رو سی لہرائی

خدنگِ آہنی چھوٹا تو جا بیٹھا نشانے پر
قوائے جوہری ناوک لئے پہنچا ٹھکانے پر

لہ نڈر ، بے باک ، دلیر

पलट जा, वक़्त है, बेकार है अर्जुन से अब लड़ना।
अबस है, सामने इक शेर के, रूबाह का अड़ना।।

किसी हालत में अर्जुन पर, विजय तू पा नहीं सकता।
यह लोहे का चना, तुझ से चबाया जा नहीं सकता।।

मगर ज़ोमे-शुजाअत में, ख़िरद से था वह बेगाना।
वह बेटा सूर्य का था, अबस था उस को समझाना।।

धनुष और बाण लेके, आगया वह सामने तन कर।
ग़रज़ आमादा-ए-पैकार था, बा हुस्ने-कर्रोफ़र।।

अबस = बेकार
रूबाह = भेड़िया
ज़ोमे-शुजाअत = बहादुरी का गर्व

अर्जुन का रथ तीन क़दम पीछे

उधर अर्जुन भी इस्तादा ही था गाण्डीव धनुष लेकर।
और उसके रथ पे थे, बजंरग जी और श्याम मुरलीधर।।

किया टनकार चिल्ला खींच कर, फिर दोनों शेरों ने।
निकाले अपने अपने बाण, तरकश से दिलेरों ने।।

ख़दंगे-आहनी जोड़े गए, कौसे-हिलाली से।
नज़र आते थे दोनों, बे जिगर और ला उबाली से।।

उन्हें परवाह नहीं थी, अपने मरने और जीने की।
न थी बहरे-वग़ा में फ़िक्र, जीवन के सफ़ीने की।।

अचानक खिंच गई दोनों कमानें दूबदू होकर।
निशाना लेके बान्धी शिस्त, दोनों ने ब कररोफ़र।।

पड़ी ढ़ीली यकायक, चुटकियों की उन की ग़ीराई।
फ़ज़ा में दोनों जानिब, एक बरक़ी रौ सी लहराई।।

ख़दंगे-आहनी छूटा, तो जा बैठा निशाने पर।
क़वाए जौहरी नावक, लिए पहुँचा ठिकाने पर।।

इस्तादा = खड़ा
कौसे-हिलाली = चंद्रमा जैसी मुड़ी हुई कमान
बहरे-वग़ा = जंग का समुद्र
दूबदू = आमने सामने
ग़ीराई = खिंचावट
बरक़ी रौ = बिजली की लहर

پڑی ضربِ خدنگِ کرن، جس دم رتھ پہ ارجن کے	تھا یوں تو مالکِ سہ گانِ عالم رتھ پہ ارجن کے

مگر پیچھے ہٹایا سہ قدم رتھ، شیرِ افگن نے
دکھایا ضربِ ناوک کا نظارہ مردِ خوش فن نے

کرن پر پھولوں کی بارش

تحیّر، کا سا عالم ذہنِ ارجن پر ہوا طاری	کہ جس رتھ پر براجے ہوں شری گھنشام گردھاری

وہی رتھ آج رن میں تین پگ ہو جائے گا پیچھے	فقط اک ضربِ ناوک ہی سے وہ ہٹ آئیگا پیچھے

یہ باتیں سوچ کر دل میں خلش محسوس ہوتی تھی	طبیعت اس کی ان باتوں سے کچھ مایوس ہوتی تھی

بالآخر اس نے پوچھا شیام سے اے کرشن بنواری	بتاؤ کیا ہے کارن رتھ کے ہٹ جانے کا گردھاری

علاوہ اس کے رتھ کے ہٹتے ہی دھرماتماؤں نے	گلوں کی، کرن پر برسات کی ہے دیوتاؤں نے

یہ باتیں سن کے ارجن کی، کہا گھنشام نے ہنس کر	یہی تو بات ہے جو کہہ رہا ہے ہو کے تو مضطر

کہ میں جس رتھ پہ بیٹھوں اس کی جب ہو جائے یہ درگت	سمجھ لے کرن سا دشمن ہے کتنا باصلاحیّت

یہی تو وجہ ہے پھولوں کی بارش اس پہ ہوتی ہے	سعید اور پاک روحوں کی نوازش اس پہ ہوتی ہے

ترا اس ضمن میں سندیہہ اب بیکار ہے ارجن	لگا دے جست تنّورِ وغا تیار ہے ارجن

पड़ी ज़र्बे-ख़दंगे-कर्ण, जिस दम रथ पे अर्जुन के।
था यूँ तो, मालिके-सहँगाने-आलम, रथ पे अर्जुन के।।

मगर पीछे हटाया सह क़दम रथ, शेर अफ़ग़न ने।
दिखाया ज़र्बे-नावक का नज़्ज़ारा, मर्दे-खुश फ़न ने।।

ज़र्बे-ख़दंगे-कर्ण = कर्ण के तीर की मार
मालिके-सहँगाने-आलम = तीनों लोक का मालिक
ज़र्बे-नावक = तीर के वार

कर्ण पर फूलों की बारिश

तहय्युर का सा आलम ज़हने-अर्जुन पर हुआ तारी।
कि जिस रथ पर बिराजे हों, श्री घनश्याम गिरधारी।।

वही रथ आज रण में, तीन पग हो जाएगा पीछे।
फ़क़त इक ज़र्बे-नावक ही से वह, हट आएगा पीछे।।

यह बातें सोचकर दिल में, ख़लिश मैहसूस होती थी।
तबीयत उसकी इन बातों से कुछ मायूस होती थी।।

बिलआख़िर, उसने पूछा श्याम से, ऐ कृष्ण बनवारी।
बताओ क्या हैं कारण, रथ के हट जाने का गिरधारी।।

अलावा इसके रथ के हटते ही धर्मात्माओं ने।
गुलों की, कर्ण पर बरसात की है, देवताओं ने।।

यह बातें सुन के अर्जुन से कहा घनश्याम ने हंस कर।
यही तो बात है, जो कह रहा है, हो के तू मुज़तर।।

कि मैं जिस रथ पे बैठूँ उसकी जब हो जाए यह दुर्गत।
समझ ले, कर्ण सा दुश्मन है कितना, बा सलाहियत।।

यही तो वजह है फूलों की बारिश उस पे होती है।
सईद और पाक रूहों की, नवाज़िश उस पे होती है।।

तेरा इस ज़िम्न में सन्देह अब बेकार है अर्जुन ।
लगा दे जस्त, तन्नूरे-वग़ा तैयार है अर्जुन ।।

ज़िम्न = विषय
तन्नूरे-वग़ा = जंग की भट्टी

دلاور کرن کے پانچ بان

ارجن کے سینے میں

محاذِ جنگ پر اک سمت نظریں رُک گئیں آکر
جہاں اک مورچے پر لڑ رہی تھیں فوجیں بابکتر

سپاہی جوش میں اک دوسرے پر وار کرتے تھے
کبھی دو چار مل کر ایک پر یلغار کرتے تھے

ہر اک ان میں تناور تھا بہادر تھا دلاور تھا
جو تنہا بیچ میں دو چار لڑویّوں پہ سر بر تھا

غرض ہنگامۂ بسیار چاروں سمت تھا جاری
اسی کے ساتھ خوفِ مرگ بھی ہر دل پہ تھا طاری

کہیں شمشیر و خنجر لیکے تھا کوئی نبرد آرا
کوئی برچھی کا چرکا کھا کے مرجاتا تھا بیچارا

رتھوں کی گھڑگھڑاہٹ سے فضا تھی مرتعش رن کی
نکل جاتی تھی ضربِ گرز سنکر روح دشمن کی

لگاتے تھے دلیرانِ وغا رہ رہ کے جے کارے
کہیں فیلوں کی چنگھاڑیں کہیں بجتے تھے نقّارے

کبھی بانوں سے برکھا کا سماں آنکھوں میں پھر جاتا
خدنگِ آتشیں سے آگ کا طوفاں نظر آتا

کہیں تیغ و سپر تیشہ کے ٹکرانے کی جھنکاریں
کہیں قرنا[1] کی آوازیں کہیں تانتوں کی ٹنکاریں

برابر چوکسی سے ہو رہے تھے وار میداں میں
شناور غوطہ زن تھے جنگ کے پُر ہول طوفاں میں

اچانک پانچ ناوک کرن کی چھوٹے کمانی سے
بڑھے ارجن کی جانب پوری تیزی اور روانی سے

[1] سنکھ

दिलावर कर्ण के पाँच बान

अर्जुन के सीने में

महाज़े-जंग पर इक सम्त नज़रें रुक गईं आकर।
जहाँ इक मोर्चे पर लड़ रही थीं, फ़ौजें बा बकतर।।

सिपाही जोश में इक दूसरे पर वार करते थे।
कभी दोचार मिल कर एक पर यलग़ार करते थे।।

हर इक इन में तनावर था, बहादुर था, दिलावर था।
जो तन्हा बीच में, दोचार लड़वइयों पे सर बर था।।

ग़रज़ हंगामा-ए-बिसयार चारों सम्त था जारी ।
इसी के साथ, ख़ौफ़े मृग भी, हर दिल पे था तारी।।

कहीं शमशीरो-ख़ंजर, लेके था कोई नबर्द आरा।
कोई बरछी का चरका खा के, मर जाता था बेचारा।।

रथों की गड़गड़ाहट से, फ़ज़ा थी मुरतइश रण की।
निकल जाती थी, ज़र्बे-गुर्ज़ सुनकर रूह दुश्मन की।।

लगाते थे दिलेराने-वग़ा रहरह के जय कारे।
कहीं फ़ीलों की चिंघाड़ें, कहीं बजते थे नक़्क़ारे।।

कभी बानों से बरखा का, समाँ आँखों में फिरजाता।
ख़दंगे-आतिशी से, आग का तूफ़ाँ नज़र आता।।

कहीं तेग़ो-सिपर, तैशा के टकराने की झंकारें।
कहीं क़रना की आवाज़ें कहीं ताँतों की टनकारें।।

बराबर चौकशी से, हो रहे थे वार मैदाँ में।
शनावर ग़ोता-ज़न थे, जंग के पुर हौल तूफ़ाँ में।।

अचानक, पाँच नावक कर्ण की छूटे कमानी से।
बढ़े अर्जुन की जानिब, पूरी तेज़ी और रवानी से।।

यलग़ार = हमला

मुरतइश = थर्राई हुई

क़रना = शंख

शनावर = तैराक

بڑا جس وقت ناوک شیردل ارجن کے سینے پر
پسینہ آگیا اور رہ گیا دو لمحہ چکرا کر

کرن کے رتھ کا چاک پرتھوی کے سینے میں

اُسے جب ہوش آیا تو نہایت غیظ میں آکر — چلائے چار بان ایسے جواباً کرن کے رتھ پر
انہی تیروں نے کافی کرن کو نقصان پہنچایا — بَلائے بے اماں تھے رنج کا سامان پہنچایا
علاوہ دوسرا اک بان مارا جوش میں آکر — گرا جو کرن کے رتھ سے بہت نزدیک دھرتی پر
گرا جب بان دھرتی پر تو وہ پاتال تک پہنچا — گہن بن کر کسی کے نیّرِ اقبال تک پہنچا
بڑھا پھر کرن کا زرین رتھ سنگرام کے اندر — مگر دھرتی میں کچھ ایسا دھنسا دو ہی قدم چل کر
کہ گھوڑوں نے لگایا زور رتھ کو کھینچ ہی لیں گے — مگر رتھ ایک انگل بھی ہٹا آگے نہ اور پیچھے
یہ صورت کرن نے دیکھی تو کودا رتھ سے دھرتی پر — بہت ترکیب کی لیکن نہ رتھ نکلا تو زِچ[1] ہو کر
ذرا سا دم لیا اور پھر یکایک جوش میں اٹھّا — کہ جیسے رتھ کے چکّے کو زمیں سے کھینچ ہی لے گا

مگر، پھر غور سے دوبارہ اس نے چاک کو دیکھا
جہاں دھرتی نے اس کے رتھ کو مضبوطی سے جکڑا تھا

[1] عاجز ہونا

पड़ा जिस वक़्त नावक, शेर दिल अर्जुन के सीने पर।
पसीना आ गया, और रह गया, दो लम्हा चकरा कर।।

कर्ण के रथ का चाक पृथ्वी के सीने में

उसे जब होश आया तो निहायत ग़ैज़ में आकर।
चलाए चार बाण ऐसे, जवाबन कर्ण के रथ पर।।

उन्ही तीरों ने काफ़ी कर्ण को नुक़सान पहुँचाया।
बलाए बे-अमाँ थे, रंज का सामान पहुँचाया।।

अलावा दूसरा इक बाण मारा, जोश में आकर।
गिरा जो कर्ण के रथ से, बहुत नज़दीक धरती पर।।

गिरा जब बाण धरती पर, तो वह पाताल तक पहुँचा।
गहन बन कर किसी के, नय्यरे-इक़बाल तक पहुँचा।।

बढ़ा फिर कर्ण का ज़र्रीन रथ संग्राम के अंदर।
मगर धरती में कुछ ऐसा धंसा दो ही क़दम चल कर।।

कि घोड़ों ने लगाया जोर, रथ को खींच ही लेंगे।
मगर रथ एक अंगुल भी हटा, आगे न और पीछे।।

यह सूरत कर्ण ने देखी, तो कूदा रथ से धरती पर।
बहुत तरकीब की लेकिन, न रथ निकला, तो ज़च होकर।।

ज़रा सा दम लिया और फिर, यकायक जोश में उठ्ठा।
कि जैसे रथ के चक्के को, ज़मी से खींच ही लेगा।।

मगर, फिर ग़ौर से दोबारा, उसने चाक को देखा।
जहाँ धरती ने उस के रथ को, मज़बूती से जकड़ा था।।

निहायत ग़ैज़ = बहुत गुस्से में

नय्यरे-इक़बाल = भाग्य का सुरूज
ज़र्रीन = सुनहरा

ज़च हो कर = बेबस होकर



پھنسا ہے پرتھوی میں میرا رتھ اے سورما دم لے

پھر اس کے بعد اپنی پیٹھ چکّے کی طرف کر کے
گھمایا اپنے دونوں ہاتھوں کو اور کر لیا پیچھے

پہیے کو پھر اپنے آہنی پنجوں میں لے آیا
اسی عالم میں پھر اس نے لگایا زور بازو کا

پھڑک کر کھا گئی بل بازوئے شہ زور کی مچھلی
اُبھر آئیں رگیں شدّت سے سینہ اور گردن کی

عرق آلودہ پیشانی ہوئی لیکن نہ رتھ نکلا
لگایا اس نے زور اتنا پسینے میں نہا بیٹھا

کرشنا جی نے دیکھا کرن کو جب ایسے عالم میں
کہا ! ڈوبا ہے ارجن فکر کے کس بحرِ قلزم میں

پھنسے ہیں پرتھوی میں رتھ کے دونوں چاک اے ارجن
نہتّا ہو چکا ہے کرن سا چالاک اے ارجن

اٹھا تیر و کماں اور چھید دے اب کرن کا سینہ
بھرا ہے پانڈوؤں کے واسطے جس میں بہت کینہ

سُنی جس وقت کیشو مورتی کی کرن نے باتیں
سمجھ میں آ گئی تھیں چھل کپٹ اور مکر کی گھاتیں

پکارا کرن نے ، ارجن شما کر اور ذرا دم لے
پھنسا ہے پرتھوی میں میرا رتھ اے سورما دم لے

کرے یورش نہتّوں پر ، یہ شیوا کب ہے مردوں کا
طریقہ یہ ہے سفّاکوں کا اور آوارہ گردوں کا

تجھے میں جانتا ہوں ، تو نہ کائر ہے ، نہ بزدل ہے
نہتّے پر کرے گا وار ، یہ تو اور مشکل ہے

علاوہ اس کے میں اے شیام مرنے سے نہیں ڈرتا
ادائے فرضِ حق کو ، پورا کرنے سے نہیں ڈرتا

फंसा है पृथ्वी में मेरा रथ ऐ सूरमा दम ले

फिर उसके बाद अपनी पीठ, चक्के की तरफ़ करके।
घुमाया अपने दोनों हाथों को, और कर लिया पीछे।।

पहिये को फिर अपने, आहनी पंजों में ले आया।
इसी आलम में फिर उस ने लगाया ज़ोर बाज़ू का।।

फड़क कर खा गयी बल, बाज़ूए-शह ज़ोर की मछली।
उभर आयी रगें शिद्दत से, सीना और गर्दन की।।

अरक़ आलूदा पेशानी हुई, लेकीन न रथ निकला।
लगाया उस ने ज़ोर इतना, पसीने में नहा बैठा।।

कृष्णा जी ने देखा, कर्ण को जब ऐसे आलम में।
कहा ! डूबा है अर्जुन, फ़िक्र के किस बहरे-कुलज़म में।।

फंसे हैं पृथ्वी में, रथ के दोनों चाक, ऐ अर्जुन।
निहत्ता हो चुका है, कर्ण सा चालाक, ऐ अर्जुन।।

उठा तीरो-कमाँ, और छेद दे, अब कर्ण का सीना।
भरा है पांडवों के वास्ते, जिस में बहुत कीना।।

सुनी जिस वक़्त, केशवमूर्ति की कर्ण ने बातें।
समझ में आ गई थीं, छल कपट और मक्र की घातें।।

पुकारा कर्ण ने अर्जुन क्षमाकर, और ज़रा दम ले।
फँसा है पृथ्वी में मेरा रथ, ऐ सूरमा दम ले।।

करे यूरिश निहत्तों पर, यह शेवा कब है मर्दों का।
तरीक़ा यह है सफ़्फ़ाकों का, और आवारा गर्दों का।।

तुझे मैं जानता हूँ, तू न कायर है, न बुज़दिल है।
निहत्ते पर करेगा वार, यह तो और मुश्किल है।।

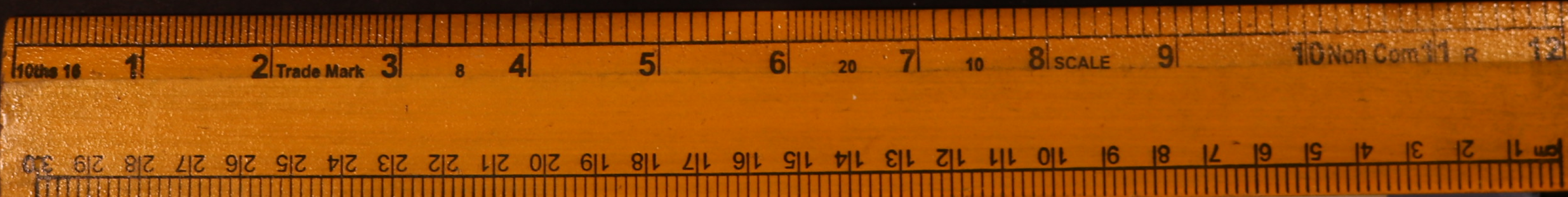
अलावा इस के मैं ऐ श्याम, मरने से नहीं डरता।
अदाए फ़र्ज़े-हक़ को, पूरा करने से नहीं डरता।।

बाज़ूए-शह ज़ोर = बहादुर के हाथ

अरक़ आलूदा = पसिने में भिगा हुआ

बहरे-कुलज़ुम = समुद्र

शेवा = ढंग
सफ़्फ़ाक = हत्यारा



مجھے معلوم ہے جو ویر مرتا ہے سرِ میداں
سُورگی ہوتا ہے میرا عقیدہ اور ہے ایماں

علاوہ اس کے مجھ کو دھرم سے ہٹ کر نہ تم مارو
یہ بازی جیت کر سچّائی کی بازی نہ تم ہارو

بہت دن بعد ڈالا دھرم نے دل میں ترے ڈیرا

شری گھنشام جی نے کرن کی باتیں سُنیں جس دم
کرودھت ہو کے بولے کیا تجھے وہ یاد ہے عالم

کہ جب پانڈو کو لاکھی گھر میں تم سب نے جلایا تھا
وہ لڈو بھیم نے کیا زہر کا خود ہو کے کھایا تھا

بتاؤ تو جوا جیتا تھا کیا سچّائی سے تم نے
ابھیمنو مرا تھا سچ کہو، کیا دھرم کی رو سے

علاوہ چیر تم لوگوں نے پنچالی کی کھینچی تھی
یہ حرکت ایک میں کیا، ساری دنیا ہی نے دیکھی تھی

تجھے اس وقت اپنے دھرم کا مطلق نہ ہوش آیا
نہ سچّائی کی غیرت اور حمیّت ہی کو جوش آیا

بتا اے کرن آخر کل کہاں تھا دھرم یہ تیرا
بہت دن بعد ڈالا دھرم نے دل میں ترے ڈیرا

मुझे मालूम है, जो वीर मरता है सरे-मैदाँ।
स्वर्गीय होता है, मेरा अक़ीदा और है ईमाँ।।

अलावा इस के मुझ को, धर्म से हट कर न तुम मारो।
यह बाज़ी जीत कर, सच्चाई की बाज़ी न तुम हारो।।

बहुत दिन बाद डाला धर्म ने दिल में तेरे डेरा

श्री घनश्याम जी ने, कर्ण की बातें सुनी जिस दम।
क्रोधित होके बोले ,क्या तुझे वह याद है आलम।।

कि जब पांडव को लाखी घर में, तुम सब ने जलाया था।
वह लड्डू भीम ने क्या ज़हर का, खुद होके खाया था।।

बताओ तो, जुआ जीता था क्या, सच्चाई से तुम ने।
अभिमन्यु मरा था, सच कहो क्या धर्म की रू से।।

अलावा चीर तुम लोगों ने पंचाली की खींची थी।
यह हरकत एक मैं क्या, सारी दुनिया ही ने देखी थी।।

तुझे उस वक़्त अपने धर्म का, मुतलक़ न होश आया।
न सच्चाई की ग़ैरत, और हमीअत ही को जोश आया।।

बता ऐ कर्ण आख़िर कल कहाँ था धर्म यह तेरा।
बहुत दिन बाद डाला, धर्म ने दिल में तेरे डेरा।।

ग़ैरत और हमीअत = शर्म और लाज



موضوعِ یورش پر شری گھنشیام اور ارجن میں بحث

پھر اس کے بعد ہی رنکھشتر میں موضوعِ یورش پر
شری گھنشام اور ارجن میں ٹھہری بحث یہ آکر

کشن کہتے تھے ارجن وار کر موقع غنیمت ہے
مگر ارجن یہ بولا بزدلی کی یہ علامت ہے

کشن بولے کہ ارجن، کرن اب بالکل نہتا ہے
کہا ارجن نے یہ تو صرف نامردوں کا شیوا ہے

کشن بولے اے ارجن دیکھ ساری عُمر روئیگا
کہا ارجن نے داغِ بزدلی کو، کون دھوئے گا

کشن بولے یہ موقع ہاتھ دوبارہ نہ آئے گا
کہا ارجن نے اب ہتھیار بزدل ہی اٹھائے گا

کشن بولے لڑائی میں ہے جائز مکرو عیّاری
کہا ارجن نے مجھ کو زیب کب دیتی ہے مکاّری

کشن بولے کہ سورج دیوتا کا کرن بیٹا ہے
کہا ارجن نے ہوگا، مجھ سے اس کا کیا علاقہ ہے

کشن بولے کہ ناداں اس طرح تو مارا جائے گا
کہا ارجن نے موقع آئے گا تو دیکھا جائے گا

کشن بولے نہ ہو مغرور تو اپنی شجاعت پر
کہا ارجن نے مجھ کو ناز ہے ایشور کی رحمت پر

کشن بولے کہ میں خود ہی تو ہوں اوتار ایشور کا
کہا ارجن نے بیشک آپ پر وشواس ہے میرا

کشن بولے اگر مجھ پر ترا وشواس پختہ ہے
تو میرے حکم سے پھر کس لیے انکار کرتا ہے

اٹھا تیر و کماں تو، ورنہ پچھتائے گا جیون بھر
چلا دے دیکھتا کیا ہے چڑھا کر قوس چھاتی پر

मौज़ूए यूरिश पर श्री घनश्याम और अर्जुन में बहस

फिर इसके बाद ही, रणक्षेत्र में मौज़ूए यूरिश पर।
श्री घनश्याम और अर्जुन में, ठहरी बहस यह आकर।।

किशन कहते थे, अर्जुन वार कर मौक़ा ग़नीमत है।
मगर अर्जुन यह बोला, बुज़दिली की यह अलामत है।।

किशन बोले कि अर्जुन, कर्ण अब बिल्कुल निहत्ता है।
कहा अर्जुन ने यह तो, सिर्फ़ ना मर्दों का शेवा है।।

किशन बोले ऐ अर्जुन, देख सारी उम्र रोएगा।
कहा अर्जुन ने, दाग़े-बुज़दिली को कौन धोएगा।।

किशन बोले यह मौका, हाथ दोबारा ना आएगा।
कहा अर्जुन ने, अब हथियार बुज़दिल ही उठाएगा।।

किशन बोले लड़ाई में है जाएज़ मक्रो-अय्यारी ।
कहा अर्जुन ने मुझ को, ज़ेब कब देती है मक्कारी।।

किशन बोले, कि सूरज देवता का, कर्ण बेटा है।
कहा अर्जुन ने होगा, मुझ से उस का, क्या इलाक़ा है।।

किशन बोले कि नादाँ, इस तरह तू मारा जाएगा।
कहा अर्जुन ने, मौक़ा आएगा तो देखा जाएगा।।

किशन बोले न हो मग़रूर, तू अपनी शुजाअत पर।
कहा अर्जुन ने, मुझ को नाज़ है ईश्वर की रहमत पर।।

किशन बोले कि मैं खुद ही तो हूँ, अवतार ईश्वर का।
कहा अर्जुन ने बेशक, आप पर विश्वास है मेरा।।

किशन बोले अगर मुझ पर तेरा विश्वास पुख़्ता है।
तो मेरे हुक्म से फिर, किस लिए इनकार करता है।।

उठा तीरो-कमाँ तू, वरना पछताएगा जीवन भर।
चला दे देखता क्या है, चढ़ा कर क़ौस छाती पर।।

मौज़ूए यूरिश = हमले के विषय में

मक्रो-अय्यारी = छल कपट

शुजाअत = बहादुरी

पुख़्ता = मज़बूत

کیا دھرماتماؤں نے کچھ ایسا دھرم کا پالن

اس اثناء میں نکل آیا تھا رتھ کا چاک دھرتی سے
اچک کر اپنے رتھ پر چڑھ گیا پھر کرن خوش ہو کے

چلایا اس کے فوراً بعد اس نے تیر اک ایسا
حقیقت میں وہ افعی تھا مگر تھا تیر کے جیسا

بڑھا جب تیر ارجن کی طرف یکلخت سرعت سے
تو رتھ کو شیام نے نیچے دبایا فرطِ عجلت سے

ضررِ ناوک نما افعی نے ارجن کو نہ پہنچایا!
مگر وہ خود ہی ظالم موت کے منہ میں چلا آیا

بہت نزدیک ارجن کے گرا جب بان وہ رن میں
تو اس کو ٹکرے ٹکرے کر دیا ارجن نے اک چھن میں

چلایا دوسرا پھر بان اس نے مشتعل ہو کر
کہ جس سے کٹ گیا اسپاتؔ کا اسکا مکٹ یکسر

اسی انداز سے کرتے رہے جنگ و جدل دونوں
فنونِ جنگ میں اک دوسرے کے تھے بدل دونوں

اچانک پرتھوی نے پھر سے پکڑا کرن کے رتھ کو
شکنجہ بن گئی اور خوب جکڑا کرن کے رتھ کو

نظر آئی اس عالم میں، اسے تو منفعت جنگی
بلا سے ہو گئی ہو، جارحیت، بعد میں ننگی

معاً اس نے اٹھایا فائدہ کمزور پہلو سے
توقف ایسے عالم میں، تھا باہر اسکے قابو سے

تقاضہ تھا تدبر کا، نہ ہو تاخیر یورش میں
نہاں تھی اک مکمل فتح کی تعبیر یورش میں

بس اتنا سوچ کر ارجن نے رخ سمتِ کشن موڑا
اشارہ ان کا ملتے ہی کماں میں تیر کو جوڑا

ؔ لوہا

किया धर्मात्माओं ने कुछ ऐसा धर्म का पालन

इस असना में निकल आया था, रथ का चाक धरती से।
उचक कर अपने रथ पर, चढ़ गया फिर कर्ण खुश हो के।।

चलाया इसके फ़ौरन बाद, उस ने तीर इक ऐसा।
हक़ीक़त में वह अफ़ई था, मगर था तीर के जैसा।।

बढ़ा जब तीर अर्जुन की तरफ़, यकलख़्त सुरअत से।
तो रथ को श्याम ने नीचे दबाया, फ़र्ते उजलत से।।

ज़रर नावक नुमा अफ़ई ने, अर्जुन को न पहुँचाया।
मगर वह खुद ही ज़ालिम, मौत के मुँह में चला आया।।

बहुत नज़दीक अर्जुन के गिरा, जब बाण वह रण में।
तो उस को टुकडे टुकडे कर दिया, अर्जुन ने इक छन में।।

चलाया दूसरा फिर बाण, उस ने मुश्तईल होकर।
कि जिस से कट गया इस्पात का, उसका मुकुट यकसर।।

इसी अंदाज़ से करते रहे जंगो-जदल दोनों।
फ़नूने-जंग में, इक दूसरे के थे, बदल दोनों।।

अचानक पृथ्वी ने, फिर से पकड़ा, कर्ण के रथ को।
शिकंजा बन गई, और खूब जकड़ा कर्ण के रथ को।।

नज़र आई इस आलम में, उसे तो मुनफ़अत जंगी।
बला से हो गई हो, जारेहैयत बाद में नंगी।।

मअन उसने उठाया, फ़ायदा कमज़ोर पहलू से।
तवक़्क़ुफ़ ऐसे आलम में, था बाहेर उस के क़ाबू से।।

तक़ाज़ा था तदब्बुर का, न हो ताख़ीर यूरिश में।
नेहाँ थी इक मुकम्मल फ़तह की ताबीर यूरिश में।।

बस इतना सोच कर अर्जुन ने, रुख़ सम्ते-किशन मोड़ा।
इशारा उन का मिलते ही कमाँ में तीर को जोड़ा।

असना = मुद्दत

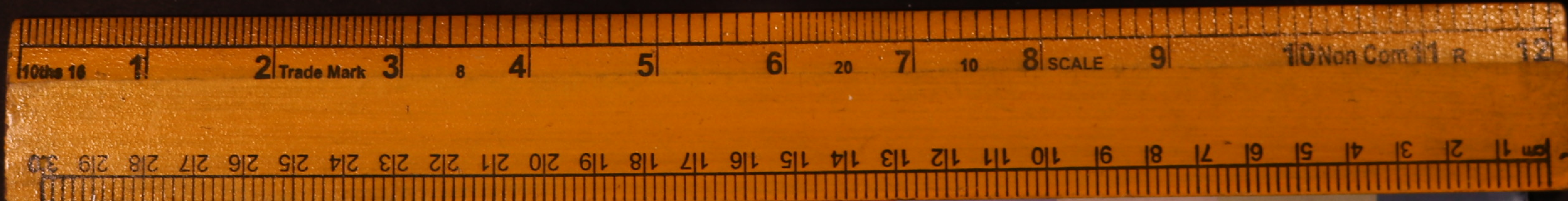
ज़रर नावक नुमा अफ़ई = सांप के समान तीर से हानि

इस्पात = लोहा

मुनफ़अत = फ़ायदा

तवक़्क़ुफ़ = रुकना, ठहरना

ताख़ीर = देर



کماں کھینچی نشانہ لیکے اس نے اتنی شدّت سے
کہ جب ڈھیلی پڑی چٹکی تو نکلا تیر سرعت سے

ترازو بن گیا ناوک فگن کا تیر سینے میں
لگی اک ضرب ایسی سخت دل کے آبگینے میں

کہ فوراً گر پڑا غش کھاکے رن میں کرن سا خوش فن
کیا دھرماتماؤں نے کچھ ایسا دھرم کا پالن

مرا ہے کرن سا مردِ جری اس کے ہیں چھ کارن

ہوئے مسرور پانڈو کرن کے غش کھاکے گرنے پر
ادھر ماتم بپا تھا کوروں کی فوج کے اندر

کمی محسوس کی ارجن نے اپنے دل کے کینے میں
پڑی تھی آج ٹھنڈک اس کے شعلہ خیز سینے میں

کہا پھر اس نے کیشو مورتی سے فخریہ ہنس کر
کہ میں نے کرن کو مارا ہے جو تھا ظالم و خود سر

شری گھنشام بولے مورکھوں جیسی نہ کر باتیں
نہایت پست ہیں اے لاف زن تیری خرافاتیں

مرا ہے کرن سا مردِ جری اس کے ہیں چھ کارن
بتاتا ہوں تجھے، تو غور سے سن عقل کے دشمن

سبب پہلا ہے اس کا، پرتھوی کا رتھ پکڑ لینا
اور اس کا دوسرا کارن ہے اپنی ماں کو دکھ دینا

کوچ کا اس کے چھن جانا ہے اس کا تیسرا کارن
ہے چوتھی وجہ پرشورام کی نفرین اے راجن

سبب ہے پانچواں میرا فریب اور چھل کپٹ کرنا
چھٹا کارن ہے تیری دشمنی، بس کرن کا مرنا

कमाँ खींची निशाना लेके उस ने, इतनी शिद्‌दत से।
कि जब ढीली पड़ी चुटकी, तो निकला तीर सुरअत से।।

तराज़ू बन गया, नावक फ़गन का, तीर सीने में।
लगी इक ज़र्ब ऐसी, सख़्त दिल के आबगीने में।।

कि फ़ौरन गिर पड़ा ग़श खा के, रण में कर्ण सा खुशफ़न।
किया धर्मात्माओं ने कुछ ऐसा धर्म का पालन।।

शिद्‌दत, सुरअत = तेज़ी

नावक फ़गन = तीर चलाने वाला

ग़श खाके = चकरा कर, बेहोश हो कर

मरा है कर्ण सा मर्दे-जरी उसके हैं, छे कारण

हुए मसरूर पांडव, कर्ण के ग़श खा के गिरने पर।
उधर मातम बपा था, कौरवाँ की फ़ौज के अन्दर।।

मसरूर = खुश

कमी मैहसूस की अर्जुन ने, अपने दिल के कीने में।
पड़ी थी आज ठंडक, उसके शोला-ख़ेज़ सीने में।।

कहा फिर उसने केशवमूर्ति से, फ़ख़रिया हंस कर।
कि मैं ने कर्ण को मारा है, जो था ज़ालिम-ओ-खुदसर।।

श्री घनश्याम बोले मूर्खों जैसी ने कर बातें।
निहायत पस्त हैं, ऐ लाफ़ ज़न तेरी खुराफ़ातें।।

मरा है कर्ण सा मर्दे-जरी उसके हैं छे कारण।
बताता हूँ तुझे, तू ग़ौर से सुन, अक़्ल के दुश्मन।।

सबब पहला है उसका, पृथ्वी का रथ पकड़ लेना।
और उसका दूसरा कारण है, अपनी माँ को दुख देना।।

कवच का उस के छिन जाना है इस का तीसरा कारण।
है चौथी वजह, परशूराम की नफ़रीन ऐ राजन।।

सबब है पांचवाँ, मेरा फ़रेब और छल कपट करना।
छटा कारण है तेरी दुश्मनी, बस कर्ण का मरना।।



علاوہ اس کے ارجن، کرن ہے وہ ماہرِ خوش فن — جو اگلے جنم میں بالی تھا، اور تھا، اک بڑا دشمن

اسی بالی کو اگلے جنم میں بھی، میں نے مارا تھا — ادھرمی روپ سے اس کو فنا کے گھاٹ اتارا تھا

یہاں بھی یہ ادھرمی روپ سے مارا گیا رن میں
لکھا تھا اِسکا مرنا، اس طرح ہی دونوں جیون میں

کرن اور کُنتی

حکایت کرن سے مشہور ہے، وہ ایک دانی تھا — سخاوت میں کوئی ہمسر تھا اس کا اور نہ ثانی تھا

چلا تھا سلسلہ جب دونوں منڈل میں لڑائی کا — دلوں میں پل رہا تھا حوصلہ زور آزمائی کا

بروئے کرن اِس اثناء میں کُنتی ایک دن آئی — زباں پر حرفِ مطلب انتہائی پیار سے لائی

کہ میرے لال تو، جو سوریہ کا جاپ کرتا ہے — اور ان کے لطف سے جو دامنِ مقصود بھرتا ہے

انہیں کا پُتر ہے تو، اور میں ہوں والدہ تیری — میں سچ کہتی ہوں تو پیدا ہوا ہے کوکھ سے میری

گواہی سوریہ دیں گے تو اُن سے پوچھ لے بیٹا — میں جو کہتی ہوں میری بات پر تو دھیان دے بیٹا

یدھشٹر اور پانچوں پانڈواں سب تیرے بھائی ہیں — ترے دمساز ہیں، ہمدم ہیں اور تیرے فدائی ہیں

یہ سنکر کرن بولا آج جو میرے بھروسے پر — لڑائی کیلئے نکلا ہے میداں میں، کمر کس کر

अलावा इसके अर्जुन, कर्ण है वह माहिरे-खुश फ़न।
जो अगले जन्म में बाली था, और था, इक बड़ा दुश्मन।।

इसी बाली को अगले जन्म में भी, मैं ने मारा था।
अधर्मी रूप से इस को, फ़ना के घाट उतारा था।।

यहाँ भी यह अधर्मी रूप से, मारा गया रण में।
लिखा था इसका मरना, इस तरह ही दोनों जीवन में।।

कर्ण और कुंती

हिकायत कर्ण से मशहूर है वह एक दानी था।
सख़ावत में कोई हमसर था उस का, और न सानी था।।

चला था सिलसिला जब दोनों मंडल में लड़ाई का।
दिलों में पल रहा था, हौसला ज़ोर आज़माई का।।

बरूए कर्ण इस असना में, कुंती एक दिन आयी।
ज़बाँ पर हर्फ़े-मतलब इन्तेहाई प्यार से लायी।।

कि मेरे लाल तू, जो सूर्य का जाप करता है।
और उनके लुत्फ़ से जो, दामने-मक़सूद भरता है।।

उन्हीं का पुत्र है तू, और मैं हूँ वालिदा तेरी।
मैं सच कहती हूँ तू, पैदा हुआ है कोख से मेरी।।

गवाही सूर्य देंगे, तू उनसे पूछ ले बेटा।
मैं जो कहती हूँ मेरी बात पर, तू ध्यान दे बेटा।।

युधिष्ठिर और पाँचों पांडवाँ सब तेरे भाई हैं।
तेरे दमसाज़ हैं, हमदम हैं, और तेरे फ़िदाई हैं।।

यह सुनकर कर्ण बोला, आज जो मेरे भरोसे पर।
लड़ाई के लिए निकला है, मैदाँ में कमर कस कर।।

हिकायत = क़िस्सा

दामने-मक़सूद = अभिप्रेत

दमसाज़ = घनिष्ट, मित्र
हमदम = घनिष्ट, मित्र

اُسے میں چھوڑ کر سنسار کو کیا منہ دکھاؤں گا
یہ کالک منہ پہ کیسے بے وفائی کی لگاؤں گا

مجھے دنیا کہے گی پانڈوؤں کے خوف و دہشت سے
بچایا کرن نے دامن وغا گاہِ ہلاکت سے

دِگر اس کے، کیا ہے کوروا سے میں نے پیماں
وجے پانڈو پہ دلواؤں گا تمکو، جیت کر میداں

اگر میں مان بھی جاؤں تو کرپا بھیشم اور اشوت
لڑیں گے یہ، انھیں روکے گی آخر کونسی طاقت

مرا منشاء ہے مجھ کو لیکے جو چھ پتر ہیں تیرے
سمجھ کوروں کو تو ویسے ہی یہ سو پتر ہیں میرے

علاوہ اس کے دونوں میں وہاں کافی ہوئیں باتیں
نتیجے میں سنائی کرن نے ماتا کو صلواتیں

غرض کنتی بہت مایوس ہو کر اپنے گھر آئی
مگر ممتا نے دل میں اک خلش اپمان کی پائی

دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرماتماؤں نے

حقیقت میں بہت ہیں کرن کے اسباب مرنے کے
اَدھرمی روپ میں شیرازۂ ہستی بکھرنے کے

کوَچ کُنڈل جو تھا پیدائشی وردان سورج کا
نمایاں جس سے تھا ایک ایک گوشہ اسکی سج دھج کا

کوچ کیا تھا؟ دفاعی شے تھی اک جوشن کی صورت میں
ذریعہ تھا بچاؤ کا وغا گاہِ شجاعت میں

اُسے ارجن کے والد اندرجی نے چھل کپٹ کر کے
کوچ کُنڈل کو حاصل کر لیا بہروپ اک بھر کے

उसे मैं छोड़ कर संसार को क्या मुँह दिखाऊँगा ।
यह कालक मुँह पे कैसे, बे वफ़ाई की लगाऊँगा ।।

मुझे दुनिया कहेगी पांडवों के ख़ौफ़ो-दहशत से ।
बचाया कर्ण ने दामन, वग़ा गाहे-हलाकत से ।।

दिगर इस के किया है कौरवाँ से मैं ने यह पैमाँ ।
विजय पांडव पे दिलवाऊँगा तुमको, जीत कर मैदाँ ।।

अगर मैं मान भी जाऊँ तो कृपा, भीष्म और अश्वत ।
लड़ेंगे यह, उन्हें रोकेगी आख़िर कौन सी ताक़त ।।

मेरा मंशा है मुझ को लेके, जो छे पुत्र हैं तेरे ।
समझ कौरों को तू, वैसे ही यह सौ पुत्र हैं मेरे ।।

अलावा इसके दोनों में, वहाँ काफ़ी हुई बातें ।
नतीजे में सुनाई कर्ण ने, माता को सलवातें ।।

ग़रज़ कुंती बहुत मायूस होकर, अपने घर आयी ।
मगर ममता ने दिल में, इक ख़लिश अपमान की पायी ।।

दिखाई शान ऐसी धर्म की धर्मात्माओं ने

हक़ीक़त में बहुत हैं, कर्ण के असबाब मरने के ।
अधर्मी रूप में शीराज़ाए-हस्ती बिखरने के ।।

कवच कुन्डल जो था, पैदाइशी वरदान सूरज का ।
नुमायाँ जिस से था, एक एक गोशा उसकी सज धज का ।।

कवच क्या था ? दिफ़ाई शै थी, इक जौशण की सूरत में ।
ज़रिया था बचाओं का, वग़ा गाहे-शुजाअत में ।।

उसे अर्जुन के वालिद इन्द्रजी ने छल कपट कर के ।
कवच कुन्डल को हासिल कर लिया. बहरूप इक भर के ।।

पैमां = वादा

मंशा = इरादा

सलवातें = खरी खरी

नुमायाँ = ज़ाहिर

वग़ा गाहे-शुजाअत = मैदाने जंग

بنا کر برہمن کا روپ پہنچے کرن کے در پر　　وہاں سے اندر لے آئے کوچ کنڈل کو ہتیا کر

دکھائی شان ایسی دھرم کی دھرماتماؤں نے　　ادھرمی پن سے مارا کرن کو اُن ناخداؤں نے

اگر یہ قیمتی شئے اس طرح چھینی نہیں جاتی

تو میدانِ وغا میں اس کو ہرگز یوں موت آتی

مگر اک قوتِ برداشت کا نظّارہ دکھلایا

درونہ چاریہ سے کرن نے اک دن کہا آکر　　برہما شستر سکھلا کر، کریں احسان اک مجھ پر

درونہ نے کیا انکار اس فن کو سکھانے سے　　اٹھا مایوس ہو کر کرن ، ان کے آستانے سے

وہاں سے کرن پرشورام کے استھان پر پہنچا　　بتا کر برہمن خود کو، تلمّذ کا شرف چاہا

برہما شستر" پرشورام نے سکھلا دیا اس کو　　برہمن جان کر ہر ایک گُر بتلا دیا اس کو

اسی اثناء میں اک دن پیش آیا ایسا اک منظر　　گروجی سو رہے تھے کرن کے زانوں پہ سر رکھ کر

کہیں سے ایک کیڑا زیر زانو کرن کے آیا　　کیا سوراخ زانو میں بہت دکھ اس نے پہنچایا

مگر جنبش نہ کی یہ سوچ کر مردِ دلاور نے　　گرو کی آنکھ کھل جائے نہ میرے ہلنے جُلنے سے

یہاں تک دوسری جانب سے وہ کیڑا نکل آیا　　مگر اک قوت برداشت کا نظّارہ دکھلایا

बनाकर ब्राह्मण का रूप पहुँचे कर्ण के दरपर।
वहाँ से इन्द्र ले आए, कवच कुन्डल को हथिया कर।।

दिखाई शान ऐसी धर्म की, धरर्मात्माओं ने।
अधर्मी पन से मारा कर्ण को, उन ना-खुदाओं ने।।

अगर यह क़िमती शै इस तरह छीनी नहीं जाती।
तो मैदाने-वग़ा में उस को हरगिज़, यूँ न मौत आती।।

कीमती शै = मैहंगी वस्तु

मगर इक कुव्वते-बरदाश्त का नज़्ज़ारा दिखलाया

द्रोणाचार्य से, कर्ण ने इक दिन कहा आकर।
ब्रह्मा शस्त्र सिखलाकर, करें एहसान इक मुझपर।।

द्रोणा ने किया इन्कार, इस फ़न को सिखा़ने से।
उठा मायूस होकर कर्ण, उन के आस्ताने से।।

मायूस = निराश
आस्ताने = दरबार

वहाँ से कर्ण परशूराम के स्थान पर पहुँचा।
बताकर ब्राह्मण खुद को, तलम्मुज़ का शरफ़ चाहा।

तलम्मुज़ का शरफ़ = चेला बन्ने की ईज़्ज़त

"ब्रह्मा शस्त्र" परशूराम ने सिखला दिया उस को।
ब्राह्मण जान कर हर एक़ गुर बतला दिया उस को।।

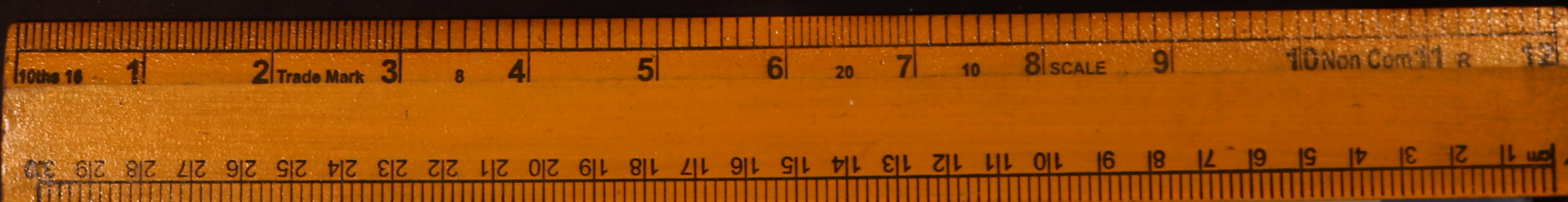
इसी असना में इक दिन, पेश आया ऐसा इक मंज़र।
गुरूजी सो रहे थे, कर्ण के जा़नों पे सर रखकर।।

कहीं से एक कीड़ा ज़ेरे-ज़ानू कर्ण के आया।
किया सुराख़ जा़नू में बहुत दुख उस ने पहुँचाया।।

ज़ेरे जानू = मांड़ी के नीचे

मगर जुन्बिश न की यह सोच कर मर्दे-दिलावर ने।
गुरू की आँख खुल जाए न मेरे हिलने जुलने से।।

यहाँ तक दूसरी जानिब से, वह कीड़ा निकल आया।
मगर इक कुव्वते-बरदाश्त का नज़्ज़ारा दिखलाया।।



کھلی جب آنکھ پرشورام جی کی خوابِ غفلت سے
تو دیکھا کرن کے زانو سے خوں بہتا ہے شدت سے

گرو نے کرن سے پوچھا کہ آخر یہ ہوا کیا ہے
ترا زانو ہے خوں سے تربتر یہ ماجرا کیا ہے

بتایا کرن نے جب واقعہ تو بولے پرشو جی
کہ تیری قوتِ برداشت پر اب شک ہے مجھ کو بھی

تو چھتری ہو تو سکتا ہے برہمن ہو نہیں سکتا
برہمن سے تحمّل، سُن اے پُرفن ہو نہیں سکتا

غرض جو کچھ سکھائی تھی گرو نے وِدّیا اس کو
وہ سب کچھ چھن گئی، آخر نہ کچھ بھی مل سکا اس کو

کبھی پرتگیّا کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرتا ہے

اِدھر تھے گفتگو میں محو ارجن اور گردھاری
اُدھر پہنچا جہاں تھا کرن، دریودھن بصد زاری

کہا رو، رو کے دریودھن نے اے شیرِ وغا رن میں
پڑا ہے بے حس و حرکت نہیں ہے جان کیا تن میں

کھڑا ہو، جنگ کر، چھتری تو مر کر بھی نہیں مرتا
کبھی پرتگیّا کو بھنگ اپنی وہ نہیں کرتا

ترے بن، کرن میری فوج کی ہے آج یہ حالت
کہ ہو جاتی ہے جیسے، بن پتی کے بیاہتا عورت

علاوہ اس کے شوبھا رات کی ہوتی ہے تاروں سے
بنا سورج کے دن، بے لطف ہوتا ہے نظاروں سے

اسی پرکار تجھ بن میری سینا کا ہے اب عالم
ترے دھرتی پہ گرنے سے بپا ہے فوج میں ماتم

खुली जब आँख परशूरामजी की ख़्वाबे-ग़फ़लत से।
तो देखा कर्ण के ज़ानू से खूँ बहता है शिद्दत से।।

गुरूने कर्ण से पूछा कि आख़िर यह हुआ क्या है।
तेरा ज़ानू है खूँ से तर-बतर यह माजरा क्या है।।

बताया कर्ण ने जब वाक़िया तो बोले परशूजी।
कि तेरी कुव्वते-बरदाश्त पर अब शक है मुझ को भी।।

तू क्षत्रीय हो तो सकता है ब्राह्मण हो नहीं सकता।
ब्राह्मण से तहम्मुल, सुन ऐ पुर फ़न हो नहीं सकता।।

ग़रज़ जो कुछ सिखाई थी गुरू ने विद्या उसको।
वह सबकुछ छिन गई आख़िर, न कुछभी मिल सका उसको।।

शिद्दत = तेज़ी

तर-बतर = भीगा हुआ
ज़ानू = रान

कुव्वते-बरदाश्त = सहन करने की शक्ति

कभी प्रतिज्ञा को भंग अपनी वह नहीं करता

इधर थे गुफ़्तगू में महव, अर्जुन और गिरधारी।
उधर पहुँचा जहाँ था कर्ण, दुर्योधन बसद ज़ारी।।

कहा रो रो के दुर्योधन ने, ऐ शेरे-वग़ा रण में।
पड़ा है बेहिसो-हरकत, नहीं है जान क्या तन में।।

खड़ा हो, जंग कर, क्षत्रीय तो मर कर भी नहीं मरता।
कभी प्रतिज्ञा को, भंग अपनी वह नहीं करता।।

तेरे बिन कर्ण, मेरी फ़ौज की है आज यह हालत।
कि हो जाती है जैसे, बिन पति के ब्याहता औरत।।

अलावा इसके शोभा, रात की होती है तारों से।
बिना सूरज के दिन, बे लुत्फ़ होता है नज़ारों से।।

इसी प्रकार तुझ बिन, मेरी सेना का है अब आलम।
तेरे धरती पे गिरने से, बपा है फ़ौज में मातम।।

یہ کہہ کر خوب دھاڑیں مار کر روتا تھا دریودھن　　منہ اپنا آنسوؤں سے دم بدم دھوتا تھا دریودھن

یونہی کرتا ہوا وہ بین پھر واپس چلا آیا
لیا فوجوں کا پھر سے جائزہ اور دل کو سمجھایا

کرن کا آخری امتحاں

پڑا تھا کرن حالِ نزع میں دھرتی کی چھاتی پر　　مخاطب ہو کے ارجن سے کہا یوں شیام نے ہنسکر

کہ بس اب آخری ہے کرن کا اک امتحاں باقی　　چڑھانے کے لئے ہے سان پر اب اک سناں باقی

چلے پھر بھیس میں دونوں برہمن اور بالک کے　　قدم لرزیدہ پہنچے روپ میں وہ دونوں بھکشک کے

کہا پھر کرن سے گھنشام جی نے اے سخی دانی　　سخاوت میں نہیں ہے کوئی دنیا میں ترا ثانی

بصد امیّد میں اے کرن تیرے پاس آیا ہوں　　تمنّاؤں کی دنیا ایک اپنے ساتھ لایا ہوں

جواں بیٹی کی مجھ کو فکر تیرے در پہ لائی ہے　　سہارا دے مجھے اے کرن، اب تیری دہائی ہے

گرہ میں کچھ نہیں، کیسے رچاؤں بیاہ بیٹی کا　　کوئی اچھا سا بر ملتا نہیں، قسمت کی ہیٹی کا

گرہ میں ہو اگر دام و درم تو سینکڑوں بر ہیں　　یہاں اک دو کی کیا گنتی، جو زر ہو تو بہتر ہیں

ضرورت ہے مجھے زر کی مری پوری ضرورت کر　　ترس کھا ضعفِ پیری پر، مری کچھ تو اعانت کر

यह कहकर खूब धाड़ें मार कर रोता था दुर्योधन।
मुँह अपना आँसुओं से दम ब दम धोता था दुर्योधन।।

यूँही करता हुआ वह बैन, फिर वापस चला आया।
लिया फ़ौजों का फिर से जाएज़ा, और दिल को समझाया।।

कर्ण का आख़री इम्तेहान

पड़ा था कर्ण हाले-नज़ा में धरती की छाती पर।
मुख़ातिब होके अर्जुन से कहा यूँ श्याम ने हंसकर।

कि बस अब आख़री है, कर्ण का इक इम्तेहाँ बाक़ी।
चढ़ाने के लिए है सान पर, अब इक सनाँ बाक़ी।।

चले फिर भेस में दोनों ब्राह्मण और बालक के।
क़दम लरज़ीदा पहुँचे, रूप में वह दोनों भिक्षुक के।।

कहा फिर कर्ण से घनश्यामजी ने, ऐ सख़ी दानी।
सख़ावत में नहीं है कोई दुनिया में तेरा सानी।।

बसद उम्मीद मैं ऐ कर्ण, तेरे पास आया हूँ।
तमन्नाओं की दुनिया एक अपने साथ लाया हूँ।।

जवाँ बेटी की मुझ को फ़िक्र तेरे दर पे लाई है।
सहारा दे मुझे ऐ कर्ण, अब तेरी दुहाई है।।

गिरह में कुछ नहीं, कैसे रचाऊँ ब्याह बेटी का।
कोई अच्छा सा बर मिलता नहीं, क़िस्मत की हेटी का।।

गिरह में हो अगर दामो-दिरम, तो सैंकड़ों बर हैं।
यहाँ इक दो की क्या गिनती, जो ज़र हो तो बहत्तर (७२) हैं।।

ज़रूरत है मुझे ज़र की, मेरी पूरी ज़रूरत कर।
तरस खा ज़ौफ़े-पीरी पर, मेरी कुछ तो एआनत कर।।

हाले-नज़ा = दम तोड़ने की घड़ी

इम्तेहाँ = परीक्षा
सान = धार लगाने का पत्थर
सनाँ = भाला

दानी = सखी
सानी = दुसरा

ज़र = धन

ज़ोफ़े-पीरी = बुढ़ापे की कमज़ोरी

یہ سن کر کرن بولا چُور ہے زخموں سے تن میرا
سکت باقی نہیں اٹھنے کی پھنکتا ہے بدن میرا

ابھی تو کچھ نہیں ہے میرے پلّے جیب خالی ہے
مجھے افسوس ہے تو ایسے عالم میں سوالی ہے

نہ ہو مایوس، جا میرے مکاں پر دے صدا سائل
مری بیوی کرے گی تیرا پورا مدّعا سائل

کرن کی سخاوت اپنے عروج پر

سُنیں سائل نے باتیں کرن کی تو طنز سے بولا
بڑے چبھتے ہوئے انداز میں اپنا دہن کھولا

میں سمجھا تھا تجھے، تو اک شجر ہے ایسا بار آور
بھرم رکھتا ہے جو اپنا، ہر اک موسم میں پھل دیکر

مگر یہ حسن ظن میرا تھا، اس پر تبصرہ کیسا
توقع کے طمانچوں کا گِلا کیا، تذکرہ کیسا؟

گِراں گزری مزاجِ کرن پر، باتیں یہ سائل کی!
تڑپ محسوس کی چہرے سے سائل نے بھی بسمل کی

کہا پھر کرن نے دنداں جُڑے ہیں میرے گوہر سے
وہ ہے پتھر اٹھالا، توڑ لے تو دانت پتھر سے

کہا سائل نے پیری کے سبب مجھ میں نہیں طاقت
کہ دانتوں کو ترے توڑوں یہ ہے مجھ میں کہاں قوت

یہ سن کر کرن خود ہی سنگ لینے کیلئے کھسکا
بمشکل وہ کھسکتا رینگتا اس سنگ تک پہنچا

پھر اس نے اپنے ہی ہاتھوں سے اپنے دانت کو توڑا
زمانے کے لئے نقشِ سخاوت دہر میں چھوڑا

यह सुनकर कर्ण बोला चूर है ज़ख्मों से तन मेरा।
सकत बाक़ी नही उठने की, फूँकता है बदन मेरा।।

अभी तो कुछ नहीं है मेरे पल्ले जेब ख़ाली है।
मुझे अफ़सोस है तू, ऐसे आलम में सवाली है।।

न हो मायूस, जा मेरे मकाँ पर दे सदा साईल।
मेरी बीवी करेगी, तेरा पूरा मुद्दआ साईल।।

कर्ण की सख़ावत अपने उरूज पर

सुनीं साईल ने बातें कर्ण की तो तंज़ से बोला।
बड़े चुभते हुए अंदाज़ में अपना दहन खोला।।

मैं समझा था तुझे, तू इक शजर है ऐसा बारआवर।
भरम रखता है जो अपना, हर इक मौसम में फल देकर।।

मगर यह हुस्ने-ज़न मेरा था, इसपर तबसेरा कैसा।
तवक़्क़ो के तमाचों का गिला क्या, तज़केरा कैसा।।

गिराँ गुज़री मिज़ाजे कर्ण पर, बातें यह साईल की।
तड़प मैहसूस की चेहरेसे, साईल ने भी बिसमिल की।।

कहा फिर कर्ण ने, दनदाँ जुड़े हैं मेरे गौहर से।
वह है पत्थर उठाला, तोड़ ले तू दाँत पत्थर से।।

कहा साईल ने पीरी के सबब, मुझ में नहीं ताक़त।
कि दाँतों को तेरे तोड़ूँ, यह है मुझ में कहाँ कुव्वत।।

यह सुनकर कर्ण खुद ही, संग लेने के लिए खिसका।
ब मुश्किल वह खिसकता, रेंगता, उस संग तक पहुँचा।।

फिर उसने अपने ही हाथों से अपने दाँत को तोड़ा।
ज़माने के लिए नक़्शे-सख़ावत दहर में छोड़ा।।

सकत = शक्ति
मुद्दआ = इच्छा
तन्ज़ = व्यंग
बार आवर = फलदार
हुस्ने-ज़न = अच्छे ख़याल
तवक़्क़ो = आशा, उम्मीद
साईल = भिक्षुक
दनदाँ = दाँत
संग = पत्थर
नक़्शे सख़ावत = दानशीलता के निशान
दहर = जंग

دیئے سائل کو ہیرے اور جواہر توڑ کر جس دم　　تو سائل آیا اصلی روپ میں ہو کر خوش و خرّم

شری گھنشام جی تھے برہمن کے روپ میں ابتک
جسے سمجھا تھا بھکشک اس سمے تک کرن نے بیشک

کرن کا سفرِ آخرت

نظارہ دیکھ کر جود و سخا کا بولے بنواری　　رہا فیضِ سخاوت تیرا ہر اک دور میں جاری

میں تجھ سے آج خوش ہوں کرن مجھ سے مانگ کوئی ور　　میں راضی ہوں ترے جود و سخا کا دیکھ کر منظر

کئی وردان اس نے صاحبِ اعجاز سے مانگے　　بقدرِ ظرف اک اک ور کئی انداز سے مانگے

علاوہ اس کے اک ور اور مانگا پھر مُراری سے　　لجاجت سے خوشامد سے نہایت انکساری سے

کہ اے بھگوان مجھ کو داہ کیجے ایسی دھرتی پر　　جہاں اب تک ہوا ہو کوئی بھی جل کر نہ خاکستر!

کرشنا جی نے یہ وردان بھی منظور فرمایا　　نظارّہ خلق و شفقت کا جہاں والوں کو دکھلایا

پھر اس کے بعد ہی راہِ عدم کا چل پڑا راہی
ہوئی اس راہ پر چلنے میں مطلق پھر نہ کوتاہی

दिये साईल को हीरे और जवाहिर तोड़ कर जिस दम।
तो साईल आया असली रूप में, होकर खुशो-खुर्रम।।

श्री घन्श्याम जी थे ब्राह्मण के रूप में अब तक।
जिसे समझा था भिक्षुक उस समय तक कर्ण ने बेश्क।।

कर्ण का

सफ़र-ए-आख़ेरत

नज़ारा देखकर जूदो-सख़ा का बोले बनवारी।
रहा फ़ैज़े-सख़ावत तेरा, हर इक दौर में जारी।।

जूदो-सख़ा = ख़ैर ख़ैरात, ईनआम

मैं तुझ से आज खुश हूँ, कर्ण मुझ से माँग कोई वर।
मैं राज़ी हूँ तेरे जूदो-सख़ा का देख कर मंज़र।।

कई वरदान उस ने, साहेबे-एजाज़ से मांगे।
बक़द्रे-ज़र्फ़ इक इक वर कई अन्दाज़ से मांगे।।

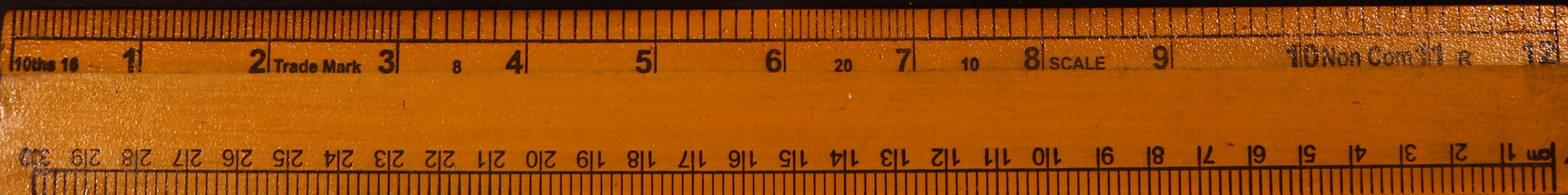
अलावा इस के इक वर और मांगा फिर मुरारी से।
लजाजत से, खुशामद से, निहायत इन्केसारी से।।

कि ऐ भगवान मुझ को, 'दाह' कीजे ऐसी धरती पर।
जहाँ अब तक हुआ हो, कोई भी जल कर न ख़ाकिस्तर।।

ख़ाकिस्तर = जलकर राख होना

कृष्णा जी ने यह वरदान भी मंजूर फ़रमाया।
नज़्ज़ारा खुल्क़ो-शफ़क़्त का, जहाँ वालों को दिखलाया।।

फिर इसके बाद ही, राहे-अदम का चल पड़ा राही।
हुई इस राह पर चलने में मुतलक़, फिर न कोताही।।



چتا اس کی جلائی نعش اپنے ہاتھ پر رکھکر

جہانِ خیر و شر سے کرن آخر کر گیا رحلت
حیاتِ چند روزہ کی کشاکش سے ملی فرصت

اِدھر تھے نند لالہ ایسی دھرتی کے تجسّس میں
کہ ہمسر ہو نہ اُس جیسی زمیں کوئی تقدّس میں

جہاں کرنا تھا ان کو، اک جری ہمّت کو خاکستر
جو تھا چرخِ وغا کا سب سے روشن نیّرِ اکبر

مگر ایسی زمیں جگ میں نہ رادھے شیام نے پائی
چتا دے کر جہاں پوری کریں وعدہ کی سچّائی

بہت فکر و نظر کے بعد پہنچے اس نتیجے پر
چتا اس کی جلائیں نعش اپنے ہاتھ پر رکھکر

خیالِ شیام عملی شکل میں پھر یوں ہوا ظاہر
جلایا اپنے دائیں ہاتھ پر پھر کرن کو آخر

گگن سے پھول برسایا چتا پر دیوتاؤں نے
مقدّس پاک روحوں اور سب دھرماتماؤں نے

चिता उस की जलाई नाश अपने हाथ पर रखकर

जहाने-ख़ैरो-शर से कर्ण आख़िर कर गया रहलत।
हयाते-चंद रोज़ा की, कशाकश से मिली फुरसत।।

इधर थे नन्दलाला, ऐसी धरती के तजस्सुस में।
कि हमसर हो न उस जैसी, ज़मीं कोई तक़द्दुस में।।

जहाँ करना था उनको, इक जरी हिम्मत को ख़ाकिस्तर।
जो था चर्ख़े-वग़ा का, सब से रौशन नय्यरें-अकबर।।

मगर ऐसी ज़मीं जग में, न राधेश्याम ने पाई।
चिता देकर जहाँ पूरी करें, वादे की सच्चाई।।

बहुत फ़िक्रो-नज़र के बाद, पहुँचे इस नतीजे पर।
चिता उस की जलाएँ, नाश अपने हाथ पर रखकर।।

ख़याले-श्याम अमली शक्ल में, फिर यूँ हुआ ज़ाहिर।
जलाया अपने दाएं हाथ पर, फिर कर्ण को आख़िर।।

गगन से फूल बरसाया, चिता पर देवताओं ने।
मुक़द्दस पाक रूहों और सब धर्मात्माओं ने।।

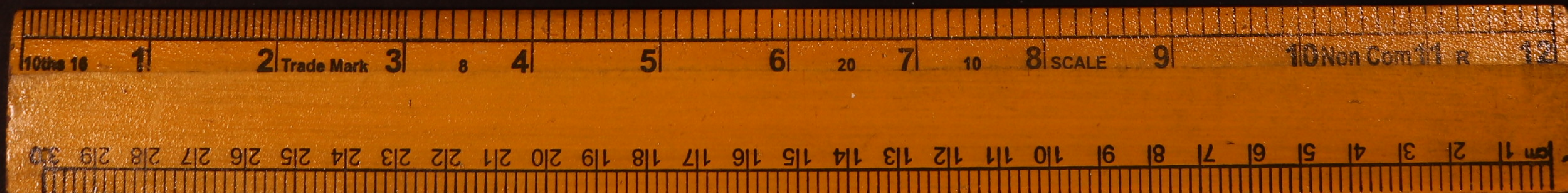
ख़ैरो-शर = नेकी और बदी
कशाकश = खींचा तानी
तजस्सुस = तलाश,जुस्तजू
तक़द्दूस = पवित्रता

नय्यरे-अकबर = बड़ा सितारा

फ़िक्रो-नज़र =सोच समझ
नाश = लाश

مہابھارت کا چوتھا
کمانڈر انچیف، راجہ شلّ
میدانِ عمل میں

महाभारत
का चौथा
कमान्डर-इनचीफ़
राजा शल्ल
मैदाने-अमल में



راجہ شلؔ

سیناپتی کے منصب پر

مہایُدھ نے دو ہفتہ سے زیادہ طول تو کھینچا
مگر ابتک وہی تھا جنگ کے میدان کا نقشہ

وہی سرگرمئ جنگ وجدل تھی روزِ اوّل سی
وہی خونریزیاں جاری تھیں ابتک قتل و غارت کی

مگر اتنے دنوں کی جنگ میں رنچھتر کے اندر
یہی بس کام آئے فوجِ دریودھن کے تین افسر

یہ افسر بے گماں تینوں سپہ سالار اعلیٰ تھے
فنونِ جنگ کے ماہر تھے اور سردار اعلیٰ تھے

سپہ سالارِ اوّل بھیشم سب سے پہلے کام آئے
سرِ میداں خدنگی سیج پر آرام فرمائے

پھر اسکے بعد کام آئے درونہ چاریہ رن میں
حقیقت میں جو استادوں کے تھے استاد ہر فن میں

سپہ سالار آخر تیسرا بھی رن میں کام آیا
اجل کا تیسرا پھر کرن کے حصّے میں جام آیا

بہت افسوس دریودھن کو تھا تینوں کے مرنے کا
یہی اک راستہ تھا بحرِ غم سے پار اترنے کا

کہ راجہ شلؔ کو سیناپتی کا منصبِ اکبر
عطا کر کے اُتارا جائے کل میدان کے اندر

राजा शल्ल

सेनापति के मनसब पर

महायुद्ध ने दो हफ़्त्हा से, ज़्यादा तूल तो खींचा।
मगर अबतक वही था, जंग के मैदान का नक़्शा।।

वही सरगरमिए-जंगो-जदल थी, रोज़े-अव्वल सी।
वही ख़ूँरेज़ियाँ जारी थीं अबतक, क़त्लो-ग़ारत की।।

मगर इतने दिनों की जंग में रणक्षेत्र के अन्दर।
यही बस काम आए, फ़ौजे दुर्योधन के तीन अफ़सर।।

यह अफ़सर बे-गुमाँ तीनों, सिपह सालारे-आला थे।
फुनूने-जंग के माहिर थे, और सरदारे-आला थे।।

सिपह सालारे-अव्वल भीष्म, सब से पहले काम आए।
सरे-मैदाँ ख़दंगी सेज पर आराम फ़रमाए।।

फिर इसके बाद काम आए, द्रोणाचार्य रण में।
हक़ीक़त में जो उस्तादों के थे, उस्ताद हर फ़न में।।

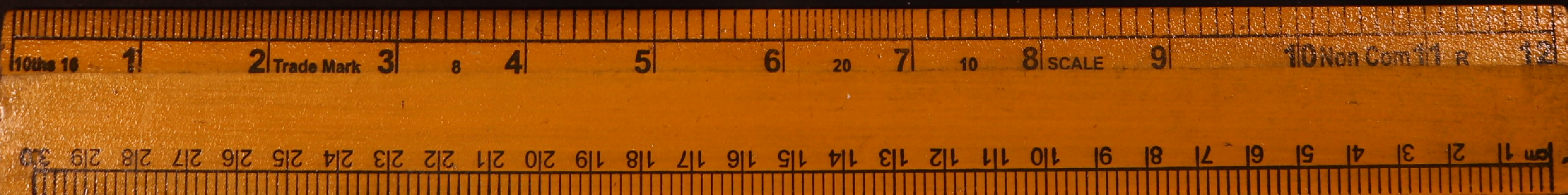
सिपह सालार आख़िर तीसरा भी रण में काम आया।
अजल का तीसरा फिर कर्ण के हिस्से में जाम आया।।

बहुत अफ़सोस दुर्योधन को था तीनों के मरने का।
यही इक रास्ता था बहरे-ग़म से पार उतरने का।।

कि राजा शल्ल को सेनापति का मनसबे-अकबर।
अता करके उतारा जाए कल मैदान के अन्दर।।

अव्वल = पहला

बेगुमाँ = बेशक



نیا تھا شلّ کا انداز فوجوں کو لڑانے کا

ابھی تک گیارہ اکشونی سپاہی کام آئے تھے — غمِ ہستی سے چھٹکارا ملا آرام پائے تھے

دلیرانِ وغا میں افراتفری جیسی حالت تھی — نظامِ فوج میں تنظیمِ نو کی پھر ضرورت تھی

ہوئیں پھر جمع جو تھیں منتشر، طرفین کی فوجیں — ملا قطرے سے قطرہ بن گئیں ظلمات کی موجیں

محاذِ جنگ تنورِ وغا سے گرم تھا سارا — نظر آتا تھا ہر جا قتل و خونریزی کا نظارہ

وغا میں شلّ کی سرکردگی میں، کَورَ کا لشکر — نبرد آرا تھا فوجِ پانڈواں سے رن کی دھرتی پر

نیا تھا شلّ کا انداز، فوجوں کو لڑانے کا — لیا ہر مورچے سے کام دشمن کو مٹانے کا

ہدایت مل رہی تھی ہر روش پر لڑنیوالوں کو — رکھا تھا نگہ میں محفوظ سب دشمن کی چالوں کو

دگر اسکے وہ خود بھی برسرِ پیکار تھا رن میں — بہ حُسنِ کرّ و فر، اغیار سے دوچار تھا رن میں

قدم پڑتا جہاں اس کا وہاں بھونچال آجاتا — دہانِ حربۂ آتش فشاں سے آگ برساتا

کسی میں کب یہ جرأت تھی کہ اسکے سامنے آئے — نبرد آرا ہو اور فنی مہارت اپنی دکھلائے

بہادر سورما بھی سامنے آنے سے گھبراتے
جدھر بھی لوٹتا کُشتوں کے پشتے دم میں لگ جاتے

नया था शल्ल का अंदाज़ फ़ौजों को लड़ाने का

अभी तक ग्यारा अक्षवणि सिपाही काम आए थे।
ग़मे-हस्ती से छुटकारा मिला, आराम पाए थे।।

दिलेराने-वग़ा में अफ़रातफ़री जैसी हालत थी।
निज़ामे-फ़ौज में तंज़ीमे-नौ की फिर ज़रूरत थी।।

हुई फिर जमा जो थीं मुन्तशिर तरफ़ैन की फ़ौजें।
मिला क़तरे से क़तरा बन गई जुलमात की मौजें।।

महाज़े-जंग तन्नूरे-वग़ा से गर्म था सारा।
नज़र आता था हर जा, कत्लो-खूँरेज़ी का नज़्ज़ारा।।

वग़ा में शल्ल की सरकरदगी में, कौर का लश्कर।
नबर्द आरा था फ़ौजे-पांडवॉ से, रण की घरती पर।।

नया था शल्ल का अंदाज़, फ़ौजों को लड़ाने का।
लिया हर मोर्चे से काम, दुश्मन को मिटाने का।।

हिदायत मिल रही थी, हर रविश पर लड़नेवालों को।
रखा था निग्ह में महफ़ूज़ सब दुश्मन की चालों को।।

दिगर इसके वह खुद भी, बरसरे-पैकार था रण में।
ब हुस्ने-कर्रोफ़र, अग़यार से दोचार था रण में।।

क़दम पड़ता जहाँ उसका, वहॉ भोंचाल आजाता।
दहाने-हरबाए-आतिश फ़िशाँ से आग बरसाता।।

किसी में कब यह जुरअत थी, कि उसके सामने आए।
नबर्द आरा हो और फ़न्नी महारत अपनी दिखलाए।।

बहादुर सूरमा भी सामने आने से घबराते।
जिधर भी टूटता कुश्तों के पुश्ते-दम में लग जाते।।

मुन्तशिर = बिखरी हुई
तरफ़ैन = दोनों तरफ़ की
जुलमात = समुद्र
तन्नूरे-वग़ा = जंग की भट्टी

सरकरदगी = मातेहत

हिदायत = आदेश

हरबा-ए-अतिश = अग्निबाण
जुरअत = हौसला



نکُل سے کرن کے بیٹوں کی زور آزمائی

اِدھر اک سمت جاری تھی لڑائی آج شدت سے
شکھنڈی، سائکی بھی لڑ رہے تھے پوری قوت سے

اسی دن تین بیٹے کرن کے میداں میں کام آئے
نکُل کے ہاتھ تینوں نجات آلام سے پائے

نکُل کے سامنے جس وقت آیا کرن کا بیٹا
گلے پر زخم کھایا مر کے فرشِ خاک پر لیٹا

بڑھا پھر دوسرا بیٹا نہایت جوش میں آکر
مگر اک وار ہی میں گر پڑا گھوڑے سے غش کھا کر

یہ دونوں مر گئے تو تیسرا فرزند بَل کھا کر
لئے تیغِ دو دم جھپٹا یہ کہہ کر اے بتِ خود سر

سنبھل اب میری باری ہے میں تجھ پہ وار کرتا ہوں
ترے جیون کا پیمانہ قضا کی مے سے بھرتا ہوں

یہ کہہ کر تیغ کو تولا بسرعت پینترا کاٹا
چمک اور ہول دکھلا کر پیاپئے کر دیا حملہ

مثالِ برق ہر ہر وار پر تلوار لہرائی
نکُل کی ساری چترائی ہوا ہوتی نظر آئی

پیاپئے وار سے فوراً ہی دم جارح کا بھر آیا
کمی یورش میں آئی اور وہ تھکتا نظر آیا

دفاع و جارحیت سے نکُل نے پائی کچھ مہلت
بدل کر پینترا حالات کو بدلا بایں جرأت

اسی دم بھر کی مہلت نے اُسے بخشی توانائی
بساطِ جنگِ مغلوبہ الٹتی سی نظر آئی

کہ اک بجلی سی کوندی دفعتاً یوں پشتِ مرکب سے
صدائے آفریں نکلی شری گھنشام کے لب سے

नकुल से कर्ण के बेटों की ज़ोर आज़माई

इधर इक सम्त जारी थी, लड़ाई आज शिद्दत से।
शिखण्डि, साईकी, भी लड़ रहे थे पूरी कुव्वत से।।

उसी दिन तीन बेटे कर्ण के, मैदाँ में काम आए।
नकुल के हाथ यह तीनों, नजात आलाम से पाए।।

नकुल के सामने जिस वक़्त आया कर्ण का बेटा।
गले पर ज़ख़्म खाया और मर कर ख़ाक पर लेटा।।

बढ़ा फिर दूसरा बेटा निहायत जोश में आकर।
मगर इक वार ही में, गिर पड़ा घोड़े से ग़श खाकर।।

यह दोनों मरगए तो, तीसरा फ़रज़न्द बल खाकर।
लिए तेग़े-दोदम झपटा, यह कहकर ऐ बुते-खुदसर।।

संभल अब मेरी बारी है, मैं तुझ पर वार करता हूँ।
तेरे जीवन का पैमाना, क़ज़ा की मय से भरता हूँ।।

यह कहकर तेग़ को तोला, बसुरअत पैंतरा काटा।
चमक और हौल दिखला कर, पिया-पै करदिया हमला।।

मिसाले-बर्क़ हर हर वार पर तलवार लहराई।
नकुल की सारी चतुराई, हवा होती नज़र आई।।

पिया-पै वार से फ़ौरन ही, दम जारह का भर आया।
कमी यूरिश में आई, और वह थकता नज़र आया।।

देफ़ा-ओ-जारेहैयत से नकुल ने पायी कुछ मोहलत।
बदल कर पैंतरा, हालात को बदला बई जुरअत।।

इसी दम भर की मोहलत ने, उसे बख़्शी तवानाई।
बिसाते-जंगे-मग़लूबा, उलटती सी नज़र आई।।

कि इक बिजली सी कौंदी दफ़अतन यूँ पुश्ते-मरकब से।
सदाए-आफ़रीं निकली, श्री घनश्याम के लब से।।

नजात = मुक्ति

फ़रजन्द = बेटा
बुते-खुदसर = घमंडी

पिया-पै = बार बार

देफ़ा-ओ-जारेहैयत = हमला और बचाव

پلک جھپکی نہ تھی تیغِ نکُل اس طرح لہرائی
مثالِ برق چمکی اور مغفر کی طرف آئی

مگر اس نے چھپایا اپنا مغفر ڈھال کے نیچے
چھپے جیسے کوئی اک عنکبوتی جال[1] کے پیچھے

سپر پر جب گری سیفِ قضا تو ڈھال کو توڑا
پھر اسکے بعد رشتہ مغفرِ بدبخت سے جوڑا

پھٹا مغفر تو لی پھر کاسۂ سر کی خبر اس نے
لہو کے ساتھ چاٹا شوق سے پھر مغزِ سر اس نے

غرض تیغِ نکُل نے گھاٹ پر پہنچا دیا اسکو
اجل نے اپنے پہلو میں خوشی سے لے لیا اسکو

راجہ شَلّ اور بھیم کی زور آزمائی

حقیقت ہے فنِ جنگ و جدل میں شَلّ سے بڑھکر
نہ تھا اس وقت کوئی دوسرا رن ویر دھرتی پر

یہی تھی وجہ جو سیناپتی کا منصبِ اکبر
یُدھشٹر نے سنبھالا کرشن جی کے حکم و ایما پر

کشن بولے درونہ، کرن، کرپہ، بھیشم، دریودھن
ہے ان میں سب سے بڑھکر شَلّ راجہ ماہرِ خوش فن

علاوہ انکے ارجن بھیم اور سہدیو یہ سارے
ابھی تو طفلِ مکتب شَلّ کے آگے ہیں بیچارے

خیالِ شیام کے بالعکس لیکن رن کی دھرتی پر
دکھایا بھیم نے یوں جرأتِ بے مثل کا منظر

کہ فوراً پل پڑا وہ شَلّ پر طوفان کی مانند
گدا کی ضرب سے رتھ پھٹ گیا برکان کی مانند

مگر اسنے لگا کر جست ضربِ بھیم سے پہلے
بچائی جاں ادھر اپنی، ادھر ٹکڑے اڑے رتھ کے

[1] مکڑی کا جال

पलक झपकी न थी, तेग़े-नकुल इस तरह लहराई।
मिसाले-बर्क़ चमकी, और मिग़फ़र की तरफ़ आई।।

मगर उस ने छिपाया अपना मिग़फ़र ढाल के नीचे।
छिपे जैसे कोई इक अंकबूती जाल के नीचे।।

सिपर पर जब गिरी सैफ़े-क़ज़ा तो ढाल को तोड़ा।
फिर इसके बाद रिश्ता मिग़फ़रे-बद बख़्त से जोड़ा।।

फटा मिग़फ़र तो ली फिर कासा-ए-सरकी ख़बर उस ने।
लहू के साथ चाटा, शौक़ से फिर मग़ज़े-सर उसने।।

ग़रज़ तेग़े-नकुल ने, घाट पर पहुँचा दिया उसको।
अजल ने अपने पहलू में, खुशी से ले लिया उसको।।

राजा शल्ल और भीम की ज़ोर आज़माई

हक़ीक़त है फ़ने-जंगो-जदल में, शल्ल से बढ़कर।
न था उस वक़्त कोई दूसरा, रण वीर धरती पर।।

यही थी वजह, जो सेनापति का, मंसबे-अकबर।
युधिष्ठिर ने संभाला, कृष्ण जी के हुक्मो-ईमॉ पर।।

किशन बोले द्रोणा, कर्ण, कृपा, भीष्म, दुर्योधन।
है उनमें सब से बढ़कर, शल्ल राजा माहिरे-खुश फ़न।।

अलावा उनके अर्जुन, भीम और सहदेव, यह सारे।
अभी तो तिफ़ले-मकतब, शल्ल के आगे हैं बेचारे।।

ख़याले-श्याम के बिलअक्स, लेकिन रण की धरती पर।
दिखाया भीम ने यूँ, जुरअते-बे मिस्ल का मंज़र।।

कि फ़ौरन पिल पड़ा वह शल्ल पर तूफ़ान की मानिन्द।
गदा की ज़र्ब से रथ फट गया, बरकान की मानिन्द।।

मगर उसने लगाकर जस्त, ज़र्बे-भीम से पहले।
बचाई जाँ इधर अपनी, उधर टुकड़े उड़े रथ के।।

तेग़े-नकुल = नकुल की तलवार
अंकबूती जाल = मकड़ी का जाल
सिपर = ढाल
सैफ़े-क़ज़ा = तलवार
मग़ज़े -सर = सर का भेजा, गूदा
अजल = मौत
मंसबे-अकबर = बड़ा ओहदा
बिलअक्स = खिलाफ़, उलट
जस्त = छलांग

وہیں بس چشم زد میں پھر گیا آنکھوں میں یہ منظر — کہ گرزِ آہنی کو اس نے مثلِ کاہ لہرا کر

کیا دھاوا دلاور بھیم پر مردِ دلاور نے — لگائی جست طوفانِ وغا میں یوں شناور نے

تو فوراً بھیم نے بھی بڑھ کے اسکے وار کو روکا — گدا پر شلّ کے گرزِ گراں کے وار کو روکا

سُبک دستی کی اُسنے آج ایسی شان دکھلائی — مقابل خوف کھایا، بھول بیٹھا ساری چترائی

جواباً بھیم نے بھی گرز مارا پوری طاقت سے — سپر میں سر چھپا کر وار روکا اُسنے جرأت سے

دنادن کی صداؤں سے محارب ہول کھاتے تھے — گداؤں کے دھماکے سنکے اژدر کانپ جاتے تھے

یقیناً وہ بڑے جنگی و آہن جان تھے دونوں — جدل کے فن میں اپنے وقت کے خاقان تھے دونوں

ابھی تک دونوں ہم پلّہ رہے زور آزمائی میں — نہ حاصل کر سکا سبقت کوئی بھی اِس لڑائی میں

نہ ہوتا ناش میرے دوستوں کا اس طرح جیون

لڑائی ہو رہی تھی خوب جم کر دونوں شیروں میں — ہنر کے پیچ و خم چلتے رہے دونوں دلیروں میں

یہ طرزِ جنگ دریودھن نے دیکھا شلّ کا جسدم — بہت ہی دکھ ہوا اسکو، کہا باگریہ چشم نم

اگر پہلے ہی میں سیناپتی اسکو بنا لیتا — وہ میرے حق میں پانسہ جنگ کا کب کا الٹ دیتا

درونہ کرن ہی مرتے، نہ مرتے بھیشم و دشاشن — نہ ہوتا ناش میرے دوستوں کا اس طرح جیون

वहीं बस चष्मेज़द में, फिर गया आँखों में यह मंज़र।
कि गुर्ज़े-आहनी को, उस ने मिस्ले-काह लहरा कर।।

किया धावा, दिलावर भीम पर, मर्दे-दिलावर ने।
लगाई जस्त तूफ़ाने-वग़ा में यूँ शनावर ने।।

तो फ़ौरन भीम ने भी बढके उसके वार को रोका।
गदा पर शल्ल के, गुर्ज़े-गिराँ के वार को रोका।।

सुबक दस्ती की उसने आज ऐसी शान दिखलाई।
मुक़ाबिल ख़ौफ़ खाया, भूल बैठा सारी चतुराई।।

जवाबन भीम ने भी, गुर्ज़ मारा पूरी ताक़त से।
सिपर में सर छिपा कर, वार रोका उसने जुरअत से।।

दनादन की सदाओं से, महारिब हौल खाते थे।
गदाओं के धमाके सुनके, अज़दर काँप जाते थे।।

यक़ीनन वह बड़े जंगी-ओ-आहन जान थे दोनों।
जदल के फ़न में अपने वक़्त के, ख़ाक़ान थे दोनों।।

अभी तक दोनों हम पल्ला रहे ज़ोर आज़माई में।
न हासिल कर सका सबक़त कोई भी इस लड़ाई में।।

न होता नाश मेरे दोस्तों का इस तरह जीवन

लड़ाई हो रही थी खूब जम कर दोनों शेरों में।
हुनर के पेंचो-ख़म, चलते रहे दोनों दिलेरों में।।

यह तर्ज़े-जंग दुर्योधन ने देखा शल्ल का जिसदम।
बहुत ही दुःख हुआ उसको, कहा बागिरया चष्मेनम।।

अगर पहले ही मैं सेनापति उसको बना लेता ।
वह मेरे हक़ में पाँसा जंग का कब का उलट देता।।

द्रोणा कर्ण ही मरते, न मरते भीष्म-ओ-दुश्शाषन।
न होता नाश मेरे दोस्तों का, इस तरह जीवन।।

चष्मेज़द = पलक झपकते ही
मिस्ले काह = तिनके की तरह
शनावर = ग़ोता लगाने वाला

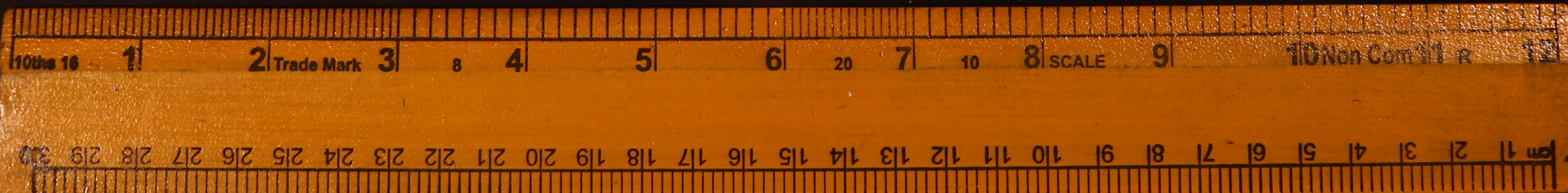
सुबक दस्ती = चालाकी

अज़दर = साँप

आहनजान = सख़्त जान
ख़ाक़ान = बादशाह

सबक़त = पहले विजय पाना

बा-गिरया चष्मेनम = आँखों में आँसू भर के



اِدھر گھنشام جی نے شلّ کا دیکھا یہ نظّارا — کہ میداں میں دلاور بھیم سے تھا وہ نبرد آرا
تو فوراً رتھ کو موڑا پھر انھوں نے شلّ کی جانب — کہ استادہ تھا جسپر شبد بھیدی، صف شکن راکب
اشارہ شیام کا پاتے ہی پھر ارجن نے عجلت سے — پیاپے شلّ کی جانب چلائے تیر سرعت سے
علاوہ چند تیروں کے ہوئے ناوک سبھی کاری — ہوئی تھی جسکے کارن شلّ پر فوراً غشی طاری
اُسے پھر ہوش میں لانے کو اسکا سارتھی آیا — بڑی ہی مشکلوں کے بعد اسکو ہوش میں لایا

گرا دھرتی پہ راجہ شلّ رشتہ موت سے جوڑا

ہوا چیتن[1]، راجہ شلّ میداں میں بہر صورت — دکھائی پھر بہ معروفِ دغا ہو کر بڑی جرأت
یدھشٹر نے اُسے دیکھا تو کافی غیظ میں آیا — مُرصّع رتھ کو اپنے موڑ کر پھر سامنے لایا
کسی موقع پہ مَیدانو نے خوش ہو کر یدھشٹر کو — عطا اک ایسی شکتی کی تھی، اس رن کے مُغیّر[2] کو
یہ شکتی، وِشوکرما جی سے شیوشنکر نے پائی تھی — یہی، شیوجی سے میدانو، کے پھر حصّے میں آئی تھی
وہ شکتی جب یدھشٹر نے چلائی شلّ راجہ پر — انوکھے ڈھنگ سے کچھ باتیں آئیں سامنے کھُلکر
یکایک ہو گیا ہنگامۂ محشر سرِ میداں — اندھیرا پرتھوی پر چھا گیا، ہر سو اٹھا طوفاں
فضا میں کاگ، اُلّو، اور چمگاڈر کی پروازیں — نحوست خیز چاروں سمت سے اٹھتی تھیں آوازیں

[1] ہوش میں [2] میدانِ جنگ کے حالات کو تبدیل کرنے والا

इधर घन्श्यामजी ने शल्ल का देखा यह नज़्ज़ारा।
कि मैदाँ में दिलावर भीम से था वह नबर्द आरा।।

तो फ़ौरन रथ को मोड़ा, फिर उन्होनें शल्ल की जानिब।
कि इस्तादा था जिस पर शब्द भेदी सफ़ शिकन राकिब।।

इशारा श्याम का पाते ही, फिर अर्जुन ने उजलत से।
पिया-पै शल्ल की जानिब, चलाए तीर सुरअत से।।

अलावा चंद तीरों के, हुए नावक सभी कारी।
हुई थी जिस के कारण, शल्ल पर फ़ौरन ग़शी तारी।।

उसे फिर होश में लाने को उसका सारथी आया।
बड़ी ही मुश्किलों के बाद उसको होश में लाया।।

गिरा धरती पे राजा शल्ल रिश्ता मौत से जोड़ा

हुआ चेतन राजा शल्ल मैदाँ में बहर सूरत।
दिखाई फिर, ब मसरूफ़े-वग़ा होकर बड़ी जुरअत।।

युधिष्ठिर ने उसे देखा तो काफ़ी ग़ैज़ में आया।
मुरस्सा रथ को अपने, मोड़कर फिर सामने लाया।।

किसी मौके पे मय दानव ने, खुश होकर युधिष्ठिर को।
अता इक ऐसी शक्ति की थी, इस रण के मुग़ैयर को।।

यह शक्ति, विश्वकर्माजी से, शिवशंकर ने पायी थी।
यही, शिवजी से मय दानव के, फिर हिस्से में आयी थी।।

वह शक्ति जब युधिष्ठिर ने चलाई शल्ल राजा पर।
अनोखे ढंग से कुछ बातें आयी, सामने खुलकर।।

यकायक हो गया हंगामा-ए-महशर सरे-मैदाँ।
अंधेरा पृथ्वी पर छा गया, हर सू उठा तूफ़ाँ।।

फ़ज़ा में काग, उल्लु और चमगाडर की परवाज़ें।
नहूसत खेज़ चारों सम्त से उठती थीं आवाज़ें।।

राकिब = सवार

उजलत = ज़लदी
सुरअत = तेज़ी

चेतन = होश में

ग़ैज़ = गुस्सा
मुरस्सा रथ = हीरे जड़ा हुआ रथ
अता = वरदान
मुग़ैयर = मैदाने-जंग के हालात को तबदील करने वाला

کہیں آندھی کہیں طوفاں، کہیں بجلی کڑکتی تھی   یہ منظر دیکھکر ہر ایک کی چھاتی دھڑکتی تھی

برستا تھا فلک سے مثلِ باراں خون دھرتی پر   ستارے ٹوٹ کر آکاش سے گرتے تھے رہ رہ کر

وہ شکتی ہر دِشا سے گھوم کر جب شلّ تک آئی   تو فوراً اسنے ناپی شلّ کے سینے کی گہرائی

پھر اسکے بعد اُسنے دلکو تاکا پشت کو توڑا
گرا دھرتی پہ راجہ شلّ رشتہ موت سے جوڑا

جنگ میں دریودھن کی شکست

پڑا تھا خوں میں لت پت شلّ راجہ بے حس و حرکت   جو اپنے وقت کا تھا صف شکن اور با صلاحیت

سرِ جنگاہ سارے بھائی دریودھن بد اختر کے   ہوئے صد حیف رخصت لوک سے پرلوک مر مر کے

علاوہ اسکے لاکھوں ویر، میدانِ شجاعت میں   لڑے، لڑکر، مرے جو تھے یگانہ اپنی طاقت میں

یہاں تک جنگ میں کام آگئی جب فوجِ دریودھن   جو اک دو تھے، بچا کر وہ بھی بھاگے جنگ سے دامن

شکونی بھی اُسی دن موت کی آغوش میں پہنچا   ہمیشہ کیلئے وہ عالمِ خاموش میں پہنچا

وہ اپنے دور کا اتنا بڑا تھا پُرفن و شاطر   مقام اسکا جہانِ مکر میں تھا اوّل و آخر

لگانا چاہتا تھا ضرب ظالم پشتِ ارجن پر   مگر فوراً نظر سہدیو کی اس پر پڑی جاکر

कहीं आन्धी कही तूफाँ, कहीं बिजली कड़कती थी।
यह मंज़र देखकर हर एक की छाती धड़कती थी।।

बरसता था फ़लक से मिस्ले-बाराँ खून धरती पर।
सितारे टूट कर आकाश से गिरते थे रह रह कर।।

वह शक्ति हर दिशा से घूम कर जब शल्ल तक आई।
तो फ़ौरन उसने नापी, शल्ल के सीने की गहराई।।

फिर इसके बाद उसने, दिलको ताका, पुश्त को तोड़ा।
गिरा धरती पे राजा शल्ल, रिश्ता मौत से जोड़ा।।

जंग में दुर्योधन की शिकस्त

पड़ा था खूँ में लत पत, शल्ल राजा बे हिसो-हरकत।
जो अपने वक़्त का था सफ़ शिकन, और बा सलाहियत।।

सरे-जंगाह सारे भाई, दुर्योधन बद अख़्तर के।
हुए सद हैफ़ रुख़सत, लोक से परलोक मरमर के।।

अलावा इसके लाखों वीर, मैदाने-शुजाअत में।
लड़े, लड़कर मरे, जो थे यगाना अपनी ताक़त में।।

यहाँ तक जंग में काम आ गयी जब फ़ौजे-दुर्योधन ।
जो इक दो थे, बचा कर वह भी भागे, जंग से दामन।।

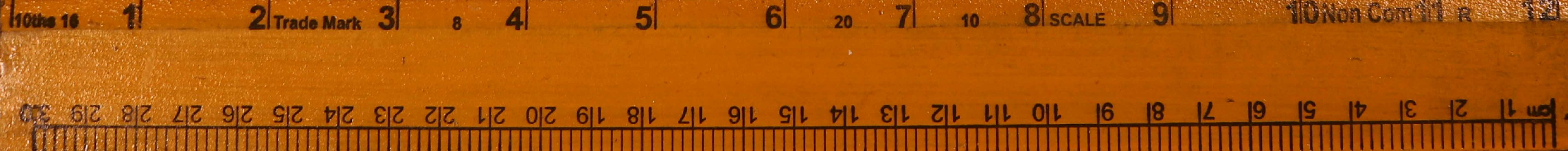
शकुनी भी उसी दिन, मौत की आग़ोश में पहुँचा।
हमेशा के लिए वह, आलमे-ख़ामोश में पहुँचा।।

वह अपने दौर का इतना बड़ा था पुरफ़नो-शातिर।
मुक़ाम उसका जहाने-मक्र में था अव्वल-ओ-आख़िर।।

लगाना चाहता था ज़र्ब ज़ालिम पुश्ते-अर्जुन पर।
मगर फ़ौरन नज़र सहदेव की इस पर पड़ी जाकर।।

फ़लक = आसमान, आकाश
मिस्ले-बाराँ = बारिश की तरह

सद-हैफ़ = बहुत अफ़सोस



اے میرے لال تجھ پر تیری ماں سو جان سے واری

بیاں کی جا چکی ہے پہلے ہی تحقیرِ گندھاری
وہ کیا شئے تھی، بنی جو باعثِ نفرین و بیزاری

پڑھا ہے ہم نے یہ، برجِ حمل میں جب تھا دریودھن
فراست نے سجھائی دل میں اسکے بات اک احسن

پتی تو سور ہے جب لختِ دل کو وہ نہ دیکھے گا
دلِ محزوں نہ جانے کسقدر پھر اسکا تڑپے گا

یہی سوچا ہے، وہ ہے جسطرح جیون کا اک ساتھی
بنونگی! میں بھی ساتھی، اسطرح شوہر کے ہر دکھ کی

پس اپنی چشمِ بینا کو، میں عمداً بند کر لونگی
اب اپنی آنکھ سے نورِ نظر کو میں نہ دیکھونگی

عمل پیرا، ارادے پر ہوئی فی الفور گندھاری
ہمیشہ کیلئے آنکھوں پہ اپنی باندھ لی پٹی

یہاں تک ہو گیا جب پُتر دریودھن جواں اسکا
ہوا ہر سمت پھر ہنگامۂ جنگ و جدل برپا

تو اسنے اپنے بیٹے سے کہا اے جانِ گندھاری
اے میرے لال تجھ پر تیری ماں سو جان سے واری

مجھے ڈر ہے کہ تنورِ وغا کل گرم جب ہو گا
بدن زخموں سے میرے لال تیرا خندہ لب ہو گا

اِسی کارن مرے لختِ جگر اے چاند کے ٹکڑے
برہنہ ہو کے استادہ ہو فوراً تو مرے آگے

ترے جسمِ برہنہ پر نظر ڈالونگی میں جسدم
تو ہو جائیگا تیرا جسم پھر لافانی و محکم

ऐ मेरे लाल तुझ पर तेरी माँ सौ जान से वारी

बयाँ की जा चुकी है, पहले ही तहक़ीरे-गंधारी।
वह क्या शै थी? बनी जो बाइसे-नफ़रीनो-बेज़ारी।।

पढ़ा है हम ने यह, बुर्जे-हमल में जब था दुर्योधन।
फ़िरासत ने सुझाई, दिल में उसके, बात इक अहसन।।

पति तो सूर है, जब लख़्ते-दिल को वह न देखेगा।
दिले-मैहज़ूँ न जाने किस क़दर, फिर उसका तड़पेगा।।

यही सोचा है, वह है जिस तरह जीवन का इक साथी।
बनूंगी ! मैं भी साथी, इसतरह शौहर के हर दुख की।।

पस अपनी चष्मे-बीना को, मैं उमदन बंद कर लूँगी।
अब अपनी आँख से नूरे-नज़र को मैं न देखूँगी।।

अमल पैरा इरादे पर हुई फ़िलफ़ौर गंधारी।
हमेशा के लिए, आँखों पे अपनी बाँध ली पट्टी।।

यहाँ तक हो गया जब पुत्र दुर्योधन जवाँ उसका।
हुआ हर सम्त फिर हंगामाए-जंगो-जदल बरपा।।

तो उसने अपने बेटे से कहा ऐ जाने गंधारी।
ऐ मेरे लाल तुझ पर, तेरी माँ सौ जान से वारी।।

मुझे डर है कि तन्नूरे-वग़ा कल गर्म जब होगा।
बदन ज़ख़्मों से मेरे लाल, तेरा ख़न्दा लब होगा।।

इसी कारण मेरे लख़्ते-जिगर, ऐ चाँद के टुकड़े।
बरहना हो के इस्तादा हो, फ़ौरन तू मेरे आगे।।

तेरे जिस्मे-बरहना पर, नज़र डालूँगी मैं जिसदम।
तो हो जाएगा तेरा जिस्म, फिर लाफ़ानी-ओ-मुहकम।।

तहक़ीर = अपमान
शै = चीज़

अहसन = भली

चश्मे-बीना = देखती आँख

लाफ़ानी-ओ-मुहकम = मज़बूत, कभी न ख़त्म होने वाला

برہنہ پیشِ مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن

یہ باتیں سنکے گندھاری کی، دریودھن چلا گھر سے
گیا پانڈو کے منڈل میں بفرحت مشورہ لینے

دیا پانڈو نے مخلص دوست بنکر مشورہ اسکو
جو سچی بات تھی کہدی وہ ساری برملا اسکو

وہاں سے وہ خوش و خرم چلا پھر جانبِ مادر
کہ اپنی ماں کی خدمت میں برہنہ پیش ہو جاکر

ہوئی مڈبھیڑ لیکن شیام سے اُف شومیٔ قسمت
سبب اس سمت آنیکا انھوں نے پوچھا با خُلّت

بغیرِ مکر دریودھن نے سارا حال بتلایا
جسے سنکر شری گھنشام نے ارشاد فرمایا

ارے پگلے کوئی دشمن بھی دیگا مشورہ بہتر
جو تو پانڈو سے لینے مشورہ پہنچا تھا انکے گھر

ذرا دل پر تو اپنے ہاتھ رکھ کر سوچ دریودھن
برہنہ پیشِ مادر کیسے ہوگا عقل کے دشمن

اگر تجھکو برہنہ ہوکے ماں کے پاس جانا ہے
یہ بارِ بے حیائی تجھکو دریودھن اٹھانا ہے

تو اک پھولوں کی کچھنی باندھ لے ہے مشورہ میرا
کہ جس سے عضوِ زیر ناف بھی چھپ جائیگا تیرا

کشن کی بات دریودھن کے دلمیں بس گئی آکر
نہ سمجھا اصل مطلب، اور دھوکا کھا گیا خودسر

فریبِ شیام بنواری پہ آخر ہوکے آمادہ
ہوا وہ سامنے مادر کے اپنی جا کے استادہ

बरह्ना पेशे-मादर

कैसे होगा अक़्ल के दुश्मन

यह बातें सुनके गांधारी की, दुर्योधन चला घर से।
गया पांडव के मंडल में, बफ़रहत मशविरा लेने।।

दिया पांडव ने मुख़लिस दोस्त बनकर मशविरा उसको।
जो सच्ची बात थी कह दी, वह सारी बरमला उसको।।

वहाँ से वह खुशो-खुर्रम, चला फिर जानिबे-मादर।
कि अपनी माँ की ख़िदमत में, बरहना पेश हो जाकर।।

हुई मुठभेंड लेकिन श्याम से, उफ़ शूमी-ए-क़िस्मत।
सबब इस सम्त आने का, उन्होंने पूछा बा खुल्लत।।

बग़ैरे-मक्र दुर्योधन ने, सारा हाल बतलाया।
जिसे सुनकर श्री घनश्याम ने इरशाद फ़रमाया।।

अरे पगले कोई दुश्मन भी देगा मशविरा बैहतर।
जो तू पांडव से लेने, मशविरा पहुँचा था उनके घर।।

ज़रा दिल पर तू अपने हाथ, रख कर सोच दुर्योधन।
बरहना पेशे-मादर कैसे होगा, अक़्ल के दुश्मन।।

अगर तुझको बरहना होके माँ के पास जाना है।
यह बारे बे हयाई तुझको दुर्योधन उठाना है।।

तो इक फूलों की कछनी बाँध ले, है मशविरा मेरा।
कि जिस से अजुए-ज़ेरे-नाफ़ भी छिप जाएगा तेरा।।

किशन की बात दुर्योधन के दिल में बस गई आकर।
न समझा अस्ल मतलब, और धोका खा गया खुदसर।।

फ़रेबे-श्याम बनवारी पे, आख़िर, होके आमादा।
हुआ वह सामने मादर के अपनी जा के इस्तादा।।

बफ़रहत = खुशी से

जानिबे-मादर = माँ की तरफ़

शूमी-ए-क़िस्मत = बदक़िस्मती

आमादा = तैयार
इस्तादा = खड़ा हुआ

مجھے افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی

پھر اسکے بعد اپنی والدہ سے بولا دریودھن
اب آنکھیں کھول دو ماں جی، میں آیا ہوں برہنہ تن

سنی آوازِ دریودھن تو گندھاری نے بے کھٹکے
خوشی سے کھولدی فوراً ہی پٹی اپنی آنکھوں سے

کھلی پٹی تو گندھاری نے پھر ہر عضو کو دیکھا
مگر پھولوں کا اک گچھا سا، زیرِ ناف جب پایا

نکل آئی زباں سے چیخ، ایسا غم ہوا طاری
اندھیرا چھایا آنکھوں میں، گری غش کھا کے گندھاری

جب آیا ہوش تو بیٹے سے پوچھا بول اے بیٹا
دیا یہ مشورہ کسنے زباں تو کھول اے بیٹا

پہنکر پھول کی کچھنی جو میرے پاس آیا ہے
یہ کسکی بات سنکر آج دھوکا تونے کھایا ہے

ہے تیرے جسم کا جتنا بھی حصہ گل سے پوشیدہ
وہیں تو زخم کھائیگا، اسی کارن ہوں رنجیدہ

کہا پھر ماں سے دریودھن نے پربھو کی قسم کھاکر
مجھے بھیجا ہے اس حالت میں مرلی دھر نے سمجھاکر

انھیں کے حکم پر باندھی ہے کچھنی پھول کی میں نے
فریبِ شیام میں آیا، بہت ہی بھول کی میں نے

تھا ورنہ مشورہ پانڈو کا میرے حق میں عریانی
مجھے افسوس ہے ماں ہو گئی مجھ سے یہ نادانی

اگر میں عقل سے اپنی ذرا بھی کام لے لیتا
فریب و مکرِ بنواری نہ دھوکا اس طرح دیتا

سُنی جب گفتگو اپنے جگر گوشہ کی گندھاری
سراپ اور بد دعا دینے لگی آلام کی ماری

मुझे अफ़सोस है माँ हो गई मुझ से यह नादानी

फिर इसके बाद अपनी वालिदा से बोला दुर्योधन।
अब आँखें खोल दो माँ जी, मैं आया हूँ बरहना तन।।

बरहना तन = नंगे बदन

सुनी आवाज़े-दुर्योधन, तो गंधारी ने बे खटके।
खुशी से खोलदी, फ़ौरन ही पट्टी अपनी आँखों से।।

खुली पट्टी तो गंधारी ने फिर हर अज़्व को देखा।
मगर फूलोंका इक गुच्छा सा ज़ेरे-नाफ़ जब पाया।।

निकल आयी ज़बाँ से चीख़, ऐसा ग़म हुआ तारी।
अंधेरा छाया आँखों में, गिरी ग़श खा के गंधारी।।

जब आया होश तो बेटे से पूछा, बोल ऐ बेटा।
दिया यह मशविरा किसने, ज़बाँ तो खोल ऐ बेटा।।

पहनकर फूल की कछनी जो मेरे पास आया है।
यह किसकी बात सुनकर, आज धोका तूने खाया है।।

हैं तेरे जिस्म का जितना भी हिस्सा, गुल से पोशीदा।
वहीं तू ज़ख़्म खाएगा, इसी कारण हूँ रन्जीदा।।

गुल = फूल

कहा फिर माँ से दुर्योधन ने, प्रभु की क़सम खा कर।
मुझे भेजा है इस हालत में, मुरलीधर ने समझाकर।।

उन्हीं के हुक्म पर बाँधी है कछनी, फूल की मैं ने।
फ़रेबे-श्याम में आया, बहुत ही भूल की मैं ने।।

था वरना मशविरा पांडव का, मेरे हक़ में उरयानी।
मुझे अफ़सोस है माँ, हो गई मुझ से यह नादानी।।

अगर मैं अक़्ल से अपनी ज़रा भी काम ले लेता।
फ़रेबो-मकरे-बनवारी, न धोका इस तरह देता।।

सुनी जब गुफ़्तगू, अपने जिगर गोश की गंधारी।
श्राप और बद-दुआ, देने लगी आलाम की मारी।।

गुफ़्तगू = बातें

شری کیشو نے اس نفرین اور پھٹکار کے کارن
بڑی تکلیف و عسرت میں گذارا آخری جیون

دریودھن دوبارہ محاذِ جنگ پر

غرض اسوقت گندھاری بہت کافی پریشاں تھی
فریبِ شیام پر، حد درجہ برہم اور نالاں تھی

پھر اپنے لختِ دل کو یوں تسلّی دے کے سمجھایا
مقدر میں جو لکھا تھا وہ تیرے سامنے آیا

جو ہونی بات ہوتی ہے، وہ ہو کر رہتی ہے بیٹا
اب اس کو کیا کرے کوئی، تو ہے تقدیر کا ہیٹا

یہ زیرِ ناف تیرا عضوِ تن، کومل ہے دریودھن
مرا منشا ہے تو سنگرام سے اپنا بچا دامن

نہیں ہے واقعی مطلق، بغیرِ جنگ اب یارا
تو پھر کمزور حصے کو بچا کر ہو نبرد آرا

یہ ارشادِ گرامی والدہ سے سنکے دریودھن
محاذِ جنگ پر پہنچا، پہنکر مغفر و جوشن

مگر رنکھیتر پر چھایا ہوا تھا ہُو کا اک عالم
سوا اعدا کے کوئی بھی نہ تھا غمخوار اور ہمدم

یہ منظر دیکھکر اسکا کلیجہ پھٹ گیا غم سے
نکل کر آ گئے عارض پہ آنسو چشمِ پُرنم سے

خیال آیا اُسے، پاتال کی جب یاترا کی تھی
جہاں سیکھی تھی ودیا اُسنے زیرِ آب رہنے کی

دئیتوں نے سیکھایا تھا یہ فنِ بے مثال اسکو
اسی اک فن کا ایسے وقت میں آیا خیال اسکو

श्री केशव ने इस नफ़रीन, और फिटकार के कारण।
बड़ी तकलीफ़ो-उसरत में, गुज़ारा आख़री जीवन।।

दुर्योधन दोबारा महाज़े-जंग पर

ग़रज़ उस वक़्त गंधारी, बहुत काफ़ी परेशाँ थी।
फ़रेबे-श्याम पर, हद दरजा बरहम और नालाँ थी।।

फिर अपने लख़्ते-दिल को यूँ, तसल्ली दे के समझाया।
मुक़द्दर में जो लिख्खा था, वह तेरे सामने आया।।

जो शुदनी बात होती है, वह होकर रहती है बेटा।
अब इस को क्या करे कोई, तू है तक़दीर का हेटा।।

यह ज़ेरे-नाफ़ तेरा अज़्वे-तन, कोमल है दुर्योधन।
मेरा मंशा है तू, संग्राम से, अपना बचा दामन।।

नही है वाक़ई मुतलक़, बग़ैरे-जंग अब यारा।
तो फिर कमज़ोर हिस्से को, बचा कर हो नबर्द-आरा।।

यह इरशादे-गिरामी, वालिदा से सुनके दुर्योधन।
महाज़े-जंग पर पहुँचा, पहनकर मिग़फ़रो-जोशन।।

मगर रणक्षेत्र पर छाया हुआ था, हू का इक आलम।
सिवा ऑदा के, कोई भी न था, ग़मख़्वार और हमदम।।

यह मंज़र देखकर उसका कलेजा फट गया ग़म से।
निकल कर आ गए आरिज़ पे, आँसू चष्मे-पुर्नम से।।

ख़याल आया उसे, पाताल की जब यात्रा की थी।
जहाँ सीखी थी विद्या, उसने ज़ेरे-आब रहने की।।

दईतों ने सिखाया था, यह फ़न्ने-बेमिसाल उसको।
इसी इक फ़न का ऐसे वक़्त में, आया ख़याल उसको।।

नफ़रीन = श्राप

ज़ेरे-नाफ़ अज़्वेतन = बदन का नीचे का हिस्सा

आदा = दुश्मन
ग़मख़्वार = तरस खाने वाला

आरिज़ = गाल
चष्मे पुर्नम = गीली आँखें

خیال آتے ہی پلٹا اور چھپا تالاب میں جاکر
نعامہ[1] جس طرح سر کو چھپائے ریگ کے اندر

مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

ادھر پوشیدہ زیرِ آب دریودھن تھا بدقسمت — اُدھر اسکے تجسس میں تھے کرپہ کرت اور اشوت
پتہ سنجے نے انکو جائے پوشیدہ کا بتلایا — کہاں پوشیدہ دریودھن ہے خود جاکر دکھا آیا
سرور[2] کے کنارے تینوں ہتکاری کھڑے ہوکر — پکارا اے مہی پت، یوں نہ ہو آزردہ و مضطر
نکل آ تو سرور سے، وجے کی جنگ لڑنا ہے — اچانک مثلِ شترب[3] پانڈواں پر ٹوٹ پڑنا ہے
ہمارے ساتھ چل، پانڈو پہ شبخوں مار دریودھن — کچل کر ایک ہی حملے میں رکھدے تو سرِ دشمن
یہ باتیں انکی سنکر بولا دریودھن، مہارتھیو — نہایت تھک چکا ہوں مجھکو اب آرام کرنے دو
یقیناً معترف ہوں میں تمھاری غمگساری کا — تقاضہ بھی یہی ہے سجنو اب پاس داری کا
تھکاوٹ سے و لیکن مضمحل میری طبیعت ہے — مجھے اب دوستو آرام کرنے کی ضرورت ہے

لہذا تمکو بھی آرام کرنا ہے، بس اب جاؤ
تھکاوٹ دور کرلو، تازہ دم کل ہوکے تم آؤ

۱ شتر مرغ ۲ تالاب ۳ چیتا

ख़याल आते ही पलटा और छिपा तालाब में जाकर।
नेआमा जिस तरह सर को छिपाए रेग के अंदर।।

मुझे अब दोस्तो आराम करने की ज़रूरत है

इधर पोशीदा ज़ेरे-आब, दुर्योधन था बद किस्मत।
उधर इसके तजस्सुस में थे कृपा, कृत, और अश्वत।।

पता संजय ने उनको जाए पोशीदा का बतलाया।
कहाँ पोशीदा दुर्योधन है, खुद जाकर दिखा आया।।

सरोवर के किनारे तीनों हितकारी खड़े होकर।
पुकारा ऐ मही पत यूँ न हो आजुर्दा-ओ-मुज़तर।।

निकल आ तू सरोवर से, विजय की जंग लड़ना है।
अचानक मिस्ले-शतरब पांडवाँ पर टूट पड़ना है।।

हमारे साथ चल, पांडव पे शबखूँ मार दुर्योधन।
कुचल कर एक ही हमले में रखदे तू सरे-दुश्मन।।

यह बातें उनकी सुनकर बोला दुर्योधन, महारथियो।
निहायत थक चुका हूँ मुझको अब आराम करने दो।।

यक़ीनन मुअतरिफ़ हूँ मैं तुम्हारी ग़मगुसारी का।
तक़ाज़ा भी यही है सज्जनों अब पास दारी का।।

थकावट से व लेकिन मुज़महिल मेरी तबीयत है।
मुझे अब दोस्तो आराम करने की ज़रूरत है।।

लेहाज़ा तुमको भी आराम करना है बस अब जाओ।
थकावट दूर करलो ताज़ा दम कल होके तुम आओ।।

नेआमा = शुतुर मुर्ग
ज़ेरे-आब = पानी के अन्दर
तजस्सुस = तलाश
सरोवर = तालाब
शतरब = चीता
शब खूँ = रात में हमला करना
मुज़महिल = थका हुआ



وہی اب بھاگتا پھرتا ہے ظالم موت کے ڈر سے

یہ سُنکر چل دیئے تینوں وہاں سے بادلِ مضطر — مگر یہ ساری باتیں سُن رہا تھا بھیل اک چھپ کر
کہ جسکو پانڈواں سے اُنس تھا کافی محبت تھی — محبت کیا تھی اک حدِ عبادت تک عقیدت تھی

اسی کارن بعجلت پانڈواں کے پاس وہ آیا — سندیسہ ان کو دریودھن کی روپوشی کا پہنچایا
یدھشٹر بھی اسی فکر و تجسس میں تھا سرگرداں — کہ دریودھن چھپا ہے کس جگہ فرعونِ بے ساماں

یہی ہے وجہِ فتنہ جس سے یہ کہرام برپا ہے — زمینِ جنگ پر ہر سمت قتلِ عام برپا ہے
ابھی تک لاکھوں انساں کٹ گئے جسکے اشارے پر — وہی اب بھاگتا پھرتا ہے ظالم موت سے ڈر کر

مگر جب بھیل نے اس کا ٹھکانہ آکے بتلایا — یدھشٹر جھوم اٹھا اور خوش و خرم نظر آیا
پھر اسکے بعد پہنچے اس جگہ پانڈو بہ کرّ و فر — جہاں پوشیدہ دریودھن تھا اس جا شیام کو لیکر

زباں کھول اے عوام الناس کے سب سے بڑے قاتل

لگایا پانڈواں نے پہلے اُس تالاب کا پھیرا — پھر اسکے بعد اُس جوہڑ کو چاروں سمت سے گھیرا
پکارا پھر یدھشٹر نے سرور کے کنارے سے — اے دریودھن بچیگا تو نہ پانی کے سہارے سے

वही अब भागता फिरता है जालिम मौत के डर से

यह सुनकर चले दिए तीनों, वहाँ से बादिले-मुज़तर।
मगर यह सारी बातें, सुन रहा था भील इक छिप कर।।

कि जिसको पांडवाँ से उन्स था, काफ़ी मोहब्बत थी।
मोहब्बत क्या थी, इक हद्दे-इबादत तक अक़ीदत थी।।

इसी कारण बउजलत पांडवाँ के पास वह आया।
संदेशा उन को दुर्योधन की, रूपोशी का पहुँचाया।।

युधिष्ठिर भी इसी फ़िक्रो-तजस्सुस में था सर-गरदाँ।
कि दुर्योधन छिपा हैं, किस जगह फ़िरऔने-बे सामाँ।।

यही है वज्हे-फ़ितना, जिस से यह कोहराम बरपा है।
ज़मीनें-जंग पर हर सम्त, क़त्ले-आम बरपा है।।

अभी तक लाखों इन्साँ, कट गए जिसके इशारे पर।
वही अब भागता फिरता है ज़ालिम, मौत से डर कर।।

मगर जब भील ने, उसका ठिकाना आके बतलाया।
युधिष्ठिर झूम उठ्ठा, और खुशो-खुर्रम नज़र आया।।

फिर इसके बाद पहुँचे उस जगह पांडव ब कररोफ़र।
जहाँ पोशीदा दुर्योधन था, उस जा श्याम को लेकर।।

बउजलत = जल्दी से
रूपोशी = गायब होन
सर-गरदाँ = परेशान
कररोफ़र = शान से
पोशीदा = छिपा हुआ

ज़बाँ खोल ऐ अवाम उन्नास के सब से बड़े क़ातिल

लगाया पांडवाँ ने पहले, उस तालाब का फेरा।
फिर इसके बाद उस जोहड को, चारों सम्त से घेरा।।

पुकारा फिर युधिष्ठिर ने, सरोवर के किनारे से।
ऐ दुर्योधन बचेगा तू, न पानी के सहारे से।।



نکل آ شیر دل، پانی میں کب چھپتے ہیں اے ناداں
بچاتے ہیں شتر دل ہی ہمیشہ جنگ سے داماں

ہوئی ہیں لاکھوں جانیں تلف میداں میں ترے کارن
وغا میں بھائیوں کو تو نے کٹوایا ہے دریودھن

وہ تیری خودسری اور وہ رعونت کیا ہوئی آخر
وہ شاہانہ تمسک، اور نخوت کیا ہوئی آخر

ہوا کافور کیسے، سرکشی کا نشۂ باطل
زباں کھول اے عوام الناس کے سب سے بڑے قاتل

ترے پندار اور زعمِ شجاعت کو ہوا کیا ہے
جوانمردی کے اس دعوائے نخوت کو ہوا کیا ہے

کہاں ہے وہ اکڑ، اور وہ تری اینٹھی ہوئی گردن
تناؤ، کیا ہوا چھاتی کا تیری بول دریودھن

رگوں میں دوڑتا تھا کل جو خوں سیماب کی مانند
وہی خوں سرد ہو کر جم گیا کیا؟ آب کی مانند

دکھاتا ہے جبانت[1] مرد ہو کر تو جوانی میں
رہیگا چھپ کے کبتک بےحیا سگلاب[2] پانی میں

اب ایسے وقت میں تیری رگِ غیرت پھڑک جاتی
شجاعت کی جگر میں کاش اک آتش بھڑک جاتی

بتِ پندار آخر گر پڑا ہے ٹھوکریں کھا کر
ڈبویا ہے تیری نخوت نے تجھ کو کس جگہ لاکر

شہنشاہی کا جذبہ کونسی ہے آج منزل میں

یدھشٹر کی برہنہ[3] گوئی اس نے آب کے اندر
سنی، لیکن رہا خاموش دریودھن سیہ اختر

اثر طعنہ زنی کا جب نہ دریودھن پہ ہو پایا
تو فوراً زور دے کر حلق پر پھر بھیم چلایا

[1] بزدلی [2] پانی کا کتا [3] برہنہ، ننگا۔ کاہل، بیکار۔

निकल आ शेर दिल, पानी में कब छिपते है ऐ नादाँ।
बचाते हैं शुतुर दिल ही हमेशा जंग से दामाँ।।

हुई हैं लाखों जानें तल्फ़ मैदाँ में तेरे कारण।
वग़ा में भाईयों को तूने कटवाया है दुर्योधन।।

वह तेरी खुदसरी और वह रऊनत क्या हुई आख़िर।
वह शाहाना तमासुक, और नख़वत क्या हुई आख़िर।।

हुआ काफूर कैसे, सरकशी का नश्शा-ए-बातिल।
ज़बाँ खोल, ऐ अवाम उन्नास के सब से बड़े क़ातिल।।

तेरे पिंदार और ज़ोमे-शुजाअत को हुआ क्या है।
जवाँ मर्दी के उस, दावाए-नख़वत को हुआ क्या है।।

कहाँ है वह अकड़, और वह तेरी ऐंठी हुई गर्दन।
तनाव, क्या हुआ छाती का तेरी, बोल दुर्योधन।।

रगों में दौड़ता था कल जो, खूँ सीमाब की मानिन्द।
वही खूँ, सर्द होकर जम गया क्या? आब की मानिन्द।।

दिखाता है जबानत, मर्द होकर तू जवानी में।
रहेग़ा छिप के कबतक बे हया सगलाब पानी में।।

अब ऐसे वक़्त में तेरी, रगे-ग़ैरत फड़क जाती।
शुजाअत की जिगर में, काश इक आतिश भड़क जाती।।

बुते-पिदांर आख़िर, गिर पड़ा है ठोकरें खाकर।
डुबोया है तेरी नख़वत ने तुझ को किस जगह लाकर।।

शहन्-शाही का जज़्बा कौनसी है आज मंज़िल में

युधिष्ठिर की बरहना गोई, उसने आब के अंदर।
सुनी लेकिन रहा ख़ामेश दुर्योधन सियाह अख़्तर।।

असर ताना ज़नी का, जब न दुर्योधन पे हो पाया।
तो फ़ौरन ज़ोर दे कर हल्क़ पर, फिर भीम चिल्लाया।।

शुतुर दिल = उंट का दिल, डरपोक
तल्फ़ = ख़त्म

रऊनत = घमडं
नख़वत = घमडं

नश्शा ए बातिल = झूटा नशा

सीमाब की मानिन्द = पारे की तरह
आब की मानिन्द = पानी की तरह
जबानत = बुज़दिली
सगलाब = पानी का कुत्ता

पिंदार = ग़रूर

सियाह अख़्तर = बद क़िस्मत

نکل پانی سے نا ہنجار اب مردانگی دکھلا — اگر ہے بازوؤں میں تیرے دم تو سامنے آجا

نہیں تو میں تجھے نامرد اور بزدل ہی سمجھونگا — دغا کے آئینے میں تجھکو اک عاطل[2] ہی سمجھونگا

درونہ، کرن، راجہ شل اے شیطان دریودھن — مرے ہیں جیدرت اور بھیشم یہ سب تیرے ہی کارن

نہیں ہے بھاؤنا سمراٹ بننے کی ترے دل میں — شہنشاہی کا جذبہ کونسی ہے آج منزل میں

میں لعنت بھیجتا ہوں تجھپہ اور تیری جبانت پر — اٹھا مغرور سر، میں تھوکتا ہوں تیری صورت پر

سنائی خوب دونوں نے اسے جی بھر کے صلواتیں — یہ صلواتیں تھیں یا زہراب میں ڈوبی ہوئی باتیں

یہ طعن آمیز باتیں صبر سے اس نے سنیں ساری — مگر دشنام کے بدلے میں یوں کی راست گفتاری

کہ اب حسرت نہیں ہے میرے دل میں راج کرنے کی — بہارِ گلشنِ شاہی میں گل بنکر نکھرنے کی

خوشی سے حکمرانی تم کرو اب ساری دھرتی پر — اجازت ہے مری جانب سے جاؤ بیٹھو گدی پر

یہ بے پایاں نوازش بول اے ابنِ قرش کیسی

یدھشٹر نے کہا اب پرتھوی پردان کرنے سے — تجھے کیا لابھ ہوگا، اس طرح اعلان کرنے سے

وہی تو ہے جو کل سوئی کے ناکے، کے برابر بھی — مجھے یہ پرتھوی دینے پہ بالکل ہی نہ تھا راضی

بتا وہ جذبۂ دارائی تیرا کیا ہوا آخر — مزاجِ آتشیں کیوں سرد ہو کر رہ گیا آخر

۲ زہر کا پانی۔ ۱ برہنہ

निकल पानी से ना हंजार, अब मर्दानगी दिखला।
अगर है बाजुवों में तेरे दम, तो सामने आजा।।

नहीं तो मैं तुझे, नामर्द और बुज़दिल ही समझूँगा।
वग़ा के आईने में तुझको इक आतिल ही समझूँगा।।

द्रोणा, कर्ण, राजा शल्ल ऐ शैतान दुर्योधन।
मरे हैं जयद्रथ और भीष्म, यह सब तेरे ही कारण।।

नहीं है भावना सम्राट बनने की, तेरे दिल में।
शहनशाही का जज़्बा, कौन सी है आज मंज़िल में।।

मैं लानत भेजता हूँ तुझपे और तेरी जबानत पर।
उठा मग़रूर, सर, मैं थूकता हूँ तेरी सूरत पर।।

सुनाई खूब दोनों ने, उसे जी भरके सलवातें।
यह सलवातें थीं, या ज़हराब में डूबी हुई बातें।।

यह तअन आमेज़ बातें, सब्र से इस ने सुनीं सारी।
मगर दुश्नाम के बदले में, यूँ की रास्त गुफ़्तारी।।

कि अब हसरत नहीं है, मेरे दिल में राज करने की।
बहारे-गुलशने-शाही में गुल बनकर निखरने की।।

खुशी से हुक्मरानी तुम करो, अब सारी धरती पर।
इजाज़त है मेरी जानिब से, जाओ बैठो गद्दी पर।।

यह बे पायाँ नवाज़िश बोल ऐ इब्ने-कुरश कैसी

युधिष्ठिर ने कहा, अब पृथ्वी पर दान करने से।
तुझे क्या लाभ होगा, इस तरह ऐलान करने से।।

वही तू है, जो कल सूई के नाके, के बराबर भी।
मुझे यह पृथ्वी देने पे, बिलकुल ही न था राज़ी।।

बता वह जज़्ब-ए-दाराई तेरा क्या हुआ आख़िर।
मिज़ाजे-आतिशी क्यों सर्द होकर रह गया आख़िर।।

बरहना = नंगा पन
आतिल = जहर का पानी

लानत = फटकार
जबानत = बुजदिली, कायरपन
जहराब = जहर का पानी

दुश्नाम = गाली
रास्त गुफ़्तारी = सीधी बात

जज़्ब-ए-दाराई = हुकूमत की ईच्छा

یہ تیری بے نیازانہ روش ایوانِ شاہی سے
یہ بیزاری ولایت سے تنفّر کجکلاہی سے

یہ آخر منصبِ دارائی کی یوں پیش کش کیسی
یہ بے پایاں نوازش بول اے ابنِ قُرش کیسی

اگر پرتگیا کا ہو اسی انداز سے پالن
بنائے گی تری وعدہ خلافی نار کا ایندھن

نہ توڑ اس طرح تو پرتگیا، آہو، نبرد آرا
نرک سے جوڑتا کیوں ہے بجائے سورگ کے یارا

اگر پالن کرے پرتگیا کا اپنی ہر انساں
تو بعدِ مرگ آسودہ رہے ہر شخص کا داماں

کہے گا جس سے لڑنے کو لڑے گا وہ جواں تجھ سے

یہ باتیں سُن کے دریودھن ہوا گویا متانت سے
یدھشٹر، تو نہ رکھ امید یہ میری جبلّت سے

کہ میں بیکنٹھ پر ترجیح دونگا کیا جہنم کو؟
نشاط و کیف کے بدلے میں چاہونگا بھلا غم کو

نہیں ہرگز نہیں، پرتگیا کو میں نہ توڑونگا
بلا سے جان جائے منہ، صداقت سے نہ موڑونگا

ادھرمی روپ سے لڑنا تمہیں پانڈو مبارک ہو
جیو بے غیرتی سے، جی سکو جبتک جہاں تک ہو

پھر اسکے بعد طرزِ قول بدلا اُس نے یہ کہہ کر
کہ میں تیار ہوں اک اک سے باری باری لڑنے پر

یدھشٹر نے کہا منظور ہے یہ شرط اب تیری
تجھے لڑنا ہو جس ہتھیار سے لڑ ہم میں جس سے بھی

اُسی حربہ سے ہوگا وہ نبرد آرا یہاں تجھ سے
کہے گا جس سے لڑنے کو لڑیگا وہ جواں تجھ سے

यह तेरी बे नियाज़ाना रविश, ऐवाने-शाही से।
यह बेज़ारी विलायत से, तनफ़्फुर कजकुलाही से।।

यह आख़िर मंसबे-दाराई की, यूँ पेशकश कैसी ।
यह बे पायॉ नवाज़िश, बोल ऐ इब्ने-कुरश कैसी।।

अगर प्रतिज्ञा का हो इसी अंदाज़ से पालन।
बनाएगी तेरी वादा ख़िलाफ़ी नार का ईन्धन।।

न तोड़ इस तरह तू प्रतिज्ञा, आहो, नबर्दआरा।
नरक से जोड़ता क्यों है, बजाए स्वर्ग के यारा।।

अगर पालन करे प्रतिज्ञा का, अपनी हर इन्साँ।
तो बादे-मृग आसूदा रहे हर शख़्स का दामाँ।।

कहेगा जिस से लड़ने को ·लड़ेगा वह जवाँ तुझ से

यह बातें सुनके दुर्योधन, हुआ गोया मतानत से।
युधिष्ठिर तू न रख उम्मीद, यह मेरी जबिल्लत से।।

कि मैं बैकुन्ठ पर तरजीह दूँगा, क्या जहन्नम को?।
निशातो-कैफ़ के बदले में चाहूँगा, भला ग़म को।।

नहीं हर गिज़ नहीं, प्रतिज्ञा को मैं न तोडूँगा।
बला से जान जाए, मुँह सदाक़त से न मोडूँगा।।

अधर्मी रूप से लड़ना, तुम्हें पांडव मुबारक हो।
जिओ बे ग़ैरती से, जी सको, जब तक, जहाँ तक हो।।

फिर इसके बाद तर्ज़े-क़ौल, बदला उसने यह कहकर।
कि मैं तैयार हूँ, इक इक से बारी बारी लड़ने पर।।

युधिष्ठिर ने कहा मंजूर है, यह शर्त अब तेरी।
तुझे लड़ना हो जिस हथियार से लड़, हम में जिस से भी।।

उसी हर्बे से होगा, वह नबर्दआरा यहाँ तुझ से।
कहेगा जिस से लड़ने को, लड़ेगा वह जवाँ तुझ से।।

बे नियाज़ाना रविश = उसूलों लापरवाही
विलायत = हुकूमत
तनफ़्फुर कजकुलाही से ≐ बादशाह से नफ़रत
मंसबे-दाराई = बादशाही का उहदा
बे पायाँ नवाज़िश = बहुत मेहरबानी
कुरश = एक समुद्दरी जानवर
नार = आग की भट्टी

निशातो-कैफ़ = खुशी का नशा
सदाक़त = सच्चाई

یہ باتیں سُن کے من گھنشیام جی کا خوب جھنجھلایا
یدھشٹر کی حماقت پر انھیں غصہ بہت آیا

اسے اک سمت لے جا کر یہ بولے شیام نواری
فراست سے تُو بیگانہ ہے اور ادراک سے عاری

ارے پگلے گدا یُدھ پر جو دریودھن اُتر آئے
کسی بھی ایک سے لڑنے کو وہ پانڈو کو بُلوائے

تو پھر کیا حال ہوگا اس حماقت پر ترا ناداں
حکومت کا نہ مِل جائیگا تیری خاک میں ارماں

مجھے تو یہ بھی شک ہے بھیم جیسا آہنی پیکر
گدا یُدھ میں نہ دریودھن سے ثابت ہو کہیں کمتر

تری اس سرکشی کو آج مٹی میں مِلانا ہے

زبانِ شیام سے جس وقت یہ خدشہ ہوا ظاہر
دلاور بھیم کی جرأت کو غیرت آ گئی آخر

گدا لہرا کے اُس نے راجہ دریودھن کو للکارا
نکل پانی سے اے سگلاب[1] ہو مجھ سے نبرد آرا

غرض جس وقت اسکی گوشِ دریودھن سے ٹکرائی
نکل آیا معاً پانی سے غیرت جوش میں آئی

پکارا اے دلاور بھیم تجھ کو جانتا ہوں میں
تری طرزِ وغا کو خوب تر پہچانتا ہوں میں

مجھے یہ بھی خبر ہے تُو نے ہاں کیچک کو مارا تھا
فنا کے گھاٹ تُو نے ہی جراسنگ کو اُتارا تھا

مجھے معلوم ہے مارے ہیں تُو نے سیکڑوں خوش فن
پیا ہے تُو نے ظالم تین چلّو خونِ دشاشن

مجھے اک اک کا بدلا بھیم اب تجھ سے چکانا ہے
تری اس سرکشی کو آج مٹی میں مِلانا ہے

[1] پانی کا کتا

यह बातें सुनके, मन घनश्याम जी का खूब झुंझलाया।
युधिष्ठिर की हिमाक़त पर उन्हें गुस्सा बहुत आया।।

उसे इक सम्त ले जा कर, यह बोले श्याम बनवारी।
फ़िरासत से तू बेगाना है, और इदराक से आरी।।

अरे पगले गदा युद्ध पर, जो दुर्योधन उतर आए।
किसी भी एक से लड़ने को, वह पांडव को बुलवाए।।

तो फिर क्या हाल होगा, इस हिमाक़त पर तेरा नादाँ।
हुकूमत का न मिल जाएगा तेरी ख़ाक में अरमाँ।।

मुझे तो यह भी शक है, भीम जैसा आहनी पैकर।
गदा युद्ध में न दुर्योधन से, साबित हो कहीं कमतर।।

तेरी इस सरकशी को आज मिट्टी में मिलाना है

जबाने-श्याम से जिस वक़्त यह ख़दशा हुआ ज़ाहिर।
दिलावर भीम की जुरअत को, ग़ैरत आगई आख़िर।।

गदा लहरा के उस ने राजा दुर्योधन को ललकारा।
निकल पानी से ऐ सगलाब, हो मुझ से नबर्दआरा।।

ग़रज़ जिस वक़्त उसकी गोशे-दुर्योधन से टकराई।
निकल आया मअन पानी से, ग़ैरत जोश में आयी।।

पुकारा ऐ दिलावर भीम, तुझ को जानता हूँ मैं।
तेरी तर्ज़े-वग़ा को, खूब तर पहचानता हूँ मैं।।

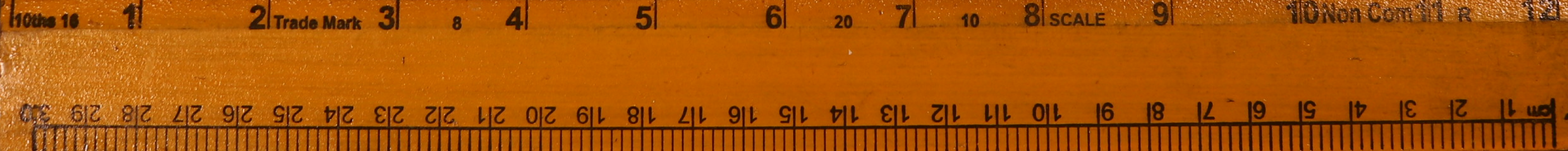
मुझे यह भी ख़बर है, तूने हाँ केचक को मारा था।
फ़ना के घाट तूने ही, जरासंग को उतारा था।।

मुझे मालूम है, मारे हैं तूने सैकड़ों खुश फ़न।
पिया है तूने ज़ालिम तीन चिल्लू खूने-दुश्शाशन।।

मुझे इक इक का बदला भीम, अब तुझसे चुकाना है।
तेरी इस सरकशी को आज, मिट्टी में मिलाना है।।

इदराक = बुद्धि, अक़्ल

सगलाब = पानी का कुत्ता



مرا دعویٰ ہے تو اک وار میرا سہہ نہیں سکتا
مری اک ضربِ فولادی سے زندہ رہ نہیں سکتا

یہ کہہ کر ہو گئے آمادہ دونوں لڑنے مرنے پر
نظر آتے تھے بے شک مستعد وہ وار کرنے پر

اُڑا کرتی سراج اللیل کی مانند چنگاری

محاذِ جنگ کا پیشِ نظر تھا آج نظّارہ
کھڑے تھے تان کر سینہ مقابل دو نبرد آرا

لیا تھا ہاتھ میں دونوں نے اپنے گرزِ فولادی
وہ گرزِ آہنی تھے، یا تھی دو اسپات کی لادی

گدائیں اس قدر وزنی نہ دیکھی تھیں زمانے نے
نہ جانے ڈھل کے آئی تھیں وہ کس اسپات خانے سے

جڑے تھے اُنکے دستے لعل سے، نیلم سے گوہر سے
مجلّیٰ تھا ہر اک کنگورہ آبِ نقرہ و زر سے

بہم کرنے لگے طرفین، دونوں سمت سے یورش
بھڑک اٹھی سرِ تالاب فوراً جنگ کی آتش

لرزتی تھی زمیں سہما ہوا تھا آسماں رن کا
صدا سے گھن گرج کی مرتعش تھا ہر جواں رن کا

کبھی میدان سے اک سن سنا سن کی صدا آتی
کبھی کنگورے جھڑتے جب گدا آپس میں ٹکراتی

فضائیں جھنجھناتی تھیں گدا کی ضربِ پیہم سے
دہلتی تھی زمیں اُنکی اچھل کود اور دھما دھم سے

ہزاروں فن کے جوہر کھل رہے تھے آج میداں میں
ابھرتا تھا صدف لے لیکے ہر غوّاص داماں میں

گداؤں کا تصادم دم بدم کرتا ضیا باری
اُڑا کرتی سراج اللیل[1] کی مانند چنگاری

[1] جگنو

मेरा दावा है तू इक वार मेरा, सह नहीं सकता।
मेरी इक ज़र्बे-फ़ौलादी से ज़िन्दा रह नहीं सकता।।

यह कहकर हो गए आमादा दोनों, लड़ने मरने पर।
नज़र आते थे बेशक मुस्तइ्द वह वार करने पर।।

उड़ा करती सिराजुल्लैल की मानिन्द चिंगारी

महाजे-जंग का पेशे-नज़र था आज नज़्ज़ारा।
खड़े थे तान कर सीना, मुक़ाबिल दो नबर्द आरा।।

लिया था हाथ में, दोनों ने अपने, गुर्ज़े-फ़ौलादी।
वह गुर्ज़े-आहनी थे, या थी दो स्पात की लादी।।

गदाएँ इस क़दर वज़नी न देखी थीं ज़माने ने।
न जाने ढ़ल के आयी थीं, वह किस स्पात ख़ाने से।।

जुड़े थे उनके दस्ते, लाल से, नीलम से, गौहर से।
मुजल्ला था, हर इक कंगुरा आबे-नुक़रा-ओ-ज़र से।।

बहम करने लगे तरफ़ैन, दोनों सम्त से यूरिश।
भड़क उठी सरे-तालाब, फ़ौरन जंग की आतिश।।

लरज़ती थी ज़मीं, सहमा हुआ था आसमाँ रण का।
सदा से घन गरज की, मुरतइश था हर जवाँ रण का।।

कभी मैदान से इक, सन सना सन की सदा आती।
कभी कंगूरे झड़ते, जब गदा आपस में टकराती।।

फ़ज़ाएं झनझनाती थीं, गदा की ज़र्बे-पैहम से।
दहलती थी ज़मीं, उनकी उछल कूद और धमाधम से।।।

हज़ारों फ़न के जौहर खुल रहे थे आज मैदाँ में।
उभरता था सदफ़ ले लेके हर ग़ौवास दामाँ में।।

गदाओं का तसादुम, दम बदम करता ज़िया बारी।
उड़ा करती, सिराजुल-लैल की मानिन्द चिंगारी।।

मुस्तइ्द = तैयार

स्पात = लोहे की

मुजल्ला = चमका हुआ
आबे-नुकरा-ओ-ज़र = सोने चाँदी के पानी से

सदफ़ = सीप
ग़ौवास = ग़ोता लगानें वाले
सिराजुल्लैल = जुगनू

بلا کی ضربیں تھیں ہر ضرب سے اک فن نمایاں تھا ‎ مکرر پھر اسی فن سے مُحارب خود گریزاں تھا

وہاں ہر زاویے سے اک انوکھے فن کا تھا عالم ‎ وہی بشاشیاں چہرے پہ تھیں اور تھا وہی دم خم

ابھی تک دونوں اپنے تجربہ میں ہم مراتب تھے ‎ ہنر میں دونوں یکساں تھے برابر کے مُحارب تھے

کسی کو بھی کسی پر فوقیت حاصل نہ تھی ابتک ‎ صلاحیت کسی کی فتح کی حامل نہ تھی ابتک

گدائیں ایک سو ٹوٹی تھیں دریودھن بد اختر کی ‎ کشیدہ تھیں بھوئیں ابتک وہی تلخی تھی تیور کی

اچانک ایک منظر ناظرینِ جنگ نے دیکھا ‎ بہ حیرت صاحبانِ دانش و اورنگ نے دیکھا

خراجِ سبقتِ یورش ملا مغرور دشمن سے

جھپکتے ہی پلک پیشِ نظر تھا اک نیا منظر ‎ پڑا تھا بے حس و حرکت دلاور بھیم دھرتی پر

گھما کر گرز دریودھن نے جس تیزی سے مارا تھا ‎ وہ بے تمثیل فنکاری کا بیشک اک نظارا تھا

گدا ٹکرائی تھی ایسی کہ فوراً صدرِ محزوں سے ‎ نکل آیا عرق کی شکل میں خوں چشمۂ خوں سے

غشی کا ایک لمحہ بھیم کے اعصاب پر گزرا ‎ مگر ہوش آگیا فوراً ہی پورے جوش سے اٹھا

گدا لہرا کے بدلا پینترا، آیا مقابل میں ‎ نہ لایا بھیم کچھ بھی خدشۂ سود و زیاں دل میں

دوبارہ لے لی ٹکر بڑھ کے اس شیطانِ پُرفن سے ‎ خراجِ سبقتِ یورش ملا مغرور دشمن سے

बला की ज़र्बें थीं, हर ज़र्ब से इक फ़न नुमायाँ था।
मुकर्रर फिर उसी फ़न से मुहारिब खुद गुरेज़ाँ था।।

वहाँ हर ज़ाविये से, इक अनोखे फ़न का था आलम।
वही बश्शा शियाँ चेहरे पे थीं और था वही दम ख़म।।

अभी तक दोनों अपने तजरुबे में हम मरातिब थे।
हुनर में दोनों यकसाँ थे, बराबर के मुहारिब थे।।

किसी को भी किसी पर फ़ौक़ियत हासिल न थी अबतक।
सलाहियत किसी की, फ़तह की हामिल न थी अबतक।।

गदाएँ एक सौ टूटी थीं दुर्योधन बद अख़्तर की।
कशीदा थीं भवें अबतक, वही तलख़ी थी तेवर की।।

अचानक एक मंज़र नाज़रीने-जंग ने देखा।
ब हैरत साहेबाने-दानिशो-औरंग ने देखा।।

ख़िराजे-सब्क़ते-यूरिश मिला मग़रूर दुश्मन से

झपकते ही पलक, पेशे-नज़र था, इक नया मंज़र।
पड़ा था बे हिसो-हरकत, दिलावर भीम धरती पर।।

घुमा कर गुर्ज़ दुर्योधन, ने जिस तेज़ी से मारा था।
वह बेतमसील फ़नकारी का बेशक इक नज़ारा था।।

गदा टकराई थी ऐसी, कि फ़ौरन सदरे-मैहजूँ से।
निकल आया अरक़ की शक्ल में खूँ, चष्माए-खूँ से।।

ग़शी का एक लम्हा, भीम के आ़साब पर गुज़रा।
मगर होश आ गया फ़ौरन ही, पूरे जोश से उट्ठा।।

गदा लहरा के बदला पैंतरा, आया मुक़ाबिल में।
न लाया भीम कुछ भी ख़दशाए-सूदो-ज़ियाँ दिल में।।

दोबारा लेली टक्कर, बढ़ के उस शैताने-पुरफ़न. से।
ख़िराजे- सब्क़ते -यूरिश मिला, मग़रूर दुश्मन से।।

मुहारिब = लड़ने वाले
बशशाशियाँ = ताज़गी
मरातिब = बराबर के
फ़ौक़ियत = बड़ाई
हामिल = लाएक़
कशीदा = खिंची हुई
बेतमसील = बेमिसाल
चष्मा-ए-खूँ = दिल
आसाब = जिस्म
ख़दशा-ए-सूदो-ज़ियाँ = नफ़ा-नुकसार का डर

مگر یورش کی سبقت سے نہ اسنے منفعت پائی
گدا تمثیلِ گُل سینے سے دریودھن کے ٹکرائی

پھر اسکے بعد دریودھن بھی کافی غیظ میں آیا
سُبکدستی سے گرزِ آہنی کا ہاتھ دکھلایا

تڑپ کر پھر لگائی ضرب کاری بھیم پر اس نے
کہ تاکا تھا نشانے کے لیے اب تو جگر اس نے

نہ لایا تاب، ضربِ گُرز کھا کر بھیم بے چارا
گرا شہتیر کی مانند وہ دھرتی پہ دوبارا

غرض بھاری تھا دریودھن کا پلّہ اس لڑائی میں
یہ سچ ہے آج کمتر بھیم تھا زور آزمائی میں

سزا اپنے کیے کی آج خود پائے گا دریودھن

یہ منظر دیکھتے ہی پانڈواں کے عزم و ہمّت پر
گری اک برق سی چھایا دھواں فہم و فراست پر

نمایاں بھیم کے مغلوب ہونے کا تھا ہر پہلو
کہ جسکی وجہ سے تھے، پانڈواں کی آنکھ میں آنسو

شری گھنشیام نے روتا ہوا پانڈو کو جب دیکھا
کیا دُور اُن کا خدشہ اور متانت سے یہ فرمایا

تمہارا اس طرح رونا ابھی سے نامناسب ہے
خبر ہے کون ہے مغلوب اُنمیں کون غالب ہے؟

نہیں معلوم تم کو کیا ہے شُدنی، مَیں بتاتا ہوں
تمہاری آنکھوں سے یہ پردۂ غفلت اٹھاتا ہوں

سنو، غالب رہے گا بھیم، مارا جائے گا دشمن
سزا اپنے کیے کی آج خود پائیگا دریودھن

یہی تقدیر کا ہے فیصلہ، جو آگے آئے گا
ہے کون ایسا جو اس لکھے ہوئے کو اب مٹائیگا

मगर यूरिश की सब्क़त से न उसने मुनफ़अत पाई।
गदा तमसीले-गुल सीने से दुर्योधन के टकराई।।

फिर इसके बाद दुर्योधन भी काफ़ी ग़ैज़ में आया।
सुबक दस्ती से, गुर्ज़े-आहनी का, हाथ दिखलाया।।

त्रिप कर फिर लगाई ज़र्बे-कारी भीम पर उसने।
कि ताका था निशाने के लिए, अब तो जिगर उसने।।

न लाया ताब, ज़र्बे-गुर्ज़ खा कर भीम बेचारा।
गिरा शैहतीर की मानिन्द, वह धरती पे दोबारा।।

ग़रज़ भारी था दुर्योधन का पल्ला, उस लड़ाई में।
यह सच है आज कमतर भीम था, जोर आज़माई में।

सज़ा अपने किये की
आज खुद पाएगा दुर्योधन

यह मंज़र देखते ही, पांडवाँ के अज़्मो-हिम्मत पर।
गिरी इक बर्क़ सी, छाया धुआँ फ़हमो-फ़िरासत पर।।

नुमायाँ भीम के मग़लूब, होने का था हर पहलू।
कि जिसकी वजहा से थे, पांडवाँ की आँख में आँसू।।

श्री घनश्याम ने रोता हुआ, पांडव को जब देखा।
किया दूर उन का ख़दशा, और मतानत से यह फ़रमाया।।

तुम्हारा इसतरह रोना अभी से ना मुनासिब है।
ख़बर है कौन है मग़लूब उन में कौन ग़ालिब है।।

नहीं मालूम तुम को क्या है शुदनी, मैं बताता हूँ।
तुम्हारी आँखों से यह परदए-ग़फ़लत उठाता हूँ।।

सुनो ग़ालिब रहेगा भीम, मारा जाएगा दुश्मन।
सज़ा अपने किये की, आज खुद पाएगा दुर्योधन।।

यही तक़दीर का है फ़ैसला, जो आगे आएगा।
है कौन ऐसा, जो इस लिख्खे हुए को, अब मिटाएगा।।

यूरिश की सब्क़त = पहला हमला करना
मुनफ़अत = फ़ायदा
तमसीले-गुल = फूल के जैसे
सुबक दस्ती = हाथों की तेज़ी
ज़र्ब = मार, चोट
शैहतीर = बेजान खंबे की तरह
फ़हमो फ़िरासत = अक़्ल
मग़लूब = हारना, पराजय
ख़दशा = अन्देशा
शुदनी = अटल, होनी

قسم ماضی کی لیکر اک پیامِ مژدہ باد آئی

یدھشٹر نے پھر اسکے بعد پوچھا شیام بنواری
بتاؤ کون شہزوری میں افضل تر ہے گردھاری
کہا گھنشیام نے طاقت میں یوں تو بھیم بڑھکر ہے
مگر فن کے تعلق سے تو دریودھن ہی برتر ہے
گدا کے فن کو دریودھن نے بارہ سال تک پیہم
شری بلدیو سے سیکھا تھا جس کا دم ہے مستحکم!
اسی اک وجہ سے افضل ہے فن میں بھیم سے دشمن!
یہی ہے وجہ جو غالب نظر آتا ہے دریودھن
کرشنا جی نے اتنا کہہ کے دیکھا بھیم کی جانب
اشارے اور کنایہ سے کیا اپنی طرف راغب
اشارے ہی اشارے میں ہنر کی بات سمجھائی
نئے انداز سے اپنی انھوں نے جانگھ دکھلائی
اُسے یاد آگیا فوراً وہاں دربارِ دریودھن
دریدہ تھا جہاں تہذیب اور اخلاق کا دامن
جہاں بٹھلائی جانے والی تھی زانو پہ پنچالی؛
جہاں انسانیت سے قلبِ آدم زاد تھا خالی
اُسے ماضی کی وہ پرتگیا بھی اپنی یاد آئی؛
قسم ماضی کی لیکر اک پیامِ مژدہ باد آئی
ہرے سب ہوگئے چودہ برس کے زخم دوبارہ
خیالِ غیرتِ ناموس سے چڑھنے لگا پارہ؛

دریودھن کا انجام

کمالِ فن نظر آتا تھا دریودھن کی یورش میں
بھرم خود اعتمادی کا تھا جسکے قلبِ نازش میں

क़सम माज़ी की लेकर

इक पयामे-मुज़दा बाद आयी

युधिष्ठिर ने फिर इसके बाद पूछा श्याम बनवारी।
बताओ कौन शैहज़ोरी में, अफ़ज़ल तर है गिरधारी।।

कहा घनश्याम ने ताक़त में यूँ तो भीम बढ़कर है।
मगर फ़न के ताल्लुक़ से तो दुर्योधन ही बरतर है।।

गदा के फ़न को दुर्योधन ने बारा साल तक पैहम।
श्री बलदेव से सीखा था जिसका दम है मुस्तहकम।।

इसी इक वजहा से अफ़ज़ल है फ़न में भीम से दुश्मन।
यही है वजहा, जो ग़ालिब नज़र आता है दुर्योधन।।

कृष्णा जी ने इतना कह के, देखा भीम की जानिब।
इशारे और किनाये, से क्या अपनी तरफ़ राग़िब।।

इशारे ही इशारे में हुनर की बात समझाई।
नये अंदाज़ से अपनी, उन्होंने जांघ दिखलाई।।

उसे याद आ गया फ़ौरन, वहाँ दरबारे-दुर्योधन।
दरीदा था जहाँ, तैहज़ीब और इख़लाक़ का दामन।।

जहाँ बिठलाई जाने वाली थी ज़ानु पे पंचाली।
जहाँ इन्सानियत से, क़ल्बे-आदम ज़ाद था ख़ाली।।

उसे माज़ी की वह प्रतिज्ञा भी अपनी याद आयी।
क़सम माज़ी की लेकर इक पयामे-मुज़दा बाद आयी।।

हरे सब हो गए चौदा बरस के ज़ख़्म दोबारा।
ख़याले-ग़ैरते-नामूस से चढ़ने लगा पारा।।

दुर्योधन का अंजाम

कमाले-फ़न नज़र आता था, दुर्योधन की यूरिश में।
भरम ख़ुद एतेमादी का था, जिसके क़ल्बे-नाज़िश में।।

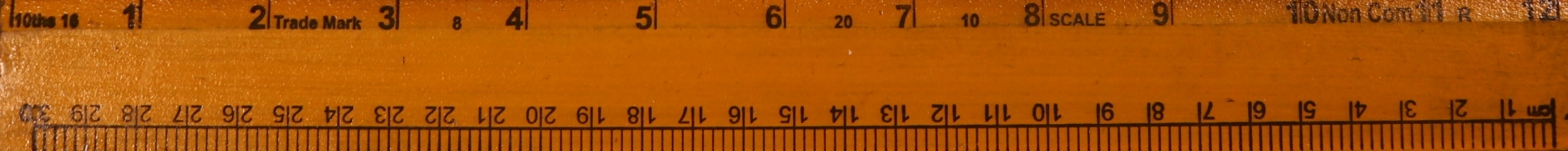
शैहज़ोरी = ताक़त
अफ़ज़ल = अच्छा-बड़ा

पैहम = लगातार
मुस्तहकम = पक्का

ग़ालिब = विजय

दरीदा = तार तार
तहज़ीब = सभ्यता
क़ल्बे-आदम ज़ाद = मानव जाति का दिल
माज़ी = गुज़रा ज़माना
पयामे-मुज़दा बाद = शुभ कामनाओं की सूचना
गैरते नामूस = इज़्ज़त

युरिश = धावा
खुदएतेमादी = खुद पर भरोसा
क़ल्बे-नाज़िश = नाज़ करने वाला दिल



بطرزِ نو ہوا کرتی تھی اک اک ضربِ دریودھن
اسی انداز سے بچتا تھا خود بھی بھیم شیر افگن

ذرا مہلت اسے ملتی تو خود بھی وار کر دیتا
نشانہ زانوئے دشمن کو وہ فوراً بنا لیتا

مگر ہر سعیٔ پیہم، سعیٔ لاحاصل نظر آئی
گدا کی ضرب، گویا یاس کی حامل نظر آئی

اِدھر زانو بچا کر خود نبرد آرا تھا دریودھن
اُسے احساس تھا میری تباہی کا ہے کیا کارن

بہر صورت بچا کر اپنا زانو جنگ کرتا تھا
وہ چوکنا تھا ضربِ بھیم سے ہر لمحہ ڈرتا تھا

لگائی ضرب دریودھن نے اوچھی سی بہ دشواری
گرا بھیم اس طرح جیسے لگی ہو ضرب اک کاری

یہ اک منصوبۂ مکر و ریا تھا بھیم خوش فن کا
اِسی انداز سے نقصان ہو سکتا تھا دشمن کا

مگر سب رائیگاں گزری تھی ابتک بھیم کی محنت
نہ زک پہنچا سکا تھا دستِ بھیم اسکو کسی صورت

پڑا تھا بھیم دم سادھے زمیں پر بے حس و حرکت
دغا سے وار کرنے کی اُسے کافی تھی یہ مہلت

یہی اک چھل کپٹ کی آخری حکمت نظر آئی
ریا و مکر کے پردے میں بس نُصرت نظر آئی

الُٹ دی اتنی مہلت میں بساطِ جنگِ مغلوبہ
بروئے کار لایا بھیم نے یوں اپنا منصوبہ

کہ لیٹے لیٹے ہی اس شان سے اُچھلا گدا لیکر
مقابل بوکھلا کر رہ گیا حیران اور ششدر

وہ ضربِ گرز کی سُرعت تھی یا اک برق کی رَو تھی
گدا کی لہر، شکلِ دائرہ، بجلی کی اک ضَو تھی

پلک جھپکی نہ تھی کہ گُرز، زانو پر گرا، آکر
گدا کا وار پوری طرح جا بیٹھا نشانے پر

बतर्ज़े-नव हुआ करती थी, इक इक ज़र्बे-दुर्योधन।
इसी अंदाज़ से बचता था, खुद भी भीम शेर अफ़गन।।

ज़रा मोहलत उसे मिलती, तो खुद भी वार कर देता।
निशाना ज़ानु-ए-दुश्मन को वह फ़ौरन बना लेता।।

मगर हर सईए-पैहम, सईए-ला-हासिल नज़र आयी।
गदा की ज़र्ब, गोया यास की हामिल नज़र आयी।।

इधर ज़ानू बचा कर खुद नबर्द आरा था दुर्योधन।
उसे एहसास था, मेरी तबाही का है क्या कारण।।

बहर सूरत, बचा कर अपना ज़ानू, जंग करता था।
वह चौकन्ना था ज़र्बे-भीम से, हर लम्हा ड़रता था।।

लगाई ज़र्ब दुर्योधन ने, ओछी सी ब दुशवारी।
गिरा भीम इस तरह जैसे, लगी हो ज़र्ब इक कारी।।

यह इक मनसूबाए-मक्रो-रिया था, भीम खुश फ़न का।
इसी अंदाज़ से नुक़सान हो सकता था दुश्मन का।।

मगर सब राएगाँ गुज़री थी अबतक भीम की मेहनत।
न ज़क पहुँचा सका था, दस्ते-भीम उसको किसी सूरत।।

पड़ा था भीम दम साधे, ज़मी पर बे हिसो-हरकत।
दग़ा से वार करने की, उसे काफ़ी थी यह मोहलत।।

यही इक छल कपट की आख़री हिकमत नज़र आयी।
रिया-ओ-मक्र के परदे में, बस नुसरत नजर आयी।।

उलट दी इतनी मोहलत में, बिसाते-जंगे-मग़लूबा।
बरूए-कार लाया, भीम ने यूँ अपना मंसूबा।।

कि लेटे लेटे ही इस शान से उछला गदा लेकर।
मुक़ाबिल बोखला कर रह गया, हैरान और शशदर।।

वह ज़र्बे-गुर्ज़ की सुरअत थी, या इक बर्क़ की रौ थी।
गदा की लहर शक्ले-दायरा बिजली की इक ज़ौ थी।।

पलक झपकी न थी कि गुर्ज़, ज़ानू पर गिरा आकर।
गदा का वार पूरी तरह, जा बैठा निशाने पर।।

बतरज़े नव = हमेशा नये ढंग से

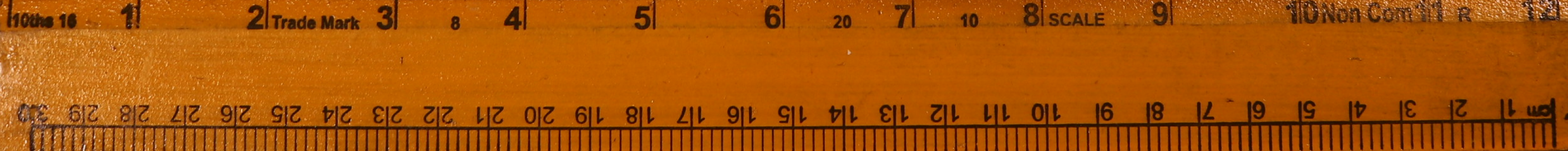
ज़ानू-ए-दुश्मन = दुश्मन की मांडी
हर सईए-पैहम = लगातार कोशिश
सईए-ला-हासिल = नाकाम
यास = नाउम्मीदी

मक्रो-रिया = छल कपट

राएगाँ = बेकार

दग़ा = छल

सुरअत = तेज़ी
बर्क़ की रौ = बिजली की लहर
ज़ौ = चमक
ज़ानू = जांघ



وہ ضربِ بھیم جس نے توڑ ڈالا زانوئے دشمن
اِدھر کھویا ہوا خود اعتمادی میں تھا دریودھن

گدا سے ران کیا ٹوٹی اندھیرا آنکھ میں چھایا
فضا میں ایک ہاہاکار کا طوفاں اُمنڈ آیا

پڑا تھا گر کے دریودھن لبوں پر آہ و زاری تھی
فغاں کے ساتھ کچھ ہذیان کچھ ہفوات جاری تھی

اُسے اِنسانیت مجروح ہوتی سی نظر آئی

پھر اُسکے بعد دریودھن نے یوں اپنا دہن کھولا
مخاطب ہو کے کیشو مورتی سے اس طرح بولا

شری گھنشیام میں مارا گیا ہوں آپ کے کارن
کہاں تھی ورنہ ظالم بھیم میں جرأت یہ مَن موہن

ادھرمی رُوپ سے مارا گیا ہوں میں سرِ میداں
کیا ہے دھرم والوں نے ہی چاک اب دھرم کا داماں

یہ باتیں بھیم نے جسدم سُنیں تو غیظ میں آکر
لگائی ایک ٹھوکر بڑھ کے دریودھن کے مغفر پر

پھر اُسکے بعد اسکے سر پہ رکھدی لات غصے میں
دکھا دی بھیم نے بھی اپنی یُوں اوقات غصے میں

یہ منظر دیکھ کر چشمِ یدھشٹر غم سے بھر آئی
اسے انسانیت مجروح ہوتی سی نظر آئی

لہٰذا بھیم کو اس فعلِ بد سے منع فرمایا
سرِ انساں کی عظمت کس قدر ہوتی ہے سمجھایا

مگر وہ دشمنی میں ہو چکا تھا اس قدر اندھا
یدھشٹر کی نہ کوئی بات مانی اور نہ کی پروا

وہیں موجود تھے بلدیوجی جیسے پراکرمی
انھوں نے بھی سرِ انساں کی جب بے حرمتی دیکھی

वह ज़र्बे-भीम जिसने, तोड़ डाला ज़ानू-ए-दुश्मन।
इधर खोया हुआ, खुद एतेमादी में था दुर्योधन।।

गदा से रान क्या टूटी, अंधेरा आँख में छाया।
फ़ज़ा में एक हाहाकार का, तूफाँ उमंड आया।।

पड़ा था गिरके दुर्योधन लबों पर आह-ओ-ज़ारी थी।
फग़ॉं के साथ कुछ हिज़यान कुछ हफ़वात जारी थी।।

उसे इन्सानियत मजरूह होती सी नज़र आयी

फिर उसके बाद दुर्योधन ने यूँ, अपना दहन खोला।
मुख़ातिब होके केशवमूर्ति से इस तरह बोला।

श्री घनश्याम, मैं मारा गया हूँ, आपके कारण।
कहाँ थी, वरना ज़ालिम भीम में, जुरअत यह मनमोहन।।

अधार्मी रूप से, मारा गया हूँ मैं सरे-मैदाँ।
किया है धर्म वालों ने ही, चाक अब धर्म का दामाँ।।

यह बातें भीम ने जिसदम सुनी, तो ग़ैज़ में आकर।
लगाई एक ठोकर बढ़ के, दुर्योधन के मिग़फ़र पर।

फिर उसके बाद उसके सर पे रखदी, लात गुस्से में।
दिखा दी भीम ने भी, अपनी यूँ औक़ात गुस्से में।।

यह मंज़र देखकर, चष्मे-युधिष्ठिर ग़म से भर आयी।
उसे इन्सानियत मजरूह होती सी नज़र आयी।।

लिहाज़ा, भीम को उस फ़ेले-बद से मनआ फ़रमाया।
सरे-इन्साँ की अज़मत, किस क़दर होती है समझाया।।

मगर वह दुश्मनी में, हो चुका था इस क़दर अंधा।
युधिष्ठिर की न कोई बात मानी, और न की परवा।।

वहीं मौजूद थे बल्देवजी जैसे पराक्रमी।
उन्होंने भी, सरे-इन्साँ की जब बेहुरमती देखी।।

ज़र्बे-भीम = भीम का वार

खुद एतेमादी = खुद पर भरोसा

हिज़यान = पागल पन

चाक = फाड़ना , तुकड़े तुकड़े करना

फ़ेले-बद = बुरा काम

बेहुरमती = अपमान

تو وہ بھی رکھ سکے مطلق نہ قابو اپنے غصے پر
جھپٹ کر بھیم کی جانب بڑھے اپنی گدا لے کر

یہ منظر شیام نے جس دم شری بلدیو کا دیکھا[1]
بسرعت ان کو روکا اور یوں ارشاد فرمایا

کہ بھائی جان اتنا بھیم پر غصہ نہ فرمائیں
سمجھ لیں بات کو، پھر آپ چاہے غیظ میں آئیں

کہ چودہ سال پہلے بھیم نے پرتگیا کی تھی
قسم دربار دریودھن میں اُسنے ایسی کھائی تھی

کہ میں توہین پنچالی کا بدلہ لیکے چھوڑوں گا
گدا کی ضرب سے زانوئے دریودھن کو توڑوں گا

اسی انداز سے گھنشیام نے ہر بات سمجھائی
حقیقت پھر شری بلدیوجی کے سامنے آئی

پھر اسکے بعد کیشو مورتی نے بھیم کو ٹوکا
جبیں کو یوں، چرن پرہار کرنے سے اُسے روکا

غرض بلدیوجی بھی پھر وہاں سے ہو گئے رخصت
چلے وہ دوارکا کی سمت بن سندیہ بافرحت

اشوتتھاما کا انتقام

پھر اسکے بعد کیشو مورتی اور پانڈواں مل کر
گئے سب جینتی کا درشن کرنے سرستی تٹ پر

ادھر اشوت نے دریودھن کے پاس آ کر کہا سجن
مجھے سیناپتی کا پد عطا کر ویر دریودھن

پتا کی موت نے غم جتنا پہنچایا نہ تھا مجھ کو
ہوا ہے دکھ تری حالت پہ اب اس سے سوا مجھ کو

دعا برکت کی دیکر اے مہی پت مجھکو رخصت کر
کہ میں پانڈو سے بدلہ لے سکوں اتنی عنایت کر

[1] شری بلدیوجی شری کرشن جی کے بڑے بھائی تھے۔ گدا یدھ میں یکتائے زمانہ تھے۔ دریودھن نے بارہ سال تک گدا یدھ کا فن آپ سے سیکھا۔

तो वह भी रख सके मुतलक़ न क़ाबू अपने गुस्से पर।
झपट कर भीम की जानिब बढ़े, अपनी गदा लेकर।।

यह मंज़र श्याम ने जिस दम [1]श्री बलदेव का देखा।
बसुरअत उन को रोका और यूँ इरशाद फ़रमाया।।

बसुरअत = तेज़ी से

कि भाई जान, इतना भीम पर गुस्सा न फ़रमाएँ।
समझ लें बात को, फिर आप चाहे ग़ैज़ में आएँ।।

कि चौदा साल पहले, भीम ने प्रतिज्ञा की थी।
क़सम दरबारे-दुर्योधन में उसने ऐसी खाई थी।।

कि मैं तौहीने-पंचाली का, बदला लेके छोड़ूँगा।
गदा की ज़र्ब, से ज़ानु-ए-दुर्योधन को तोड़ूँगा।।

इसी अंदाज़ से घनश्याम ने, हर बात समझायी।
हक़ीक़त फिर, श्री बलदेवजी के सामने आयी।।

फिर इसके बाद केशवमूर्ति ने भीम को टोका।
जबीं को यूँ, चरण परहार करने से उसे रोका।।

ग़रज़ बलदेवजी भी फिर वहाँ से हो गए रुख़सत।
चले वह द्वारका की सम्त बिन सन्देह बा फ़रहत।।

अश्वत्थामा का इन्तक़ाम

फिर इसके बाद केशवमूर्ति और पान्डवाँ मिलकर।
गए सब जयंती का दर्श करने सरस्वती तट पर।।

इधर अश्वत ने दुर्योधन के पास आकर कहा सज्जन।
मुझे सेनापति का पद, अता कर वीर दुर्योधन।।

पिता की मौत ने ग़म, जितना पहुँचाया न था मुझको।
हुआ है दुःख तेरी हालत पे, अब इस से सिवा मुझको।।

दुआ बरकत की देकर, ऐ मही पत मुझको रुख़सत कर।
कि मैं पान्डव से बदला ले सकूँ, इतनी इनायत कर।।

इनायत = क्रिपा

[1] श्री बलदेवजी श्री कृष्णजी के बड़े भाई थे। गदा युद्ध में यकताए-ज़माना थे। दुर्योधन ने बारह साल तक गदा युद्ध का फ़न आप से सीखा।।

اجازت دی خوشی کیساتھ دریودھن نے اشوت کو
اِدھر کچھ اور ہی منظور تھا شاید مشیت کو

پھر اسکے بعد کرپہ، کرت، اشوت رات کو چھپ کر
کسی برگد کے نیچے سو گئے محفوظ دھرتی پر

اِدھر اشوت کو نیند آئی نہ مطلق فکرِ دشمن میں
و لیکن کرت و کرپہ سو گئے ویران نرجن میں

اِسی اثنا میں اک اُلو کہیں سے اس جگہ آیا
شجر پر زاغ کے بچوں کو بس سویا ہوا پایا

تو اس نے نیند میں سوئے ہوئے اُن "کاگلاؤں" کو
بنایا ظلم کا اپنے نشانہ بے نواؤں کو

یہ منظر دیکھتے ہی بات آئی قلبِ اشوت میں!!
کہ ماروں دشمنوں کو میں بھی یونہی خوابِ غفلت میں

بصد ارماں و حسرت اس جہاں سے کوچ کرنا ہے

بس اتنا سوچتے ہی کرت اور کرپہ کو عجلت سے
جگا کر کر دیا آگاہ ان کو اپنی نیت سے

خیالِ اشوت کا سُنکر پھر انہوں نے منع فرمایا
اُدھرمی کام سے روکا اُسے اور خوب سمجھایا

مگر کچھ دشمنی میں اس قدر دیوانہ تھا اشوت
چلا پانڈو کی جانب پھر نہ روکے سے رُکا اشوت

بالآخر کرت اور کرپہ بھی پہنچے بعد اشوت کے
وہاں دونوں کا رُک جانا، منافی تھا مروت کے

اندھیری رات میں جس وقت اشوت اس جگہ پہنچا
اندھیرے کے سبب بچوں کو اس نے پانڈواں سمجھا

سمجھ کر پانڈواں اُن کے سروں کو خوابِ غفلت میں
اڑایا ویر اشوت نے نہ سوچا کچھ بھی عجلت میں

इजाज़त दी खुशी के साथ, दुर्योधन ने अश्वत को।
इधर कुछ और ही मंज़ूर था, शायद मशीयत को।।

फिर इसके बाद कृपा, क्रत, अश्वत रात को छिप कर।
किसी बरगद के नीचे, सो गये महफ़ूज़ धरती पर।।

इधर अश्वत को नींद आयी, न मुतलक़ फ़िक्रे-दुश्मन में।
व लेकिन कृत-ओ-कृपा सो गए वीरान निर्जन में।।

इसी असना में, इक उल्लू कहीं से इस जगह आया।
शजर पर ज़ाग़ के बच्चों को, बस सोया हुआ पाया।।

तो उसने नींद में सोए हुए उन "कागलाओं" को।
बनाया जुल्म का अपने, निशाना बे-नवाओं को।।

यह मंज़र देखते ही बात आयी क़ल्बे-अश्वत में।
कि मारूँ दुश्मनों को मैं भी, यूँही ख़्वाबे-ग़फ़लत में।।

बसद अरमाँ-ओ-हसरत इस जहाँ से कूच करना है

बस इतना सोचते ही, कृत और कृपा को उजलत से।
जगा कर, कर दिया आगाह उन को अपनी नीयत से।।

ख़याल अश्वत का सुनकर, फिर उन्होंने मना फ़रमाया।
अधर्मी काम से रोका उसे, और खूब समझाया।।

मगर कुछ दुश्मनी में इस क़दर दीवाना था अश्वत।
चला पान्डव की जानिब, फिर न रोके से रुका अश्वत।।

बिलआख़िर कृत और कृपा भी पहुँचे बाद अश्वत के।
वहाँ दोनों का रुक जाना, मनाफ़ी था मुरव्वत के।।

अंधेरी रात में जिस वक़्त, अश्वत उस जगह पहुँचा।
अंधेरे के सबब बच्चों को उसने पान्डवाँ समझा।।

समझ कर पान्डवाँ, उन के सरों को ख़्वाबे-ग़फ़लत में।
उड़ाया वीर अश्वत ने, न सोचा कुछ भी उजलत में।।

मशीयत = ईश्वर की इच्छा
महफ़ूज़ = सुरक्षा, हिफ़ाज़त से
असना = मौक़े
शजर = पेड़
ज़ाग़ = कव्वा
कागलाओं = कव्वे के बच्चों
बे-नवाओ = बेज़बानो
नीयत = इरादा
मनाफ़ी = ख़िलाफ़
मुरव्वत = दया, रह्म
ख़्वाबे-गफ़लत = गहरी नींद
उजलत = जल्दी

دگر اسکے وہاں مارے گئے تھے اور جواں کتنے
فنا کے گھاٹ پہنچائے تھے اُس نے پہلواں کتنے

غرض نکلا وہاں سے وہ سروں کو ہاتھ میں لیکر
چلا پھر سمتِ دریودھن بشانِ ناز و کر و فر

وہاں پہنچا تو دریودھن کو سر بچوں کا دکھلایا
کہا لو پانڈوؤں کو مار کر سران کا لے آیا

ہوا مسرور دریودھن نئے پیغام کو سُنکر
مگر واں تھے بجائے پانڈواں کچھ بالکوں کے سر

یہ منظر دیکھتے ہی بولا دریودھن بصد کلفت
یہ پانچوں سر ہیں پنچالی کے فرزندوں کے اے اشوت

نظر پہنچی اب اشوت کی بھی دریودھن کے کہنے پر
حقیقت میں تھے اسکے ہاتھ میں سب بالکوں کے سر

اندھیرے کے سبب اشوت نے دھوکا رات میں کھایا
سرِ پانڈو سمجھ کر بالکوں کا سر ہی لے آیا

بالآخر بولا دریودھن ہوا وہ، تھا جو قسمت میں
وہی ہوتا ہے سب کچھ جو بھی ہوتا ہے مشیت میں

ہے آخر وقت میرا میں یہاں سے کوچ کرتا ہوں
بصد ارمان و حسرت اس جہاں سے کوچ کرتا ہوں

یہ کہہ کر ہوگیا رخصت جہانِ غم سے دریودھن
رہا تھا زندگی بھر زیرِ پا جسکے سرِ دشمن

ہوئے اشوت کی جاں بخشی پہ راضی پانڈوِ خوشتر

فراغت پا چکے درشن سے پانڈو اور بنواری
ہوئے واپس تو قلب و روح پر اک کیف تھا طاری

خوشی سے آرہے تھے پانڈواں اٹھکیلیاں کرتے
نشاط و کیف میں ڈوبی ہوئی خوش گپیاں کرتے

दिगर इसके वहाँ मारे गए थे और जवाँ कितने।
फ़ना के घाट पहुँचाए थे, उस ने पहेलवाँ कितने।।

ग़रज़ निकला वहाँ से वह सरों को हाथ में लेकर।
चला फिर सम्ते-दुर्योधन बशाने-नाज़ो-कर्रो-फ़र।।

वहाँ पहुँचा तो दुर्योधन को सर बच्चों का दिखलाया।
कहा, लो पान्डवों को मार कर सर उन का ले आया।।

हुआ मसरूर दुर्योधन नये पैग़ाम को सुनकर।
मगर वाँ थे बजाए पान्डवाँ, कुछ बालकों के सर।।

यह मंज़र देखते ही बोला दुर्योधन बसद कुलफ़त।
यह पाँचों सर हैं पंचाली के फ़र्ज़न्दों के, ऐ अश्वत।।

नज़र पहुँची अब अश्वत की भी, दुर्योधन के कहने पर।
हक़ीक़त में थे उसके हाथ में, सब बालकों के सर।।

अंधेरे के सबब अश्वत ने धोका रात में खाया।
सरे-पान्डव समझ कर, बालकों का सर ही ले आया।।

बिलआख़िर बोला दुर्योधन हुआ वह, था जो क़िस्मत में।
वही होता है सब कुछ, जो भी होता है मशीयत में।।

मशीयत = ईश्वर की इच्छा

है आख़िर वक़्त मेरा मैं यहाँ से कूच करता हूँ।
बसद अरमानो-हसरत इस जहाँ से कूच करता हूँ।।

यह कहकर हो गया रुख़सत जहाने-ग़म से दुर्योधन।
रहा था ज़िन्दगी भर ज़ेरपा जिसके सरे-दुश्मन।।

हुए अश्वत की जाँ बख़्शी पे राज़ी पान्डवे-खुशतर

फ़राग़त पा चुके दर्शन से पांडव और बनवारी।
हुए वापस तो क़ल्बो-रूह पर इक कैफ़ था तारी।।

ख़ुशी से आरहे थे पान्डवाँ ठंखेलियाँ करते।
निशातो-कैफ़ में डूबी हुई खुश गप्पियाँ करते।।

क़ल्बो-रूह = मन और आत्मा
निशातो-कैफ़ = खुशी की तरंग

کہ اتنے میں خبر ان کو کسی نے آ کے پہنچائی — کہ فرزندانِ پنچالی ہوئے پرلوک کے راہی

کہ اشوتت نے فنا کے گھاٹ بچوں کو اتارا ہے — ستم ہے خواب میں ظالم نے مظلوموں کو مارا ہے

خبرِ وحشت اثر بنتِ دروپد کو ملی جس دم — غمِ فرزند سے طاری ہوا سکتے کا اک عالم

یدھشٹر اور پانڈو کو بھی اس کا غم ہوا سُنکر — مگر اُن سے زیادہ تھا اثر بنتِ دروپد پر

مخاطب پانڈواں سے ہو کے پھر اس نے قسم کھائی — تمنا دل کی اے سوامی اگر میری نہ بر آئی

تو میں انشن[1] کروں گی اس سمے تک چاہے جاں جائے — منی اشوتت کے سر کی مار کر جب تک نہ تم لائے

دروپد کنیا کی اس طرح پرتگیا سُنکر — چلا اشوتت کا سر لانے دلاور بھیم زور آور

اِدھر گھنشیام و ارجن بھیم کی پہنچے اعانت کو — شری گھنشیام لیکن جانتے تھے خوب اشوتت کو

کہ اشوتت اب برہما استر کو ہی آزمائے گا — جواب اس کا نہ دیگا بھیم تو خفت اُٹھائے گا

وہی ہتھیار اشوتت نے چلایا بھیم پر آخر — کہ خدشہ جس سے پہلے کر دیا تھا شیام نے ظاہر

بالآخر ویر ارجن نے دِکھایا اک نیا منظر — برہما استر سے کاٹا برہما استر کو بڑھ کر

پھر اسکے بعد ہی اشوتت کو پکڑا غیظ میں آ کر — اور اسکو کھینچ کر لے آیا پنچالی کے قدموں پر

اسی کے سامنے چھینی زبردستی منی اُس کی — اور اسکو چھین کر پھر دخترِ پنچال کو دے دی

مگر پانڈو نے آخر شیام بنواری کے کہنے پر — خطا اشوتت کی بخشی دل پہ اک سنگِ گراں رکھ کر

[1] अनशन مرن برت

कि इतने में ख़बर उनको किसी ने आके पहुँचाई।
कि फ़र्ज़न्दाने-पंचाली हुए परलोक के राही।।

कि अश्वत ने फ़ना के घाट बच्चों को उतारा है।
सितम है, ख़्वाब में ज़ालिम ने मज़लूमों को मारा है।।

ख़बर वहशत असर, बिन्ते-द्रौपद को मिली जिस दम।
ग़मे-फ़र्ज़न्द से तारी हुआ सकते का इक आलम।।

युधिष्ठिर और पान्डव को भी उस का ग़म हुआ सुनकर।
मगर उन से ज़्यादा था असर बिन्ते-द्रौपद पर।।

मुख़ातिब पान्डवाँ से होके फिर उसने क़सम खायी।
तमन्ना दिल की ऐ स्वामी, अगर मेरी न बर आयी।।

तो मैं अनशन करूँगी उस समय तक चाहे जाँ जाए।
मनि अश्वत के सर की, मार कर जब तक न तुम लाए।।

द्रौपद कन्या की इस तरह प्रतिज्ञा सुनकर।
चला अश्वत का सर लाने दिलावर भीम ज़ोर आवर।।

इधर घनश्याम-ओ-अर्जुन, भीम की पहुँचे अआनत को।
श्री घनश्याम लेकिन जानते थे खूब अश्वत को।।

कि अश्वत अब ब्रह्मास्त्र को ही आजमाएगा।
जवाब उसका न देगा भीम तो ख़िफ़्फ़त उठाएगा।।

वही हथियार अश्वत ने चलाया भीम पर आख़िर ।
कि ख़दशा जिस से पहले, कर दिया था श्याम ने ज़ाहिर।।

बिलआख़िर वीर अर्जुन ने, दिखाया इक नया मंज़र।
ब्रह्मास्त्र से काटा, ब्रह्मास्त्र को बढ़कर।।

फिर इसके बाद ही अश्वत को पकड़ा ग़ैज़ में आकर।
और उसको खींच कर ले आया पंचाली के क़दमो पर।।

उसी के सामने छीनी ज़बरदस्ती मनि उसकी।
और उसको छीन कर फिर दुख़्तरे-पंचाल को दे दी।।

मगर पान्डव ने आख़िर श्याम बनवारी के कहने पर।
ख़ता अश्वत की बख़्शी दिल पे इक संगे-गिराँ रखकर।।

फ़ना = मौत

ख़बर वहशत असर = दुख पहुँचाने वाली ख़बर

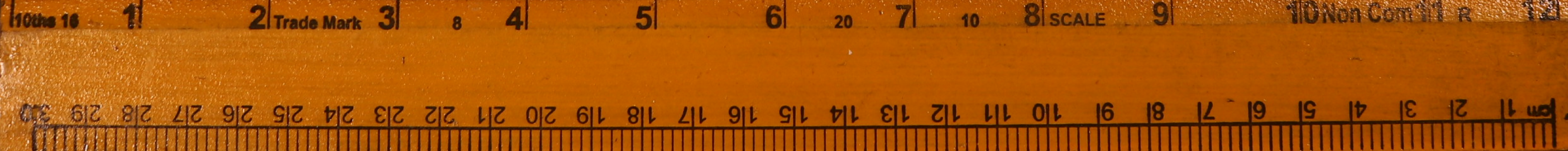
बिन्ते-द्रौपद = द्रौपद की बेटी

अनशन = मरन ब्रत

अआनत = मदद, सहायता

ख़ता = अपराध, गुनाह

संगे-गिराँ = पत्थर



نتیجہ تھا بھیانک آرزوئے کجکلاہی کا

محل میں مرگِ دریودھن کی پہنچی ہے خبر جس دم
حریمِ کوروَاں میں بچھ گئی ہر سو صفِ ماتم

تھیں انجامِ جدل سے بیگماتِ کوروَاں گریاں
محل سے نکلیں روتی پیٹتی پہنچیں سرِ میداں

پڑے تھے ہر طرف کشتوں کے پشتے رن کی دھرتی پر
چکتا بن گیا تھا خونِ انساں تہہ بہ تہہ جم کر

کہیں پہلو بہ پہلو راکب و مرکب کی لاشیں تھیں
بدن تھے جنکے زخمی اور کہیں گہری خراشیں تھیں

کہیں ٹوٹے پڑے تھے رتھ کہیں تیر و کماں خنجر
کہیں ڈھالیں پڑی تھیں اور کہیں تھے جوشن و مغفر

پڑے تھے ٹکڑے ہو ہو کر کہیں اعضائے انسانی
کہیں رِس کر زمیں پر بہہ رہا تھا خون سے پانی

کہیں تھا کاسۂ سر ضربِ پائے اسپ کی زد میں
قدومِ داعیانِ تاج پہنچے موت کی حد میں

مِلا تھا آج بستر خاک کا مخمل فراشوں کو
سرِ جنگاہ ہاتھی روندتے تھے جنکی لاشوں کو

نظارہ ہر طرف تھا بربریت اور تباہی کا
نتیجہ تھا بھیانک آرزوئے کجکلاہی کا

اِدھر نوحہ گرانِ کورَ میں شامل تھی گندھاری
ہجومِ بیکساں میں اک یہی تھی سب سے دُکھیاری

محاذِ جنگ پر طاری تھا عالم سوگواری کا
بپا تھا شور، نعشِ کوروَاں پر آہ و زاری کا

مگر گندھاریٔ مضطر بہت رنجیدہ خاطر تھی
صدائے گریہ و غم کو دبانے سے وہ قاصر تھی

नतीजा था भयानक आरज़ूए-कजकुलाही का

महल में मर्गे-दुर्योधन की पहुँची है ख़बर जिसदम।
हरीमे-कौरवाँ में बिछ गई, हर सू सफ़े-मातम।।

थीं अंजामे-जदल से, बेगमाते-कौरवाँ गिरयाँ।
महल से निकलीं रोती पीटती पहुँचीं सरे-मैदाँ।।

पड़े थे हर तरफ़ कुश्तों के पुश्ते रण की धरती पर।
चिकत्ता बन गया था ख़ूने-इन्साँ, तैह ब तैह जम कर।।

कहीं पहलू ब पहलू राकिबो-मरकब की लाशें थीं।
बदन थे जिनके ज़ख़्मी और कहीं गहरी ख़राशें थीं।।

कहीं टूटे पड़े थे रथ, कहीं तीरो-कमाँ ख़ंजर।
कहीं ढालें पड़ी थीं और कहीं थे जोशनो-मिग़फ़र।।

पड़े थे टुकड़े हो हो कर कहीं आज़ाए-इन्सानी।
कहीं रिस कर ज़मीं पर, बह रहा था ख़ून से पानी।।

कहीं था कासा-ए-सर, ज़र्बे-पाए-अस्प की ज़द में।
क़दूमे-दाइयाने-ताज, पहुँचे मौत की हद में।।

मिला था आज बिस्तर ख़ाक का, मख़मल फ़राशों को।
सरे-जंगाह, हाथी रौन्दते थे, जिनकी लाशों को।।

नज़ारा हर तरफ़ था, बरबरियत और तबाही का।
नतीजा था भयानक, आरज़ूए-कजकुलाही का।।

इधर नौहा गिराने-कौर में, शामिल थी गंधारी।
हुजूमे-बेकसाँ में इक यही थी सब से दुखयारी।।

महाज़े-जंग पर तारी थ आलम सोगवारी का।
बपा था शोर, नाशे-कौरवाँ पर आह-ओ-ज़ारी का।।

मगर गंधारी-ए-मुज़तर बहुत रंजीदा ख़ातिर थी।
सदाए-गिरया-ओ-ग़म को दबाने से वह क़ासिर थी।।

हरीम = राजमहल
सफ़े-मातम = सोग, दुख

बेगमाते-कौरवाँ = कौरवों की औरत
कुश्तों के पुश्ते = लाशों के अंबार

कासा-ए-सर = कटा हुआ सर
ज़र्बे-पाए-अस्प = घोड़ों के पांव की ठोकर
कुदूम = क़दम की जमा, पैर
दाइयाने-ताज = ताज के दावेदार
बरबरीयत = जुल्म
कजकुलाही = ताज-मुकुट
नौहा गिराँ = सोंग करती हुई

सदा = रोने की आवाज़
कासिर = मजबूर

غرض ماں سے زیادہ غم کسے بیٹوں کا ہوتا ہے
سوا ماں کے جہاں میں خوں کے آنسو کون روتا ہے

نتیجہ جنگ مہابھارت

غرض جنگ مہابھارت ہوئی جب ختم تو اس کا
نتیجہ پانڈوؤں کے حق میں نکلا خیر سے اچھا

یہ جنگ اٹھارہ دن تک کوروں پانڈو نے لڑی ایسی
کہ جس میں کام آئیں لاکھوں جانیں دونوں جانب کی

بتایا جاتا ہے اس جنگ میں گیارہ کشوں لشکر
اتارا تھا گروہ کوروں نے رن کی دھرتی پر

ادھر تھا ہفت، راجہ دھرم کی جانب کشوں لشکر
ہوا ہژدہ کشوں کل جمع لشکر ارض میداں پر

ہنود ہند کی رو سے یہی ہے اک کشوں لشکر
کہ ہوں اسوار فیل اکیس دہ صد ستہ صد ستّر

دگر ہوں شہسوار اسپ پینسٹھ دہ صد و شش صد
پیادے ساڑھے چھ سو اور ہوں اک لاکھ صد نود

غرض اک لاکھ چھیانوے ہزار اور مل کے نو سو بیس
بنے گا اک کشوں لشکر یہ ہے اعداد کی تاسیس

اسی کو ضرب اٹھارہ سے دیکر جب کرینگے پاٹھ
تو پینتیس لاکھ چوالیس ہزار اور پانچسو کل ساٹھ

یہ اتنی فوج ارض تھانسر کے طول و وسعت میں
اتاری کوروں پانڈو نے وغا گاہ بسالت میں

یہ ہے اک داستاں ہندی مورخ داستاں گو کی
جو کہتا ہے بچے اس جنگ سے بارہ نفر باقی

گروہ کور سے باقی بچے تھے صرف چار انساں
بچا تھا موت سے پانڈو کے ہشت افراد کا داماں

یدھشٹر — آٹھ لوگ

ग़रज़ माँ से ज़्यादा ग़म किसे बेटों का होता है।
सिवा माँ के जहाँ में, ख़ूँ के आँसू कौन रोता है।।

नतीजा जंगे-महाभारत

ग़रज़ जंगे-महाभारत हुई जब ख़त्म तो उस का।
नतीजा पान्डवाँ के हक़ में निकला ख़ैर से अच्छा।।

यह जंग अट्ठारा[१८] दिन तक कौरवों पान्डव ने लड़ी ऐसी।
कि जिस में काम आयी, लाखों जानें दोनों जानिब की।।

बताया जाता है इस जंग में ग्यारा[११] कशों लष्कर।
उतारा था गिरोहे-कौरवाँ ने रण की धरती पर।।

इधर था हफ़्त[७], [१]राजा धर्म की जानिब कशों लष्कर।
हुआ हज़्दा[१८] कशों कुल जमा लष्कर अर्ज़े-मैदाँ पर।।

हुनूदे-हिन्द की रूसे यही है इक कशों लष्कर।
कि हों असवारे-फील इक्कीस[२१६७०] दह सद सित्तासद सत्तर।।

दिगर हों शहसवारे-अस्प पैंसठ[६५६००] दह-सदो-शश सद।
प्यादे साढ़े छेसो और हों इक[१०९६५०] लाख सद नौवद।।

ग़रज़ इक[१९६९२०] लाख छेयानवे हज़ार और मिल के नौ सौ बीस।
बनेगा इक कशों लष्कर, यह है आदाद की तासीस।।

उसी को ज़रब अट्ठारा से देकर जब करेंगे पाठ।
तो पैंतीस[३५४४५६०] लाख चौवालीस हज़ार और पांच सौ कुल साठ।।

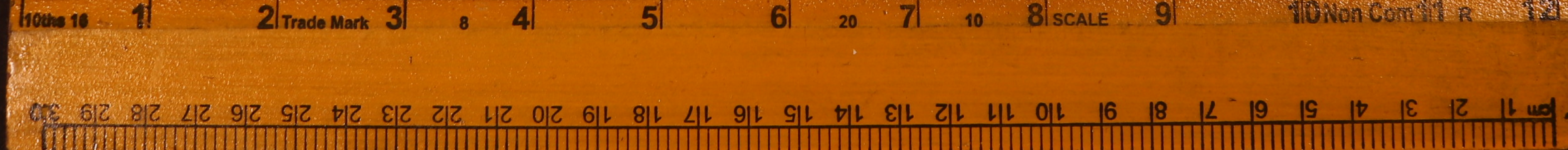
यह इतनी फ़ौज अर्ज़े-थानेसर के तूलो-वुसअत में।
उतारी कौरों पान्डव ने वग़ा गाहे-बसालत में।।

यह है इक दास्ताँ, हिन्दी मुवर्रिख़ दास्ताँ गो की।
जो कहता है बचे इस जंग से बारा[१२] नफ़रबाक़ी।।

गिरोहे-कौर से बाक़ी बचे थे सिर्फ़ चार[४] इन्साँ।
बचा था मौत से पान्डव के हश्त[८] अफ़राद का दामाँ।।

१) युधिष्ठिर

कशों = एक कशों लष्कर में एक लाख छ्यनवे हज़ार नव सौ बीस सिपाही होते थे
हफ़्त = सात ७
हज़्दा कशों = अट्ठारा कशों
की रूसे = के हिसाब से
अस्वारे-फ़ील इक्कीस दह सद सित्ता सद सत्तर = हाथीयों वाली फौज २१६७०
शहसवारे-अस्प पैंसठ दह-सदो-शश सद = घोड़ा सवार फ़ौज ६५६००
प्यादे साढ़े छे सौ और हों इक लाख सद नौवद = पैदल फ़ौज १०९६५०
ग़रज़ एक लाख छयनवे हज़ार नव सौ बीस, बनेगा एक कशों लष्कर = यानी एक कशों लष्कर में १०९६९२० कुल फ़ौज होती थी
महाभारत की जंग में कौरवों और पान्डवों की फ़ौज़ की सिरगिनती ३५४४५६०
वग़ा गाहे-वसालत = वीरता का मैदाने जंग
नफ़र = व्यक्ति
हश्त अफ़राद = आठ व्यक्ति



جو پہلا شخص فوجِ کورسے اب تک رہا زندہ — وہ اشوت تھا، جو تھا چرخِ وغا کا نجمِ تابندہ
دِگر تھے کرت ورما اور کرپاچاریہ سنجے — یہ چاروں جنگ کے ہنگامِ آخر تک سلامت تھے
یہی وہ فوجِ دریودھن کے مردانِ دلاور تھے — بہادر تھے نڈر تھے جنگجو تھے زور آور تھے
اِدھر فوجِ یدھشٹر سے بچے تھے صرف ہشت انساں — نکُل سہدیو اور ارجن کے جیسے ضیغمِ دوراں
دِگر انکے تھا، چوتھا بھیم اور پنجم یدھشٹر تھا — جو اپنے عصر میں اقلیمِ عالم کا مُسخر تھا
علاوہ پانچوں پانڈو کے چھٹا تھا انمیں اک ساتک — یگانہ تھا فراست میں بڑا تھا قابل و زیرک
سلامت ساتواں جو فرد جگتش نام نامی تھا — ادیب و فلسفی تھا اور اک فنکار رامی تھا
تھے ہشتم فرد بنواری رہے جو زندہ و باقی — خدا ہوکر جو انسانوں میں تھے انسان آفاقی
غرض اس جنگ میں بارہ نفر کو چھوڑ کر سارے — فنا کے گھاٹ اُترے ہو گئے بھگوان کو پیارے

کہ رقیت نے روپ اک یگّ کا یوں سامنے لایا

مہایُدھ کا اثر پھر رفتہ رفتہ کم ہوا آخر — نشانِ جارحیت مٹتے مٹتے مِٹ گیا آخر
پھر اسکے بعد پانڈو اس کشادہ دارِ فانی میں — کئی حالات سے گذرے ہیں اپنی زندگانی میں
دِگر اسکے ہوا تھا جس قدر اتلافِ جاں اب تک — سِتم برپا ہوئے تھے جتنے زیرِ آسماں اب تک

जो पहला शख़्स फ़ौजे-कौर से अब तक रहा ज़िन्दा।
वह अश्वत था जो था चर्ख़े-वग़ा का नज्मे-ताबिंदा।।

दिगर थे कृतवरमा और कृपाचार्य, संजय।
यह चारों जंग के हंगामे-आख़िर तक सलामत थे।।

यही वह फ़ौजे-दुर्योधन के मर्दाने-दिलावर थे ।
बाहदुर थे, निडर थे, जंगजू थे, ज़ोर आवर थे।।

इधर फ़ौजे-युधिष्ठिर से बचे थे सिर्फ़ हश्त इन्साँ।
नकुल, सहदेव और अर्जुन के जैसे ज़ैग़मे-दौराँ।।

दिगर उनके था, चौथा भीम और पंजुम युधिष्ठिर था।
जो अपने अस्र में अक़लीमे-आलम का मुसख़्ख़िर था।।

अलावा पाँचो पान्डव के छटा था उनमे इक सातक।
यगाना था फ़िरासत में, बड़ा था क़ाबिलो-ज़ीरक।।

सलामत सातवॉ जो फ़र्द हजतश नाम-नामी था।
अदीबो-फ़लसफ़ी था और इक फ़नकार रामी था।।

थे हशतुम फ़र्द बनवारी रहे जो ज़िन्दा-ओ-बाक़ी।
खुदा होकर जो इन्सानों में, थे इन्सान आफ़ाक़ी।।

ग़रज़ इस जंग में १२ बारा नफ़र को छोड़ कर सारे।
फ़ना के घाट उतरे हो गए भगवान को प्यारे।।

कि रक़्क़ीयत ने रूप
इक यज्ञ्न का यूँ सामने लाया

महायुद्ध का असर फिर रफ़ता रफ़ता कम हुआ आख़िर।
निशाने-जारेहय्यत मिटते मिटते मिट गया आख़िर।।

फिर इसके बाद पान्डव इस कुशादा दारेफ़ानी में ।
कई हालात से गुज़रे हैं अपनी ज़िन्दगानी में।।

दिगर इसके हुआ था जिस कदर इतलाफ़े-ज़ाँ अबतक।
सितम बरपा हुए थे जितने ज़ेरे-आसमाँ अब तक।।

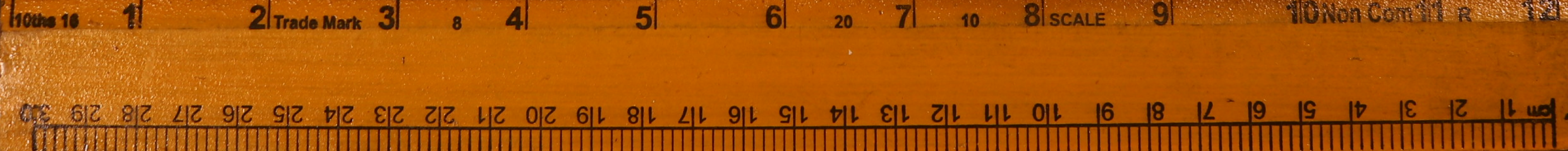
चर्ख़े-वग़ा = जंग का आकाश
नज़्मे-ताबिन्दा = आख़िर वक़्त तक

हश्त इन्साँ = आठ आदमी

क़ाबिलो-ज़ीरक = चालाक और होशियार

नफ़र = आदमी

इतलाफ़े-जाँ = जान का नुकसान
ज़ेरे-आसमां = आकाश के नीचे



انہیں انکی تلافی یگ کرنے میں نظر آئی ۔ تمنّائے طمانیت بطرزِ نو نکھر آئی ۔

تدارک کا نیا آئین ان کے روبرو آیا ۔ کہ رقیت نے روپ اک یگن کا یوں سامنے لایا

طریقہ یگن کا اس طرح اپنایا یدھشٹر نے ۔ کہ چھوڑا اسپ صحت مند اک اپنے قلمرو سے

اسی کیساتھ اک اعلان بھی اس نے کیا ہر سو ۔ کہ جس کو ناز ہو وہ آزمائے قوتِ بازو

اسی کیساتھ اسکے عقب میں اک فوج با بکتر ۔ ہمیشہ ساتھ رہتی تھی محافظ اسپ کی بنکر

یہ تھا چیلنج اپنے ہم مراتب بادشاہوں کو ۔ گرفتِ اسپ کی تحریص تھی یہ کجکلاہوں کو

گرفتاری مرکب پر نہ جانے حکمراں کتنے ۔ ہوئے اس سمت راغب پیکرِ عزم و جواں کتنے

غرض ہوتا رہا کافی دنوں تک یگ با برکت ۔ نہ جانے کتنی بار آئی انہیں پھر جنگ کی نوبت

شری کرشن جی کا خاندان دوارکا میں

بالآخر کوروں کے بعد پانڈو نے زمانے میں ۔ بھرا ہر زاویے سے رنگ عشرت کے فسانے میں

بطورِ خاص وہ چھتیس (۳۶) برسوں تک بہ کرّوفر ۔ گزارے ہیں زمین ہستنا پر حکمراں بنکر

اچانک دوارکا میں اک جماعت، چند رشیوں کی ۔ کہیں سے آکے تیرتھ گاہ پنڈارک میں ٹھہری تھی

رشی منیوں نے پہلے اس جگہ اشنان فرمایا ۔ پھر اپنی آتما کو سکھ، تپسیا کرکے پہنچایا

۱۵ اشومیدھ یگیہ ۔

उन्हें उनकी तलाफ़ी यज्ञ करने में नज़र आयी।
तमन्नाए-तमानियत बतर्ज़े-नव निखर आयी।।

तदारुक का नया आईन, उन के रूबरू आया।
कि रक़्क़ीयत ने रूप इक यज्ञन का यूँ सामने लाया।।

तरीक़ा यज्ञन का इस तरह अपनाया युधिष्ठिर ने।
कि छोड़ा अस्प सेहत मंद इक अपने क़लमरू से।।

इसी के साथ इक एलान भी उस ने किया हरसू।
कि जिस को नाज़ हो, वह आज़माए कुव्वते-बाज़ू।।

इसी के साथ उसके अक़्ब में, इक फ़ौज बा बकतर।
हमेशा साथ रहती थी, मोहाफ़िज़ अस्प की बनकर।।

यह था चॅलेंज, अपने हम मरातिब बादशाहों को।
गिरफ़्ते-अस्प की तहरीस, थी यह कजकुलाहों को।।

गिरफ़्तारी-ए-मरकब पर न जाने हुकमराँ कितने।
हुए इस सम्त राग़िब, पैकरे-अज़्मो-जवाँ कितने।।

ग़रज़ होता रहा काफ़ी दिनों तक यज्ञ बाबरकत।
न जाने कितनी बार आयी, उन्हे फिर जंग की नौबत।।

श्री कृष्ण जी का ख़ानदान द्वारका में

बिलआख़िर कौरवॉ के बाद पान्डव ने ज़माने में।
भरा हर ज़ाविये से रंग, इशरत के फ़साने में।।

बतौरे ख़ास वह छत्तीस (३६) बरसों तक ब कर्रोफ़र।
गुज़ारे हैं ज़मीने-हस्तना पर, हुकमरॉ बनकर।।

अचानक द्वारका में इक जमाअत, चंद ऋषियों की।
कहीं से आके तीर्थ गाह 'पिन्डारक' में ठहरी थी।।

ऋषि मुनियों ने पहले, इस जगह स्नान फ़रमाया।
फिर अपनी आत्मा को शान्त, पूजा करके पहुँचाया।।

तलाफ़ी = नुकसान को पूरा करना, भुगतान
तमन्नाए-तमानियत = आनंद पाने की ख़्वाहिश
बतर्ज़े-नव = नये ढंग से

अपने क़लमरू से = अपने राज्य से

अक़्ब = पीछे
अस्प = घोड़ा

गिरफ़्ते अस्प की तहरीस = घोड़ा पकड़ने की लालच

ज़ाविये = चारों और से
इशरत = ऐशो आराम

जमाअत = मन्डली

اسی عالم میں یادو خانداں کے شوخ طفلاں نے — ٹھٹھول اور دل لگی رِشیوں سے کی اس غول ناداں نے

وہیں اک شانب نامی طفل تھا اس غول کے اندر — کہ جس نے حاملہ عورت کے جیسا روپ اک بھر کر

مذاق و طنز سے پوچھا، بتا دو اے رشی منیو — تولّد ہوگا اس آبستنی سے کیا؟ مہا پرشو

تو فوراً چڑھ گئی منیوں کی یہ کہتے ہوئے چتون — کہ ہوگا بطن سے فولاد کا موسل اسے اُتپن

اسی موسل سے جگ میں ناش یادو خاندان ہو گا — تماشائے ہلاکت ایک زیرِ آسماں ہو گا

یہ سنتے ہی دلوں پر بالکوں کے خوف سا چھایا — اٹھا کر ستر دیکھا تو انھیں موسل نظر آیا

پھر اس فولاد کے موسل کو سارے یادواں مل کے — سمندر میں بہایا ریزہ ریزہ کر کے ساحل سے

وہ ریزے بحر کی لہروں سے رفتہ رفتہ ٹکرا کر — قریبِ نزدِ ساحل تہہ بہ تہہ سب جم گئے آکر

انہی ٹکڑوں میں کچھ ایسے بھی تھے فولاد کے ٹکڑے — کہ جن کو مچھلیوں نے آب میں نگلا تھا بے کھٹکے

کچھ عرصہ بعد اک مچھلی کو ماہی گیر نے پکڑا — اور اسکے پیٹ سے فولاد کا ٹکڑا وہی نکلا

پھر اس لوہے کے ٹکڑے کو جرا نامی بہاری نے — لگایا پھوک اپنے بان میں ظالم شکاری نے

چلا پھر دورِ صہبائے کہن کا خوب فرصت سے

پڑا تھا شاپ جب سے باخدا رشیوں کا یادوں پر — ہوا اُس روز سے پھر دوارکا اُتپات کا منظر

لہ حاملہ سلہ شدت، نا اتفاقی، شگون۔

इसी आलम में यादव ख़ानदाँ के शोख़े-तिफ़लाँ ने।
ठठोल और दिल्लगी ऋषियों से की, इस ग़ौले-नादाँ ने।।

वहीं इक शाँब नामी तिफ़्ल था, इस ग़ौल के अन्दर।
कि जिस ने हामेला औरत के जैसा रूप इक भरकर।।

मज़ाको-तंज़ से पूछा बताओ ऐ ऋषि मुनियो।
तवल्लुद होगा इस आबस्तनी से क्या ? महापुरुषो।।

तो फ़ौरन चढ़ गई, मुनियों की यह कहते हुए चितवन।
कि होगा बत्न से फ़ौलाद का मूसल इसे उत्पन्न।।

इसी मूसल से जग में, नाश यादव ख़ानदाँ होगा।
तमाशा-ए-हलाकत, एक ज़ेरे-आसमाँ होगा।।

यह सुनते ही दिलों पर, बालकों के ख़ौफ़ सा छाया।
उठा कर सित्र देखा तो, उन्हे मूसल नज़र आया।।

फिर इस फ़ौलाद के मूसल को सारे यादवाँ मिल के।
समुन्दर में बहाया, रेज़ा रेज़ा करके साहिल से।।

वह रेज़े बह्र की लहरों से, रफ़्ता रफ़्ता टकरा कर।
क़रीबे-फ़िर्क़े-साहिल, तैह बतैह सब जम गए आकर।।

उन्हीं टुकड़ों में कुछ ऐसे भी थे फ़ौलाद के टुकड़े।
कि जिनको मछलियों ने, आब में निगला था बेखटके।।

कुछ अर्सा बाद, इक मछली को माही गीर ने पकड़ा।
और उसके पेट से, फ़ौलाद का टुकड़ा वही निकला।।

फिर इस लोहे के टुकड़े को, 'जरा' नामी बिहारी ने।
लगाया फुक अपने बान में ज़ालिम शिकारी ने।।

चला फिर दौर

सहबाए-कोहन का खूब फुरसत से

पड़ा था श्राप जब से, बाखुदा ऋषियों का यादव पर।
हुआ उस रोज़ से फिर, द्वारका उत्पात का मज़हर।।

शोखे-तिफलाँ = चंचल बच्च

गौले-नादा =मूर्खों की भीड़

करीब फ़िर्के-साहिल = समुद्र तट के निकट

तैह ब तैह = नीचे से उपर तक



تغیر شیام نے دیکھا یہ معمولات میں جس دم
مخاطب یادواں سے ہو کے فرمایا بہ چشم نم

یہ نگری چھوڑ دو اس پر عتاب و قہر نازل ہے
ہمارے واسطے مطلق نہ اب رہنے کے قابل ہے

چلو پربھاس تیرتھ اب وہی اک جائے احسن
جہاں اشنان کر کے برہمن کو دینگے سب بھوجن

پھر اسکے بعد سب یادوں کو لیکر شیام بنواری
مقدس سرزمیں پربھاس پر پہنچے بہ دشواری

پہنچ کر جائے معہودہ پہ سب نے غسل فرمایا
گروہ برہمن کو بعد میں بھوجن بھی کروایا

فراغت پا چکے جب لوگ کار خیر و برکت سے
چلا پھر دور صہبائے کہن کا خوب فرصت سے

پیاجی بھر کے سب نے بادۂ گلفام بھر بھر کے
لیا ام الخبائث نے انہیں آغوش میں شر کے

کرشمہ دختر انگور نے یوں اپنا دکھلایا
سوار اسپ بادہ کر دیا، لڑنے پہ اکسایا

ذرا سی دیر میں وہ خوں کے پیاسے بن گئے باہم
نہایت جوش اور غیظ و غضب میں تن گئے باہم

دگر اسکے وہی موسل کے ٹکڑے جو لب ساحل
پڑے تھے ڈھیر کی مانند سب بے مقصد و عاطل

انہی سے وہ لگے اک دوسرے کی ناپنے گردن
وہی ٹکڑے بنے پھر یادواں کی جان کے دشمن

یادوں کی ہلاکت

زمیں ہوتی رہی گلرنگ تیرتھ گاہ کی پیہم
زمیں پر گر رہا تھا جا بجا خون بنی آدم

तग़य्युर श्याम ने देखा, यह मामूलात में जिस दम।
मुख़ातिक यादवाँ से, हो के फ़रमाया ब चष्मे-नम।।

यह नगरी छोड़ दो, इस पर इताब-ओ-क़हर नाज़िल है।
हमारे वास्ते मुतलक़, न अब रहने के क़ाबिल है।।

चलो प्रभास तीर्थ, अब वही इक जाए है अहसन।
जहाँ स्नान करके ब्राह्मण को देंगे सब भोजन।।

फिर इसके बाद, सब यादवों को लेकर श्याम बनवारी।
मुक़द्दस सर ज़मीं प्रभास, पर पहुँचे ब दुशवारी।।

पहुँच कर जाए माहूदा पे, सब ने गुस्ल फ़रमाया।
गिरोहे-ब्राह्मण को बाद में भोजन भी करवाया।।

फ़राग़त पा चुके जब लोग, कारे ख़ैरो-बरकत से।
चला फिर दौर सहबाए-कोहन का खूब फुरसत से।।

पियाजी भर के सब ने, बादा-ए-गुलफ़ाम भरभर के।
लिया उम्मुल ख़बाएस ने, उन्हे आग़ोश में शरके।।

करिश्मा दुख़्तरे-अंगूर ने, यूँ अपना दिखलाया।
सवारे-अस्प बादा कर दिया, लड़ने पे उकसाया।।

ज़रासी देर में वह ख़ूँ के पियासे बन गए बाहम।
निहायत जोश और ग़ैज़ो-ग़ज़ब में तन गए बाहम।।

दिगर इसके, वही मूसल के टुकडे, जो लबे-साहिल।
पड़े थे ढेर की मानिन्द, सब बे मक़सदो-आतिल।।

उन्हीं से वह लगे इक दूसरे की नापने गर्दन।
वही टुकड़े बने फिर, यादवाँ की जान के दुश्मन।।

यादवँ की हलाकत

ज़मीं होती रही गुलरंग, तीर्थ गाह की पैहम।
ज़मीं पर गिर रहा था, जा बजा खूने-बनी आदम।।

तग़य्युर = बदलाव
मामूलात = रोज़ के काम काज
ब चष्मे नम = रोती आंखों से
इताब-ओ-क़हर = ईश्वर का गुस्सा और फटकार
नाज़िल = गिर रहा
माहूदा = तै की हुई जगह
सहबा-ए-कोहन = पुरानी शराब
बादा-ए-गुलफ़ाम = शराब
उम्मुल ख़बाएस = बुराइयों की माँ यानी शराब
बाहम = आपस में
आतिल = बेकार

یہ منظر شیام اور بلدیوجی نے دیکھا حسرت سے
بہت تکلیف پہنچی اس تماشائے ہلاکت سے

تو از راہِ تلطف پہنچے وہ یادوں کو سمجھانے
جو دنیائے خرد سے ہو چکے تھے سارے بیگانے

مگر یہ سرپھرے نادان خود ہی پل پڑے اُن پر
انہی کو قتل کرنے کو بڑھے وہ مشتعل ہو کر

یہ صورت شیام نے دیکھی تو چھوڑا انکو سمجھانا
لبالب ہو گیا تھا صبر کا ان کے بھی پیمانہ

وہی ایرا اٹھا کر آپنے بھی کر دیا دھاوا
پھٹا، سویا ہوا برکان، نکلا آتشیں لاوا

یہی ہنگامہ محشر اٹھا تھا اتنی شدت سے
جسے تشبیہ دے سکتے ہیں ہم روزِ قیامت سے

یہاں تک رفتہ رفتہ یادواں سب ایک اک کر کے
سدھارے لوک سے پرلوک دستِ شیام سے مر کے

پھر اسکے بعد ہی بلدیوجی باقلبِ رنجیدہ
دخولِ بحر ہو کر ہو گئے دنیا سے پوشیدہ

خدنگِ آہنی سے پائے بنواری ہوا زخمی

ادھر یادو کُشادِ دارِ فانی سے ہوئے رخصت
ادھر بلدیو، غرقِ بحر ہو کر، کر گئے رحلت

شری بلدیوجی کے ڈوبنے کے بعد بنواری
لگا کر ٹیک پیپل کے تنے سے بیٹھے گردھاری

چرن رکھا انھوں نے اپنے دائیں پیر پر بایاں
خیال و فکر میں گم ہو گئے پھر خالقِ دوراں

کہ اتنے میں پئے صید افگنی ویران نرجن میں
کہیں سے اک "جرا" نامی شکاری آگیا بن میں

यह मनज़र श्याम और बलदेवजी ने देखा हसरत से।
बहुत तकलीफ़ पहुँची इस तमाशा-ए-हलाक़त से।।

तो अज़राहे-तलत्तुफ़ पहुँचे वह यादवँ को समझाने।
जो दुनिया-ए-ख़िरद से, हो चुके थे सारे बेगाने।।

मगर यह सरफिरे-नादान, खुदही पिल पड़े उन पर।
उन्ही को क़त्ल करने को, बढ़े वह मुशतईल होकर।।

यह सूरत श्याम ने देखी, तो छोड़ा उनको समझाना।
लबा लब हो गया था, सब्र का उनके भी पैमाना।।

वही 'अयेरा' उठाकर आपने भी कर दिया धावा।
फटा, सोया हुआ बरकान, निकला आतिशीं लावा।।

यही हंगामा-ए-महशर उठा था इतनी शिद्दत से।
जिसे तशबीह दे सकते हैं हम गोया क़यामत से।।

यहाँ तक रफ़्ता रफ़्ता यादवाँ सब एक इक करके।
सिधारे लोक से परलोक, दस्ते-श्याम से मरके।

फिर उसके बाद हि बलदेवजी, बा क़ल्बे-रनजीदा।
दख़ूले-बहर होकर, हो गए दुनिया से पोशीदा।।

ख़दंगे-आहनी से पाए-बनवारी हुआ ज़ख़्मी

इधर यादव कुशादे-दारे-फ़ानी से हुए रुख़सत।
उधर बलदेव, ग़र्क़े-बहर होकर, कर गए रहलत।।

श्री बलदेवजी के, डुबने के बाद बनवारी।
लगा कर टेक, पीपल के तनेसे बैठे गिरधारी।।

चरण रक्खा उन्होंने अपने दॉयें पैर पर बायाँ।
ख़याालो-फ़िक्र में गुम हो गए, फिर मालिके-दौराँ।।

कि इतने में पये सैद अफ़गनी विरान निर्जन में ।
ख़बर तुम को नही क्या ? त्रिभुवन का मैं मुसख़्ख़िर हूँ ।

तमाशा-ए-हलाकत = मौत का मंज़र

अजराहे-तलत्तुफ़ = दया और मेहरबानी के लिए
दुनिया-ए-ख़िरद = अक़्ल से दूर
मुशतईल = जोश में

बरकान = ज्वाला मुखी

[illegible]स्ते-श्याम = कृष्ण के हा[illegible]
बा क़ल्बे रनजीदा = दुखे दिल से
दखूले-[illegible]हर = समुद्र में दाख़िल [illegible]ना

पये सैद अफ़गनी = शिकार खेलने के लिए

اسے کچھ فاصلے پر اک سرِ آہو نظر آیا
ہرن بیٹھا ہوا سا اک شجر کی اوٹ میں پایا

چرن کو شیام کے سمجھا "مرگ مکھ" اس شکاری نے
چڑھایا بان، چلہ کھینچ کر فوراً بہاری نے

نشانہ پائے بنواری کا لے کر تیر کو چھوڑا
خدنگِ آہنی نے رخ نشانے سے نہ پھر موڑا

نشانہ لگتے ہی پیپل کے نیچے دوڑ کر آیا
وہاں لیکن شکاری کو عجب نقشہ نظر آیا

پشیماں ہو کے فوراً گر پڑا کیشو کے چرنوں پر
خطائیں بخشوانے لگ گیا وہ اپنی رو رو کر

خطائیں بخشدیں صیاد کی گھنشیام نے ساری
ہوا لطف و کرم کا چشمۂ فیضِ رسا جاری

بحکمِ شیام فوراً اک وِمان آکاش سے آیا
کہ جس نے اس ستم ایجاد کو بیکنٹھ پہنچایا

شری کرشن کا سفرِ آخرت

پھر اسکے بعد بن میں سارتھی گھنشیام کا آیا
نہایت جستجو کے بعد ان کو اک جگہ پایا

کہا رتھ بان سے گھنشیام نے تو دوارکا جا کر
پِتا سے میرے کہہ دینا جو میرا حال ہے ابتر

پھر ارجن سے یہ کہنا چھوڑ دے اب دوارکا نگری
کہ اٹھنے والا ہے طوفاں مہا ساگر سے فوراً ہی

جو سارے شہر کو اک آن میں غرقاب کر دیگا
قضا کی مے سے سب کی زندگی کا جام بھر دیگا

جہاں تک ہو سکے کہنا کہ فوراً سب نکل بھاگو
ہو جتنی جلد ممکن ہستنا نگری چلے جاؤ

उसे कुच्छ फ़ासले पर, इक सरे-आहू नज़र आया।
हरन बैठा हुआ सा, इक शजर की ओट में पाया।।

चरन को श्याम के समझा 'मिर्गमुख' उस शिकारीने।
चढ़ाई कौस चिल्ला खींचकर फ़ौरन बिहारी ने।।

निशाना पाये बनवारी कालेकर तीर को छोड़ा।
ख़दंगे-आहनी ने, रुख़ निशाने से न फिरमोड़ा।।

निशाना लगते हि, पीपल के नीचे दौड़कर आया।
वहाँ लेकिन शिकारी को अजब नक़शा नज़र आया।।

पशेमाँ हो के फ़ौरन, गिर पड़ा केशव के चरणों पर।
ख़तायें बख़श्वाने लग गया वह अपनी रो रो कर।।

ख़तायें बख़शदीं सय्याद की, घनश्याम ने सारी।
हुआ लुत्फ़ो-करम का, चष्माए-फ़ैज़े-रसाजारी।।

बहुकमे-श्याम फ़ौरन इक विमान आकाश से आया।
कि जिस ने इस सितम इजाद को बैकुन्ठ पहुँचाया।।

श्री कृष्ण का सफ़र-ए-आख़िरत

फिर उसके बाद बन में, सार्थी घनश्याम का आया।
निहायत जुस्तजू के बाद, उन को इक जगह पाया।।

कहा रथ बाण से घनश्याम ने, तू द्वारका जाकर।
पिता से मेरे कह देना जो मेरा हाल है अबतर।।

फिर अर्जुन से यह कहना छोड़ दे अब द्वारका नगरी।
कि उठने वाला है तूफ़ाँ महासागर से फ़ौरनही।।

जो सारे शहर को इक आन में ग़रक़ाब कर देगा।
क़ज़ा की मय से सब की, ज़िन्दगी का जाम भर देगा।।

जहाँ तक हो सके कहना कि फ़ौरन सब निकल भागो।
हो जितनी जल्द मुमकिन हस्तना नगरी चले जाओ।।

सरे-आहू = हरन का सर
शजर = झाड़, पेड़

सय्याद = शिकारी
लुत्फ़ो-करम का चष्माए-फ़ैज़े-रसा = दया और एहसान का फ़ायदा पहुंचाने वाला झरना
सितम इजाद = नित नये जुल्म करने वाला

जुस्तजू = खोज

ग़रक़ाब = पानी में डुबना,
क़ज़ा की मय = मौत की शराब

یہ سُنکر چھوڑدی رتھ بان نے پھر دوارکا پوری
خبر مل ہی چکی تھی دوارکا کے غرق ہونے کی

پھر اسکے بعد کیشو مورتی کے پاس درشن کو
برھماجی پدھارے اور کیا پرنام موہن کو

دِگر اسکے وِمان اپنا لئے سب دیوتا آئے
عقیدت اور محبت کے گہر سب نذر فرمائے

پھر اسکے بعد یوگ ابھیاس میں بیٹھے شری گردھر
تھیں آنکھیں بند جنکی لب پہ تھے اشلوک کے منتر

اسی عالم میں مثلِ برق سوئے آسماں اک رَو
زمیں سے تا فلک دیکھی گئی اور چل بسے کیشو

تحیر کا سا عالم چھا گیا سب دیوتاؤں پر!!
پھٹی آنکھوں سے سب دیکھا کئے حیرت فضا منظر

چلے پانڈو وہاں سے چھوڑ کر تاج اور سلطانی

دیارِ ہستنا میں آ کے ارجن نے یدھشٹر سے
تباہی یادواں کے نسل کی کہہ دی مفکر سے

قلوبِ پانڈواں اب بھر گیا تھا حکمرانی سے
حقیقت میں بہت اُکتا چکے تھے دارِ فانی سے

یہی تھا اک سبب راجہ یدھشٹر نے حکومت کو
سپردِ سبطِ ارجن کر دیا ساری ولایت کو

پرکشت کو سبھدرا کے کیا پھر زیرِ نگرانی
چلے پانڈو وہاں سے چھوڑ کر تاج اور سلطانی

ملا رستے میں اُن کو اک سگِ آوارہ و مضطر
ہُوا ہمراہِ پانڈو، وہ بھی اُن کا ہم سفر بنکر

بڑھے وہ سُوئے مشرق دخترِ پنچال کو لے کر
وہاں کی یاترا سے کیف سا طاری رہا دل پر

यह सुनकर छोड़दी रथबान ने, फिर द्वारका पूरी।
ख़बर मिल ही चुकी थी, द्वारका के ग़र्क़ होने की।।

फिर उसके बाद केशवमूर्ति के पास दर्शन को।
ब्रह्माजी पधारे और किया प्रणाम मोहन को।।

दिगर उसके विमान अपना लिये सब देवता आये।
अक़ीदत और मोहब्बत के गोहर, सब नज़्र फ़रमाये।।

फिर उसके बाद योग अभ्यास में बैठे श्री गिरधर।
थीं आँखें बन्द जिनकी लब पे थे श्लोक के मन्तर।।

इसी आलम में मिसले-बर्क़ सूए आसमाँ इक रौ।
ज़मीं से ता फ़लक देखी गई, और चलबसे केशव।।

तहय्युर का सा आलम, छा गया सब देवताओं पर।
फटी आँखों से सब देखा किए, हैरत फ़ज़ा मनज़र।।

चले पांडव वहाँ से छोड़ कर ताज और सुलतानी

दयारे-हस्तिना में आ के, अर्जुन ने युधिष्ठिर से।
तबाही यादवाँ के नस्ल की, कह दी मुफ़क्किर से।।

कुलूबे-पांडवाँ अब भर गया था हुक्मरानी से।
हक़ीक़त में बहुत उकता चुके थे दारे-फ़ानी से।।

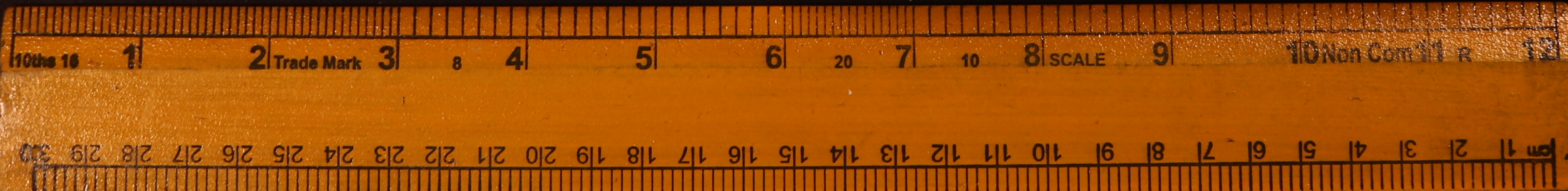
यही था इक सबब, राजा युधिष्ठिर ने हुकूमत को।
सुपुर्दे-सिब्ते-अर्जुन कर दिया, सारी विलायत को।।

परिक्षित को सुभद्रा के किया फिर ज़ेरे-निगरानी।
चले पांडव वहाँ से छोड़कर, ताज और सुलतानी।।

मिला रस्ते में उनको, इक सगे आवरा-ओ-मुज़तर।
हुआ हमराहे-पांडव, वह भी उन का हमसफ़र बनकर।।

बढ़े वह सूए-मशरिक़ दुख़्तरे-पंचाल को लेकर।
वहाँ की यात्रा से कैफ़ सा, तारी रहा दिलपर।।

अकीदत = श्रध्दा
गोहर = मोती
रौ = लहर
तहय्युर = अचंभा, हैरत
दयारे-हस्तिना = हस्तना शहर
मुफ़क्किर = अक्लमंद
कुलूब = दिल की जमा
सिब्त = पोता
सग = कुत्ता
सूए-मशरिक़ = पूरब की तरफ़
कैफ़ = नशा



پھر اسکے بعد دکھن اور دکھن سے چلے مغرب
ہمہ تن وہ رہے آسائش عقبیٰ کے سب طالب

وہ جس دم دوارکا پہنچے اُسے ڈوبا ہوا پایا
تباہی دوارکا کی دیکھ کر دل اُن کا بھر آیا

وہاں سے وہ چلے سنگ گراں رکھ کر کلیجے پر
ہماچل کا کیا رُخ بادل آزردہ و مضطر

پانڈواں کا انجام اور سفرِ آخرت

کیا پھر خطۂ ارض ہماچل پار پانڈو نے
اک آسانی سے طے کی منزل دشوار پانڈو نے

ملا رستے میں ان کو ایک خطہ ریگ زاروں کا
بالآخر کارواں منزل پہ پہنچا بے سہاروں کا

انہیں کچھ فاصلے پر میرو پربت اک نظر آیا
قضا کا دوت جس جا ان کا پیغام اجل لایا

گری بنت درو پد چلتے چلتے بے خیالی میں
نہ ٹھہری رُوح اس کی ناتواں جسم سفالی میں

دگر اسکے پھر اک کے بعد اک مرتے گئے پانڈو
جگہ عقبیٰ میں اپنی منتقل کرتے گئے پانڈو

یدھشٹر ہی بچا تھا صرف اب دُنیائے فانی میں
ہزاروں انقلاب آئے تھے جس کی زندگانی میں

اب آخر وقت آپہنچا تھا اس کا بھی بہر صورت
ہوئے حاضر شری دیوراج، راجہ اندر باخلت

شری دیوراج نے راجہ یدھشٹر سے یہ فرمایا
تمہیں بیکنٹھ لے چلنے کو، میں ہوں سورگ سے آیا

फिर उसके बाद दक्खिन और दक्खिन से चले मग़रिब।
हमा तन वह रहे, असाईशे-उक़बा के सब तालिब।।

वह जिसदम द्वारका पहुँचे उसे डूबा हुआ पाया।
तबाही द्वारका की देखकर दिल उन का भर आया।।

वहाँ से वह चले, संगे-गिराँ रखकर कलेजे पर।
हिमाचल का किया रुख़ बा दिले-आजुरदा-ओ-मुज़तर।।

पान्डवाँ का अंजाम और सफ़र-ए-आख़िरत

किया फिर ख़ित्ता-ए-अर्ज़े-हिमाचल पार पांडव ने।
इक आसानी से तय की, मनज़िले-दुशवार पांडव ने।।

मिला रस्ते में उनको एक ख़ित्ता रेगज़ारों का।
बिलआख़िर कारवाँ मनज़िल पे पहुँचा बे सहारों का।।

उन्हें कुछ फ़ासले पर मिरो-परबत इक नज़र आया।
क़ज़ा का दूत जिस जा, उन का पैग़ामे-अजल लाया।।

गिरी बिन्ते-द्रौपद, चलते चलते बे ख़याली में।
न ठहरी रूह उस की, नातवाँ जिस्मे-सफ़ाली में।।

दिगर इसके फिर इक के बाद इक मरते गये पांडव।
जगह उक़बा में अपनी, मुन्तक़िल करते गये पांडव।।

युधिष्ठिर ही बचा था, सिर्फ़ अब दुनियाए-फ़ानी में।
हज़ारो इन्क़ेलाब आये थे जिस की ज़िन्दगानी में।।

अब आख़िर वक़्त आ पहुँचा था उसका भी बहर सूरत।
हुए हाज़िर श्री देवराज, राजा इन्द्र बा ख़ुल्लत।।

श्री देवराज ने राजा युधिष्ठिर से यह फ़रमाया।
तुम्हें बैकुंठ ले चलने को, मैं हूँ स्वर्ग से आया।।

हमा तन = पूरी तरह
आसाईशे-उक़बा = परलोक का आराम, आनंद

दिले-आजुरदा-ओ-मुज़तर = निराश और बेचैन दिल

पैग़ामे-अजल = मौत का हुक्म

रूह = आत्मा
नातवाँ जिस्मे-सफ़ाली = कमज़ोर मिट्टी के बदन
उक़बा = परलोक
मुन्तक़िल = बदलते
दुनियाए-फ़ानी = मिटने वाली दुनिया

وہاں آکاش سے لایا ہوں اُسپر بیٹھ کر چلئے
نہ دل میں کیجئے سندیہہ بخوف و خطر چلئے

کہا راجہ نے مَیں چلتا ہوں لیکن شرط ہے اتنی
چلے گا ساتھ میرے ہمسفر بنکر یہ کُتا بھی

مگر دیوراج بولے سورگ میں یہ جا نہیں سکتا
ہوا کے رتھ پہ اس کُتے کو مَیں بٹھا نہیں سکتا

یہ باتیں سُنکے کُتا اپنے اصلی رُوپ میں آیا
تحیّر خیز چشم اِندر کو نظارہ دِکھلایا

حقیقت یہ ہے، وہ کتا نہیں تھا، دھرم دیوتا تھے
یدھشٹر کے پتا تھے منبع دینِ مُجلا تھے

غرض پھر دھرم نے اپنے جگر گوشہ سے فرمایا
سگِ آوارہ بننے کا سبب بیٹے کو سمجھایا

پریکشا اس طرح لینا فقط مقصود تھا میرا
مرے بیٹے مگر یہ امتحاں محدود تھا تیرا

ہوا ہے کامراں جا، یاترا بیکنٹھ کی کر لے
وہاں کی سیر کر اور دامنِ مقصود کو بھر لے

یہ سُنتے ہی یدھشٹر اس ہوائی رتھ پہ جا بیٹھا
وہاں اسکو زمیں سے لیکے سوئے آسماں پہنچا

विमान आकाश से लाया हूँ इसपर बैठ कर चलिये।
न दिल में किजिए सन्देह, बेख़ौफ़-ओ-ख़तर चलिये।।

कहा राजा ने मैं चलता हूँ, लेकिन शर्त है इतनी।
चलेगा साथ मेरे, हमसफ़र बनकर यह कुत्ता भी।।

मगर देवराज बोले स्वर्ग में, यह जा नहीं सकता।
हवा के रथ पे इस कुत्ते को मैं, बैठा नहीं सकता।।

यह बातें सुनके कुत्ता, अपने असली रूप में आया।
तहय्युर ख़ैज़ चष्मे-इन्द्र को, नज़्ज़ारा दिखलाया।।

हक़ीक़त यह है, वह कुत्ता नहीं था, धर्मदेवता थे।
युधिष्ठिर के पिता थे, मम्बा-ए-दीने-मुजल्ला थे।।

ग़रज़ फिर धर्म ने अपने, जिगर गोशा से फ़रमाया।
सगे-आवाराह बनने का सब्ब, बेटे को समझाया।।

परीक्षा इस तरहा लेना, फ़क़त मक़सूद था मेरा।
मेरे बेटे मगर यह इमतेहाँ महदूद था तेरा।।

हुआ है कामराँ जा, यात्रा बैकुन्ठ की करले।
वहाँ की सैर कर, और दामने-मक़सूद को भरले।।

यह सुनते ही युधिष्ठिर उस हवाई रथ पे जा बैठा।
विमान उसको ज़मीं से लेके सूए आसमाँ पहुँचा।।

मम्बा-ए-दीने-मुजल्ला = साफ उसूलों की सोच
जिगर गोश = जिगर का टुकड़ा यानी पुत्र, बेटा

मक़सूद = मक़सद की जमा
महदूद = एक हद तक

दामने-मक़सूद = आरज़ू पूरी होना



شاہنامۂ ہند

بشمول

قدیم ہندو عہدِ حکومت

حصّہ دوم

اردو نظم میں وطنِ عزیز کی مکمل اور جامع تاریخ

فردوسیٔ ہند

فروغ نقاش

शाहनामा-ए-हिन्द

ब-शमूल

क़दीम हिंदू अहदे-हुकूमत

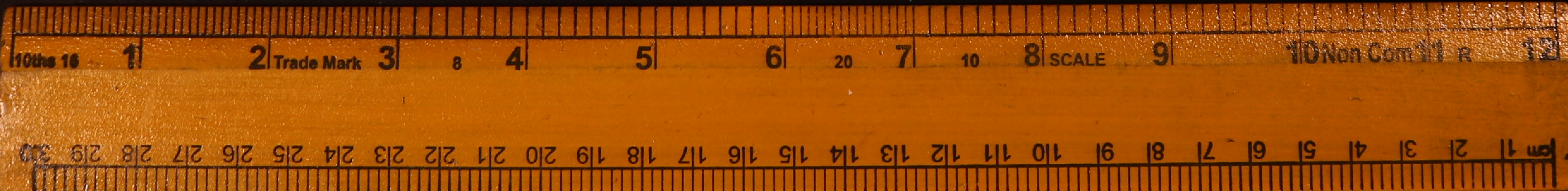
द्वितीय भाग

* * *

उर्दू कविता में भारत का संपूर्ण इतिहास

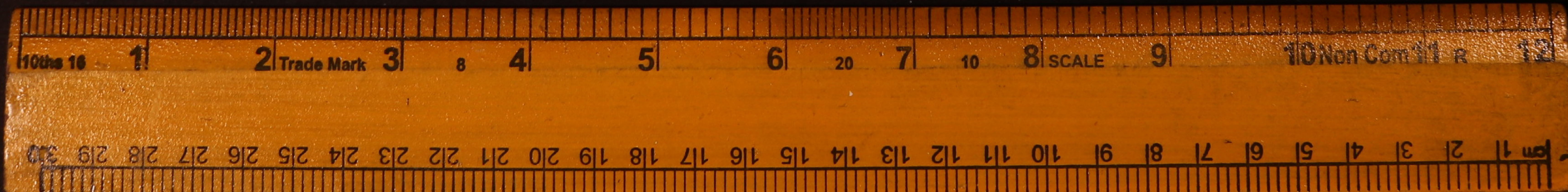
फ़िरदौसी-ए-हिन्द

फ़रोग़ नक़्क़ाश



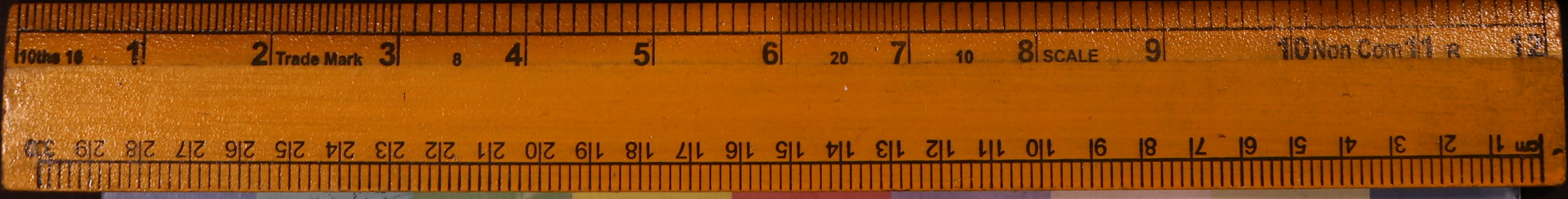
شاہنامۂ ہند کے دوسرے حصہ کی فہرست

शाहनाम-ए-हिन्द के दूसरे भाग की फ़ेहरिस्त











* * *
* *
*

शाहनामा-ए-हिन्द के आठ भाग

यह दुनिया में पहली और सबसे लम्बी उर्दू कविता हैं, जो हिन्दुस्तान के इतिहास पर लिखी गई है । जिस में अशआर की संख्या बीस हज़ार है ।

- इस का पहला भाग **"शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल उर्दू महाभारत"** है, जो आप के हात में है।
- दूसरा भाग **"शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल हिन्दू अहदे-हुकूमत"** है। जो जैन और बौद्ध धर्म से शुरू होकर शात वाहन ख़ानदान के साथ हर्षवर्धन पर ख़त्म होता है।
- शाहनामे का तीसरा भाग **"मुसलिम अहदे-हुकूमत"** मोहम्मद इब्ने-क़ासिम से शुरू होकर महमूद ग़ज़नवी पर ख़त्म होता है।
- चौथा भाग **"शाहनामा-ए-हिन्द गौरी-ओ-गुलाम ख़ानदान"** जो अफ़ग़ानिस्तान की तारीख़ से शुरू होकर शहाबउद्दीन गौरी और गुलाम ख़ानदान के आख़री बादशाह ग़यासउद्दीन बिलबन पर ख़त्म होता है।
- शाहनामे का पाचवाँ भाग **"शाहनामा-ए-हिन्द ख़िलजी ख़ान्दान"** अलाउद्दीन ख़िलजी से शुरू होकर बाबर की आमद और शेर शाह सुरी पर ख़त्म होता है।
- शाहनामे का छटवाँ भाग दकन के ख़ानदाने-बहमनी से शुरू होकर ख़ानदेश, गुजरात, कश्मीर, मालवा, जवनपूर की शरकी हुकूमत और बंगाल की हुकूमतोंपर ख़त्म होता है।
- शाहनामे का सातवाँ भाग मुगलीया हुकूमत के दूसरे दौर अकबर से शुरू होकर शाहज़हां पर ख़त्म होता है।
- शाहनामे का आठवाँ भाग औंरंगज़ेब से शुरू होकर बहादुरशहा ज़फ़र पर ख़त्म होता हैं ।

* * *

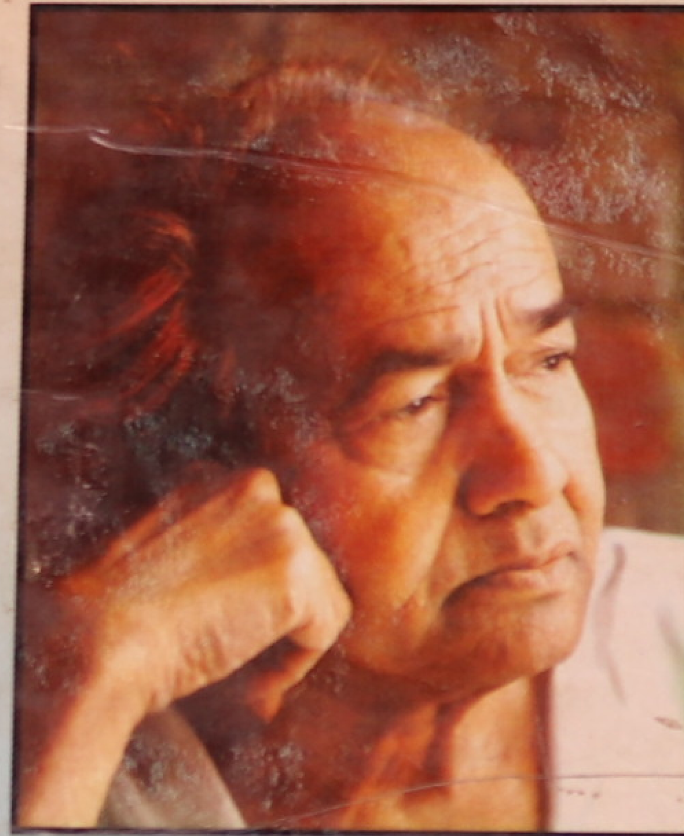


तीसरा भाग

शाहनामा-ए-हिन्द का तीसरा भाग शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल मुसलिम अहदे-हुकूमत, मोहम्मद इब्न क़ासिम के हमले से शुरू होता है। मोहम्म्द इब्न क़ासिम का पसमज़र बयान करने के लिए अरबस्तान की मुसलिम अहद की तारीख़ का तफ़सीली ख़ाका पेश किया गया है। जिसमें हुज़ूर सरवरे-कायनात सललल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत से विसाल तक के वाक़्यात और खुलफ़ा-ए-राशेदीन से लेकर उमवी ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान तक के तमाम हालात व वाक़्यात को कहीं इख़्तिसार और कहीं तफ़सील के साथ नज़्म किया गया है। इसके अलावा राजा दाहीर, अलप्तगीन, सुबक्तगीन, राजा जयपाल, लमग़ान की जंग, गिरोहे-क़रामता का पस मंज़र, राजा आनन्द पाल, क़न्नोज का राजा कन्नुराय, महमूद ग़ज़नवी, सोमनाथ के वाकेआत, ''महमूद ग़ज़नवी का अद्ल'', ''शोराए - ग़ज़नविया'' को नज़्म कीया गया है ।

★ ★ ★





शाहनामा-ए-हिन्द के आठ भाग

यह दुनिया में पहली और सबसे लम्बी उर्दू कविता हैं, जो हिन्दुस्तान के इतिहास पर लिखी गई है । जिस में अशआर की संख्या बीस हज़ार है ।

- इस का पहला भाग **''शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल उर्दू महाभारत''** है, जो आप के हाथ में है।
- दूसरा भाग **''शाहनामा-ए-हिन्द ब-शमूल हिन्दू अहदे-हुकूमत''** है, जो जैन और बौद्ध धर्मो से शुरू होकर शात वाहन खानदान के साथ हर्षवर्धन पर खत्म होता है।
- शाहनामे का तीसरा भाग **''मुसलिम अहदे-हुकूमत''** मोहम्मद इब्ने–कासिम से शुरू होकर महमूद गजनवी पर खत्म होता है।
- चौथा भाग **''शाहनामा-ए-हिन्द गौरी-ओ-गुलाम ख़ानदान''** जो अफगानिस्तान की तारीख से शुरू होकर शहाबउददीन गौरी और गुलाम खानदान के आखरी बादशाह गयासउददीन बिलबन पर खत्म होता है।
- शाहनामे का पाचवाँ भाग **''शाहनामा-ए-हिन्द ख़िलजी ख़ानदान''** अलाउददीन खिलजी से शुरू होकर बाबर की आमद और शेर-शाह सुरी पर खत्म होता है।
- शाहनामे का छटवाँ भाग दकन के खानदाने–बहमनी से शुरू होकर खानदेश, गुजरात, कश्मीर, मालवा, जवनपूर की शरकी हुकूमत और बंगाल की हुकूमतोंपर खत्म होता है।
- शाहनामे का सातवाँ भाग मुगलीया हुकूमत के दूसरे दौर अकबर से शुरूह ा क र शाहजहां पर खत्म होता है।
- शाहनामे का आठवाँ भाग औरंगजेब से शुरू होकर बहादुरशहा जफर पर खत्म होता है ।

Designed & Printed By Mohan Computers Ph: 528145.

